





हीकेंगयोद्वै वैकुंठकोबसैयाप्यारेहिबैकुंठवक्ररुओरबैकुंठवकाहाइसरोवनायोहै॥२॥ बजे  
पापजीजेबमोपाषईयेपीजे झुलफनहोरिमुषउरैगोसोतारेगो सुबबोहमारैआयोतारिवोतिहरि  
आयो ब्रुवोजकुरवस्योतारेगोसोतारेगो निपटनिरंजनरखीसकलघटघरिदेशोदेकआप्यत्रा  
पनीतारेगोसोतारेगोसो हमतोहैपतितउमपतितपावनहोपतितपावनतेहारेगोसोतारे  
गो॥१०॥ निकटनिकटसबकोकहै निपटकहैनहिकोइ अंतरपटजबनारहै निपटनिक  
टतबहोइ॥११॥ निपटनिरंजनकेनिव्यग्रनगायप्रगतस्वरूपघटघटसबलाहैके दानकेह  
याउहैछुदानबंधदानानाघअधमउधारनहोव्रतबहुलाहैके करमतिहारिसबकरमहै  
तिहारैकभरमहैतिहारिपचिहारिअनिजाहैके अपनेहकर्मकरि छुहीउतरोगोपारहो  
हकिरतारुकिरतारुउमकाहैके॥१२॥ निपटजगतमेंआयके काहाधरिखोएति सोहाक  
रिबैपारको उविजातिहैपैवि॥१३॥ हमइतउरैउमउतउरि इतउरिउतउरिओरकटीक  
इरिउरैगो हमतोहुरिहारैपैतिहारैहिनहारैहारेतैहारेहीके संगहरिहारैगेपैहारेगो  
निपटनिरंजनबनावहैबिचारहीकेएकहोबिचारकाहाइसरोबिवारोगे मोसोनपतित  
सरोतोसोनजगउजारीमोहिजिनतारीबैकुंठवक्रविगारोगे॥१४॥ वैहोनेनवैहोबैनवैहोबा  
जारवनीकेचैनवैहीलपटपटीसोताकामनीअककंतमें वैईरविवेईससिमीनप्रगतामैसई  
वनवैईघनमोताइरतनअंतमें निपटनिरंजनसकलकविआउरीएयोहिपचिहारिसकल  
इरानकेपैधर्म हगदनिदेशिवेकोप्रगतदिषाईदेत देशोनेप्रगतकाहादेशीगिरंथम॥१५॥ तो  
स्त्रेतेउरताकेमारवेकोकलीबारयहनुनिअत्रपतिरिसमनधरेनही अंगरसाजिवेदेवांगनामी  
बैवाआय सोगकेप्रकारजाय सोगमेंपरेनही निपटनिरंजनप्रकारनांनोयंवाहतेसबैमुषा  
आगेंआनिमनउतरैनही पायोहैपरमसरपायपरबेकीबार चाउरीसरहियेओआउरीकरैन  
हि॥१६॥ षरुलताषरुलधरेधेमतासुलहिमाहिप्रेमसुटदेदेधमसुरफायले सीसीसोसरो  
रजामेंबीसबैसेमेलिमुदिमदिपटलेप साधसंगतिहिनइये निपटनिरंजनहैमायातोप्रच  
अबालज्यौनिकरैअगंनित्यौसौसुरफायले एरेसंतज्यौलौढटेपारोहोतहैअवारजाय  
मनमारतोरसायनीकाहायले॥१७॥ एसोअित्यापांपनीनजानेसुष्टिआपनी रामनामलेवे  
कोंसौडीअलसातहै बुगडीकोवोक सचलाकबडीलरिवेको षाबेकोषटरससवादिदि सौषा  
तहै कदिबेकोकपटनिपटनेऊहदेआनिबोलिवेकोओगनअनेकजालजालविल्लवउ  
है घातहोकोवातहोतो ज्ञायकेबनायकहैऊरीरसोहनकोआगेवलिजाउहै॥१८॥ आउतो  
अलपतामेंजिआसोचपोचकरेजानेकहुकोजीयेसुकाहाकाहाकीजीए पारनइरानकोऊरी

नकोतोअंतनांदि बांनीतोविविधितांतिकांहांधितदीजये कविकीकलाअंततबदकोप्रबंधव  
ऊत रागतोरसीलाकांहांधोरसपीजये सोबातकाएकवात निपटबताएजांतसबतेसयांनोजे  
पेरंमनामलजीए॥११॥ जोहेमदमातोतोरउउररंककहादीनीहेजोदेहोतोनिर्दयअस्तयका  
हाअस्तयकेजानेतेंपदोअनपबोकाहाहितयित्तलगातोतरीअरुलोकहा निपटनिरेजनके  
विधिनांनिषेधकब्र संबरसब्रहृतवउवनीचहैकाहा मित्रसेमिलनतवस्वर्गअरुनककेसे  
देशबोदरसतवगोरोवावरोकाहा॥२०॥ महामदबकेतेंअबकतैनिबकहोतनिबकहोय  
केतेंधुमफमतधुमारीको दिननिसनि सदियदेसुद्विआवतहेसावउपवारएहिसादि  
बसुमारीको निपटनिरेजनमरनकोअमरनामएकवारमारिदाव्यायेनछवारीको हेतो  
मतिवासेउचेमदकौनलेनहारोअरकरि पिआलोखोरिहोनधुमारीको॥२१॥ जेईहोतिआ  
दिमतितेईहोतिअंतगतिआदिअंतमधुमेजमलवेकोआयोहे एकजोउदासीतातेवोडिबोव  
नायोजगजगमंजगतयुरुजगतमायोहे निपटनिरेजनवाएकमंसकलकला डसरोविवा  
रकहोकोनवेदगयोहे साहिवतोसेवकेबिनातकोऊसाहिवोहेसाहिवसरुप्रआपसेवा  
ककाहायोहे॥२२॥ आपअक्रायकेवोहिनवावतगऊरसावदानामबिबारी फलवटाव  
तवासनालेगयोवोअसुदेवसदाअधिकारोधतवजायअयोदिषायकेडिमिगयोनिपटारस  
सारो सेवकरेऊनितेवनजानत देवतेदारयअनहारो॥२३॥ निपटजां।टकांतेतइअं  
रकक्योर बदतबदतसबबदगई नहानिपटकोगेर॥२४॥ देशतअनतइयलहृतननेकसु  
मरुषकोवमनजेसौत्वमनमकोराको सीतघांमनांगेपायगोटनमसेउवायसंकटमियायका  
यो गऊरसुवाराको अचुकनलह्योअलेषनिपटनिहुरिदेषिदानेअरुतेषतोऊजानतन  
वोयको मानसतेदेवतयोतोहिसकजगनयोअनकनलह्योतोलह्योसिरलोराको॥२५॥ गऊ  
रसेबुकरसेयाकरसेशकरसेअरषविविअरुसेगायवेलतैसदे बांदरसेबुदरसेफूसवक  
उधरसेसुकरसेसुकरसेबिलाउवकरीसेहे इइफसेवदइसेविरियोगयदुसेवसत  
सकलमेकलनडादिबेसेहे जेसोकोऊहोयतासेतेसीरुपराधेनिपटजेसेंअमेजेसेप्रवृते  
सेपीमेतेसेहे॥२६॥ फा दोसीलगाटाकियेडोसोपियालोहृष्टिकांधेपरिगोदरीसोचोथरसे  
लदीहे जहांगेतेषतहांअनकोनिवासनहीआंहाजोगेपासताहांनालाअननदीहे गेवके  
षजातेअरुगेवकेउजकसाधुषस्वतोहजारकेसामनसपुत्रसदीहे निपटनिरेजनपादे  
मनमेमगनरहा करनीफकारी तोदिगीरीकिनवदीहे॥२७॥ पाथरकेनगवारजेजोअंहर

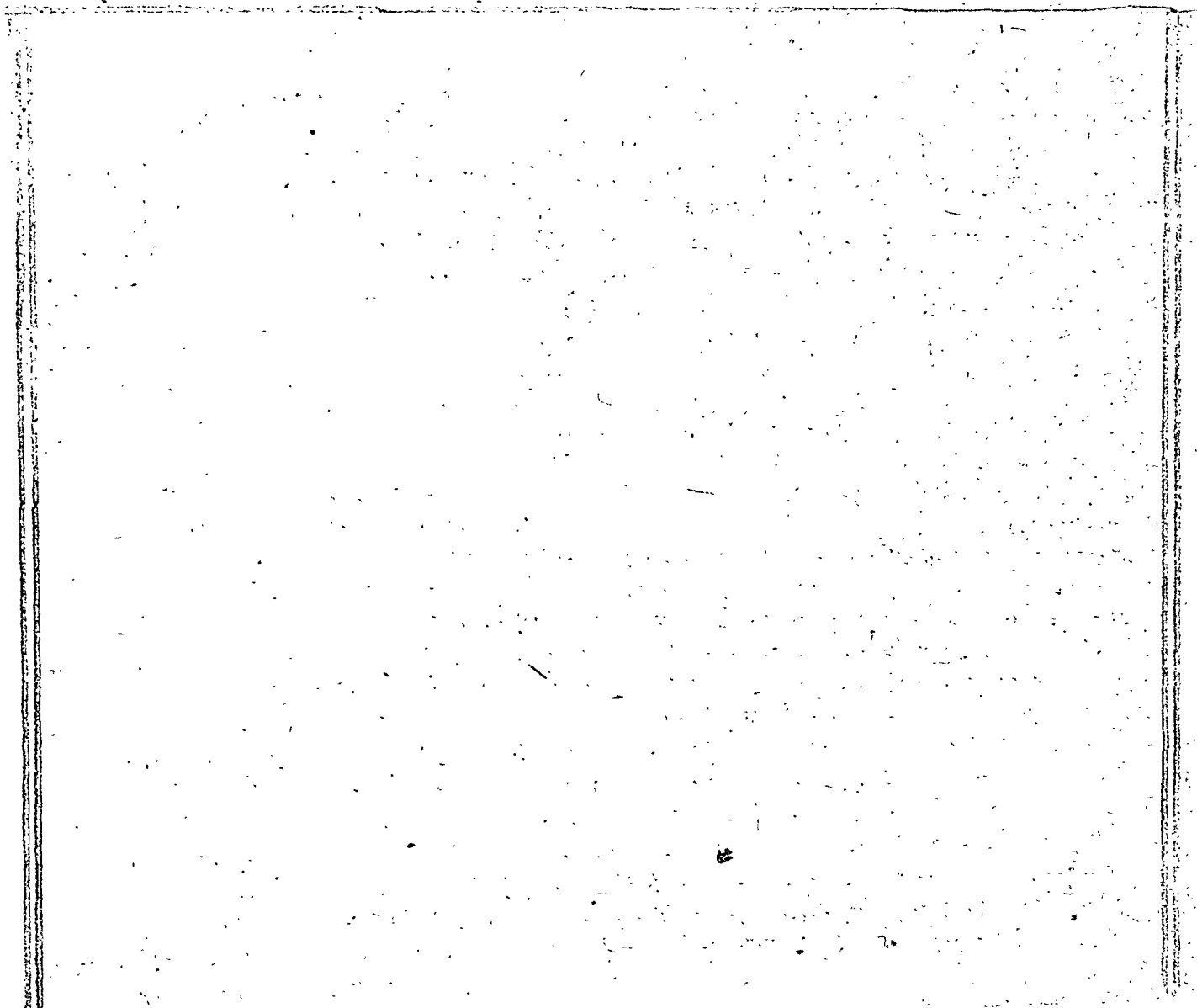
जगतमोजिनकेहरिहीरासोसांवेयुरुवाउहै ज्ञानयोगलब्धसौलषावतनजागेवारत्रैसो  
पददेततहांपोसैवेनकालहै तिनकोदुर्ज्ञानदेवतांनकोडुर्लत्तअतिसरनप्रकासघटतेष  
कृत्काउलहै अगमअष्टंडअविलोकितगरीबदासदासनकेदासअरुजालनकेलाउहै ॥२८  
अकैपाएसिवसनकादिकअजरतएगोरधमअंशनाधमांनपांनगावैहै लोमससरीरकेल  
षिवगदालत्ततीषमअरुअध्वामाहनुमानलोहलाविहै बलिअवासुदपावारजिसेपर  
सरांमुत्रौषधरसायनतैजोगकाहाघाटिहै सरनप्रतापशुरुगेविंदगरीबदासपारोहृतता  
उसबधाकीएकांफोरिहै ॥२९॥ गिहृकांहांपंचीसोसहसदसदेहराषेपसुयोगसाधइयामा  
नसनमानिहै नागकसेगयोनरकागधंहुजारजविमेंडकतोमहायोगीसुएजीवआनेहै एहि  
तोतयोहैविषयाकेबसितातैतरिवोकियोहैयागिमतिऔरनकीतानेहै जागतस्वप्रसुषा  
पतिहीमेंरहतिएतैपरिकरुतपंफितसयांनेहै ॥३०॥ जोईहोतिआदिमति सोईहोतिअंतगति  
आदिअंतमध्यषेलषेलवेकौआयोहै एकलोउदासीतातैबोलिवोबनावोजगिजगमेंजगतश  
रुजीवत्तरमायोहै निपटनिरुंजनवाएकमेंसकलकलाउसरोबिवास्कोहोकोनविधिगयो  
है साहिवतोसेवकविनांनकोऊसाहितीहै साहिवस्वरूपआपसेवककहायोहै ॥३१॥  
कवित्तसिवाज्जके॥ गढनिसजायगढधरत्तितजायदैकैंदीनेछोडिधरमघारदैतिषारीसे साहिके  
समतसाहि।सिधसिवराजकियेकेतेउमरावऔबनाउबनवारीसे त्रसनवषांनेकेतेदीनेबंदी  
षांनेसेषसइयदहुजारीगहिरहियतवजारमें महितेसेसुगतमाहाजनसेमाहाराजाजीनेक  
टिपकरिपगानपटवारीसे ॥३१॥ आगेकीनजांनेदेवीदेवतानमानोजबैसांविपह्वानोहोकरहता  
ततबकी आगेपतिसाहनकोचाहिकृतीहिनकी साहिजाएजाएगीरकोनकहैतबकी अ  
कबरऔबबरहमाउरुदिबाधिगएदोसनकीराहकेतलरकी कासीकंकीकलागई मषत्रामसी  
ततई सिवाजनहोतोतोसुनतहोतसबकी ॥३१॥ जोऊ बलिविक्रमकरनकैसौकलिमांफिंरुंदि  
सिवराजअसअरजा कलसकहैहोकरुजोवेरसमसेरबरमाहाबीरउटिकटिकीनेमीरपसजा  
बिरयोएजाराजीलमांफिएकमऊहीसो ॥३२॥ देषतदिलेसकेनमानेनेकबरजा रदतयोतारथकघा  
नवलेपारघकीतेरोछरप्रारषजांनजपेसरजा ॥३१॥ जाहिनिरपउहरउऔररूपसयोतिरूप  
कोस्वरूपतेरीजोतिमेंजपो कलसकहैलेरूपसाहिकेसमतमनितेरीमनिदेयैधनीजोधरुकोवग्यो  
तीतरफसलषांनेऔएवीधुमानहृतोइतमांमहाबीरबीरसेसोपग्यो मीरजागेवाकरसेकोट  
पटऔटसमअतनांसोअत्रलाग्योओतेवछकैलग्यो ॥३१॥

अथकवित्तपारो लिप्यते॥ प्रथममंगलावरणं॥ वित्तलग्नितोयकाको बचनमपी प्रते॥ कवकं सुकटतनभा ज-  
 न्कालमन कवकपोलोलकमलनमें ब्रयो कवकं नैनमें सेननमें सैनकरे कवकअधर यीव शुभं  
 त्रिवलाम्योककं वज्रपुनतलनपजातु जंघाफटिकिकनीति धनि सुनिरंगताहिकेंद्रलो वनम्रविहारीग  
 विहिरि रत्नरीगतिमेरो मनमार्दरी वरि रको ससा तयो॥१॥ सुवैपारु॥ गुरुजोगन हो एवकी अटकी अरि ए न  
 दुवातिपरारटकी अजमाधुमं ब्रजपौरिनमें वनमालगदें लटकें टटकी॥ सिवदुससु तोयलु तायर एउनगेल  
 गल यमुनाटटकी सुद्विद्वि सवै सटकी मटकी अटकी बविकापियर पटकी॥२॥ एकदिनां मधुरी धनिमें  
 रसधानिली योककं नो मरुमारो तादिनेतै यर वेर निसासकि तो कितो कियो जंप निदे तड आरो तोतववात बजाय  
 सों माद्री ज्यो तरि अंफमें सै टिअंप्यारो वाटपरी अबही ठवको द्वियरे अटको पियर पटवारो॥३॥ औचका अकेली  
 वनवेदिन कौगई कृती फलनके संभवको एरि तरि वाझरी मालताके पेरतरे तरि फर पिउयो सुकटकी लटक  
 मकि वित्तपारो कंदन रनिम निमुरति मनौ जगनि ससु द्वि ली अबक हो कित जाझरी पापुं तो कारो बाकी  
 अवरहो पीरो मोरिका रो पारो मूके का लुबफत हों वावरी॥४॥ सधिको बचन सपिसौ॥ नैती नित लेन धावे दोरनी ल  
 दें न धावे आगिके ऊतरको टिको टिकरते है कालिदासका कके बिजो कियेको हेत आयपे धिपे धि मये मके मस्र अनि  
 करति है करति है छोटी बहावात निको नंदके मंदिरप्यारी बल बल अंधके न्यो तिवितर ति है छोटेर धिजावनको  
 आवे नि सजावनको नेरु मन तावनको सावरे तर ति है॥५॥ कथा सु निबेको वैठी पति सभगा टि जो रि जामे गति  
 और लोका अजल धिवाकरे काजी दास पास वैयो तासों मुरारि आतिरु विमथपानके गविली वा धिवाकरे पट  
 नटनागरकी मूरतिरही समाहि एक अरथ धट और तकि बोकरे अटको त्रियाको मन नवल सुजीन परि वासु  
 रो छोरो हित उरान बकको करे॥६॥ परी मेरुत मरे मी ली र गरायटी मूत फिता कि और अकिर खोन डनं ड है काजी  
 दास विव निरुचनिकिया विबी विबविकी मराचनिकी फलक अमं डरे लो कदे पि तर रें काहा धौ वाधर मे रंगम  
 मा जग मयो प्रतिनको कंड है आउनको आल देके आउनको माल के यामा कर मचप जके रवि है कै र्यं ड है॥  
 ७॥ योका देसा त्र सु द्वितवदी तै गई तई अति वा ऊर नधी रज धर व है मूरका सपा संधाय धाय सु व ति है का  
 ल गति तई कळु आनी नपर ति है आधिरति तई तव को किल अवा अटई लुहकि र लोय न अ सु आ टर ति है जोर  
 तये मिले पोवा है मोहन मनो मूर तरे कालिके उपासी तेन पारनो करति है॥८॥ अतो उदसचित वेक निरास प्रति  
 दीर धुस सास लेने न नितर उ है कृजा एरुपाल वा लर सि कर सि क उपाल लाल तयेरी विहाल लाल मदि वानेन  
 पउ है तल पमें तल फल मल पतन का सीति सदिन कल पत धीर उधर त है मूं पटकी और मां फि ने ननकी  
 चोट तई जो टन क बुत इ ज्यो लो टि बो कर उ है॥९॥ सवैपारु॥ गोधन गावत गोधन ले अबतें थ हमार ग कै ति  
 कसो तवुतै ऊलका न्की ताक करी यह पापी जिया ऊर स्या ऊर स्या अबतो न तई न तई सो तई महनेग  
 अजांन हस्यो प हस्यो यह पीर न जात न जानत सो किके जिय मेर सखां निव स्या॥१०॥ है सजनीय हारकी

श्रीहर या अजधेनु चरायगयो है मोहनीताननगोधनगायकै वीनवजावरिजायगयो है तादिनतै  
तादिनतैरसमानिकबीकरि दोनोसोहियसमायगयो है कोऊनकाकूकीकानिकरे सिधरोहनवीर  
विकायगयो है ॥११॥ किरनप्रमालज्वालगरमेयुलावमाल बुनरीसुसो है लालबुनरीबुनाएकी व  
चदववेडीवोआ कोकमाकसुरपांन मधमेरे ० मधवासुआगेंआयधायकै कहैकविदगंगहोतौन  
ऊनऊं कितेगई मोहिअरुमोहने है मोहनीसीलायकै केसरसेवरनि कि सोरीअेसीगोरीगोरीहोरी  
कैसीऊरपिऊरोषेफोधिआयकै ॥१२॥ मगहंतै सरस विराजतिविसाल ह्यअेसीइतिराजतिका  
पोलककेदलमें गंगइतिदांमनीसी सीतनमोउसनलगीपांतींवरबविदेषिकैरहीहोविकलमें चि  
तेंवषवादिपरै सो ताकेसखुइमांदि रहनसंतादि गति औरतईपलमें ॥१३॥ जबतैमें देवीनेनतवा  
तैनजीयवेन मास्योमधिमेंनरबडोइमदे गई वाहिबिबुनि सदिन मोहिनसुहायकइ बिरहकोवो  
लिमेरेहियमां किवेगई कहुतसुधररायसोरहसिंगारसाजि सपिअुयमधुअ्यामाहासिकैचितेगई  
आईयसुनाकेतीर गोस्तीपहरिआरिसारीकाकरेवीकी करेजाकोदिउगई ॥१४॥ तेरोरुपरअुदे  
धिमेंनकामनोजनारि सोहृतनरंताउसगईअुअ्यायकै नमसिषआनंदकेसागरकैक कोरगादी  
अंगरबानिककहोकाहाबनायकै विधिनांनरवीऔर नारिनकोसीसमनि सनकसेसुतिगनगर  
सुलजायकै ॥ कहुतसुधररायसामसौहीबार २ देषननपाएनेऊनैननिअ्यायकै ॥१०॥ बिबुगिरी  
धरंधीर देषेनधरतधारचितअतिविरहकोपीरमेरेतनको आगेआंमरेनदिनआनननआनिवातआ  
ननाषमिलनकीरषाएकमनको कहुतसुधररायअेसीजेतियानकोऊस्यामकोबोलाइलेइआं  
मधवनको तापनिरवारनको अेमनिरवाहनको सषांगरेलाइसुपदाईस्यामधनको ॥१६॥ सपनी  
सीसासुसोउसासनिगनतिरहे पाईनसापरोसनिपरानहोतपासतै जालिमजिवांनीअनषांणीरह  
तबुरीनारसीननदकलतोरतअकासतै दईरीबघोसानीदिनदाटबोकरतपगुनेवरनधरतसु  
रदेवरकीअसतै वेरायऊऊनीकोकोहोरीजायवउतसैसुपनेहीआयमिलोअपनेअवासतै ॥१७  
देषादिलजांनीचीराबांधेसहानीबोलिकाहेआफरांनीमोतीनाकमेंअभूवहे आवताहे तावताहे  
वसै चलावताहे मनकोमिलावताहे साएसिकेअुवहे होतासुसियाउकधीआवताहे जालबीव कर  
ताबेहालसोतोहितकाइअुवहे कामसेनअ्यामसे तयाहैदिनमिलनेको आषदक्यांअुअुपिनमेर  
महबूबहै ॥१८॥ जमकीसोजीवलेतहैजिवांनी अमदेतहैधोरानीधोरदेधतअरोरमें ननरादहैनिगो  
डीनीकैनिरधेननैतरिसासुकोसुताउयहैफुवीलयायकैअरे कहैदुयादेवकाहोतऊऊकांनि  
कोयें अणोमनजालवीसोअेसैकेसैकैवरै वाहतहैसबैसषीयाकेडुककरोरीकिडुककरहीसोडुक  
कोकरै ॥२०॥ चंचलऊरगहंतैअवलनरोकरदेहुटेहंगअंवरतैऊनोअमदेगए अहिडीनीफासीको











हमें पीयके मिलिबेकी तली सुदिदुहै आलम आगे घनो घन है अनके गरजे तै घनो छपपे हो ॥  
 २७॥ जो तो हो गनक तो तन क घरी क परि आओ दे घो स गनौं ती अंशु व आगे करणी वाल म वि दे स है  
 संदे सौ क सु आघो नदि क वि अस्ति म न्य है म ह्य प्र वी त न मे जष वेद हो अरु वर तो मेरो सा सु आ फरी  
 ताहि उपचार का जे का फ नो दिने सपी अे सें छ सका ए वा त मू च त स या न प सौं अ हो ए व तो ही वलि  
 वेद हो कै जो तकी ॥ २८ ॥ न न द है न्यारी सा सु माय के सि धारी तै सें अ धिया री रे न सु फ त न क र है वे  
 सका न वे ली से अ र ह त हो इ के ली ता तै ए को न स दे ली सा घ ज ई मे न सर है बालि म को ग व न अ ति सु  
 न्यो प सौ त व न द्वा रु च ले पा न ता तै ज ई मे ध र है ॥ त ई आ धी रा ति मे रो ह्य रं ह रा ति ज अ अ य रे व  
 रो ह इ हा वी र न को उ रु दौ ॥ २९ ॥ आ उ र क नै य अ पै वाल सु रि आ इ आ व क दे हो क नै य अ क छ  
 ह म पै दि वा इ ये फ ल दी जे गो द ली जे ना क दी पि ना यो मो ती पा न न की पा त री इ ता स न प्पा स ला र  
 ये उ वे से ऊ रो मे ले के मो ह न बै ग उ मो दि र ति प ति की म र ति च जो से अ जा इ ये नंद के क मार वारी ना  
 हि उ त र तो ए क दी नो उ क ति वि त्तो ष क दौ को न तां ति आ इ ॥ ३० ॥ वि र ह नी ना ष का गो पी सं वा द  
 आ उ न तो तो ग ले त और न को जोग दे त सा ची क ही म फ प क त का हा ज उ दे न ई न ई त्री ति क रे  
 बाल नि के म न ह रे फ ले र फ ल न मे फ ल्पो न स मा उ है ह म हौ को ग्पां न ध्यां त सी ष्यो है स वै स या न  
 उ म ही स या ने कि धौं और को ऊ तां ति दौ ॥ ३१ ॥ त ले न्नु यो न्या यो न्या यो आ गे दे ति ह रे उ धो मा स को  
 ष ये या बा ष या स पा द्वा पा उ दौ ॥ ३२ ॥ आ दि न मे म फ र व सा ई अ न ना ष जा इ त व तै व या रि अ न व र  
 त वियोग की हारी सु दि गो पि कां नि क ल न बि हारी वि उ ता प रि प ग ई ह रि पा ती ल पि जोग की उ व  
 ज्या सौं मिलि के ऊ उ डि त ई का न्नु की उ धो ज् सि पा व नि के आ ए म ति सो ग की उ म तो हो स यो  
 ने सि धारो फि रि वा हि ने रे अ नु क् जो ग्ना सा ह म रा ष त है तो ग की ॥ ३३ ॥ उ धो ज् य ह दे पो के सी अे सी  
 स सु डि दे पि स्थां म नि र मो हि सौं स ने द्वा धिय उ दे रा धि का व्या क ल प ल क ल न बि हारी वि उ उ नो जे  
 अ रे रि बा न सा धिय उ दे ह म स व गो पि का को आ य के अ न ग बां ध्यो वा के गे ज् आ नु ध र र स रा धिय  
 उ है ॥ स्थां म नि र मो हि मो हि गो पि का स क ल मो हि रा धि का सी मो हि क ब्जा सी ना ष वि त के ता सौं र दि  
 मां ने र ति वा हि को ह है ति ह मे र ति सौं स री र स व पो यो सो व नि त के ता प र बि हारी ज् प ग यो यो ग यो म  
 नां हि उ धो यो ग दी जे जा को वा ह त है दि त के ना व री तो नां दी जो पं वा व री सी दे न्नु आ ये वा व री सी वां ते को  
 हौ क है इ रि मि त के ॥ ३४ ॥ ज व ले बि सारी अ न बाला सी वं घ न र्पा म त व तै त व न ह म् व न सो ल ग उ  
 त न को न सु दि मां न व ल ये कै त क ति ग ये वै री औ म द न नि रि वा स र द ग उ दे सौं जो प ल प ल चि ता  
 त नि त बि हारी सौं यौं आं ग वि र ह प्र का स फ ज उ है ए तै व प र ति उ म जौ ग्दु उ ग न आ ए उ धो न्नु ति ह र  
 गे को ऊ न व गा उ है ॥ ३५ ॥ जो डि अ म बाला ए क र तै बि साला रू प नि न री को उ म दे ये जाले प ति रा ति के

राधिका सखितित उ रने उ म यो सा ज्ञाय यो ग्गो मि  
 नधि अ उ

२७

ति न कौ पवयोग लिषिके बिहारी लाल रैन दिन त्रामवे उ सुष सौ बिहात कौ ऊबजाके कवपरिरीके न  
दलाल जायके सैके सुहावत ऊहालवाके गतकौ कारतपलंगकिधौषीदतिधर निनाप्रलागतचवतो  
हमें उधोयाहि वातकौ ॥४१॥ आवनकी अधिबीती वंधिकामलीन नई पतियाले आएउ धौ कारीरा ऊर  
वसी वारि तई आई सब वारि जनी अधिय निबिरह बल बनितागवाइकां कृगषमी अधिक मनोजफे  
जमानगोपवधूतई दामनि उकाई वारे धार सरहषसी ॥४२॥ ऊबजाकी घालकाटि ताको मृगबाल  
सजोके सवाके सुदि ताकी सैली अधिने जिये ऊबके विलुति वैठा हगनकी डेलामाल पिंजरकी किंगरी  
ले गवसौ वजि ए सी सक्त कोषपर औ कवको बना एको ली तार कं के व सर तगवारंगरे जिए जोगकी  
सजोनी जौपै औ सै करि ल्याउ भो तोह सिं जोग औ सै के अगे जिए ॥४३॥ रेषता ॥ काटे परि जौ न उम आए हो  
उगावने कौ उ नको तोने ह डकरहा ही न बुकाहे कवल नैनके लिकोनी जयक वजा मै रष्या त्मारा उनी  
कौ औ सामूफाहे हमना उमेद उमदि न मै नई माधौ जि सदिन सै जाय वाकी बेलि मै अरुफाहे एजा  
दिता सा क्युकर वेकारहि नोहि उधौ जा सिधारी तांति वाजी रग बुकाहो ॥४४॥ दिलमें करार नही सोर  
हे दिमाक बी वजंत परे सानी सेती देह ऊममई है उतो पैगां मल्याया और ही मव कर सेती तई रे आ  
वेत गाध अजववात तई है पेमका पिया लाहम एक साध वैति पिया उ सकी सुमारी सै वियोग पीर स  
हा है दिल तो आ एक सोध तो लगाउन कदमौ सै जोगको न करे ऊर न अकल तेरी गई है ॥४५॥ ह  
रा नई जिमी जोर उच्चर जरायतकी सिरपर आया शुब स्या वन सुहाविना हाऊर वाऊर मोर स्या यतले  
आवत है उनको तो लगा परदे सौके साद्यावना और तो सोधि सब दिउरे में फूलती है हमको तो तयाहे  
तवन अनषावना अरे तई पंछी जो उजाता है घरका कौ सकन हमारा एही त्रामको सुनावना ॥४६॥  
साधिको ववन सषीधतौ ॥ सरसेवर सेधन वसावनको सिंगरीमदि सिंफ समाने तई जितही तित दे धिये म  
विप सै तित हिं तिति दे धिये मी विपरीं तित ही तित दे धिये नी रमई अहते उ विबाहिर वादा तई ललना  
बिर है तनताप तई छिस्क्यो तगयो उनको अंगना वरषा अधु बिचदि सकि गई ॥४७॥ गावत बधाई व  
ऊनारी सुरसानी मिलि गावत है ग्यालिस वेतरुणा अरु वारे दे वोर वोर गढे बिरभावत है वंदी जन पा  
वत सुलख लख गायक विचारे है पत्राके विधान लषि आ सजीक हत औ सै तो न लो क तार नय ह अध  
म औ धारे है गोकुलके वंद सुषकंद कवि दयानंद औ से नंदनंदनको वंदन हमारी है ॥४८॥ गुंजाका  
मारगरे कणकण मगया उधरे औ गौ अ नके पुंजनमें डार तिहितेरह्यो काहा प्रलुनारुद त्रिलोकगामी हो ता  
त है औ सो सुष झंठिकें ए सै कर कितेरह्यो पारथुके का जएतो तार धवना वेगोकी रौ कोषोय ऊलपंडवे  
हितै रह्यो गुनको धर्म हली सुमंछी न घेलत है दे धिये गालिमें हली कर्म हली चितै रह्यो ॥४९॥ आ औ वसा  
लोकते उमनमें शुमान धरि कां कौ न उउतो मि लपति इतै रह्यो उनको परिबा हरि गयो या उवबा फे

रितां हातै सौदेषिमनचक्रतासौ फेरह्यो धिवलिधिरं विहं विचारुचितमारुदेष्यो अजकेमहातमफीय  
 तनवितैरह्यो देषिष्ठकटकं फलपीता वरकीसोतापेदेषियालि मंरुलीक मंरुजीवितैरह्यो ॥५७॥ मोह  
 नप्ररतिकोमकी सुंदरकोटिकलावितेसुप्रजाजै गोरकोपद्येधरेपटपीतदि उजोकाहासुपटोनरदीजे  
 आवेशचानक मेदिरेमेपगधोयदेऊवर नोदकलीजे जाननदेऊगीमंदुललादिगवैविरहोसुपदेधुवो  
 कीजे ॥५८॥ मोरकोसुगुतामेपागकोबनाउसोहे हारानगपेचपेवसोतारसतिजीए प्यारीकेरबोहेसी  
 ससोसफलचंद्रिकाहे बंदनीबनाओपेबलेयालपिजाजाए हसिउरबसीकटिकिकेनीसुगलपदमुह  
 रसफेरिमानवारिदीजाए कहुतकविकासीरामकामसेनफेरिदेषिरेषिकेरिदेषिवोईकाजीए ॥५९॥  
 गोपाको भवनअसोहासौ ॥ इतनोसौलरिकापेरिकारुघारिजाइ उधकादुरायजायसनेयायधरतं याते

यसो सुगमारे सहे लीके हाथ हथ लि तवेले नंदन आपनो पासो परे और की सारी कलु मदि मेरे से नैस  
पौ लउ वावरी के सीतो दाऊ परे विबुदा उसके ले योर मे घेतको कउ घे सु उते वितवु इतको परि मे  
ले ॥ ६३ ॥ एक समे डरिद प्रति हो डि परा डल ही अरु सु दर नो है इत हक वारिकी हारिकी वारि वदी उ  
तमे उ नलाउको लागो बला है जीतको दाऊ पसो पिषको सजनीने कही हमनी सु विहा है जाल रहे  
अगियांत न वाहिति या सु संका यदी या तन वाहा ॥ १ ॥ नायका रू फा वितो ॥ नायक प्रते ववता ॥  
सं सो व ह प्रो सर विसा स्यो धर मेरे डाल डपति ही हमनी जो धरा घन घोरती नी के उ मजी न त हो जे  
सो उर आयो ह तो मेरी औ तिहारी औ वितो नि एक औरती र सराज के सो ज स हो तो उरु उोग न मे क  
सु सका य सुष मोरि धित वारती गिर धा स्यो ॥ गाल का हा मार त हो गिर तो गिसो प्र क्त ज तो ह नि मरा  
रति ॥ ६४ ॥ मधवा का मां न ह स्यो सांपको धिले नांक स्यो तव वज्र कं सड स्यो सुनि वात य डरे या की  
क ह त घन प्राम उ मही हो मेरे प्रा नम हि मा का हा लोक ये लोक ती न के त रे या की वाज ते द म भि ता  
री गावे त हे न र नारी करे अ सु ति व ल न्त अ ज्ज के त ये की बार २ हा थ वृ व ति य ड ना प्र जी के ले त हे व ले  
धामे या गिर के धरे या की ॥ ६५ ॥ धुरि त रे अ ति सुं द र स्या म जी ते सी व नी अरु सुं द र वो टी घेत प त फि  
रे अंग ना प हरे प ग पी प्री पी री क शे टी नंद क ह नें द नं द न ऊ परि वारो क ल नि धि को लिक को ही का  
क को ता ग का हा लोक से हरि हा घ त ले गयो मां ष न रो टी ॥ ६६ ॥ ज व लो न ए को पी र व्या प त न अ प ने उर  
तो लो प रा ड पी र के से उर आ नि हो मेरे जा नि आ जि लो ल ग्यो है ने ह का क सौं न प्रा न प्यारे धि त वित सो  
ल गें ते जा नि हो क ह त व उर क वित व मे रे क ह व का ए को न र हे गी जो स सु फि उर आ नि हो जे से  
उम मो हे नी के ला ग त हो प्रा न प्यारे वे सी का ड उ म नी की ला गि है तो अ नि हो ॥ ६७ ॥ जा सौं र वें ता सो  
संवे प्रेम पे न हा जे का वे ज व लो म न का ने त व सा वे न पर त हो क ह के वि गं ग उ म फु वे हो ह मारे सां  
सो हे आ ए सो हे षा ए त व के से नि ब ह ति हो वा ध र ते वा ध र मे वा ध र ते वा ध र मे तू ले २ म र क र मी  
वा वरी तर ति हो उ त ते उ म डि आ ए इ त ते उ ध रि ग ए कारि के से मे ह ने ह का हिको कर त हो ॥ ६८ ॥  
नायका पर किय ति सारिका ॥ त म तो स या नो वा तें हा तो कं कर त दी प दे ऊ र किं लो धे प ग जा ये ड य  
पा व ती सु धे वि रु धा वे न ला वे म ध म न कं मे म न ध र के मा थे म नि हा ध हो बि पा व ती जे हरी को ना ह सु  
नि च कि त हो त को क ल के हरी को ना ह सु नि कां न कां न ल्या व ती अं ह दे धि वों क ती सु ना ह पे व ली  
हे आ सु ना हर नि हारे ने क ना हि ड ष पा व ती ॥ ६९ ॥ ग ह रि ग जि वा द र स सु ह सा जि म ह रि र  
मे ध व र ध उ ध रि या वा ल म ध व ता की अ वि दे धि वे को र पा मा र्ग म गा व ल म ला र ग ह क र व क र डी  
७ ह रि या फ ह र फ ह र ति प्रा त म को पि त व र ल ह रि क र प्यारी को उ ह रि या ॥ ६९ ॥ व स त व र्णा नो  
हो ति प ति फ रि ज व हो ती री सं तारि स धि और क ल अ व न लो को रि ल धि पा व ती क ल फु ले क ल दे धि

धो

तल तो न हमें सको ऊएकतान जे दि मरे सुकी गावतो को किलकी ऊक मव सुनतो परा एदु  
 पां रं वारं पारं तं मदे बा जो भाय तो और देवा और रं ति हो तजानी आली उहो हो तोरी यसे त तो हम  
 ति अनमने अन बने सो व समे स  
 को कवि मदे या तो ए विजां ति  
 नी सो तो की तो अब र सकी वि  
 ली र सु करि दारिये ॥ १ ॥ विस क  
 उ वि जे दे फि रिक व न न गे दे  
 की न मां नी ये रु माने नी तो लो मु  
 ॥ १ ॥ पां न हें उपा क र स व दे गो ॥  
 उ को रें ल मु द क हें द या द व दे  
 क ही मां नि ल क हें तो उ क्रे आं नि  
 ने र पा इ न ल गा व पारी मा नु सिर आ ॥ १ ॥ कौ जी ए स य म ग य ॥ न का हा दां न दै उ कि ये ज सु जा  
 गि दे ॥ १ ॥ सु तो दे स यां नी पं अ यां नी कौ की वा त सु नि मे री न्या दे को न स सु फा दि तो दि क रें गो क हें  
 द या दे व वि नु आ उ जे सें जा न उ दे जा न ज ल जां नि तें सो ह उ तो दि द दे गो प्यारो पा इ ल गे प म पे म ह  
 सो पा गे त ऊ र न अ वुर गे अे सो को म क कौ स दे गो मां न को तो मां न आ ली मां न तें र द त मां न मा उ का  
 हा तान हें उ ल गे र सु र दे गो ॥ १ ॥ लाल न मन व मो सी स पी म ना वै त ऊ तें रे मन ना य र सरो सु ग पि  
 य उ दे र रि सें हिन सो दि लिय त भि लिय त कि धौं सो ह नि आ मे वि अे सें ए वि र दि य उ दे क हें द ॥  
 या दे व जे सो कर ता दे ते सी में जो करे गा तो सो तिन कौ का हा वा दि य उ दे मन को तो प्रा न आ ली न  
 नि वा क हा वै ता तें प्रा न क हिय उ दे ॥ १ ॥ प्रां न तें क प्यारो ते उ स पी स सु फा इ हारी ते रो तो न मन उ उ र  
 र स तां जे य उ दे क हें द या दे व ते रो ए ई अ ट प टी बा ते सु नि सु नी जनें कौ न ज सं ची नी य उ दे हम  
 तो न हे रो अे सो दे ह का क कां म नी कौ आ सु ल य जे उ य दे कां म की जी य उ दे प्यारो आ इ पा इ परे प्यारो  
 ह सि रो सु करे और का हा मां न को ज मां न लि जी य उ दे ॥ १ ॥ न पे के सी वी ली ए स हें ली ऊ मि ला इ र ही  
 म ली सी फि र त सो तें च ला य त चां म के क हें द या दे व अन मन के अ व ल अं ग को रें ग गि र दे कां त वि  
 त्र से वे धां म के इ न तो ध नो पी अन या इ ल रं अन प्रा ती जो कू वै ज ना य ति दे का हें या ट धां म के क हा ह  
 ह सि बो लि ब लि चां डि दे ह्वी डी मां ल मां उ अ रु वा सु वि नु सु दे वो न कां म के ॥ १ ॥ १ ॥ उ ऊ उ म हें ल ज  
 ग म ग त सु दै या ऊ ऊ उ उ त म ध प उं ज मा ते म क पा न क ना ग र न वी त क ल नो स वि प वी न तें र आ प  
 र स ली न न द न द न अ यो न कें दि ये सो दि जां उं ब डि क य सो मि ला उ आ ली क हें ५ ॥ ५ ॥



रप्रानकै जोपेतेरोमानही सौमान्मेमान्तमाननी तोहामोहिआसुसौपिमानही अमान्तकै॥१॥  
 आठे एअवास आठे कमलाबिलासु आठे सौधेनकीवासु मिमि मफकरगानसौ रूपके नि  
 धानआपुकाकर सुजानआएकहैदयादेव जिउविविधविधांतसौ तनको सिगारुकरि मनु  
 कौअधारकरि राषिप्यारीप्यारिकर प्यारिकरिआनसौ जोपेबिनुमानुमनुमान्तमाननी तोमा  
 निकह्योमेरोमेरीमानकरिमानसौ॥१५॥ हितकरिमानों ताकेअहितकरिमानों हितहोयजातो  
 तांसौहितकीवताइये आएहैसुपाउउविदीजेअकमाल बलिसोनेसोसलौनेतननरुकनता  
 इये कहैदयादेवतेंसताइवोईसारकरिसमज्योपैयाकमानिआहिउअताइये मावकरि  
 जैसेमनमोहनसताइयेतौनाहकेनकाहै सबसोतिनसंताइये॥१७॥ कैसीनीकाजोअकैसो सौ  
 नकैसौपौनदेषे कैसैनिकेसेतीअरुकेसौवासुफिरैफैलिये कैसेएविधौनेतनसौकैसोने  
 कहिकौनैएसीबदीतडुनिपटअसेलिए कहैदयादेवहोफहिकोमिओषेओहसोउनकोनमानोजे  
 मिआवेवेलिपैलिए प्यारीअकैमानप्यारीप्यारिकौनप्यारीओगेपरतीओपरअहोमोतीअकौमिआ  
 ११॥ बिनलइबलिवेरकीयोतयोवासवनासकोकोऊउहीकै एरफताघडपीउनहोतहै तोह  
 करोजापरोधनफिकै वारेगोपालसंतारे वनेअवहोरषवारे सदाअवनीकै धीरेअनारुअनाहिकेवो  
 रतआएवलीहकगाहजीकै॥१५॥ वांसुरीविसारोनोताअउनवसेगोकछुविधिविधियासुरीकेव  
 सकरिदीयहै आलमकहैहोअमउछपितेनमेंनतावे कानसुनिकाअसेसीतनमतयेयोफिएहै दि  
 तनधितावेतामेशुसकातिदेतिरीकिअसुरफाडकेतिगिरगिरगईहै अमेंलगीगांसीजोपेसासकक  
 आसनाहीसामरेकासामिनसौसासीओरतईहै॥१७॥ अत्पटआएसुधेवावाकीसोकहोकांदा  
 कोनेदानलीबोवतेंदानीकोकहायोहै किधौअनिमंगलकेराककेउवोषेआहु किधौयहैसैका  
 तिकोगहननुगहायोहै आवरनुगहोकेसोदानमांगोकाहाकाहाअगजीवनएउद्यममवायो  
 है देघोमाईकेसेनेताषजनसेनावउहैजानेकोअसोदामेयापाइकाहाजायोहै॥१४॥ जोपेआ  
 हुसाचैउमसुषेहोबिहारीलालजीबलिपिअेइदुयोजेतोमनतायोहै आलमगोपालओकलीजीके  
 वैकस्योपाइललिताजूआनिमाडरीलेसुषुनायोहै औरकछुपियतहाजायकेलेआउबलिआव  
 राधरातलौसजायोमेंअमायोहै वावाकीसौकलो कौनकैसौनबोलागउहै तारीदेहैसहीहमकाफ  
 डहकायोहै॥१५॥ धरकनियहैधेसुरहै अऊफेलिपेलिदेष्पाहुमवेलीबेलमनअबिलाइवो सुनोरफ  
 नाधसवअपामतरवरतकिस्मसुकहैकोअअपामसुंदरपजाइवो ग्यालनिगवारनिहैकाहावनषअजेहै  
 ब्रिजहिमोवैविअजनाअककोगाइवो ब्रिजआहिजायेब्रिजनाअकेबियोअअकअकेवियोअअमको  
 नसुषगाइवो॥१६॥ डरियेहनतैजितहिंहरिहै नितुजैपरपाटनुषोलउहै अतिईतरुहैइतराइवलेऊ  
 निआहिधितैतनुजोलउहै कविआलमओरतोआसुरहैसपिदेघोइतैपरुवोलउहै बलरीमवलासौ

नै  
 १७॥



मज्जनमदरसविनहि प्रांनरहितनहीधीरा॥१२॥ मनवक्कमकरिरावरे उआगीरमहारज ॥ १३ ॥ सु तिसा  
रेडंक्रमवसि स लेसोपियोकाज्जा॥१४॥ समाचारइकजानियो सुलतिनहादि नराति इतोनकघापडित  
मिलित करततिलारीवात॥१५॥ उमतेकागदनीलिषी समतोउमकोवाहि कलपहइ समजोतियो वा  
वेउमरी ज्ञासा॥१६॥ उमतोच्यति हि सुदरो सबदधि सरताज तायेअपनेबिरुकी बनेनिबाहेजाज॥१७॥  
धनजो वनअरुईसता रहैनेएकहीठोर तायेअभपनेमिन्नकी सदासुक रियेगोर॥१८॥ सतपदसज्जन  
नरबले मिलिकाहाकेसंग ताकोसेकटजोपरे प्रस्वअपनाअग॥१९॥ बरितवातालिषतनबने घोरकहल  
नजाय जैसैसुतकहतलवि मनमैपिउसुराहा॥२०॥ बिनचंदनबनबनफिरत मिलतनरुषदसुवासा  
आफधउरवहुबन देषलरोतउदासा॥२१॥ जिहिसुरलीकीकंकपरि गिरवदसाषातोउ सोअपनोसाई  
सदा करिहैसाबोवाजा॥२२॥ जिनजगकाबिनतीसुनी वडिधाएगुराज सोअरणकरिहैप्रसु रुषसक  
उमनकाजा॥२३॥ निजध्रुवदीनोअवलपद अजबनेताकोप्रेम निशेसोप्रहराषिहै अपनेमनकोनेम॥२४॥  
कंसपञ्चास्यमंवेथे रंवनजागीवार वाचोअपनेचित्तको करिहैसोकरतारा॥२५॥ पानीपरिपाधरतरे जे  
मोरावनराज निशेकरिकैराषिहैसोप्रसुअपनीजाज॥२६॥ जिनकवजाकमनीकरी कुसीमास्योअरि को  
टिकलपुजा चित्तकीसोकरिहै निरधारा॥२७॥ जिनप्रल्हादुधकारसुनि अंतकीयोबेदुक सोनिअतकनका  
मका सुकैनहैअनुक॥२८॥ जिनपतिराषीइपदी करिकैधरमसहाय सोअपनोपनराषिहै चित्तकषहि मि  
तया॥२९॥ तेइललेनवनिधिदई कीयोसुदामाईसु अपनीधितामदिहै जगसाषीजगदीसा॥३०॥ अजामे  
लिअनकोअधम कीनेअतिकेइनीत सोप्रसुबेगेमदिहै अपनेचित्तकीविता॥३१॥ जिनपतराषापोठवनदई  
वनीअनलक यहैतरोसोराषिमन रहियोसदानिसंका॥३२॥ कैसैपाउधारेआचुरावरेहोइहिमोरिअनता  
सिधरि किवसतइहिपोरिहो ग्वारकाकगोपकें धरेहो सबअजाआनिओअनोनजा नोउमसबहकैअरुहो  
आलमसुकविमेरेमयाकरिआनिबेवेचित्तअचुरायलीनो निपटवउरहो निकटवसउउमअेसीनिउराइ  
गई अवहमजांतकाकृनिपटनिवुरहो॥३३॥ मायाकरिवितैकै चित्तयोरलियोवाहिवाहि हिउकरिवितयोसा  
यहै सोच निउहै आलमकहैहो परवसमेअुवासी तिज्ञानेसकोनवाइ निरावासरवक्रिउहै देषटक  
जागे अनदेषेपलकोनलागे देषेअनदेषेकीं घेकींनेनानिमषरहउहै सयाउमेकाकृजिकैआंनकी  
नचित्ताहमदेषेकंडमितअनदेषेकंडमितहै॥३४॥ जीवनकेजोरजगजानतिहैतिनकरुनेनधितयेतो  
तेरोकाहागे धटिजाइगो अंगअंगआलमरंगनाबिचित्रिदेषिदेरि किनजाइकासुकालमारिजाइगो सीम  
सीसवारिआलीगनतनओरकसुउरहैयकोरघुषवइऊडराइगो बालककेरुपलाल ललबीह केलगे  
स्वाम नेहनसुरतिअतिकालिइइजिइगो॥३५॥ अंगअंगधनकोतिमोतीमालाबगषातिबनमालइइधु  
सोताचीनेचीनहै दामनीकीदमकनिपितांवरवमनिशुरलीकाघोरमोरनावेरेंनदिनहै रंदावनता  
घरीफिराफिदेषेकोन कहुरीफिकोनकी मकोरफदानेबिनुहै धर नितेंवईकालेसीसधरिगिरधा  
रीहसिबोलेंमोरमेरेमाधेतोररिनुहै॥३६॥ पांनिपकोमोतीधररातजैसैनधघर तैसेइवपलइगघर

कनिघोरी है वचनस्वनञ्चौर सौहृनिअगाउजोनि सञ्जति सञ्जुफिरी कि आपताइ तोरी है आउ  
 मञ्जक विमानों उरते उतार आइ पानसे पलटिक टिअसे जानिघोरी है जो नेअंगफज्ज कि उरी जकोक  
 सावकमे जवक लजाइ पाइ पाक सीघोरी है ॥ ५॥ आउ अजवनितागई है अजवनि वनि वरु जाति व  
 िवेचन को मदियो ऊं उल करन कर लऊं उरु उरु सी सकाअनी के काबे पाबे आबे कै कै रदियो ।  
 सुकविरही मवउराई को निकाई यह और की बचाइ दी वपाइ नको गदियो कीरकोर जोरी । जोरि लाप  
 लाषतांतिन सौं मेरी जेयुपालवा वाधुपाल सुसौं कदियो ॥ ६॥ सोवति बालसुती एहि मंदिर गावलि लाज  
 सुजो लयुजागे अरु सने उविआइ वही बलि मीयो मृत्यो जितही तितनुगे वनी प्रह्लादगुनेनी की ना एसा  
 भिसभिसौं कहिके अउरगे नागनि सी करले रसो नाग रुगा रुरी सौंगरु रधु लजे ॥ ७॥ विरह वसंत  
 यह अंतक सौं कंत विरुअंतक की दशा आली जियनियुराति है राती राती पाती विनुवाती सी वरु न ला  
 गी पाती सुन आवे काम छाती बदे द्यात दे ले ले आली चोरि डरे फली अनफली वेली तलि फिरे आलि  
 ए नई सुरजाति है डरा डरा रहे हरा धर धरी कहे हरी हरी वेली दे धे मरी मरी जाति है ॥ ८॥ चितकरे वि  
 तयो तो वितवो स्यो हित करि हित करि चितयो तो यह सो वनित दे देषे टक लंगे अन देषे पल को न ल  
 गे देषे ने नानि मषन र हित है सुषी हो सुउमे का कृआं न की न विता ह्म देषे कृ उषित अन देषे मं ड  
 षित है ॥ ९॥ इतो तलो सुपष ऊपयपे न ऊनो तलो सुतो तलोगे लपे न पल संग करिए अत लकी लप  
 ओ दपटना हरकी तली कपटी के पे कट तें डरि सुते डरिए यह जगजीवन परम धरु धार वदे परध  
 रजाय करि रस सौं न करिए हरि मानिली जेपे न नीव सौं न वाइकी जे सरव सदी जे मूत परव सना  
 परिण ॥ १०॥ सुततर नदी रिपे जोपिक अंब मो होरु पे जो मोरधन सौरु पे जो करे नित ककले अवन सु  
 ततान पे जो ज्ञानी युन ग्पान पे जो जोगी प्रभु ध्यान पे जो निपट अरु कहे वारी परमी न जो प्रवी न पे प्रवी  
 न जो करी मक वियामे मी न मे म न क बु कहे अलि मकर दपे जो पपी दा स्वाति वृं दपे जो तेरि सुपर्व दपे  
 करे जाइ कहु कहे ॥ ११॥ अवते अषियां अषियां तलगा तवते अषियां अषियां नहि लेणी एदिल वा अषि  
 यां नके ध्यानें अंशिन को निसि जात है जगे आषितो है उनको अषियां अषियां नहि सुजति आं पिके आ  
 गें आषिन के रस आषित ई वस आषिके लागे तें आं षिन लगे ॥ १२॥ हों क बदे महां वै ॥ १३॥ परदे राते प्री  
 प्रतम सुंदर आए ऊला सविला सवटे सिगटे उरकं वलगाइ लई ऊनो गदिगाटे आं न दे सो न क त र  
 नरकी है तनी दरकी अगियां मनि माने ते रपे रे मानो पीके मिले तियके दियत अंगरा विरदागत के र  
 करे ॥ १४॥ आं मसं दे सअं दे सविनां डपअं से नरी जे सं काम करके जो उरिया कर आवत ना हरी सो  
 उरियां गई वोरवराके आल मलाल बिसरी तई जो लो आया पिय धर धराके कं डू सो मं ऊच्यो  
 ऊनसे सुगए वधु टितरा कि तराके ॥ १२॥ १५॥ गरी तेरी दिषि गति

३

३

मनवो रवहरात है अथवा को मोटमा फिनेनन सौ चोत्करै जाके लगे सो तो जो टपोट है जाके सोने  
 सो सुधार सारे अभिसे अथरे तारे कावे त वागान के निसान से काहात है कंबु कि सो कसे गढे उतेपो रि  
 जे सो गढे पु त क्व दे भे गढे प्रांत अकलां त है ॥ १६ ॥ मोलो सु कि वार उमको है एती वर हरिनां मे है रुमा  
 रो व सो कां न न प हर के मा धो हो मां न नी तो का के का के मा धे ता मि मो हने हो मो हनी फिरो मंत्र उ प वार मे  
 रा गी हो रंगी ली ज उ को ऊ द्य ता पा स रोगी हो ब वी ली ज उ ये वे सु प तार मे नाय क दे न मरी तो री चो क्त  
 न ला दे जा य मे हो ध न र सो म प्यारी वर भो च्च हार ने ॥ १७ ॥ च प लान व म क की च म क ह धियार न की वो उ  
 त न मो र वं दी स व न स मा ज के जा रा त हा ग ज त न वा ज त न द मा मां दी ह दिन न दि ष ह दे तर हे मारे  
 ला ज के च ल व ल च द सु धी सां व रे स षा पें वे ग सु ष का ज के सो दा स औ र सु ष सा जि के वृ धि र प व  
 न उ रं ग नि ग ग न ध न ग जि त वा ह त फि र त वं द जो धा त म रा ज के ॥ १८ ॥ चित के वि नो द नि त कर ते अ  
 तं न व हि औ व का हि त र्दे त्ते उ ड ग र मे गे ह के नि क से र सा उ दे ऊ नें न ति छि पा य प ह नो ते ग ज को री ग ति  
 उ त ही को ल ह के च ह के क ह के वित उ म ह्यो र ह्यो न ज ह र ह्ये प रं ता रि हे लु उं ने जो क दे ह के उ म भि य  
 उ है के से हो त है व द्वा व ही पें जां न परे स हि आ सु स म क स ग ह सो ॥ १९ ॥ कि धौ क कानि क ल क क लानि  
 धि को है क ल कि धौ न र्द कं द क ली अ व सी है गे ऊ ल सो का वि रु प क व न र्ता र वि वि धि वा य र म द न पें ले  
 क सो र्द क सी है कि धौ अ ल के ली सी वा है वा य पर स कि धौ सो पी लु प सो ऊ ते रे र स र सी है उ र उ र मे सु सु  
 नि य उ या ही उ र व सी सो न उ र व सी मे रे उ हे उ र व सी है ॥ २० ॥ अ ज क सं ता रे कि न क लो गें उ कारि तो नो  
 अ रे नि र द ह्नुं तो नें क उ रि रे प्रा न त के प्रा न अ ति वि न ही नि द्वां न थ न गान तां न आ नि वि न ती को कां न ध रि  
 दे चि क नी धि तो नि धि वी ते नें क क धो री म उ य द उ द र त इ त नें क ड र व रि रे जी व न के जी व सु नि स्यां म उ  
 म प्यारे ला उ क व लं तो च ले कं द मारी सु धि करि रे व ॥ सो ता को स द न त मु म द न प्र वे स कां तो वा हे व द न के  
 आ गे वि धि ला ग त स हे न दे दे ष्या ति या के सु धि बु धि न र ह त का के अ सी न व ल के न व जो व न ल हे उ हे को  
 हे र ति रां नी का हा को कि ला की वां नी सो है ता गि व त प्रां नी आ नी जा के द न हे उ है का वो के अ न द सु ध जी  
 वो के उ ग नि लो गे दा वो के द र स मे है ध र्मे को द ह ल है ॥ २१ ॥ सो ता को स द न वा उ कि क सो व द न तां मे  
 वा सि है म द न सु थो स क ध रं उ है अ रु न प्र ध र प के है सु ष द्या प क्त ब ह स नि सु जा इ जो ति ने प्र ति न  
 प स रि है अ गी वि द क व धौ क पा के या के इ ग नि के ती व नि क ल धि त रि मे रो ड क ह रि है क है र्द स व  
 ग सी स वै लिक न क की सी म रं ग रं मे लि त्तु ल के र डि क व क रि है ॥ २२ ॥

३

दिणः ॥ उंनमः ॥ श्रीगुरुस्योत्तमः अक्षरीकविकेसोदासकृत् रसिकप्रियालिप्यते ॥ १ ॥  
 एकरदनगजवदनसदनबुद्धिमदनकदनसुत गवरितंदेआतंदकंदजगवंदुवंद  
 सुत सुखदायकसुकृतिगतनायक २ पलयायकघायकदरिद्रसवलायक २  
 उरुगुणअनंततगवंततवंतगतिवंतसर्वतयहरन जयकेसवदासनिवासनि  
 धि लंबोदरेअसरनसरना ॥ १ ॥ श्रीवृषतानुक्रमरिदेतशंगारेरुप्रतये वासंदा  
 सरसंहरेमातबंधनकरुनामये केसीप्रतिश्रुतिरुई वीरमास्योवसासुर तयेदा  
 वानलपांतपाउवीतसंबकीउर अतिअहुतेवंविंविरेविमति शान्तिसंततसोविंवि  
 तं कहिकेसर्वसेवजंरसिकनेवरसमै ब्रह्मराजानितांशा नदीवितव इतीरंतहां त  
 रवउंगारन्य नगरओरठौबजवस्यो धरतीतलेमेंधम्य ३ आश्रमभ्यारवसेतहां  
 वारिवर्णसुवर्षे तंकर्म उपंतपविद्यावेदविधि सवैवैधनेधर्म ४ अपनेरध  
 मंतहां वसेसदासुपकारि जासुदैसंविदेसके रहेसंबेन्यपहरि ५ न्योविरा  
 विंविवारितह न्यमनेमधकरसाहि गहरिवारिकोसीसुरवि ऊलमेंरुनज  
 सुजाहि ॥ ६ ॥ ताकौपुत्रप्रसिहमदि मंरुनडुलहरांम इंडजीतताकौ अनुज सकल  
 धर्मकोधाम ७ दानीताहिनृसिंहज्ज तनमतरनजयसिद्धि दितकोलठिमनरोमा  
 जिऊं वदीराजसौ वृद्धि ८ तिनकविकेसोदाससौ कीयोधर्मसांनेह सवसुप्रदे  
 केयोंकह्यो रसिकप्रियाकरिदेऊ ९ संवतसोरसहवरस वीतेअवतालीस

१

१

गदिनेता  
 को एवि  
 मेपदयवा  
 वास ३ प.म  
 गोव संगत  
 नेहनेए  
 गालगाम

अतिकहेनाथ गीजे रतिप्रदातेतुनपति  
परिणमनतिण विषे जेमति तिका एकनक  
रि के रंभुव

कातिक सुदि की सप्तमी वारवरन रजनीस १० अतिरति गति मति एक करि विविधि  
दिवेक विलास रसिकनकोर सिक्क प्रिया कीनी के सोदास ११ ज्यो विनुनी दिन सोहि  
ये जेवन लोल विसाल त्योहि के सब सकल कवि विनुवांनी हीर साल १२ ताते क  
वि सो सो विपदि कजे सरसक विनु के सब श्याम सुजांनको सुनते होइ वस विनु  
१३ अधत वरसनांम ॥ प्रथम सिंगार सुहासरस करुनां रुई सुवीर तयवी तरे व  
घानही सांत सुअहु तधीर १४ नोकर सके ताव बज्जु तिनको तिन विचार सबको  
के सब दास कहि नायक है सिंगार १५ अधशृंगार रस लबन ॥ दोहरा ॥ रति मति क  
अति वाउरी रति पति मंत्र विचार ताहि सौं सब कहत है कविको विदशृंगार १६  
अत संयोग वियोग अरु है सिंगार की जाति पुनि प्रचन्न प्रकास करि दोऊ है दो  
तांति १७ प्रचन्न संयोग वियोग शृंगार ॥ सो प्रचन्न संयोग कवि कहै वियोग प्रमा  
त जाने पिऊ प्रीया सषी होय ज्जुति नही समांत १८ कवित् अधप्रचन्न संयो  
ग शृंगार ॥ वनमें वृषतान ऊमारि मुरारि रमें रुविसौं रसरूप पीये कलकलित  
सुजित काम कला विपरीत स्वीरतिके लिकीये मनि सोह ति स्याम जराय जरी  
अति चोकि बलै बल चारु हीये मपरु लके फूल फुलावत के सब तांनु मनोस  
निअंक लीये १९ अधप्रकास संयोग वियोग शृंगार ॥ दोहा ॥ सो प्रकास सं  
योग अरु कहै प्रकास वियोग अपनै रचितमें जानै सगरो लोग ॥ २० कवित्त

मनो

केसव एक समे हरि रधिका आसन एक लसै रसतीनेः आनंदमोत्रियु आननकी-  
 इति देषत दुर्पतत्वां दृग्दीने जाल क्रीला उमेंवाल विलोकित हीतरि लोचनना  
 लनलीने सासनपीय <sup>विष्या</sup> सवासन सीय <sup>सीना</sup> जतासनमेंमलं आसनकीने २१ अघा  
 प्रायाज्जको प्रछन्न वियोगशृंगार कोरु ज्योकारतकाननिका कसुमानं जर्मकं  
 हि आवतऊनो नैक अटपटकरित आभिसु देषत हो कवको ब्रजसुतो ताहिवा  
 ले सुनिके बुपि करहे नीके हिके सव एक न हुतो कादेऊं कालकौकी जेपर पाव  
 जी जेरी जी अकिना कदेहुतो २२ प्रियाज्जको प्रकास वियोगशृंगार ॥ कविना ॥  
 सीतल समीर रासु न्वं चंद्रिका निवारु के सोदास असेंहीतो हरषहिरा उहे क  
 लनिफे लप्रारि जरि फारुयन सासु धनसांर चंदनको चारु चितचोगनो पिराउ  
 हे नीरहीन मीन मुरफा प्रजावैनी रदोपे चारके विरके कदाधीरजधरा उहे पाई  
 हेतै पीर किह्यो ही उपवारकरे आगिही कौदाधो अंग आगिही सिरा उहे २३  
 श्रीकलज्जको प्रकास वियोगशृंगार ॥ वातकूदे न सुने कठु काछत्तौ देरै नही-  
 कलकै सै जहेरो पाइ कबू नपी ये कबू के सैंबि दु अैनरु च फरकै रो करेरो क  
 लि उठी ब्रजवैठी कदा उठि आव जवे गिक हो करि मेरो जानैको माइ क हातयो  
 कांनकौ योगसंयोग वियोगकेंतेरो २४ श्रीकलनको प्रछन्न वियोगशृंगार ॥  
 केसवरु विरहो उमहीसो किं कंतय कां कके तीततयो दे वेमो हे फालके हा  
 धकिना ध किधौ उमका जके साधदयो हे मेरीसो मोहीसो मांन जवेगी रंमनु-

योगज - 1



नायकहामययोहै सावीरुहोहरिदास्योहैकाकसौंकाकहस्योकेह रायगयोहै  
 २५ योप्रकासप्रचन्तसव बरनेयोगवियोग अबनायकलज्जन्तकहो गुदआ-  
 गुदप्रयोग २६ इतीश्रीरसिकप्रीयायां प्रचन्तप्रकाससयोगधियोगवलेतो  
 नामप्रथमप्रतावा॥१॥ अधनायकलज्जना॥ देहा॥ अतिमानीत्यापीतरुनि-  
 केरलिकलनिप्रवीत तवदामीसुंदरधनी सुधिरुधिसदाकलीन २७ एगुन  
 केसवजासमें सोईनायकजांनि अनुकूलदुःख सवधृष्टकनि विविधित  
 हि वषांनि॥ २७॥ अधअनुकूललक्षण॥ प्रतिकरैनिजनारिसं परनारीप्रतिकूल-  
 केसवमनववकर्मकरि सोकहियेअनुकूल २८ अधप्रचनानुकूल॥ औरकेहा  
 सविलासनतावत साधनकोयहै सुहसतावै वातकहैमुसदानिवहैहरिकोक  
 कहो कसु सुघनपावै आसनवाससुवासनत्सुपनकेसवकौंजयहो वनिआवेमे  
 विनुपांतनुपातनकांनकसुवैरि किधौयहप्रतिकहावै॥ २९॥ प्रकासअनुकूलल  
 क्षणां॥ कवित्त केसवल्लुधेविजेवन सुधीविलोकतिकैअविलोकसदाई सुधीयवात  
 सुनेंसमुकै कहिं सु धिय वत सुधीयवातसुहाई सुधीसीहामी सुधानिधिसोमु  
 ष सोधिजई वसुधाकी सुधाई सुधेसुतावसवैसुजनी बसकैसेकीयेअतिरेढो-  
 कजाई ३० मेरेतोताहिन वंचललोवन ताहिनकेसवबानीसुहाई जांनौनत्सुपन  
 तेदकेतावनि स्थलिजमेंनहितौहचदाई तौरैजंनोवितयोहरिउरतौं घरोकरैइ  
 हितांतिजुगाई रंचकतोवउराइतचित्तनकांन तए बसकाहेतेमाई ३२

१

१

२



नेहो तम आनम न आनक पर निधान का ज्ञ सावीक हो मेरी आन का देको फराने हो वेतो  
देविका नीहा धमेरे हो ति हरि हाय उम ब्रज नाथ हाय कौन के विकाने हो ३७ अधधु  
उद्योग ॥ लाजत गारि जमारकी दुई बांनि सब त्रास देखो दोष तमान ही धृष्टक के अवा  
इस ॥ ४० ॥ प्रचल धृष्टक वित्त ॥ नेह तरे लै लै साजत ता जन कौन गने दधि उधमी गई  
मारि दये तेह सै वर रजे यर आ वत हे जनु बो ल प वा ए लजका और क हा क छे के सब जे सु  
निये व सै वें यु न वा ए मां मां प्रो ये द न की मेरी माइ को हे हरि आव हो गां वि अ वा ए ४१ मा  
न सा वा वा कर म ना विह स नि वित व ति षे ल व ल न वा उ री आ उ री आ वें गां वि वि शेषि ध  
४२ ॥ प्रका स धृष्टक वित्त ॥ सौ ह को सो व स को व नु प्रो च को मो ल उ सा क त ये क रि वारी व  
न नि वं व क ता इ इ वी स ति नै न नि के संग मो त त मो री लज करे न फ रै दि त हां नि तें आं नि  
अपे जिय जा नि के तो री नां हि त के सब साय जिने ब कि अे स नि सौ उष वे सुष को री ४३  
देहा वरनें ज क वि नाय क सै वें नाय क इ दि अ नु दार स व यु न लाय नाय का सु नि अ व  
व ज त प्र का र ४४ इ ति श्री र सि क षि या यो व उ वि धि नाय क वर्ण तो ना म दि ती य प्र जा व  
अ ध नाय का जा ति ल क ण ॥ दो हा ॥ प्र ध म प द नी वि व र्ण ती सु व ति जा ति प्र मा ण और स षि न  
ह स नी के स व दा स धु जां नि ४५ ॥ प द नी ल क ण ॥ स ह ज सु गं ध धु रू प श्रु त उ ण्ण प्रे म सु प  
दां न त नु त नु त्ति ज न रो स र ति नि धा मा न व षां नि ४६ स ल ज सु बु धि उ दार म ड हा व ता व श्रु  
वि अं ग अ म क प्र लो म अ नं ग रू प द म नि हा रि क र ग ४७ क वित्त द स न क ह त या त क रू  
से कर त जा त गु टि रु रि हा व सा व को क को श्री कारिका प न गी न गी स वा रि आ धु नी धु री  
३५ ज्ञानायक की नायका प्रवैतीन परिमाण स्वीया परकी  
या अवरु सामा न्यादि प्रमाण

१

२



नाथकालक्षण ॥ तानाथककीनाथका अथतीनपरमांत स्त्रीयापरकीया अवरु भुजितीसरीसमा-  
 न ॥ ५७ ॥ अथस्वकीया लक्षण ॥ दोहा ॥ संपतिविपति सुमरनलो सदा एक अनुहारि ताहि स्वकीय २  
 जनि यहु च्यारि शत्रु हरि ॥ ५८ ॥ मुग्धातामतेदा ॥ दोहा ॥ नवलवकतवजोवता नवलअनेग १  
 नाम अरुवोषी कविक हनुदे लज्जा प्राय सुवाम दुगा ॥ नवलवक लक्षण ॥ दोहा ॥ तासौ मुग्धा-  
 नवलवक कहत सयाने लोय दिन रहुनी उतिवढे वरनिकहे कविको र ॥ ६१ ॥ कवितां मोदि २  
 बोमोहनकी गतिको गतिहि पढो वै नकहाधौ पढेगी ॥ उपनरो जिनकी उपले दिनका देमडे अगिअ २  
 नमतेगी नेननकी गति गडवलावलके सवदा स अका सवेतंगी माईकहायदमाइगी दापति २  
 जोदि नई इहि तांतिवडेगी ॥ ६२ ॥ अथनवजोवन लषिता मुग्धा ॥ सानवजोवन लषिता मुग्धाके २  
 यहवेस बालदसानिकसै जहां जोवनको परवेस ॥ ६३ ॥ कविता ॥ केसवफलितवीरु कटीक २  
 तिलुटिनितं वरुई लंबकाली वै निसोवसंको वसुनै ननि च्छिगई गतिको वलवाली द्यौ सका २  
 धारधरोनधरो अबलै मिलि जं उमकौ वनमाली वाको अया तुतिकारनको उर आए है जोवनके म २  
 अक्ताली ॥ ६४ ॥ मुग्धानवलअनेग लक्षण ॥ दोहा ॥ नवलअनेग लोयसो मुग्धाके सवदा सघ २  
 ले बोले बालविधि हसे तसै सविलासो ॥ कविता ॥ ववलन ज्जेनाघ अवरन अं वोराघ सोवै २  
 नेऊ सारिकाऊ सुकतो मवायोऊ मंदकरोदी पउति वंद मुपदे पियउ दोरिके उराइ आउंघा २  
 रसौ दीषाओऊ मगज्मसाल बाल बास्तिरे बिना रिदेउं तावेउं रेके सव सुमो क म न ताओऊ बल २  
 के निवास अं सै ववन बिलास मुनि सोयनो सुरत ज्जेतै स्यां म सुपयाओऊ इहु लज्जा पियरिति मु ४  
 ग्धा लक्षण ॥ मुग्धा लज्जा प्राय रति वरनतक विइहरीति करे जो अतिरतिलाजसौ पतिहि वद २

वेप्रिया ॥ १०॥ दोलानेहोवे बुला छरदे हरिपाइ परे अऊउ रिझी केसवतेरि विरौतरि अंकवुझी  
 शरहे जकमेंत हीगोनी सधौचितैवेकौकेतो कियो सिरवांपिउवाइ अंगु वतिवोमी मैतरिखिता  
 तथैवितएनरही गदिनेनजिजाजनिगोनी ॥ ११॥ सुगधाकोसयना देहा ॥ सुगधासो शरहेनसु  
 पियसंग सुनेजं सुजांत जौ कौतं सोवे सुधी सुधनदीसमांता ॥ १२॥ कविता ॥ पाइपरैम सुह  
 सुहं सुह सुह करै पलिकापरि पाइ धस्यो सयतीने सोइगइ कहिके मवकेसें जं कोरिदि कोरि  
 कसौ हनिकोने साह सुकै सुधै विनमें हरिमांति सवै सुपलीने एकउ सामहिकेंउ ससै सिग  
 रेइ सुगंधविदाकरिदाने ॥ १३॥ सुगधाको सुरत ॥ दोहा ॥ सुगधा सुरत करेन ही सुपनें ज सु  
 पमांति वलवलकांने होत है सुपमोनाको लनि ॥ १४॥ कविता ॥ सुपदै सपानिवा विदैकैस  
 देघाइकै पवइ कयु स्वाइ वसकाती वसवंचु है कोमलमृणालिका श्री मद्धिकाफी मालिकास  
 बोलिका अगारामाहि मातुसके पखु है जानेन कितति सयो केसव सुनेको वान देषो जैनु  
 गाउ सयो कियो अखु है वित्रनी अरावाय ह वित्रनी विवित्रगति कहेंधो न एरसिक यामेको  
 नरसु है ॥ १५॥ सुगधाको मातु ॥ दोहा ॥ सुगधामांत करेन ही करेते सुनजं निदान योहरपा  
 इवुमाइये जौ परैपे अगम्योनु ॥ १६॥ कविता ॥ दोलैनवालवोला वतजं नपरे पलिपैतु  
 वपे मपरेयो आपनोहाइ विलोकिलोकिकली तवकेसव बुद्धिविरोधो, वोटवकी विधिरिष  
 लपी सुगंधा सुकारेपसौ कौतं सुलेषो प्रमैतं वोल सत्यानपस्यो अऊउ कयोपीयकैसं  
 ही देषो ॥ १७॥ इति सुगंधांतिद समांतं ॥ अधम्या ॥ दोना मथारुदा जोवन प्रगलत बवना  
 ति प्राइरुत मनोतवा सुरतविविनाओना ॥ १८॥ मथारुद ॥ १८॥

१  
 २  
 ३  
 ४  
 ५  
 ६  
 ७  
 ८  
 ९  
 १०  
 ११  
 १२  
 १३  
 १४  
 १५  
 १६  
 १७  
 १८

हजोवना धरन जोवन वंत ताग सुदधानरी सदा तावति है मन कंता ॥७६॥ कविता ॥ चंदके  
 सौता गता लसु कटी कमान जैसी मै नके सैपे न सरने न विलास है नसिका सरो जगधवा  
 हसे सुगंधवा ह दास्यो सेदसन के सोवी ऊरी सोल सुहै ताई अश्री श्री वा सुजमान सो उ  
 दर अरु पंकज से पाइ गति हंसकी सी जा सुहै देषा देगो पाल एक देवता मी (सोनि सरी रा  
 सब सौधै की सी वा सुहै ॥७७॥ मध्या प्रगल सववना ॥ दोहा ॥ ववन प्रगल जां नि ति हि व  
 रने के सो दास ववन नि मां हि उरां हनो देई दिवा या वै चास ॥७८॥ कविता ॥ कां न्त लो  
 सले दग लो ग सल है हो नै न नि करंग रागे जो नत हो सब ही नु म जो नत आ प्र से के सब ला  
 लं व लो गे जा जं न ही अहे जा जं व ले हरि जा त जितै दिन ही वनि वगे देषिक हर दे धोष पर उ  
 तरे के सें देषिकें देष जं अगे ॥७९॥ प्राडर्चु त मनो त वा मथा ॥ दोहा ॥ प्राडर्चु त मनो त वा  
 मथा क लै व पां ति त न मन तृषित सो ति जै के सब कां म क लां नि ॥८०॥ कविता ॥ आ जू मे दे  
 पा लै गो प सु ता शक हो श नै श्री अहार का जाई देषत ही र ही अति दे हकी देष तै और न  
 देषी सु हाई एक ही बंक बिलोक न ऊपर वारो विलोक ति लोक निकाई के सब दा सका  
 जानि धिसो वरु डुकी एका मुकि मेरो क लाई ॥८१॥ विवित्र सुरता मध्या लक्षण ॥ दोहा  
 अति विवित्र सुरता सु तो जा को सुरत विवित्र वरनत कवि ऊ उ ऊ क वि न सुरत सु छे वो मि  
 ३ ॥८२॥ सोर हई शृंगारि श्रुत सोर ल सुरत समां न बुद्धि विवेक बल समझियौ के सवरा  
 इ सु ज्ञां त ॥८३॥ कविता ॥ प्रथम व सकल सु वि मं जन अ म ल वा स जा व क सु दे म के म पा म  
 को सु ध वि वो अंग रा ग लु प न वि वि ध सु म वा स रा ग क ल ल लो ल लो व न नि ह रि वो बो ल न ह  
 म न धित वा डरी बलि न वा रु फ ल र प्रति प्रति ब्र उ प्रति पार वो के सो दा म विला स क रि जं

ऊँ अरिं संधे इह विधि सौर दक्षिण गारनि सिंगारि वी ॥ ६५ ॥ अक्षय्ये को धौ लिख्यता ॥ के विं ॥ के लौ  
 दा सं सविला सं मंदहा सं सुत अचलोक नि अलापनिको आनंद अयो रू है वहिरंत सो मी  
 अरु अंतरतया त बुनिरति विपरीति नको वि विधि विचारु है वृत्ति जात लां ऊछ छं त प्रनं सु  
 दे अके सु वृत्ति जा उ छं स व मिर उ सिंगारु है रुजि उ वेर ति रुज नि में सु ति ष ग सो ई तौ सु  
 रत रुषि और विवहार है ॥ ६५ ॥ इ हा ॥ आ लिंग दु खं वन पर सु मर्दन न पर द दो न अधर पां त  
 सौं जो नि वो बहिर ति आ त सु जां नि ॥ ६६ ॥ इ ति व हिर ता वि ति ति र्य क स न्यु प वि मु प अध उ र ध  
 उं ता न् ता त अंतर त स मु फि यो के स स क ल सु जां न ॥ ६७ ॥ अ ध ल क को यै ॥ अ ध म ध्या को चुर  
 तां त क वि ज्ञा ॥ सुं दर ता प य मा व क जा व क पा क हि अ न ध र्य द न ए है वं द न चि त्र सु धा वि फ र्णा  
 न् इ ति सं वै म नि हा रा ए है के स व नै न नि नी द म र्द म दि रा म द घं म त मो ह म ए के लि कै ना ग र ना  
 ग रि प्रा त उ आ ग र सा ग र वे प त ए है ॥ ६८ ॥ म ध्या ति दं ॥ धी रा अ धी रा धी रा ति दं ॥ अ छं ॥ सि ग री मा  
 ध्या ती न वि धि धी रा और अ धी र धी रा धी रा ता अ री व र न त है क वि धी र ६९ ॥ धी रा वो ले व क वि  
 धि वा न वि प म अ धी र पा य म्रौ दे इ उ रां ह नो सा धी रा न अ धी र ॥ ७० ॥ म ध्या धी रा क वि ज्ञा ज्यो  
 ज्यो ज्वा ला स नो के स व दा स विला स नि वा स त हि अ ये अ व रे यो सौं सौं ब टो उ र कं प क बुं च म र्त  
 त त यो कि थो सा त वि श्रे यो सु धि त हो त म्प यी व र दे मे रे ने न स रो ज नि सा बुं के ले यो ने ज्जु क चो  
 मु प मो ह न को अ रि विं द सो है सु तो चं द सो दि यो ॥ ७१ ॥ म ध्या धी रा क वि ज्ञा ॥ ता त को सो गा त स  
 व व ल ब ल वी र को म्रौ मा उ को सो मु प म हा मो ह म न ता यो है व ल सो अ व ल सी ल अ नि लो व ल वि  
 त् ज ल सो अ म ल ते ज ते ज को म्रौ ग यो है के सो दा स वं स त अ का म के प्र का म्र यो प ना रि न र य  
 र २ घे रो घं ता ग यो है र ति का म्रौ र ति ता घ रू प्र र ति ना व को म्रौ र ई का म्रौ

के मो



ए२॥ मध्याधीरा अधीरा कवित्रा ॥ का कतले सुतली समी ॥ जाई हो मोह समुद्र मे सो उमरु हो के सब  
 आपनो मानिक सो मन रंघि पस ए दे कौने ल ए हे हो नैन नि हो मिल बो करी ये अब वेन निके मिल  
 बे सुं र हे हो जाई क ल्यो उम जै सो स धानि सो ए हो गुपाल मे अ से क हे हो ॥ ए३ ॥ इति मध्या तेदा ॥  
 अध प्रोदानां मतेदा ॥ सुन जं सक लर सको विदा चित्र वित्त मा जाति अति आक्रमति नायका  
 लघ्यायति सुततांति ॥ ए४ ॥ सो सम स्तर सको विदा को विदु क र त व धानि जो सै स ता वै प्रति मा  
 हि ता ही र सकी दांति ॥ ए५ ॥ कवित्रा ॥ देषा है गोपाल एक गोपिका अ नु प रू प सो ते सो स लौ ती  
 वा सु सौं ध श्ते स वाई है सो ता कै सु ताई अब ता रू ती यो ध न श्पाम कि धौं य ह दाम नि श्रौं काम  
 ती कै आई है देवा को ऊदां नवी मान वान होई अ सी मान हो व ता व ते द ता र ती प दाई है के सो  
 दा स सब सु प सा धन की सिद्धि य ह मे रे जां न मे न हो श्रौं मे न का की जाई है ॥ ए६ ॥ अध वित्त मा उ  
 हा ॥ अति विध्वि त्त वित्त म सदा प्रो दा प्र ग ट व धानि जा को दी प ति इ ति का पि य हि मि ला वै अ  
 नि ॥ ए७ ॥ कवित्रा ॥ है गति मं द मनो ह र के स व आ नं द कं द हि ए उ म ए हें तो ह वि जा म्नि को मा  
 उ हा स न अं ग सु वा स नि ग ढे ग हे हें बं क बि लो क नि को अ व लो कि सु मा र हे नं द ऊ मा र र हे हें  
 ए इ तो कां म के बा ण क दा व ति क ल न के वि धि लु लिक हे हें ॥ ए८ ॥ आ क्राम ति ना य का प्रो दा ॥ दि ल  
 सो आ क्राम ति ना य का प्रो दा क हि दे चित्त मन सा वा वा क र्म ना जिन व स की नो मि त्त ॥ ए९ ॥ क  
 वि त्त तो हित गा इ व जा व त ना व त वा र अ ने क सिं गार बना यो जा कं मे अ न को अ नि बो वा ध्यो  
 वे ते रो त उ न त यो म त ला यो ता वे सो अं क र्मि बो क रि तां म नि ता पा व के ब स के पि य पा यो कां क्त यो सु  
 धो सु वा हित तां हि सो वा हित हे अब पा य ल गा यो ॥ ए१० ॥ उ व धा य ति प्रो हा सो ल व धा य ति ना  
 य का के स व प्र ग ट प्र मी न का नि क र्म प्र ति क र्त स वै प्र सु ता प्र सु हि स मां न ॥ ए११ ॥ कवित्रा ॥  
 आ जि वि रा जित हे क हि के स व श्री वृ ष तान ऊ मा रि क का ई वा नि वि रं धि व हि क म को म र्खी जो

कवीसोत्रधुनिवर्तई - अगुविलोके तिलोकमेअसीकोतारिनिहारिननरिनवई मरतिवतस्तिगार  
 समीपुसिगारकिवैअउसुदरतई ॥१७॥ प्रोटाधीरातेद ॥ आदरमादिअनादरदि प्रगतकैरिदि  
 तदोइ आकृतिआउउसवदि प्रोटाधीरदिइ ॥१८॥ प्रोटासादराधीराकविता ॥ आवतदेषिउए-  
 उविआगेकैकेसवआउहीआसनदीनो अउहीपायपपारिधसोअउयानकोताअनआनिता-  
 वीनो ॥ आशवनायकेआगेधरीतवहीकरकोमलयजचुछीनो बाहगहीहरिअमैकचादसि  
 भेतीएतोअपराधनकीनो ॥१९॥ प्रोटाधीराआकृतिप्रमा ॥ चितवोवितवाएदसाएहमोहावाला  
 एवेवोतो रहोनितमोने सौहअनेकतेआवऊअककरोरतिकोप्रतिरेनकानिने धवाएतपाऊवा-  
 नाइधिवीजचुआइहोआजिहिकेसवगौने मोहनकेमनकोमोहनीसुकहोयहधासिपईसिप-  
 कोनो ॥२०॥ कविताहितकैइतदेष्योअदेष्योसवैहितवातसुनोसुसुनीसबदीहमोनुकीयोअप-  
 मानकरोतो यहतोफचुओरअवदेसबहीअरुसोएकरोवकरीसुतहीहै ससुजाइकदोममके  
 हमकेसवऊवसवैहमसोअकहोहै माउकायोअपमानकरोतोहमोअवलोहअवेकीरहीहै १७  
 प्रोटाअधीरा ॥ दोहा ॥ पतिकोअपराधगति हितनकहेहिनमानि कछअधीराप्रोदतिदि केसबदा  
 ससुजानि ॥ ६ ॥ कविता ॥ हे सुपपाइसियाइरही सिपसापेनएसिपनऊसिपाई मवज्जतेवेइपाइ  
 ऊदेष्योपैकेसवकैसैऊऊटेवनआई दइदएविनुसाधनिऊसपिठरतिकेवाषलकीपलताई दष-  
 ऊदमककाउटकोटिमितेनघटे विषकीविपताई ॥ ७ ॥ प्रोटाधीराअधीरादोहा ॥ सुषरुपीवाताक  
 रे जीयमेपीयकीरुप वीराधीराजानीवै जैसीमोठीऊपा ॥ ८ ॥ कविता ॥ होमनेमतेनजोउकहुअ  
 वयफिऊवोलिवोवोउहि सौहै केसवओरनिओरसरासरेओरसवादसवेहममौ ॥ ९ ॥  
 एकचारसकोवन आरमनेवनआरसिमौहें आएअमैहिनाअप्रोआअ

कति

स्त्रिकासौ है ॥ एष प्रति स्वकीया ॥ अथ परकीया ॥ दोहा सुपुरुषीवातौ करै सब तै परपर सिद्ध जग  
 ताकी प्रिया जहोइ परकीया तासौ कहै परम सुखने लोइ ॥ १० ॥ परकीयानां मतेद ॥ दोहा ॥ परकी  
 यार्थिताति कति ऊहा एक अउठ जिनही देपिसुनि होत सब संत तमूठ अमूठ ॥ ११ ॥ ऊहा अउठ डाल  
 दाण ॥ दोहा ॥ ऊहा होइ विवाहिता अविवाहिता अउठ तिनके कहै विलास सब गूढ अगूढ ॥ १२ ॥ ऊ  
 हा कविता ॥ बैठी सपनी तिकासौ है सता सब हीके सुनेन नि मां हिवसै दुफै तें वात बनाइ कहै मन्ही  
 मनके सब दास हसै खेलति है इत खेलतै पिय धित धिला वतियौ विलसै कोऊ जाने नही जिगरी  
 रकरै कितकै हरिआनन अतिकसै ॥ १३ ॥ अऊहा परकीया कविता ॥ बैठी जूती ब्रज नारीना  
 में वन श्री वृषतापे तु सुता बरजागी खेलत है लषी वो परिवारु रजई तिहि खेलषरी अदुरागी  
 १४ पावेंते के सब बोडि उठे सुनिके धित वाउरी आउरी जागी जानीत काल कवै हकै सुरमाग  
 हा सरसी दिगतागी ॥ १४ ॥ अथ ऊहा अऊहा विलास प्रबन्ध ॥ काकसौ न कहै कलं वात अउठ  
 गूढ लषी सहलीसौ कहै ऊहा अउठ अगूठ ॥ १५ ॥ के सवराइ कीसौ हककै कबु एकनि आउ मे होर  
 परी एक वितें सुसक्यात इतें उत वात कहै बज्र जाइ जरी लोवन चारु वकोर निमास बज्र दि सतो  
 अउरी पसरी लषी आज गई जूती गोकलजं सबजु मिलइ जको वां द करी ॥ १६ ॥ दोहा ॥ ऊ गनाप  
 ककी नायका बरनी के सब दास तिनके दरसनर फिकजं सुनजं प्रबन्ध प्रकास ॥ १७ ॥ इति रसि  
 का प्रीया वाहती यप्रता वा ॥ १८ ॥ अथ दरसना ॥ दोहा ॥ दोऊ दरसने दरसने होइ सकां मठ सरीर द  
 रसन चारि प्रकारको वरनत है कविधर ॥ १९ ॥ दरसननां मतेद ॥ एक जो प्रगत है देषीये छजे  
 रसन चित्र राजी सुपने देषीये बोधी अवन निमित्त ॥ २० ॥ साक्षात् दरसन ॥ दोहा ॥ नाद रूप उति  
 देहकी गई सुनत ही जाहि को जाने कै हे कहै के सब देषे ताहि ॥ २१ ॥ प्रियाऊ को प्रबन्ध दरसन क

वि॥ केसवथीवृषसांतंकारिंमंगारिंमंगार सवैसरिसे हासविलासधितहरितामकत्पौरति  
 नायक सायकसेवसे कचऊंहरिदेपत दुर्धनेमेंउपमासुषकी सुपमापरसे अनुशानदकं  
 दृसंवरनचद उस्वारविमफलमेदरमै॥२१॥ प्रियाऊकोसाकातदरमै॥ कविता॥ महिलेतजिआ १  
 ररुव आरसिदेपिघरीऊघसैघनसारहलि 'उनिश्रैविगुलावतिलैविकलेल अगोशेमअगोवनि-  
 कै कदिकेसवमेदजवादसोमांजेइतेपर आजेमैअजतेदे बऊरौहरिदेमोतोविषोक'अपी-  
 काकतोलेवनलागिवेहै॥२२॥ श्रीकृष्णऊकोप्रचन्तसाकातदरमन॥ कविता॥ सालगुही  
 चीनलाललटैलपटीजरमोतिनकीसुषदेती तौहिदिकोकरत आरमीलैकर आरअश्रोअतिस १  
 रसैनेनी केसवराइ उरैदरसैपरसाउपमाभतिकीअतिपैनी सरजमफलमेअश्री'माकिधका 'मंऊर  
 जांउतादिअिवेणी॥२३॥ श्रीकृष्णऊको साकातप्रकाअदरमन॥ कविता॥ एकतोऊरु उंगज  
 अलुपमतेसैमनोहरहारमहारी वित्तचलेसरुनीनिऊकोतकनेतुफिकेसववातकहारी हित  
 मोहितकीकहिआवतहै परिकौलगाहौऊरकौउकहारी अचलैदेनइलालविलोकनरीदध  
 नोंपीविलोकनहारी॥२४॥ प्रियाऊकोप्रचन्तविदरसन॥ लोचनअेविलिएइतकीमतकीमतिके १  
 यघपिनेहनहाहै सोतोकाहाकहि येकदिकेसव लाजसमुइमेइरिहहै आननआइगएअ  
 मसीकररोमउठेउठिकपगहीहै विरजमेंहरिमिअदिदेपन योअऊवीअनुवाहगहीहै २५  
 अऊकोप्रकाअविचरमन॥ कविता॥ केसोअमनेहवरा दीपकसमोइकेमे जतिहाकेध्याना-  
 तेज तमलानआएहै आपिनकेबाधेअन्तसाककी उजानीसपपानाकीकहानीरानीप्यासकोवृ  
 जाइहै एसीमेइइसुषी इंदीवरनेनीलिमैइदराकेमदिरमेंसंपतिसिधाइहै अेअेदिनअेअेह  
 गवावतिगवारिकहाचिअदेधेमिअकीमिलेकोसुषपाइहै॥२६॥ श्रीकृष्णऊकोप्रचन्तविचरमी  
 न॥ रूविवेकौंरूविवेकौंमइसुसकाइकेविलैकिलेकौंसेइंकडुकछोनपरउ

लेविनु बोलेनिके सुनेविनुहिलनिमित्तनिविनुमोहिकोसरउहे कौलपीअलोमोहिविषयइर  
 राषीनैव बिनदेषे मनकैमैधीरअधरउहे चित्रनाखिविवकीननाकेरखितये मनचित्रमेंयेचि  
 तवोयनोजरउहे ॥२७॥ श्रीकृष्णको प्रकासचित्रदरसन कवित्ता ॥ अंतरिचंगवनीसुउनिअ  
 बुनिसुउचीतनिआबीआबीअवनीनिचुविब्रमनीयहे किन्नरीनरीसुनादि पन्नगीनगी  
 ऊमारिआसुरीसुरीनिहंनिहारिनमनायहे तोगिनकीनामनीकिदेहधरेंदामनिकका  
 महाकाकांमनीनिअमीकमनीयहे चित्रऊमेचितहीबुरावतिहेकोकेसोदाअरामका  
 श्रीरमणीरमाश्रीरमनीयहे ॥२८॥ अषस्वनदरसन ॥ दोरा ॥ केसवदरसनसुफनको अगा  
 उस्योईहोइकवज्जप्रगतनजांतीयै यहेजानेसवाकोया ॥ २९ ॥ प्रियाऊकोस्वनदरसन  
 कवित्ता ॥ आउरयौउविदेरीअलीजनआउरज्योगहीयेसुगहीतौ कहोमेरांणीकाहानि  
 योतोहिहौं ह्रुतिकेअवबुफियेज्यौं नाविलगाकिधौंवेतलग्यो किलग्योउरप्रोतम जाहि  
 हरीयौ आंननश्रीकरश्रीकहिंये अक्षसोवततै अऊलाइउठीसौं ॥ ३० ॥ श्रीकृष्णजीकोख  
 प्रदरसन ॥ कवित्ता ॥ पदुनषपदवीकोषविपदपोपदीनएकोविसेउरवलीउरमेनआनवी लो  
 मझाउलोमजांनि लुलिके तिलोतमानमेंनकासमानमनमेंनकाऊमानवी जानीयेनकौनजाति  
 अबहीअगायेजातिजीवनतोजांनिहोओताहिपहचानवी वाउकलीबांती महाभावसोअवा  
 नीकिधौंकेसोदाअरतिमेरतीऊजातिजांनवी ॥ ३१ ॥ प्रियाऊकोप्रचनअवनदरसन कवित्ता ॥  
 सोहडिवाइअश्रीएकवारिककांतनिआनिबसाए जनेकोकेसवकांतनति कितहे कवनैनन  
 मांदि सिधाए लऊकेआअधरेंअवनैनमिलैमनलसोमिलए केआकतोअवक्योनिकसैराहरे  
 हिलैहिलियैह रिआए २२ प्रियाऊकोप्रकासअवनदरसन ॥ कवित्ता ॥ कोलोपीहोकरअरु  
 पका ह्रुकेहैपास केसोदाअकाओंननयनतरपीजई वारकासौमेरावारवारीहैउवासीओ

विवेकुरैलीजई वरसकमांफि यह वैसअलवेदीवीतैदेहृषपसपितिकौं अचहीनदीजई ए  
 रांलकवावरी अहिरिअेसोब्रुफतोहै नांहासौं सनेऊकीअेनाहृगतकीजई ॥३३॥ सनेकोअे  
 नूअवनदरसत लीधउहै लोकलोकलीकनउलंयाताइ सबहीरुसमुजावै तोहिसमुअंवेको-  
 वरउकहततनशकैनवृते लाजधनमीउराधि दोऊकोविदकहावैको सोवकोअंकीअंज-  
 कोअरवपविमपंधकेसोदासएककालएकेअनुधावैको उपसुपअंनरंरिअंनैमेरेमनजे  
 अंशुनीतैअी तोहिसंभिनदिपावैको ॥३४॥ कहनकोप्रकासअवनदरअनातिपटकपतकरु।  
 अेमकोअंकटकुरुवीसविसेवसीहिकरुकेअैउरअंनियै कामकोप्रहरपतु कामनीकोवर  
 यनुसवअंजानीयै किधंकेसोदासमहिमोहिनिकोहृपतहै किधौंअजवालिनकोहृपतवा  
 यांनीयै अुनतहीवृद्धोधांमु वनशकैलेअंमु राधेतेरोनामुफिउवाटमेंवमांतीयै ॥३५॥ दरमर  
 मणनरमनायके कहैपरमरमनीय प्रगटप्रमत्तावअव कदूकहैकमनीय ॥३६॥ इतिर-  
 मिकश्रीयायां प्रअनाप्रकाअदरसनांमवउअंप्रतावा ॥३७॥ अघनायकवेशवर्षनांतिनके-  
 वितकीअंतिअपि पियसुंकेहृनअ कहैअपीअंनैअेअंअनैतैअकलाइ ॥३८॥ राधिका  
 कोअपीकोववन सनेअंनै ॥ कालिकीग्यालितौअंअंअंनैअंनसंतारतिकेसवकेसैअंअंदेहै स  
 राकैअंतिउवेकवकं अरिजीउरघोकिरहीरुखिरहै कोरिविवारिशतिहै उपचारिनकेवरअं  
 सपीमेहै काअंअरोअिनमांनोतितारीविजेकनिमेविअुवीसुविसेहै ॥३९॥ कहनकोववनराधि  
 काकीअंयाअंनै ॥ प्यासकैरहीउदअं अजीअुपगहिसासकेसोदाअनीअंकीनंदानितवांनीयै  
 मतिकोम तोनलेइ अिद्याकाविदाईदेइमोमाअुकीअेइअवअुपअानीहै विसुसेलगतिगी  
 तकेलिकानपरतीत अंतिउरपाअंनअी पविपहवांनीहै तोविअुकहैकोगाधंधीरतानतके  
 अंध मोहिकोमिजावैको हाधलाअकैवाकानीहै ॥४०॥ विप्रियसौंप्रगटप्रतिकंअंजित

१

नेकरद्विउपाइ तेसविकेसवदासअव बरनौसवनिखुनाइ॥४०॥ अबचितवैपीउअनंतही ते  
 वचितवैनिरसंक जांनिबिलोकतिआपसौं अलिहिलगावेअंक॥४१॥ कवकं अतिकंरुकरै  
 आरससौंअैफाइ केसवदाअविलीअसौं वारअंततइ॥४२॥ ऊवैऊं हसिउते कहेअपीअैव  
 त अैसैमिसहीमिसप्रिया पियहिदिषावेगात४३॥ योहिपियपीयातिप्रति आरआपनाप्री  
 तिकीप्रचन प्रकाअ करि बुद्धिवलकरतसमीति॥४४॥ राधिकाकीप्रचनवेष्टा चेरिअ वितव  
 तिमुषमोरिअ काहेतेंहअतिहियेहरुवडायोहै केसोरायकाअैरुंजनांतिकहावा रअवीरापा  
 हमेरीवीर आरसुजोआयोहै अैरुअैरुतिअतिअंवलउमाउउरु उघरुअैरुआउगातुअ  
 विद्यायोहै॥ कलिअते रतिरहतिउरुफलिअसुलिअकरुतिकबुतैआरुआयोहै ४५॥ राधिक  
 काप्रकाअवेष्टा॥ मेरोअुअंअुमेंतेरी ठसीसाधिअुंमेकीवातेउअअसुकौसिरातपासफाडेहै बोते  
 रकरमेरेकहा बावतिबवीली बाती छविजाके छाइवेकौअतिलाषवाडेहै धेलनजोआइहोतोष  
 लजैसैषेलिअउकेसोराइकाअै तेंएकौनषेउकाडेहै कलिअतेरतिहै मोहिकहमेरीअुतेरतिन  
 जअजावेसेतिवैकौवाडेहै॥४६॥ अक्षरकीप्रचनवेष्टा॥ बेरिअबांधोपाग आरससौंआरअैलेअै  
 नतहिअानंती देषतअनेसेहो तोरिअरततिरुकाअमकोनपर तपाउवावरेअैअैसेहो कवकं कौन  
 बुलकिदेतचटकिसुजावोकांन मटकअैरुअुअुरीअैअंताततैसेहो वारिअकौनपरदेतमनेम  
 लामोहिगवतकबुकोकबुआजकाअकैअैहो॥४७॥ अक्षरकीप्रकाअवेष्टा॥ जालगिलांचलुगाइनि  
 देदिनतावननवावतअैअपहाउं केसवमेवकरोवसकारकहारकअैअकहांलैंगनाऊं हारिअदेह  
 रिअेअैमिलीनिमिलांऊंजोताहितौतांअुसोपाउं वाढीवेजांतीयेजायमिलौंअमअैरकरिअंका  
 रिअंउं॥४८॥ अघस्वयंउतत्वलक्षण॥ दोहा॥ जोकौंअंनमिलेकहं केसवदोऊइव तबतोअपी  
 नेआउही बुद्धिवलहोतवसीवा॥४९॥ राधिकाकीप्रचनस्वयंउतत्वलक्षण॥ बुवैजिनहाघसौंहाघ







श्री श्री कांठ संधि रवे वदानी लेख मेरे लाल रत्न मे लिखा मने ॥ ६१ ॥ धाय के घर को मिलन ॥ कविता ॥ हस  
 तेषु तेषु मंदत ई चंदे इति कहे लकलानी अरु रुत पदे ली जाल के सो दासनी दब सिअ पने रथ रिह  
 रं उ विगए बालिका सकल जाल बो रि उ गोगन सघन घन वक्रं दि सि उ वि व ले कां न्ना धा र वो लि उ वि  
 नि सि का ल आ धी रा ति अ धि क अं वे रा के से जे हो र धि का की आ धि सि ज सो इ र हो प्य रे लाल ॥ ६४ ॥ म्मु  
 नै घर को मिलन ॥ दे घत ही वि व आ ज म्मु नी वि त्र ग्रा ल वा ला रू प की सी मा ला रा धा रू प क अ न्ना ए री  
 नृ पुर के सुर नि अ न्क प रू प तां ते ले त प ग ल ल ताल दे त अ ति म न सा ए री अ से मे दि पा ई दी ती आ न क न्त  
 कं अं र कां न्ना जे से तो ए ग त ते से जा त न व ता ए री के स व क हे न परे अ ल ज स ल ज से वै ज ल जं स लो  
 य न ज ल दु से के आ ए री ॥ ६५ ॥ नि सि व्वा र को मिलन ॥ कविता ॥ एक से में सं व दे घ न गो कं ल गो पी  
 कं प ल स म्मु ह सि धा ए रा ति के आ ई व ले घ र के द स कं दि सि मे घ म हा धि र आ ए इ म से वो ल त ल म्मु  
 के न ही के स व यो वि ति मे त म वा ए अ से में स मां वि यो ग वि दा के ल ई उ र ला इ को यो म न ता ए ॥ ६६ ॥ अ  
 ति त य को मिलन ॥ जाना आ गि ला गी ह प ता न्क क न्तो न म हि दौ रिं व ज वी व दे वि कं दि सि धा य के ज हां  
 त हां सो र तारी ती र न र न रि न की स व हां को वृ ति ग र्हा ज हा य ता य के अ से मे कं अ र कां न्ना म रा  
 स आ वा रि के रा धे क्क ज ग इ और सु व ति ज ग र्हे के लो च न वि सा ल चा रु वि डु क क पो ल अं वि व पा की  
 सा मा ल लाल नी ना उ र ला ई के ॥ ६७ ॥ उं स व के मिलनुं ॥ व लं का व र स गं वि त फा रा ति अ गि क  
 वे को द्या ई व ज म्मु द रा स व रि त न सो ने सो के सो दा स ता र त ई नं क्क के मे दि रं नि म धि अ ध ऊ र ध वा  
 यो न क लो को नो सो गा व त व जा व त ना य त ना ना रू प क रि अ हा त हां उ म ग त आ नं द को यो नो सो अ  
 म्मु अ क्क लो से ज सो व त हा र धि का क्क सो ए अं ति सां वे र क्क मा ति मे न गो नो सो ॥ ६८ ॥  
 मि क न ॥ से धि नि दां न नि दा न द ए उ प वा र वि वा र का ए नि धि रा नी वे द को सा स न वा  
 क्क ता स न म्मु न हि रां ती के स व वे ग व लो व लो व ल नि दा न स ई ह प तां न की

करिकं वाकोभ्या उतकथय पीपीरांती ॥६॥ न्यातं भिम्भिके भिदना ॥ कवित्वा ॥ न्यातं कं बुलाई स्तो-  
ता द्विती प्रपत्तां कुकी जेवको जसादारोनी आनी दीमवारिकं नो जनके कुवन विता कवेको पान्ना  
तरुपरिद्रके लीगई आनं ड विचारिकं दपतरुदमितावतेको देपिताजी दारिगही व्यालशसंखे  
नाररुदरकारिकं सेतातरिअंक मनतायो करवांघो सुदके सरसंसांघो लईवे सरिऊतारिकं ॥७॥  
वनविहारको भिऊन ॥ कवित्वा ददुधिका ल्हाई कवि देनपसा ररुं आलितरो अनिकेटी ठोको  
नहीमगु वाघो जयापेठुनां वविता कनला जलपेटी वानसंतारिके द्वा सुनिंदेको ऊ जानत होय पर-  
कोनकावेरी जानत होय प्रपत्तां कुकी दे ॥ परिता हिन जानत कोनकावेरी ॥७॥ कवित्र प्रकेपको  
यं ॥ हरिरा विरामांन सरावर के त र गादेरा दावसां वा वटिए पियके सरपाग पीया मुग्गा बर-  
वा ऊतिमाल ड लून हीय कविके सबका वनिसेत कसे मवही तन वंदन पोरिकी ये निकसे  
ऊतुवार समुद्र ऊतें संग श्री पतिमानं ऊ श्री ही लीय ॥७२॥ ऊ विहारको भिऊन ॥ रिउ श्रीपमक  
प्रतिया सरके मपे लउहे यमुनां जलमें इतगो पभुता उतपे लोणा ल विराऊतिया लनिके गनमें ये  
तिरुवनहे गतिमाननकी मिलि जाय ऊ व अपने घलमें इदितो तिमती रवपरिद्रो ऊं जन हरिज हरि  
रहे विसौं ठलमें ॥७३॥ द्रो इनिधिराधारवतके वरने मिलन विओप के सबदास विलास वलं  
डुदिव लली जेऊ देपि ॥७४॥ प्रथम मिलन मलमें कहे अपनी अमति अनुसार हावता ववरनन कक  
सुनि अवव ऊत प्रकार ॥७५॥ इति श्री रसिक श्री वायां पर्यं वप्रस्ताव ॥५॥ आनन जीवन बवनत  
गि प्रगतन मनकी वाता ॥ ताहिसौं सब कदि उहे नाव कवितके तात गदु सावळु पां व प्रकारके सुनि  
अनुसां व वित्ता व न्याई स्वातिक कहु उहे वित्तवारी कविराव ॥७७॥ विनावल उने दो जिनतें ज्मा  
त अने कर स प्रगत होत अतया स तिनसां सुमति विताव कदि वरनतके मोदास ॥७८॥ सो वि  
तावके तां निके के मतदा म वपानि अवले वन वरु उनेरो उदीप नुम नुमांनु ॥७९॥ जिनै वात  
इति परकी गादी ॥ और ऊत रुती तीसरी नरसो के उदितार रसमें पिरसन दूजाय कलतर सिकसिर मोर ॥८०॥ एसां  
जितनी नायना वरनी मति अनुहार के सबदास वपानोय सुनि वल आंच प्रकार ॥८१॥

नु अंवलं वयंते सौत्रं वलं वेन जाति जिनेतें दंपति होति हे सो अद्य पर्यं प्रति (१६) ॥ अंवलं वन स्था ॥  
 नैने वैर्णो ॥ दंपति जो व बरु पजा तिल च न चत स प्री जतु को किल कलित व संत फल फल दल अंथि  
 अपवन जल वर जल चत अमल क मल क मा ज क म दारु र चात क मोर स सद्य त कित धनु श्री  
 सुद अं वेर सुत्त से ज द्वा प्र सो गंध गृह पां न मां त परि धां नू मनि न व न त्य ते द्वा यो ना द्वि स व अ व न न व  
 लके स न व र न ॥ १७ ॥ उद्य पत्तां म फ घ त ॥ अ व लो क ति आ ला प ड ती परि रं त न न ख दं त सु व ना दि उ द  
 प्र वै म र्द त पर स प्र मो न ॥ १८ ॥ अ व लो क ति आ ला प ड ती परि रं त न न ख दं त सु व ना दि उ द  
 सौ अ व ता व स व दंप ति प्र ति प्र धां व ॥ १९ ॥ स्था यी ता वं दो ॥ र ति सु हा स अ ति सो क ड ति क्रो ध उ  
 व ह जां ति त य निं दा वि स म य स द्वा स्था यि ता व व यां ति ॥ २० ॥ सा त्कि क ता व दो स्त त स्वे द रो मा  
 व सु र तं ग कं प वै व र्ण न श्र क प्र ला प सो ए स वि ता व आ व सु त व न र्ण ॥ २१ ॥ ता व जो स व ही र स न मे उ  
 ज्त के स व अ ह वि ना नि अ प्र ति न सो क ह त वि ध न वारी क खि रा य ॥ २२ ॥ वि त्त वारी ता व ल द्वा णो ॥ दो  
 हा नि र्वे द्य ला ति शं का त धा आ ल स दे न सु मो ह स्म ति ह ति व्री णा व प ल ता अ म द म धि ना को ह २३ ॥  
 गर् व अ ह पे अ वि सु ड ति नि द्वा नी द वि धा द ज रु ता उ कं वा म दि न स्व प्र प्र वो ध वि वा द ॥ २४ ॥ अ प म  
 मारि म ति उ प्र ता त्रा स स क वि अ ति वा धि उ न मा द क म द म द न त य आ धि वा रु सु म मा धि ॥ २५ ॥ अ व  
 हा व ल व नं दो हा ॥ त्रे म श्री रा था क ल को ॥ हे ता ते श गार त के ता व प्र ता व तें उ प ज त हा व धि ता व  
 अ व हा व नं मा ॥ दे जाली जाल लित म द वि त्त म वि हित वि ला स किल किं वि न वि श ति अ रु क हो वि वे क  
 प्र का स ॥ २६ ॥ मो हा यि त फ नि ऊ ह मि त बो ध का दि व ज्ज हा व अ व प नी डु दि व ल व र न त हे क वि  
 रा य ॥ २७ ॥ अ व दे ला हा व ल द्वा णो ॥ म र न प्रे म प्र ता प तें व उ त ल ग ल स मा ज सो दे ज जि हे ह र न दि  
 य रा धां श्री स ज स ज ॥ २८ ॥ प्री या लु को हे ला छ व ॥ क वि न ॥ अ व ले र  
 जं पा सि त्ते गे ल मे ली इ प ड ल म सु वा स उ व ह मि न्य वे ह का की म ति मां कि

... १६ ... १७ ... १८ ... १९ ... २० ... २१ ... २२ ... २३ ... २४ ... २५ ... २६ ... २७ ... २८ ...

ये वसुधै कुर्वन्मृतमश्नुते ॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतायां अष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥  
 एषा श्रीकृष्णकोलाहाव ॥ वैकुण्ठनाथ इति तव तौ ननु लाइके सातितलीको कलिगा  
 योमन कृत्यो विनो कति के सवकांतनरा सधलीको अधरार सप्याइ कीयो परिरं तन कुं वनके सु  
 प्रकांम कलीको हिल है श्री हरि नागर आहु हसी मनु श्री वृष सांन उलीको ॥ १५ ॥ अधली ला सव लज्ज  
 करत सो हां ली लानिको श्रीतम प्रिया वनाइ उपजतली ला हाव तिदि वरनतके मवराइ ॥ १६ ॥ प्रिया  
 प्रकौ ली ला ताव ॥ याइ निको परिबो अपमान अनेक सों के स वजांन मनेवो फुवेत वीरष वाइ बो धे  
 बो विशेष बिजुं दि सिवो कि विनें वो चीर ऊचाल निऊ परिपोडवो पात ही कै पर के उठि अे वो आ  
 धिन मुं दि सिवावति राधिके ऊं ऊनतें पति ऊं ऊनतें वो ॥ १७ ॥ श्रीकृष्णको ली ला हाव ॥ जां धि मरे  
 धनमें मनु देवदि ऊं वे आवासन देष न ध्यावै नि दित गोप वरि त्रमको कहिके सव ध्यान धरै युनग  
 वै चित्रत वितमें आहु न जो अवलोकत आनंद सौ उर लावै आंगन घेर मे घर घे फि रि आंगन का  
 सरको सषायै विरमावै ॥ १८ ॥ अधल लित हाव काणै बोलति हसति विनो किवो चलन मनो हर  
 रूप जैसे तैसे बरनीये ललित हाव अरु रूप ॥ १९ ॥ प्रिया ऊको ललित हाव वर्मानं ॥ कवित की  
 मल अम ल मन विमला सा सषा साध कमला ज्यौ ली ने हाघ कमल सता लके नु उर की ध नि मु नि  
 तोरै कलि हसनके वो कि पर परे वारु वे बु आ मरा लके कवनके तार ऊं वतार नि ऊं वतार नि  
 म ऊं विलच कि जाति कटित टिवा लके हरे बोलति विनो कति हसति हरे र हरे चलति हरति  
 मन लालके ॥ २० ॥ श्रीकृष्णको ललित हाव ॥ वपलापट मोरकिरी त लसै मघवा धनु सोत वद  
 वत है मङ्गावत आवत बनु बजावत मित्रम दूर न जावति है उविदे धिर दु त्रिलोवन वात्र  
 कवितको ताप बुजावति है धन रूप मघना धन वेष सौ के सौ बने वनेतें ब्रज आवत है ॥ २१ ॥  
 अधम दूत ही वल्लभ ॥ दोहा ॥ हरवने मघनापतै मर बैठै बजावति दीनके तरुने विको ॥

तप प्रजते मद्रहावा ॥ २ ॥ प्रीयाऊको मद्रहावा ॥ त्विसों वविला प्रपतां बुकी ऊं अरि आ जिरही ऊं  
 तीधरि मानरूप मद्रविके मारकतै सुकमार नंदको ऊं मार ताहि आयोरी मनवान मार छिपुवा  
 वकिधे फिके दसिसौ है करि पायपरि के सोरायकी सोनवरही जियजजिके ताहा ममे सुयो  
 धरे न घोर धेरिदां मनि सी धाई उर लगी धन स्यां म तन त किके ॥ २ ॥ सभ मद्रको मद्रहावा ॥ मदि  
 माहिना मोहि सके न मपी चपलावल वित्त वषांत है रतिकारति क्यो कने कान कर उचित वक्र  
 लो घति ज्ञानत है अरुके सर्वे वा तक रमनीयर माऊ न मानत है प्रपतां सुताहि तम नम  
 नोहर और हीन विन आन उहै ॥ ४ ॥ अथ वित्त मद्रहावा ॥ दोहा ॥ वाक् वित्त प्रन प्रेम तें जहा रोइ  
 विपरात दरसन रसतन मनर सित गनि वित्त मेके गीत ॥ ५ ॥ प्रीयाऊको वित्त मद्रहावा ॥ दो  
 हा ॥ कतिके तत्हार लपे हिली यो कल किं कि न लेऊर सोऊर माई कर नूर धुर सोपग पौंची  
 विनां अंगी आ सुदि अंचलकी विसराई करि अंजन रंजित वाक कपो लकी यो सुन जावकने  
 ननिकार् सुनि आवत श्री बज रूषन रूपत ही उठि देयन धाई ॥ ६ ॥ श्री क ल मद्रको वित्त म  
 हाव ॥ क वित्त ॥ नंद नंदन पेलत है वन जात वनी य विचंदन कै जलकी प्रपतां बुक मारि वि-  
 लोक तिही रुचि वित्त में वित्त मकी ऊ लकी जिरि जात न पां न निषात चिरा करि पंक मके दि  
 लकै विहसी सवगोप वध हरि सौं त किलो वन मद्रि दृगंच लकी ॥ ७ ॥ अथ वित्त तिहावल ऊ  
 ण ॥ दोहा ॥ बोलन कंके समयमें बोलन देति न लाऊ विक्रम हाव वा सौं करुत के सब क वि  
 जन राजा ॥ क वित्त ॥ मेरे कहे वृहिए उत ऊ फिरि श्रीपम ज्यो हवका वद द्योगी धरि वें प्रेम स मु  
 प्रपरा एक हा एका ए कृत ज्यो निव द्योगी हों समरें सऊनी सिगरी कव सौं हरि सोह मिवा न करे  
 गी प्रियके वित्तकी चित्र सारी वटी चित्र सुतरा सी तई को लौर होंगी ॥ ८ ॥ नख को विकृत हाव  
 के सवराइ आ जिय सी प्रपतां बुक मार उरां इ नो दोनो गारा इई अरु मारि दुई  
 सौं म बुकै हित लीनो साप दुई सुप पाइ लई उर लई सुगंध चव इ नवीनो

दऊमारकबुसिरउचेतेनीवेतेकीनौ॥१०॥ अथविलासवर्षना॥ दोहा॥ मेलतबोलतदसतअरु  
धितववलतप्रकास जलधलकेसवदासकहि उपजतहावविलास॥११॥ प्रियाकेविलासहा  
व॥ चारअसोअसोअतिवातेकरि तौहनिमंविचित्रमत्तौ॥ नतेदुदनेहै जीवनतिसोचनिसको  
चनितबावलिहै दशनवमकिहीचकितचितकीनेहै मंदहासमुषवासआनवासदासकरिलीते  
कैसेकेसोराइ ध्यधपिनवीनेहै मोहनकेतनमनमोहिकेकोमेरा तटु तेरेमुखसुषहीअनंतव्रत  
लीनेदौ॥१२॥ श्रीकृष्णजुकोविलासदाव॥ जिनननिहारैतेनिहारतितिहारवैकोकाएननिहारै  
तिकेसेंजनिहारैहै॥१३॥ सुरनरनभानवकन्यतिकेप्राणपतिपतिदेवतानजकेहियनिवहारै  
है शरुविधिकेसोराइ रावरेअसेष अंगउपमानउपरजविरविपविहारैहै रूपमदमोवनमदनम  
दमोवनहै तियमदमोवनकेजीवनतिहारैहै॥१४॥ अथकलकिचितहावलबन॥ अमअति।  
लाषसगवताकोहहरषतयताव उपजतएकहीवारजह सोकिलकिचितहाव॥१५॥ कला।  
सोदाहरण॥ कलकिचितहाव॥ कविता॥ ऐसीहैगोकुलकोकुलकीजिनदखिननैनकरैअनु  
कलै धजनसेमनरजनेसे सबहारविहारउतालगिकले बोरुकोनकुकोनहिबोलैफिरै।  
विदुकेसैहिएमहिफले रूपतयेसबकेविससे अहोकाज्ञाकसौरसकौनकेतुले॥१५॥ अथ-  
राधकावा॥ कौनेरसैविरसेलषिकोनहिकापरकोपिकेतौहचदावै सुलतलाजतटकबल  
कबलसुषअवलदेईइरावै कौनकालेनबलायबलाइसौ तेरेदसेकहिमाहनिआवै ऐसी-  
बरतबहीनतई अबतोहिदईजनिवाइलगावै॥१६॥ अथविवोकहावलबन॥ रूपपेमकेगर्व  
ते कपटअनादरहोई तहउपजतविघ्नकरस यहजानेसबकोइ॥१७॥ श्रीप्रीयाजुकोविघ्न  
कहावलबन कण॥ आवतजानिकेसोइरही हरएहरिवैतेनजातिजगाई साहसकेउरमध  
धर्यो करजागतरोमकीरोकजताई नीकीपिमोवतवैकिउवीपदिवाजिउकीबतियाकहिवाई





उत्तरीकवुप्रांतिकी रीतसंघीरी ॥२५॥ अक्षय्यस्य ॥ देवतही जिन सौम अछे ॥ उनिमें तत सौक  
बोले उचारै सौ है काये जंत सौ हकी यो मनुहार परे पै न सुधे निहारे हाहाके हरि रदे त ५ न  
प्राइ परे जिन लात न मारे मरुत है सुपताहिको अंकले है कबु प्रेमके पावनि नारे ॥२६॥ अथ वी  
कहा वल ब्रह्म ॥ दोहा ॥ गृहहाव के बोध जह के सो समुद्रतकोइ तासु बोधक तावयो कस्त  
संने लोइ ॥२७॥ प्रियाया बोधक हाव ॥ वैवी जंती वृषतांत ऊमारिसधीनकी मंगली मी ॥ अ  
वीनी लैऊ मिलानों सौ कंज कं पायकें पाइ लगाय गुआलिन वीनी चंदन सौ विरक्यो बज्रचार  
पानदुयेकरु नारसतीनी चंदन वित्रकपो लनिलो पिकै अंजन आधि विदाकरि दीती ॥२८॥ अ  
सुधस्य ॥ सधिमोहन गोपसतामहि गोविंद वै वै जंतेइ तिकै धरिकै ऊरुके सवधरन वंदन  
चित मित्रध वकोरनि को हरिकै तिनकै उत्तरीकरि आनि दीयो सधीनी रज्ज्वारन येतरि  
कहेको है तेनीके निनि हरिमनो हरफेरि दीयो कलिकाकरिकै ॥२९॥ सधाराधारवनके क  
यधामतिहाव ढाग्रोके सवदासकी बविया अक विराव ॥ ३०॥ तिरसिकची यावां पष्ठ प्रत  
॥ ३१॥ अघाष्टकनायका लब्रन्ते ॥ दोहा ॥ ए सब जितनी नायका वरनी मति अचुसार के सवराय  
षानीये ते सब अघाष्ट प्रकार ॥ स्वाधीनपतिके उक्ता वासकं सज्जावोम अति संघितावषानीये  
और घण्टितानोमा ॥ ३२॥ के सव प्रोषित प्रेयसी लवधा विप्रसुआन अघनायका ए सकल अ  
सासिका सुजां न ॥ ३३॥ अथ स्वाधीनपतिके लक्षण ॥ दोहा ॥ के सव जके गुन बधो सदारहे  
संग स्वाधीनपतिका तासक जं वरनत प्रेम प्रसंग ॥ ३४॥ प्रब्रन्त स्वाधीनपतिका ॥ कविता ॥ वे  
सकजीवन जो ब्रजको अरु जीवहिते अति तातहिते वै जापर देव अदेव कुमार निवारतमा  
नवार लगावे ताहरिप उअहीरकी बेटी महावरपाइ ऊंवाइ दिवावे है तो वची सुसिंहीनी न  
अैं सैं औ रजो देषत ऊरु रखावे ॥ ३५॥ प्रकास स्वाधीनपतिका ॥ बोलीको सो पांनती हि करत

चोरिबोई भुंकरिभौतोदांमिभूरति समानीहे तेषतिवद्वेवतापपायौपतिकेसौराष्ट्रपतिनीव  
 जंतपतिदेवतावपानीहे तेरेमनोरघतागीरघरघपाठैर फोलतगेपालमेरगंगकिमापानीहे  
 सुधौकोनवानी जोतमानी सुनिमेरीसांनी उतकेनातेरी वानीविदकी सावानीहे ॥५॥ अषत्र  
 कालचन्ना ॥ काहेतेनहि आष्ट्रयौप्रातमसयीममधाम ताकोसोवतिसोचजिय केसाउक्तवाम  
 प्रबन्धउक्ता ॥ कविता ॥ किधौएककाज किधौएहंकोजिकिधौकिधौ दुयोनसपामभाज किधं  
 आनुव्रतवासरविताततै दानोतैनसोधकिधौकाकसौतयोविसेध उपजोप्रबोधकिधो उर्रा  
 वततै सुषमेनदेहकिधोमोहासौकपतनेजकिधोदेप्यामेज अतिरुरेअधराततै किधोमेरीप्रा  
 तकी प्रतितलेवकेसौराष्ट्र अजकंनंशा एमनसधौकोनवाततै ॥५॥ प्रकासउक्ता ॥ सुधिर  
 लिगइलुअए किधौकाककेसुलेई नीलतवातनपाई ताततएकिधौकेसवकालसौतेतई  
 कोऊतामनिताई आवतैहेकिधौआष्ट्रएकिधौआवदिगेसजतीसुषदुई आएननकऊ  
 मारसुपासुधौकोनविवारअवारलगई ॥४०॥ वासकसकालचन्ना ॥ दोहा ॥ वासिकसि-  
 षुहेइसो कहिकेसवसविलास धितहेरतिगृहदरत्यों पियआवनकोआसा ॥४१॥ प्रबन्ध  
 वासकसिध्या ॥ चंदनविरपवउकोमलअमलदलवलितललितलतालपतीलवंगकी केसो ॥  
 दासतामेंइरीदापकासीसिपादोरिइरावतिनीलवासइतिअंगरकी पांनपांनीपंपीपसुवास  
 मेंसवइतिजतितिवैकिश्वाहेवौपसंगकी नंदलालआगमविलोकिकुंऊजालवालगति-  
 तिहिकालतईपंजरपतंगकी ॥४२॥ प्रवासवासकसिध्या ॥ कविता ॥ तापतिहे सुषवैनसयी-  
 निसौलापदिये अतिलापनजोहे कोमलएसननेनविलासन अंगसुवासनिकेमन्मोहे म-  
 रतिवंतकिधौउरसीउलसीअतिद्वारतिमूरतिकोहे ऊंअविरा ॥ ५५ ॥  
 ऊंऊंहीमहिसे ॥ ४५ ॥ अक्षयतिसंधितालठिबौ ॥ दोहा ॥

अपमान इतो इप्रतिन विनु लहे अति संधिता वपानि ॥४३॥ प्रबन्त अति संधिता ॥ चार्यो ले जव  
बीसो तबी लाये तब बालिक सौ बो लवे कौ कत विल लावहे सौ सौ परे पाइ न तौ पां हनै पीनुता  
यो हो त कहा अक्काने मांषन सौ गाउ है के सो दा स सब बां कि कियो एव ही सौ दे उ ता ज बां कि  
जिय जिये विनु कहा जाउ है असे प्यारे पा य सतै मां न्योन मना यो तब अमी तो हि ब्रु किये जु पीवे  
पबिता त है ॥४५॥ अध प्रका स अति संधिता ॥ पाइ परे कून प्री त म तौ क दिके सब के सै कं ग वि  
न दी नी तेरा स पी सिष सी षी न ए कौ सुरो ष दिके सिष सी षी मै ला नी चंदु न वंद समीर सरो ज वरे  
इम दे लुत ई सुष ही नी ॥ में उ ल टी ज क री विधि मो क जं न्या इ न ही उ ल टी विधि को नी ॥४६॥ अध  
मं फिता ल विना ॥ दोण ॥ आव न क है आवे न ही आवे प्री त म प्रत ता सौ क हा यै ष फिता क है सो  
ष सौ वा त ॥४७॥ प्र बन्त ष फिता ॥ अधिनि जो स्फु उ न कान ति तौ सु निय त के सो रा इ जै सै उ म  
जो क म ध गा ए हो व स का वि सारि सु धि का क सौ चु त त फि रौ रु वे सी वे सी वे सी व स व डी व उ  
म वा ए हो इ रि श कर त ही दौ रि श हो पा इ ज नौ न ऊ वे र वोर जं नि जी य पा ए हो का को ध र या  
लिको क हा वे से ध न र पाम धु धु सौ फ स त प्रा त मे रे ध र आ ए हो ॥४८॥ प्र का स ष फिता ॥ आ ज  
क बु अधि यां हरि और सी मां तो म हा व र मां हि रं ग है मो ह न मो ह सी जा ग त मो हि इ ते पर मो ह न  
मो हि ल्मा है मे रा सौ मो हि सु मां त ज वे णि दि ए र स री स को री ति जा गी है मे रे वियोग के ते ज त वी  
कि धो के स व का ल के पे म प गी है ॥४९॥ अध प्रो षित प्रे य सी ल क ण ॥ दो हा ॥ ज को प्री त म दे अ  
व धि ग यो कौ न कं का ज ता कौ प्रो षित प्रे य सी क रिव र न त क वि रा ज ॥५०॥ प्र बन्त प्रो षित प्रे य  
सी ॥ के स व के सै कं ष र व ड न्य मि ल्यौ म न ता व तो ता ग त स्यो री जां नि को मा ई क हा त यो क्यो य ज  
अधिको अध क्यौ स ट स्यो री ता क सं दु न अ जो ह सि बो ल इ त क मे रो मो ह न पा इ प स्यो री का  
वं ज तै ह व ते री क वोर इ तै वि र ह न ल हो न ऊ री ॥५१॥ प्र का स प्रो षिता ॥ अधि दे आ ए उ ॥



सो है साधु त्रिकाग्रवालकी। चंद्रके समान वारु वाइ सो वटी फिरि सक सि कै ति हारे मनै नै नमको पातषी  
 का जै पयपान अरु पै जै पान प्रांन नाष आई है अज्ञानि अल बेठी वालि कालिकी ॥ ६२ ॥ प्रबन्ध गवी तिसारि  
 का ॥ कविता ॥ लालि लाली कलोरी लुरी कंजं लाल लुके कहा आगिल गाइके आचुत उके सबके सै ज्ञा  
 कै लगल मन देति न देष ज्ञाइके वेगि चलो उ वि आइ लिवा उन दोरि अके ली य हो अऊ लाइके सुने  
 ऊंगे ऊल गाउ में गो विंदु का जै गरु रत गाइ वराइके ॥ ६३ ॥ प्रकास गर्वा तिसारिका ॥ कविता ॥ चंद्र नव  
 वाइ वारु अंबर को उरहार सुमन सिं गार सो है आनंद के कंद ज्यो वारों को टिर ति नाष वी न मे वजा वै  
 मग ऊम राल साध बांन ज वंद ज्यो चोकि स्वक इ सी मोति नकी हती वली सो तै तई दी न अर विंदु इति म  
 द ज्यो तिमिर वियोग सुते लो वन वकोर फले आई अज चंद्र चंद्रा वली वली वंदु ज्यो ॥ ६४ ॥ अध प्रबन्ध का  
 मा तिसारिका ॥ कण ॥ उत्कृति उरग चंपति फल वर न नि देषति विविधि निसि वर दिसि वारिके गनति  
 नलगत सुसल धार सुनेति न फि ली गन घोष निरयोष जल धारके जानति न सुप्रन गिरत पट फाट ता  
 न कंठक अटक उर २ जो वारिके प्रेत निका सुबे नारि कौन पै तै सीष्यो यज्ञ योगको सो सार अति अ  
 र अति सारिके ॥ ६५ ॥ प्रकास का मा तिसारिका ॥ गोप बने वै ते अघा इनुके सबको तिसता अ वगा ही  
 षे लत बालके जा ल गली निमें बाल विलो किविलो किविका ही आवत जात लुगाइ चि जं दिसि धुंधल  
 में प्रल्हा निति वां ही चंद्र सो आनन का ठिक हां वली सुफित है क लु तो हिकि नां ही ॥ ६६ ॥ केसव का स  
 सुती न विधि कही सुकी या नारि परकी वा वै तां ति फनि आव अरु हारि ॥ ६७ ॥ उत्तम मध्यम अधम  
 उलि ता निर विधि जालि प्र गत ती न से सा वि ती य के सब दा स व यां ति ॥ ६८ ॥ अध उत्तम नाय का लड़ा  
 ने ॥ दी हा ॥ मान करे अप मान तै त जै मान तै मान पिय देषै सुष अति ल है ता हि उत्तमा जनि ॥ ६९ ॥  
 कविता ॥ हो इकहा अबके समुझे समुजे न त बै अब है समुजाए एक दिव कविलो कन मो हा  
 अनेक अमोल विवेक विकाए अज्ञान पयो न संता वल सु ज न मा व धि लो उ न जा ति हों पाए वा वै वना

प्ररकशकतेलेऊंमनाइंअसुणोसध्यानाप्रका॥द्वीण॥ मांनु करैलकदोषतै तोमैवज्जितं प्रा-  
 ज्ञान केसवदासवपांतीये ताहि मधुमावाम॥५१॥ कवित्त॥ रुजिऊं सुधेनही चितयोइनंकीयो-  
 लबिलालचकेतो हाहाकेहारिपरैउतिकेसवपाइपरैइरहेतो हौतोयहैतवही काधिवारति-  
 दोतोयुमानक्योयाहीहोएतो लांवालहै अरुपातरीदेह जोनेंऊवनीविधिआधिनदेतोपशदोहा॥  
 सुवैवारही वारसौं सुवेवेहीकाज ताहासोअधमासवै कदिवरनतकविराज॥५२॥ कणाक  
 दोकपइजोकाप्रसौंकोजेरीवांसेवोलऊवोलकआई फारोसोकंधतौ ओटअहैसोईमविऊं  
 लोअथकोउधसाईकेसवथैसीसघीनकोमारोसिपैकिकरै दितकोअहआई वारहीवारको  
 रुसनीवारोवहाऊंसोबुकि वियोगवसाई॥५३॥ दोहाइहि विधिनायकनायकावरनौंसहिन  
 विवेक जातकालवयतावैतै केसवजांनिअनेक॥५४॥ तजितरुनीसंबंधकी जानिमिद्वि  
 ऊराजि राधिलेईइपसुषतै ताकातियतैताजु॥ अधिकवर्णनअरु अंधगयति अंसऊऊन-  
 कोनारि तजिविधवाअरुइजिता रमियऊंरसिकविचार॥५५॥ यसंसंतोगसिंगारकीकेस  
 ववरनौराति विप्रलक्षसिंगारकी एरीतिकहैंधरिप्राति॥५६॥ इतिरसिकत्रीयाया अष्टनाय  
 कावर्णनंनमसतमप्रतावा॥५७॥ अथविप्रलक्षसिंगारलक्षणं॥दोहा॥वितुरतप्रीयप्रीतमदि  
 होत्तुरसतिद्विवोर विप्रलक्षसिंगारकाहि वरनतकविसो रमोर॥५८॥ विप्रलक्षसेदकवना-  
 विप्रलक्षसिंगारको आदिप्रकारप्रकास प्रथमधुर्वअतुरागउति करुनामांतप्रवासा॥५९॥  
 अथशर्वांतुराग॥दोहा॥ देपतहिदुतिदुंपतिहिं उपजिपरउअतुराग विवद्वैडपदेपीये मोष  
 रवअतुराग॥६०॥ प्रीयाज्जोप्रकासशर्वांतुराग॥कणा॥ केसवकेसैंनंइतिनिमविक्केगोपे-  
 रैअतिईवकजाई तादिनेंमनमेरंकोआनितईसोतईकदिक्योदिनजाई होइगलांसीजेजे २  
 आतेकलं कद्विजोनिहिउं अबरुतआई कैसैमिलैरी मिलैविनुकौरहोनेंनतिइउद्येयै-

कांन  
 धि  
 ७

रुमाई ८२ प्रियाजूको प्रबन्धसुर्वानुराग॥ कुलनदिषाउसुलकुलतिहै हरिविनु डुरिकरिमा  
 लबालबालसीलगतिहै ववरचलाउननविजनदलाउ लगेकेसवसुगंधवाउ वाईसीलगति  
 है। चंदनचढाउजिन तापसीचढतितन ऊंऊंमलाऊअंग आग्रीलगतिहै वाइवरजितवा  
 वरीहै वारैआनि वीरानषवाऊवीर विसुसी लगतिहै॥८३॥ रुमको प्रबन्धसुर्वानुराग॥ एका-  
 समेष्टपताबसुता सजनीगनेमंजनीसंग वैसी जातिउन्देचितयोतिहिरीतिसुप्रीतिहिये क-  
 हिजायनतैमी तादिनतैजगकी सुवतिनिकी लारातिकेसव तांतिअनेमी वाहिफिस्यो चितवक  
 चरुनककं नक कंइतिदेयाये आमुषकैमी॥८४॥ रुमको प्रकाससुर्वानुराग॥ तांतितलीवृ  
 षताबुललीजवतैअपीयांअपीयानिसुजोरी नौहवठाइकबुफुरपाइ बुलाइलई हसिकैव  
 सतारी केसवकालतौतादिनतैरुषिकै नविलोकजिकेतोनिदारी लालतिहै सवहीकेसिंग  
 र अंगरनिज्यो चितवंदवकेरी॥८५॥ अवलोकनिआलापतै मिलवेऊंअकलाइ होतदशदश  
 विदुमिलै केसवक्यो कहिजाय॥८६॥ अषदशदशा॥ अलिताषसुचितायन कधन स्मृतिउद्दे  
 गप्रलाप उन्मादव्याधिजफतातय मरबु होउपुनिआपु॥८७॥ अषअलिताषउऊण॥ नैनवैन  
 मनमिलिरह्यो वादेमियो सररीर कहिकेसवअलिताषयह वरनतहै कविधीर॥८८॥ रधिका-  
 को प्रबन्धअलिताष॥ सुधिबुद्धिघटीइतिदेहमिटीदिनही दिनवाहियेसी कबुकेसवआपनेपे  
 टकापीर डरावतिपेमुषकावतिसी विसस्योसुषरुषसषानिसिनीदपरीचितवाह तआडतमीग  
 योकबुगाहिं वितै बूतिबवीली सुकाहैतैमोल तिकाठतिमी॥८९॥ रधिकाको प्रकासअलिताष॥  
 जोकहोदेषे लगे दिषसाधै दिषाचैननेहीदिनहोपैहो वाहामकेसवदेषियैहो देषिसषीअवकैहो-  
 योउतिको डुरिदेषिहो देऊज्यो आउनेदेऊन देषिनदेहो देषिवैऊंवरवावतिमोहिसुहो बकला-  
 कबुदेषिदिहोहो॥९०॥ रुमको प्रबन्धअलिताष॥ वाईपरो बलिजाउमनोर आउनमी नकरोअ





कितनी किये उलिकते हि जांति परीह सिवो लनती तर तागि गर्द अब जो कित मोही वृत्तवैकी जकल  
 गी है का कृदिके सबके रुचिरुप लिलोही गोर सकी सो उवाकी सो तोहि कि वार लगी कदि मेरी सो कोरि  
 ॥२६॥ सख को प्रकास प्रताप ॥ मोहन मराविका सुहा सध नसार को सो वा सु सु परुप का सीरे पा अबदा  
 त है के सब दास वैनी तो त्रिवेणी जीवनाई ग्रही जामे रे मनोरथ सुनिसे अक्ला त है ने हउर जे सेने न देषि।  
 को विरुफो स संविहू की सीता है उरुके से उरफात है देवी सीवनाई विधिकौ नकी है जाई व हते रघर  
 ५ आशु कहे के श्री वात है ॥२७॥ अष उन्माद तन्न ॥ तर कि उवे सु नि उ वि चले चितैर है मुज्ज देषि मो-  
 उन्माद जुगा व र ही रो वै है से वि शेषि ॥२८॥ राधिका को प्रकास उन्माद ॥ के सब सु बुद्धि सिद्धि हरि उम  
 विनु विषा अगा धरा धिका ही वाही वृती लत लत कति कति सि हिल ज्ज चित वनि किी ठिक रि वाही तर-  
 कति त कि तो रति तनु त ल फति अति अपार उपवार निगही सकल सकाति लै लै सा स अवे त सुवे  
 त ज्ज प्रेम प्रेम मगदा गाही ॥२९॥ राधिका को प्रचल उन्माद के सब वौ कति सी चित वै वता यो धरि कै तर कै  
 त कि वां ही बुजिये और कहे मुज्ज और ई और का उर त ई प ल मां ही वा ७ की विलगो कि थो वा इ लगी  
 मनु ल लि प सो क बज्ज क तु बां ही कं घट को पत की हरि आशु क तु सु धिरा धे कै नां ही ॥३० सख को प्र-  
 कास उन्माद ॥ सख ल च कित वित व त वित व लं दि सि चा हि २ है सुष च प ल व ल त धा इ सो व त से मत  
 २ कं प त त प त त न के श्री दा स रो व त रु प्र त उ वि गा इ २ व लि हि डि पा उं तो हि देष त ही स यो मो हि त र्ये  
 सु क ह न् अ इ तो सो अ लि अ ऊ ल इ जे सै क तु आ कु वा क ब क त है आशु हरि तै अं जि नि नां उ मुज्ज  
 का कृ को नि क सि जो इ ॥३१॥ सख को प्रचल उन्माद ॥ गूढ अ गूढ प्रकास त वा त नि लो क अ लो क की वा-  
 त सरी सी रो व त है क व लं रु सि गा व त ना व त लाल की बरि वरी सी ॥३२ का कृ को सो व सं को बु न के  
 सब देष त आव ति दे ह मरी सी वा त कि वा इ कि कां म कि वां म कि है हरि को म ति का कृ हरी श्री ॥३२ अंग  
 वर न वि व र ल्ज हां अ ति उं वे उ स्वा स नै न नी र प रि ता प व ल् वा धि सु के सब दा स ॥३३॥ राधिका की वा  
 धि वे ल त ज्यो उ न वा न तै वो लै न दै न बि लो कै व् बु धि त गा है बै न सु नै स मु फे न् व वा त हि प्रे त ल ग्यो कि

किधौ प्रातिजग्दी के संववती दीया ऊरै रत्तो दिहै तै उनही को लगी है वै तै पौ नन पा नौ न सी  
 सुतै का क्त वगे किर का क्त लगी है ॥ २४ ॥ क्तकी बाधि ॥ कां उ निकै तने ता पनि ता पिये त्यां धन कै उ  
 पवारं जु मै ये कां उ निकै उ फिजे उ सा सनि द्यां इनके आ सुवा निं जै ये के सव ए वृषता न लली नो  
 दला लनि ए पै निदान नै पै ये एक ही वेर रत्त निकल भयो माई री वा लिउं दे पै रु रै ये ॥ २५ ॥ अश्रु रु  
 ता ॥ चलि जाय सुधि बुदि रु हां सु सु सु हो इ समान ता सौं अरुता क रु उ है के सव दा स भु जो न ॥  
 २६ ॥ राधिका की अरुता प्रचन्ता ॥ परे उपवार मरी सियरी सियरे तें परा र्परोत रु ठि जे सै सै म औ  
 र का ये तें क रु उपजे तो सके लि कहा रु मली जे देषत ही य ह कां भ क ली ऊ मे ल्हां नी ये जा नि का रु  
 अ य का जे कौ न पै जा ऊं कहा करौं के सव कै सै जा ये य ह कां रु म जी जे ॥ २७ ॥ राधिका की प्रका स  
 अरुता ॥ अपियां नि मिली मयी या नि मिली पती या वती यां नि मिली न जि मो नौं धां न वि नां न मिली  
 मं न ही म न ज्यौं फि उ र अ म नौ म य सौ तो के सव कै सै जं वे मि मि लौ त न कै दे व दे ह रि जो क रु हां तो शुर  
 न प्रेम समाधि मिले मिले जे रु म्हे मिले हो त व कौ नौ ॥ २८ ॥ क्तकी प्रचन्त अरुता ॥ प ल ही प ल स  
 त ल हो तु लु हो उ सरी र वि वार स वै उप वार ति यां नै जो करी ये त न मे रु न पं रु त वि न क रु सु य उ  
 ख न आ नै के सव कां क्त स मु फे न ही रु फी ये कौ न हि को य ह मां नै यो म्हा जी यो के वियो रं द का क्त  
 कौ लो म्हा क हा इ न रोग नि जा नै ॥ २९ ॥ क्तकी प्रका स अरुता ॥ कां क्त के आ स न वा स न ही न  
 ऊ ता स न मी र्त कौ प्रा सं रु की जे के सं व र्दु व सौ धि स वै म व सौ धि स मा धि नि के र स ती जे जौ  
 लौं त एं ह रि सी ह प्र सि ह न तो लो विलो कि अ लो क न का जे दे वी करे त पु तो ल गि व व र द्वा तु न  
 जौ जि य दां रु तो दा जे ॥ ३० ॥ व नै न क्यौं क् मिले रु रु ह् व ल व ल के स व द्वा म शुर न प्रेम प्र ता प  
 तै म र न हो उ न्ना त या स ॥ ३१ ॥ म र नौ के स वै दी सै पं व र न्पा जा इ न मि ज् अ म  
 क्त्यो के सै प्रे त व रि ता ॥ ३२ ॥ र ति उ प जे र म नानि कं प हिले के स व द्वा स

नि

१

२

पिः करितसुप्रेमप्रकासा॥३३॥ अतिआदरअतिजोततै अतिसंगतितैमित्र साधनिऊकेहोतहै  
 केसवववलचित्ता॥३४॥ सुतगदशादशमेकही उपजीपरवराग जिदिविधिउपजेमांतमैमंत  
 वरनो सुऊसतागा॥३५॥ इतिरसिकप्रियायांअष्टमप्रताव॥५॥ अधमान॥ परनेप्रेमप्रतापतै-  
 उपजिपरउअनुराग ताकावविकेवोतसो केसवकदियउमान॥३६॥ अधमानतेद॥ अगहही  
 पियप्रतिमाननी गुरुलफमध्यममांत प्रगटदियप्रियातप्रति केसवदाससुजान॥ अधयु  
 रुमान॥ आननारिकेविज्ञातमि अरुसुनिअवतिनिनाउ उपजतहैगुरुमानतह केसव-  
 दाससुताउ॥३७॥ राधिकाकोविज्ञादरसनगुरुमानप्रचन्ना॥ आनुमिलेवृषतानऊमारिदि  
 तंदऊमारवियोगवितैके रूपकोरासिरसोरसुकेसवदासविलासनिरिसुरितैके वागेकेत  
 तरदेषिदियैनपनैतनवाहरहीसुइतैके कुलहामेंत्रमस्तुलिकिधौसऊवेसरसीरुहवद  
 चितैके॥३८॥ राधिकाकोनामप्रवनगुरुमानप्रकासा॥ वृजतहीवहगोपीगुपालहि आज  
 कबुदसिकैगुनगाधदि ऐसैमैकाकौनांसषीकहिकेसैधौआयोअजनाधदि यांतिषवावे  
 तहीअबिरीसोरहीमुहकीमुऊदाधकिदाधदि आउरकेउनिआपिनतैअसुवानिकसेअष  
 रानिकीसाधदि॥३९॥ कृष्णकोगुरुमानप्रकासा॥ लोकलीकउलंघिकबु प्रीयाकहैऊबवेन  
 उपजिपरउगुरुमानतब प्रीतमकेउरऐन॥४०॥ आपनसौंआपनैही आगैकदियतकि।  
 धौं धोरिकेअजानेधोरिनमेंधोलियउहै दावीयोतैरोकियतिजोरकहैंजाइकेसौंऔर  
 कहानैनलेकरानिबोलियतहै। वेईधनस्यामजिनुविनुघनीघरनीनिघरीकमैघनैघन  
 सारबोलियउहै बोलतिहौंकेसैंऐसैंबोलैसैंबोलियउमोलकलएसोऐसैंबोलबो  
 लियउहै॥४१॥ कृष्णकोप्रचन्नागुरुमान॥ ऐसीऐसीरतिरावेसौंहनिकेसावेअपम

७

कति

२५



आहं न मातेमो ननी चरैपी कुरु मना इ उप कुरु न अपममा नुत ह प्रातमके उर आह ॥५२॥ मान्दुमान्तेमान्तिके सा-  
 यमानसते कुरुमान्तरेणो मानि हरे सुजमानो नत परिमानु नपे अतिमान् मरेणो फेचो सहेली समानतवे अवमोति नमे  
 अपमान करेणो आपमना यउमो नही बलो सो संजना वनतो हरे ॥५३॥ राधा राधा रवन के वरनेमो न सुमानोति न  
 हि केसेवे अपानी जांघ उधारिके आउही जो जतिको मरई इकतो सवते हर ए ह रि दे अवहो उक हो ह  
 रि ते हर ॥५४॥ राधिकाको प्रवृत्त नमधममांनु ॥ कदो कां ककदां सिगरी नि सिनासी सुतो उमही कहुवा  
 हत ही हिय वं वकरी तनुमें तनु रपलिषी कि हि के सवकं तककां ननगा हत ही कदुराती सी आं धिक छ  
 तई ताती ति हारे वियोग के दा हत ही हिय वं वकरी ति रची जबरं वक जो ह लई उर ना ह त ही ॥५५॥ कल  
 को प्रकासनधममांनु ॥ वार रवस्जीमें सार ससर समुषी आर सी लै दे पि सु सु आर समें वो रि दे सो ताके  
 नि होर तें नि हार तिनने कहां ठहारी है नि होरि सवका क क ल षो रि दे सुषको नि होरो सुनमांनो सुत  
 जो करी तें के सो राइ को सो अव जो अं मन मो रि दे ना ह के नि होर कि न मान हि नि होर ति हो ने ह के नि  
 हारे फेरि मो हि नु नि हो रि दे ॥५६॥ इति श्री मन्महा राज कुमार श्री इंद्रजीति विरचितायां विप्रलं तशृ  
 गारे विरह वर्णनं मानन वम प्रतावा ॥५७॥ अथ मो न मो वन ॥ मान्त ज हि प्रातम प्रीया क हिके स व  
 करि प्राति वरनि सुना उ सुन हि सं व जिनमें सुनि षटरी ति ॥५८॥ सामदान रजिते दु कृति प्रनति उपे  
 कामांनि अरु प्रसंग विध्वंस सुनि दं ह हो इर स हानि ॥५९॥ साम ल छनु ॥ ज्यो क्यो कं मन मो हिये वृत्ति  
 जाय जि हि मांनु सोई सो म ऊपा उ कविके सवदा सवयांनि ॥६०॥ राधिकाको ह साम उपाउ ॥ के सदा स  
 सदाको ये आर स है सुषकी इष ता हित दी जे ता क सुरो सन मानी ये मांनि नि सु लि कं आपनो मानि सुली  
 जे हो उम ही उम हो सुनि सुंदर मूर ति कै जिय एक ही जे मांनु है ते दु को मूं अदा अपने स क सो  
 सुपने कं न का जे ॥६१॥ अथ कुरु को कर साम उ पावा ॥ क हि आव ति है जो क ल व ति हों उमनां ही तो  
 ता कि सके र म सो ही ति हि पै क हा व लिये क व लं न हि को से त मे प ग पार तें रं इ रो ही प्रा ति क म्दे क की  
 जे है जई सम हो त उ म्दे अ थरी प स रो ही का जे कदु य ह जानिके के सव हो उम ही उम तो रि हो ही ॥६२॥  
 अथ दान ल छनो ॥ के सव को न हो व्या सु क ह दे सु बु न वे मानु व व न र व न मो है मन हि ता सो क हि जे  
 दा उ ॥६३॥ राधिकाको दान उपा य ॥ को म ल अ म ल द ल डी ने है कम ल त व अरु न व स न प्र ह को सु

कोम  
 नाइ  
 हिर  
 नो  
 ॥५४॥  
 लके  
 का  
 धम  
 न+



पस्योपाइ समुक्ति सवी सबदेति है जौ सुवती जिदि कारन। ह्यु वाफिके कंठ उठाइ लगाउकहा ल।  
 गिअतिअका सुनिहारन कौने तएत है ई दिन ए दिन इंडी लगी कबु उ उटुपारना ॥ ७७ ॥ राधिका  
 को प्रनति अपराधतै ॥ केसवदा से उदा से ई दर साई दे ॥ साइषद्यौ सुतस्योरी ॥ राति तए अधरा तक  
 लौ विनु बज्जवं क वधुनिकस्योरी धाइर ही समुपाइ कचुन सपी निरुके सिधयेतं सस्योरी कारिते मांयो  
 तमानि नितौ ल गिपाइत जो ल गिनाइ पस्योरी ॥ ७८ ॥ पिये हि मन वैप्रायपरि प्रियापर महित मांनि ने अप  
 सुधन को मतै वरनत हीर सहांनि ॥ ७९ ॥ अषसअको प्रनति ॥ नारहीतौ विनुमीन सरे वरुमीन के नीर  
 हाके जी यजी जै जा विनु और सुहायनके सवताहि सुहायतो सबको जै जौ ल गितौ पगला गिर है सु ल  
 गी पग अंक लगाइ नली जै हौं सिपउं अयेने सपने कंतो आवत लखि के वारुन दी जै ॥ ८० ॥ अषउपेक्षा ॥  
 मान मुवा वत वात त लि कहियौ और प्रसंग वृत्ति जाइ जिदि मांन सौं करै त उपेक्षा अंग ॥ ८१ ॥ राधि  
 काको उपेक्षा ॥ चपलान चमकति चमक रथारनका बोलतन मोर बंदी सयन समाजके जहन हगा  
 जत नवा अत द मां में दाह देत नदि पाई दिन मनि लीने लाजके बलि रचंद सुषि स्यांम वे सयावे मि सुषक  
 जके सोदा सअरी सुषका जके बलि रचन उरंग निगगत घन बाह त फिरत चंद जो धात मराजके ॥ ८२ ॥  
 रुधकौ उपेक्षा ॥ के सोदा स दिन रातिके उकी को रा वै रांति जियमें वसति जाति नैन निमें नलिनी माध  
 वाको पिये मफ सुफु उ न अंधक जं सेवती सेवन कहि सेई गंध फलिनी और हौं क हत वात कारे कौ  
 उजात काइ औ सो तोषि स्याइ सु सु होइ मन मदिनी देषौ न ही प्राण पतिना लज अली को मति मा  
 लता सौं मि ल्यो वा है लानै साध अलिनी ॥ ८३ ॥ अष प्रसंग विधुसन ॥ उपजिये तव वित ल सु लुलि जा  
 यजिदि मांनु सो प्रसंग विधु सकवि के सवदा सवषांनु ॥ ८४ ॥ राधिका कौ प्रसंग विधुसन ॥ के कि वके सा  
 वकांमके कि कर बोलत मो लत देत इहाई कामनि साइक कामनिको उरि साइ गीता कर के देर साई  
 गाजित नहि न मेघ यता सुनि वा रुति नि सपी सुषदाई तोर नये फिरि की वौ अब लो हां बोलि अषै





धिकाको प्रकासकरुना विरह ॥ हरितरहारहर तद्विये हरत हारीहो हरिनिनेनी हरितकफलहो व  
 नमाली ब्रजपरवसत वनमालीरुहरिउषु केसवकेसैसहो अघघनघने स्पामघनहीसेहोतघनरूपो  
 मघनहीसेहोतघनरूपामनिघो सघनरूपामविनु क्योरहो रुदयकमलनेन दे धिकेकमलनेनकोयेअ  
 लिकअलकमें मनुमितैमितैनेनकेसोदाससविलसबविआसस्तुलिरहे कपोलफलकमें नैना  
 मिलैमितैगोत्रसकलसंयानु सजितजिअतिमानरुह्योतनककोफलकमें तैसेबलवलसाधिरा  
 धिके मिलनकज्जवाहृतकियेपयानु प्रांनऊपलकमें ॥ १२ ॥ रुद्रको प्रकासकरुना विरह ॥ हेतरु  
 नाई तरंगिनिष्ठरअष्टरवष्टरवरांगरेपय केसवदासजहांज मनोरषसंत्नमवित्तमें सुरेतय तर्कर  
 रंग तरंगितरंगतिमिगिलरुलविसालनकेलय काककबुकरुनामयदेसधितेहिकीयोकरुनावा  
 रुणालय ॥ १३ ॥ अघाप्रवासलबन्तो केसवकौनजंकाजतेपीयपरदेसहिजाय तासौकहतप्रवा  
 सुसव कविकेसवससुफाई ॥ राधिकाको प्रवासविरह प्रबन्तो ॥ ठंकरिहे कदिधौकवगोनदिनेदु  
 कुमारतोगोनकीयोई मोहिमहाकरुठंउरकोनरहे लतिलेजिनिकेधौंजायोई ॥ १४ ॥ अघप्रकासविर  
 ह राधिको ॥ कोनकेनप्रांतेकोनप्रांतिमदि विबुरतयाहाकेअनोषोपति ब्रजगाईयउहे अतबकरेहो  
 तलै आवैहाधकेसोदास औरकहापबिनिकेपाबिंधाश्यउहे उविचलोजोनमानैकाककाबलाइ  
 जानैमानसैजपदिवाते ताकेआश्यउहे इनकेतोयदेआनुमितैकिमरिजाउआगिलोगमरीआ  
 लीकाहामेजपाइयैउहे ॥ १५ ॥ अघविरहतयत्नसुराधिकाको ॥ कोकिलकेकिऊलाहलहालि  
 उविउरमेंमतिकीगतिरुनी केसवसातसुगंधसमारगयोउदिधास्ज्योतनुरुली जामिनिकेविक्रि  
 जकाजामिनियाउषदेपिसवैसुधिरुनी क्योजीयोकेकेसीकरौविसुसावजस्योविसनीविसवास  
 तिफाली ॥ १६ ॥ रुद्रको प्रवासतयत्नसुजिनबोलेसुबोलअमोलसवैअंगकेलिकलोउनिमोला  
 लीये जिनकोचितलाकवीओवनरुमअनुपपीयुषसौपीईजाये जिनकेपदकेसवपानिबियेसु  
 ॥ सीनदुमायेकसवतोहिवेवासोज्जवावविनीरुवियाहो तेरुहिकीयत्नयेजिनकोजिउरेजियताविनरंजजायोई ॥ १७ ॥ ३० ॥

सविहप्रकासा॥ केसवक्योन्तं वल्ले वल्लिकोरिसेदेसकहै॥ इनिपुष्ककपर॥ आगेधरेअपनोसोको।  
साहसुपावैहंपेलिपरेपगतमर होतजहीतही गदववे सेचलोनकङ्कस्योपरेकाज्जद्विउपर जौ।  
रुकोलाजफिस्योनपरैपैमिलानकरेदसकोसककपर॥ १११॥ कलकौ प्रचन्न प्रवासविरह॥ प्रता  
कानादिज्योतास्त्रेनेरुववाइवलीवितवैवलंघातौ कोटिनिसीफकरेकरकंज निकेसवसेवउसा  
वैतउतातौ नेटितिहै वरहीअवहंतोवसाइगईहसुपेसुपसातो कैसीकरौ कहिकेसववावज्ज  
स्योनिसिअर्धकायेसुज्जरातौ॥ ११००॥ राधिकाकानि॥ आयें तैं आवगीआपिनआगहिंमालेगामो  
। जंगोउलईहै सोउंनसोवनदेउनज्योतवसोवनमेंइनसावदईहै मेरियत्यउकलकहो कंसवसो  
। कहौतेसदेलातईहै स्वारधहीहिउहै सबकैपरदेसगएहरिनांदौगईहै॥ ११०१॥ कलकानि॥  
केसवकैसैज्जकोस्तिपाइन आनि सुतौउरलागतिहै बक्यौधतिसीवितवैवितमेंवितसोवतिमं  
महिजागतिहै परदेसप्रियापलमोदिपसातिनजानैकोयाकीकहागतिहै तजिनैननियीदुनवो  
दवफलज्जआधीकरातितैतगतिहै॥ ११०२॥ राधिकाकोसपीकापत्रीकलसौ॥ केसवकंअरएप  
तांउकाऊंअरिवनदेवताज्योवनऊपवनिविदरतिहै कमलज्योधिरनररुतकमलएकवारकमल  
उजाज्यो कमलनितैजरतिहै कालीनज्योकेउकाकेफलरुचैसीताज्जस्योनिसवरसुपवईदेपंभ्रै  
करतिहै वदुनउधारतही मदनसुजोधनहांडोपदाज्योनाउसुज्जनेराईरहतिहै ११०३ राधिकाकोस  
पाकापत्रीकलसौ तौरनिज्योतवतिरहति वनवाधिकानिहंसनाज्योमडलभ्रनात्तिकावहतिहै।  
पाविशररतिरहतिवितयांतकीज्योवंडवितैवकईज्योसुपफेरहतिहै हरानीज्योहेरतिनकेसरि  
केकाननहि के कासुनिआलाज्योविलानगंकहतिहै केसवकंअरको कविरहतिहोरैसीमर्थ  
तिनराधिकाकीमूरतिगहतिहै॥ ११०४॥ कलकैसपकीपत्रीराधिकाको दारधइरांनिव

केसरज्योंकेसरिकोदेधैवनुकरिज्योकपतद्वै वासरकीसंपतिउठुकज्योनचितवतवकवाज्योंवंड  
चितैवोयुनौवपतद्वै केकासुनिव्यातज्योविलातजातघनरूपामघननिघनघोरजीजवासेज्योतपा  
तद्वै तमरज्योंतवतवन जोगीज्योंजगतरेनिसांकतज्योंत्रपामुनासुतेराहीजपउद्वै॥४॥ केसोदास  
प्रवासकोकह्योयघामति साज राधाहरिबाधाहरन वरनोंसपीसमाचु॥५॥ इतिथीरसिकप्री  
यायांसंतोभशंगारेप्रवासवर्षनंनामएकादशप्रताव॥ ११ इतिविप्रतंतशृंगारसमाप्ता॥ अथश्र  
षाजनवर्षनं॥ धाइजनीनाइतनरी प्रगतपरोसितिनारि मालनिवरइसिलपिनी बुरहेरि। नीसु  
नारि॥६॥ रामजनीसम्यासिनी पटुस्वाकीबालकेसवनायकनाथका सपीकरहिसवका॥७॥  
धाइकोक्वनराधिकासौ॥ मोहनसाधकहानिसिद्धोसरहै सतसंजहाकीमिसिवैठी केसवक्योंतां  
सुनैमहतारी तोराषिहै रोघरहामहपैठी हंसिषिउंसुषुदैसिषितौहितैतौ ह्वटाइकेकीवीअमेवी  
कौनलकैती सुसुपनकोपैरुंहाकडुजातिअकासहिबैठी॥ धाइकोक्वनसहज्यौ॥ घोराम्रीसुडे  
सवेसदारघनयनकेसगौराज्जुगोरी तोरीतवज्जुकी सासारीसी साचैकासीदारी अतियुवा  
मिसुहारकति केसोदासअंगअंग ताइकेउतारासी सौधैकेसीसौधीदेहसुधासौ सुधारीपाउधा  
रीदेवलोकतैकि सिधतैउधारीसी आशुवासौबो लिवालिहसिषिलिलेज्जालकालिअमीया  
लिल्याउं कांसुकीऊमारीसी॥८॥ जनीकोक्वनराधिकासौ सोताकोसघनवनु मेराघनश्रपामु  
नितनईरुधितनहेरतहिराइये केसोदाससकलसुवासकोनिबालुकरि विविधिविलासहासा  
वासविसुराईये ऊपरसुकेउकसुजपरसुमीवो हैपीसुषलकीपैलाधानौजाकीनियराईये वीरी  
वीरानैननिवराये सुषुकोनलौपियमनमांदिमनुमेलितवराइये॥४००॥१०॥ जनीकोक्वन  
रुहसौ॥ असीवाते असेहीधौकेसेहीकहीपरतिजाकीमतिगतिताजपातसौ लपटीहै मरेहान  
आवैमेरी वीरएतीवेरवैतो जानतिहौं धाइ कंकेसंगलोहिलेटीहै अमीतोहै वीरनिकीचरी वाकीके

सोराइ जैसी उमदाहाकरि पाइ परि तै दी है जांनति दौं नंद बुके टोरा है जु जांने जाइ उंन ही तो वैसी र  
 मत्ता बु चंका वैरा है ॥११॥ नाइन को ववन राधिका सु ॥ अब ही तो गए पुनि पौर कुं लो न एवो लन जा  
 हिरा पावै ही लो गं करि दै त व के सी परा यै जो दो ट हि फे दे क वु नि सि धो स के जागे जो न र ही परे की  
 सब के सें झं दे पत हां सु प स्पाम स रागे तो दे ति दौं जां नि क्यो रा प तिका हे न आर सी ये क रि आं पि न आ  
 गे ॥१२॥ नाइन को ववन रु श सों ॥ वग जि य ला न व मो रु र आ लि व गी ल झ रु यो व ले वि उ ली ने व गी र  
 आं पि व गी व वि सों धित वै व रु वि र व नो सु प दाने व रु हा वि वारु व गी रु वि के सें क्यो म् मि लो तो मि  
 लो ह म हां नें वग नि लं सौ तो व रु छ प बो ले इ ते व रु मा लु व नो मन की ते ॥१३॥ अ य न ट ती को व व न  
 रा धिका सौ ॥ ज्यो दौ दि पा व न तो दि ग ई रा तो मे री य श्री व य ही फि रि मा ई आ मु क हा डि प सा ध ल गी दे  
 डि पा उं गी ना इ तो वे ई क न्ना ई दे प ते सी रा कै जी ति त दु अ न दे पे ज रै सु य ई अ धि का ई रा ति का ये ग नि  
 यो स का ए अ हो ते रा ष वा त नि वा ज हि आ ई ॥१४॥ न ट को व व न रु म सौ ॥ ज ही र ड रै त ही र ज्यो म्  
 ज्ये सी ज ग म गे के सें कं जो के स व ड रा ऊ लि ये रं ग की प व न के पं थ अ ली अ लि ने के पा ठे आ ली अ लि  
 न ज्यो ला गी फि रे जि न्ने स थ स ग की नि प ट अ मि ल व ह उं लें मि लि वे की ज क के सें कें मि लां ऊं ग ति  
 मो पें न वि हं ग की इ ऊं तो ड स ह ड य दे ति ऊं ति इ ति रु ने वा स वि से वि सु वा स त र्द वा के अं ग का  
 ॥१५॥ अ व प रो सि न को व व न रा धिका सौ ॥ पा इ परे प लि का पर सौ सु ल गी र ति तो ल न में लि र ती हं  
 सों हं का यो मु झ सो दों कि यो अ व लो उं म पै ग ति ज्ये सी न ती हौ के स व के सें झं दे प न कं जि ने तो र ऊं  
 तो री लो आ नि द ती हौ पा न म वा व ति हा ति न सु उ म रा ति क हा स त रा ति स ती दों ॥१६॥ प रो सि न को व व  
 न रु म सौ हां सा मे वा त क वा सौ क ही ह सि वै ही क ही सु हा वै करि ले षो आं पि मि लान मि ली स पी यो  
 मि ल वो इ सु के स व क्यो अ व रे षो वि वा श म रे सु उ सा धं कि वा उ क स्वा ति सें मं द्य अ वे सु वि शे षो ॥  
 आ सु हा क्यो व ह आ व ति हौ जि हिं आ गि लें गं न आं ग न दे षो ॥१७॥ मा ल नि को व व न रा धि क सौ ॥

इरिदेक्यों लपन वसन इति जावनकी देहही कीजाति होति द्यौ सुअंशाराति है नाहको सुवासुलागें लौ  
 केहैकेसी केसव सोतावहीकी वासु तौरती फारै पाति है देपितारी मूरतकी स्मृति विस्मृति हों उ  
 लनके दृग्देपिकौ ललवाति है वलि हैक्यों वंदमृ पिऊवनिके तार तय कचनिके तार तो लचकिका  
 लिजाति है ॥१७॥ माल निकौ ववनरुझसों ॥ घरो जनि मोहि धरजां न दे ऊं घनसाम् घरी कमें लागी अ  
 र देषिवी जौं दांमिनी होइको ऊअसी वैसी आवै इतउतके सुवहृ यतान्जुकी वेटी मजगामिनी आ।  
 द्वितकौ आयो अंउ आवो वनि वलिजाउं आवती है वेउवनी आई अरु जामिनी कामके कर निउमकां  
 खुगह्यो के सोराइ तौरनिके तार तय तौ नुगह्यो उहितांमिनी ॥१८॥ वारारी स्त्रीकौ ववनरुधिका सुं-  
 में उअसौ मनु मृदुल मजालिका के सतके से सुरधनि मन निहरति है दास्यो के से वाज दंतपाउ से आ-  
 सरुनउ वके सोदास देषि दृग् आनंदतरति है एरी मेरी तेरी मोहिला गति नउाई तातै वृफति हों तो।  
 हि और वृफति करति है माषनुसी जात मुषकंज से को वरे कष्टिका वसी कवेठी वातके सैतिकरा  
 ति है ॥१९॥ वारारी स्त्रीकौ ववनरुझसों ॥ नैननिनवाचो नैऊ अतिही अनीतिकरै जांततनुम  
 जैसैं ब्रजजानियत है चंचल चरित्र चित्र चेटक चट किलावौ वोरै कै चितनि अतिसारसों पियति है  
 एकनिके उर उर फिउरो जनि मै उरफैतै के सोदासकै सै तजियउ है अंशक फल होति है ऊबालनि  
 के चोरि २ मन २ मधु वल्लके चाकहा घवेवी यत है ॥२०॥ सिमिनीकौ ववनरुधिकासों ॥ अबही  
 छुनि वोलिरी वोलिलगी जकपौरि हां लौ उविजां नदी नै मेरही जांत सऊ लटी उमहावसकै सैं चै एक  
 रि लीनं जोपे इतो छषपावति हों तलफे दृग्मां नमनौ फलफानै तौ कति बां फति हों बिनु एऊर ह्यो कि  
 नचित्रसों हाथही लीनै ॥२१॥ सिमिनीकौ ववनरुझसों ॥ घाडुउरी जिमधं डुरहै गदिवोर ऊवोर निजा।  
 निनजाऊं जाजन आवति मारे सताजन लागे अलोकके ताजनै ताहू कोरि विचारि विचार ऊके सव  
 डेषऊं वृफति उ सबकाफू नेहहीके फिरि जागऊं संगन नैन निकौ संयुउर निवाहू ॥२२॥ अषउरै

... ..

धायालिज्जविहाससुपलालसा ॥२४॥ सुरदारकाववनकलसा ॥ आशुवृक्षप्रपापपजाकहा  
 ताहिकहाकवहोपदीजे। जाविनशोरसुहाशनकेसवताहिसुहासुतासवकाज तगावमम  
 स्वीउमसोवहतोविरवाइकहाकहालीजे जोरिसजाइताजेजेमनावनतातोहृदुसिसिराजनपीज  
 ॥२५॥ सुनारिकोववनराधिकासो ॥ कोलश्रीमनकटाइकलो लश्रीलालिकसोपतवालिकरुंन  
 पानिपसोअतिपेनैरसालविसालवनेमनसावतमेर केसववाकनेवागुंतवापचितकेतएरि  
 न्याइतिवोरे सोअसकोवनश्रीरतिरोवन धीरुमोवतुगेवनतेर ॥२६॥ सुनारिकोववनरुंनसो  
 हांसोमंहसेतेहरि हरेकैंकुकतिमनुहरिहसतिहेरिद्विथै अतुरागीहै प्रमकीपहलीगृहजाता  
 तिजनावतिहोआशुअधरातकलोमेरेसाधजगीहै अवनोशोधराधीरतेसेदिनरुकशोरधरोगर  
 धरउमतेकोवफतागीहै तावतीतिहारीवहकालिहोतकेसोराइकांमकीकघाकतुकाचुदेवला  
 गोहै ॥२७॥ रामजनीकोववनराधिकासो ॥ कोमलअमलवेतोअमलपतिष्ठलचलमलिननलिन  
 नवतीलकेसेपातहै सनेसाधसुदेतोऊतिलकरमएतोकेसवपरमवोरमस्मकिरातहै पाइकं  
 परिकरितवणईहैतकेसंफं श्वोराअठिलातएताअतिअठिलानहै यरजतिकोतुहाकवकाक  
 दतमेरेमेरेमोहनकेमतेतेरेनेन छैछैजातहै ॥२८॥ रामजनीकोववनरुंनसो ॥ फोनफंतोपकहा  
 तयोकेसव कामनिकोटिकसोहिउगंटे रवनसाधसंधैसुपकाविनु राधेकोआधोऊगेवनगंटे  
 कोपरासीतल नाउकरेसुज्जोरतपीयनसारकेसाटे जातवैहाघरहै अजनाघपंपामतुहा  
 तिनयोसकेवाटे ॥२९॥ सनासिनाकोववनराधिकासो ॥ नवुटिहैतुहाअजवकरिहोंधोक

तबके सो दास अनयास प्यप्पास रुषतगिदे पेलुतलिनाशगो जुकाशगो नविउवेतिक बुनसुहाशगो।  
 रेनिसिद्धिनुजशिहे तातेतैतपतिरुनी सारेतै सारेते सहसयुनी उपजिपरैगी और ऐसी एक आगिहे औ।  
 रुसो ऐंहाहि जनिअं वलुउरुउबो लिफोलतिहों काककी सुफी विउफिलागिहे ॥४२७॥ सन्यासिनीको वव  
 नरुछसौं ॥ सीतलज्जहीतलितिहारे नवसविवहउमनतरुतितिलुताकौ उरतापगेज् आपनौ मोहीरा।  
 सोपरायेहाध व्रजनाधदैकेतौ अकाषसाधमेतये सौमनलेज् एतेपरकेसोराइ उमै नप्रवाहिवाहि वही  
 ज् कलागी तागीरुषअरुतुमेगे ज्मीनिमुहवांघो विनठलतिववीलेलाल ऐसौतोगवारिनि सौउमह  
 तिवाहेनेज् ॥४२८॥ अषपटइतिको ववनरंधिकासौं ॥ याही सुमेरीउसाइतिमैपहिलेमिलइवतिया छ  
 मिउले वतैमिलेअपीयांमिठईसपीयातिकी आधिनिपारिकैऐलौ आधिलगैमनलगिरहे मनभलेज्मि  
 लेवगहे हमगेलौ मिलेमनुमाईकहाकरिहौं सुज्जहीकै मिलेतौकियौमनुमैतौ ॥४२९॥ पटइनको ववना  
 रुधसौं ॥ कामगनेनीज्मै औरनिहं जुलगावतहौ सुपअसेनरुजे सोनई सीसुतपीततरिहोइ तोके सवा  
 कैसैकहाधनवृजे आइगिरायुनुजौ सिषवैतऊ काऊनको किलसौंकलरुजे सुदरस्यांमधिराम  
 करौकबुआंबकी साधनआंबलीरुजे ॥४३०॥ वयनअयन सुषमयनकर कहेसपिनिके नर्म केसवका  
 हौंकडुऊअव तिनकेको विदकमी ॥४३१॥ इतिश्रीरसिकप्रियायां सपीजनवर्षनेनामहाइसप्रतावा  
 ॥४३२॥ अषसपीजनकर्मकषनां सिद्धाविनयमनायवो मिलवहिकरहि सिंगार फ्रुकिअरुदेइऊ  
 राहनो यदतिनकोओदार ॥४३५॥ रुधिकाकौ सिष्या ॥ नाज्जलगेसुषसौं तिदहेइषनांहीलौइषपदे  
 ऊदहेगो नाहिअवैसुषपदेतिहै केसवनाज् सदा सुषदेउरहेगो नांहीतेनांदारीनांहीतलीईतल  
 सनुनाहहातेप्यपैकहेगो नाहसौंनेज्निवाहिवलाइलौं नांहीसौंनेज्कहनिवहेगा ॥४३६॥ का  
 लकोसिद्धा ॥ ऊंऊंमउवहिऊमऊमाकैकवाइ जलुसौंधौंसिरलाय याहीलाएकहारासमै वंद  
 नवदाइकलि फ्राउपहराइतुलिवेहाकाजिआधिमांजिकीनाहैप्रकासमै केसवकषरुइका

'दुकोप्रवाखीपांतजोपैमनमगतहं ॐ सेइविलासमें' तौवांदिनमंतविहरिहाहाकरि पाइपरि सबईसुवा  
 सेजाकेमुपवासमें ॥ २० ॥ राधिकाकौविनयु ॥ ॐ सैंदो क्योचुपकरिहोमपिदोसहिदो संतराहुइसोले २  
 क्योसरिहैमिलिवेविबुतौहि तऊमिलियमिलिद्वैएदिनजौलो केसुवकारिकराउपवारुमिलकोकछोनि  
 लिदेसुधुतौओ देपिधौंओगनिआरसीलेमिठिहैपयसोमनहीमनकोलो ॥ २१ ॥ अथमूलकावितयु ॥ शु  
 मकैसेफलनैनदास्योसेदसनचैनजालसुप्रकरकाशुशुधामांसुधास्योहै वैनीपिकवैतकीधिविती  
 सोवनाईवीरवारुसोवारीकरिहाकरिकोहास्योहै कानिऊवअमलकमलपतरकेसंफलकसोदासिया  
 तंविधिगुगधविवास्याहै देपोनगुपालसपिमरीकोसरीरुसचुसोनेमोमवारिमचुमेंठुसोमवासोएर  
 राधिकाकोमनाइवो ॥ राकिरिआइफेसंपतिजापिरहीमुपदेपिदिपाइसतांदी चाननआयंत्रावाउत  
 ईअवकेसवओसीहमेंनसुदाईमेंवंप्रनैवसंप्रदेतौसारीरुवहरावतिमादिइवाही यहीसुय १  
 नसंदावलिहोहरिसौंहसिहाकरिमिदिमुताही ॥ २२ ॥ ऊनकोमनाइवो ॥ जोऊनानोओगुननि  
 गनेगुनगनजोदोगनोअतोरुओगनकेगुममें केसोदासअेसीप्रीतिअपावतिवलनिमेंजेसैंठविबुदि  
 २ससिविपेघनमें नाराहेनिदुरनिसिसादोंकोतयावनींमं सुखीवसेयसजाकोपाउवस्योवनमें वैवेंतउ  
 गोवैउविबलैनेमवलिरहैसोईप्यासक्योनेकहैजोहेतेरमनेमं ॥ २३ ॥ ऊनकोमिठिवो ॥ सिंपेहारीस  
 पाकरपाइहारीकादंविनीदामनादिपाइहारीदि सिअधरातकी कुंकिरहारीरतिमारिहास्यामारु  
 तहारीककजोरतत्रिविधिविधिवाक्की दर्शनदईयाहाकाहैओसीमतिजारतमुरेनशानिदिउंसे  
 सागतकी कैंसैंअंतमानैमनाइहारीकेसोराइवोलिहारीकोकिजावोलाइदुगवातकी ॥ २४ ॥ रा  
 धिकाकोसिंगारु ॥ डातोमेपाइरुवाइमहावरु आजामेंअअनेआपिसुहाइ तंपनरुपितकोनेमंके  
 संवमालूमनोहरमेंपहराई वृषोनेलेअवदापतिदेपिसयीसवअंगसिंगारसिधाई



अकलेपानपवावेकोकाक्र ऊमारकोनाई ४४॥ कलकोसिंगारु॥ पागवनीअरुवागोवयोवदुवापके  
 कंतिराजततीको सौधोवयोअतिवास वदावतहास्वयोउरतावतोजीको बारावयोमुज्जपातमनोरु  
 र मोहिंसिंगारुलमेसवकीको तालतलीविधिजोउगुपालकोयोउहिवालवनइतकी॥४५॥ राधि  
 कासौरुकिवो॥ फिरिफेरिफेरिफेरिमेंहरिकेमनु मनुफेरफेराफरितागकी तलीघरीपलशपाइनप  
 रतज्जलीजितकेसुपस्यापीऊतेरेपाइपीकेपाइहोपरी वहीश्वभनिकीवहभ्रैवफाईमेतिकेसोदास  
 वहीनिमेंजोइंवफकरी होंतोजाहुमनायेतैमेरेएतमानिदे मेंयाहीकोमनाई तेज्जमोहीकोमनीधा  
 सी॥४६॥ कलसौरुकिवो॥ तासौ वसाइकहाकहिकेसवकामलतातरुतिइई विधिकीलिषजो  
 पानजाइअलोकिकलैमनिसीसतुजंगदई अपनोमुज्जडेषज्जअरसीलेपुनिवातकहोंपरिमाना  
 लई वषतांनुसुतापरऔरसुहागिलिवाउं जहांलगिजीतगई॥४७॥ राधिकीसौउराहना॥ केसो  
 दासकेनवहीरूपकलकांनिपेंअनोपोएकतेराधहायनपुइरबोलिये आपनेसमानकालमा  
 नसैनमानेउमानकेविमानवहिव्यामउमफोलीये अैरसोअैराइअतिअंवलुउफाइ अैसीबोधि  
 अैरवैरीचितवनिनिरमोलियें दानोमनुहाप्रजिहिंदारासोहरिषिकेताहरिसौहरिननेनीले  
 लतीबोलीये॥४८॥ कलसौउराहना॥ सौहनिकेसोबुन संकोबुकाहवीवकीकोपौबोपार  
 पिक्कउमलोवनकिनारकी। मांमनकावारीकी देघोराशमोज्जसुधजानतवहैकिसोरीजोरीहैउ  
 वारकी मरीहैऊमतिआरकहाकहोंकेसोराइजागतिहैदाई उालुलाइइहापाउधारकीएती  
 हैडिगई अबहीरुवाईवह शाराउतोबुतनांदीपाइनकेपारिकी॥४९॥ आधीसीधाईहैदा  
 ईदिवारीसी दासिनकेउषदेहदहीहै तापकेठुलतेमोरतिमारनिनाइनिनाहकेनाहनहीहै  
 तैरासौतेरासौमरीसपीसुनितेरेअकेलीहाआसरहीहै काकफिलाउकेमोहिनपाईहै आ

पुनेजीकोमेंतोसोकहीहै॥४५॥ इदिविधिस्मासुभिगासरस वज्रविधिवरनज्जं॥ इच्चार्यरत्न  
 ज्जंआश्रमदी कद्वतसुनतसुउहाइ॥५॥ इतिश्रीसपीज्ञनवर्णतेनामत्रयादसप्रतावपारं॥ समा  
 मोयंशृंगाररसा॥ अथहास्यलज्जतां॥ नयनवयनक्रुचुकरनजव मनकोमाउउदेउ वउरविजपा  
 द्विवांनमो तहाहासरसुहो॥५॥ हास्यतेदा॥ मंदहास्यकलहासुप्रति कर्हिंसवयतिआह  
 सु कोविदकविवरनज्ज सवें अरुवेधोपरिहासु॥५॥ अथमंदहास्यलज्जतां॥ विकसहितनयनक  
 पोलेकचु दसनदसनकेवासु मंदहास्यतामौकद्वउ कोविदकेसवहासु॥५॥ वरननवाद्यंघ  
 तिहिं कहेनकेसवदास श्रौरैरसयोहिजनिज्ज सवप्रबन्धप्रकासा॥५॥ राधिकाकोमदहासु  
 अनिकोपांनपयावतिक्योङ्गईलगिअंशुलीहोवनवांनं तवितयातवहीतिंदितातिरीनाऊऊंअ  
 चनलीलिसेनति वातकहाहरयेदंमिकेसुनिमेसुधुईवमहारसतींनजांनतिद्यापयकजिय  
 केथतिगायसवेंपरिधरतकांने॥५॥ पुनः राधिकाकाकोमंदहासु॥ सेदुकीवात्सुनंतंकदुवा  
 दमासकतैमुसक्यानलगीहो वैवितिहेतिनमेंद्विकेजिनकीअमसोमतिपेमपगीहे जानतिहो  
 नउरअदुमेंतिकीइतकवारसरंगंगाह शृंगंसाधसंबसुफकी वंछतागकीकिसवजातिउगीह  
 मन्कोमंदहासु॥ दुसनवसनमहिदुरसेदुसनइतिवरसिमदुतसर करतअंयतहा फांरुल  
 कललोउनोवनिरुपोलनिमेंमाललेतमनकम ववनसेमतेहो तोदकंददुनताउसुनांमरासावते  
 कंतायतीठवीअलाउमानकौनहेतहो केसवप्रकासहासदस्मिहाहालज्जंगज्जुसेहीहीहा  
 सनितोहिंयेहरिलितहे॥५॥ अथकलहास्यलज्जतां॥ अहंसुनीयकअक्रनिकंठु विमा  
 लंविनास केसवत नामनोहिंये वरतज्जकविक्रलहासा॥ ना  
 सितकाठनिकेसवपातुरीआधतरानिविवांरो कोनिकरका

तिहारो वाजत है मंडहासमृदंगसुदापतिदापतिको उजियारो देपतहो हरिदिपिउदेवहोउ  
 खुआपितिहोमेअपारो॥५९॥ कलकौ कलहासु॥ आचुसपी हरितोसोकवुवही वारलो वाता  
 कहीरसतानी मे लिगेरें पदुकाउनिके सब हरिहोयैमनु हरिसाकोनी मोहिअवंतो महासुह  
 हाकहि वाहकहावजवारतिलीनी तैसिरहाघदयोउनिकेउनिगाविकहाहसिअंवलकीनो॥  
 ६०॥ अघअतिहासलबन्तो॥ जहांहसहिनिरसंकके प्रगतहिसुपसुपवास आधेआधेवरनप  
 द्द उपजियरउअतिहासु॥ ६१॥ राधिकाकोअतिहासु॥ तैसिद्वियैजगजोतिस्त्री संकलनिका  
 फलकतितिलक तरुनितेरेताउको तैसीयैदुसनउतिदुमकतिकेसोदासतेसोईलसउलाउ  
 कंठमालको तैसीयैवमकवारु विबुककपोउनिकीफलकउतैसौनकमोतीवलवालको  
 हरेरहसितेकववरचपलेनेनवितवकबोधैमेरेमदनगुपालको॥६२॥ कलकौ अतिहासु॥  
 गिरिउविररीफिरलोगेकंठवीवन्यारेहोत बवित्यारीन्यासो आसुसंअकलप्रभावेआधेआधे  
 रनिआबभवातेकहै आबभएकवारीसो सुनत सुहायसबसमुजपरैनअवकेसोदासकोसो  
 हरिदेभेहेमें सारीसो तरनितनुजातीरतरवर तरुवाडेतारैदैदैहसतकुमारकाकूप्यारी  
 सो॥६३॥ अघपरिहासलबन्तो॥ जहपरिजत सबहसिउवे तजिदुपतिकीकांति केसवके  
 दुद्विबल सापरिहासवषाणि॥ आइहैएकमहावनतैत्रियगावतमानौगिराधरंपयुधारी-  
 सुदरताजनुकामकीकामनि बोलिकहोवपतानुइलारी गोपीकहैलाशुपालहिवैअक  
 लाइमिलीउविसादुरतारी केसवतेततिहैतरिअंकहसीसक्कीकदैतोलीगोपकमारी-  
 ॥६४॥ अघकरुनारसलबन्तो॥ प्रियकेविप्रियकरनतै आनिकरुनरसहोउ ऐसोवरनव  
 पानिजे जैसोतरुवकपोत॥६५॥ राधिकाकोकरुनरस॥ तेजसूरसेअपारचंद्रमांसि-

२६

२

२

क्रमोत्संभुसेउदारंउत्तरधरिउद्दे इन्द्रसेप्रत्तुमेरामजुसेरुनेकांजसेकामधरे हियेह  
 रियतंहे। सागरसेधीरगनपतिसेवउत्तुअतिभ्रैसंअविवेककेसेदिनतरियतेहे नंदमतिमंद  
 मद्दजसोदासोकदाकहोअसौप्रतपायप्रसुपालकरियउद्दे ॥८७॥ अन्नकोकरुनरस॥ वंप  
 कीसीकलीतंलकेसवसुवासतरीरूपकीसीमंजरीमक्रपमनइये देवकीसीवानीअतिवांतीतं।  
 सयांनीदेवराजकीसारांनीजनीक्रासुपद्यइये कामकीकलासीवफलासीकामअवलासीहे।  
 हर्षरेभुरैप्रुणपाइये कोनेकोनेनिपटऊजातिजातिघालिअसीरधिकाऊवरिपरिगोरअविवा  
 इये॥८८॥ अथरौइरसलबनं॥ होइरौइरसक्रोधमय विग्रहउग्रसरीर अरुनवरनवरनतसंव  
 कहिकेसवमतिधीर॥८९॥ राधिकाकौरौइरस॥ केहरीकीहरीकटिकरीमृगमीनफनिमुकपा  
 कंकजपंजरीरववुलीनेहे मडलमृनालविंक्वंपकमरातेवेलिऊंकुमुदाकिमकहइनाइप्रा  
 दानौहे नारउकनकतउ तनऊरससिवठउधतउवधजीवगंधहीनौहे केसोदासुदासनये २  
 कोविदुऊअरकांकराधिकाकौरिकौउकौनपरिकीनौहे॥९०॥ अन्नकौरौइरसु॥ माहि  
 मासोकलऊं वियोगमास्येविरिके मरोरिमासोअतिगोनुसास्योतद्युतांनोहे सवकोसुहाय  
 अगुरागुलिलानौदीनाराधिकाऊवरिकहु सवसुपसांन्योहे कपटुकपटिकांन्योनिपटके  
 औरनि सौमेंटापहवानिमनेंमंपहवान्योहे जस्योरतिरत्तुमयोमनमधकंकोमनुकेसौरा  
 कौंतकहौशेसउरआंन्योहे॥९१॥ आववारसलबनं॥ होइवारउत्साहमयगौरवरनइति  
 अंगअतिउदारगंतीरकहि केसवपाइप्रसंग॥९२॥ राधिकाकौवीरइरसु॥ गतिगजंराजसा  
 जंहेकीदिपतिवा जिहावरधतावपतिराजवलवालसो केसोदासमंदहामु असिकुवता  
 रतिरैतेहित्येप्रतितततालेनमजालसौ लाजसाजऊलकांनिसोहे

तोनिबानलोवनविलोसोसो प्रेमकोकवकसिसाहसुसुदाइकलेतीतिरतिरनुआजिनदु  
 तगुपालको॥५३॥रुहकोवाररसु॥अथजोउदारिदोकिवकज्योविदारिदोअकसुकैलेकिके  
 सोराइकेसीज्योपवारिदो॥हरिदोकिप्राननाप्रतनाकेप्राननिज्योवनतैकिवनमालीकालज्ये  
 निकादिदोकरिदोविमदुधनवाहनज्योधनस्यामकाकसुनहारिहरियाहीसोस्योहारिदोवेह  
 कासुकांमेवरअजकाकुमारिकातिमासुहेनंदकेकुमारकवमारिदो॥५४॥अथतयांनकर  
 सठबनं॥होइतयांनकरससदाकेसवस्यांमसरीरजाकौदुषतुनतहीउपजिपरतयतीरा  
 ॥५५॥राधिकाकोतयांनकरस॥सुवमकलमफितफैधनयोसुवेदिविमकलमंफिगटीघहस  
 तिघटाघटवातकेसंघटघोषघटेनघटीरघटीइसज्जुदिसिकेसवदामनिदेपिलगीपियकांमनि  
 केवततीअनुपंधहीपाइपुरंदुरकेवनपावककीलपटैफपटी॥५६॥रुहकोतयांनकरस॥रिस  
 मंरसकेबोलविसुतैसरसहोउजानेसुप्रवलपितदाषजिअवाषीदोकेसोराइइपदीनेजाइकता  
 वउमआजुलज्जोमिजकीआषेअतिनावीदोसुधैवैसुधारिवेकोआएसिधवनमोदि सुधैअमो  
 सुधीवातेमोसुउनितापीदोअसैमंदोकेसेवजाउइरिदोअदेअजाइकामकीकमानसीघटाईसोहं  
 राषीदो॥५७॥अथवितसरसठबनोनिदामयवीतसुरसनालवरनवउतासुकेसवदेघतघुना  
 तहोतनुमनुहोउउदासु॥५८॥राधिकाकोवीतसुरस॥माताहीकोमांसुतोदिलागउदेमोवेजु  
 हपीवतपीताकोजोकाकेकनिअथाउदेतैयानिकेकठनिकोकाएतनकसकतितेरोहियोके  
 सोहैनुकहतसिहातिदोअवरहेतितेटमेरीतदुतवरअसोसोहैदिनउविषाततघिनांधतै  
 प्रेतनापिशाचनीनिसावरीकाजाइहैउकेसोराइकोसोकहतेरकोनजातिदो॥५९॥रुहको  
 वितसुरस॥हुतेवाटकंनयनेधुमधुमसेनसेनेफागुरठीगोफिसांपवीवीनविललाकजुकटा  
 ककलितत्रिनवलिसुधिमअकतनकीतलपतलताकोलतवाउअकलतकवीलगाउअध



३ तादिनेतैउनिरापीउवाइसमेतसुधावसुधाकीमिवाइ॥८॥ दाउजमानुऊजीवजलधडा  
 लाजतिकोपस्योइरहउजहकालसोसमरुह अनंतअजरअजअमसोमरतपरिकेसवनि  
 कासिजानेसोइतौअमरुहै वज्रअवनसुनिसुफिसवदुकरिवेदुनकोवाइनहिमिवा  
 कोमरुहै तागजरेतागोतईयातागनिजोताज्योपरेतवकेतवनमांफितयकोतवरुहै  
 ॥८॥ इहिविधिवरनज्वरनवज्वनवरसरसिकविबार वांधज्वरनिकवित्तकी कदिके  
 सवविधिवारि॥८॥ इतिश्रीनवरसवर्षनां॥ नामचउईसप्रताव॥ १४ अधष्टतिवर्षेना  
 अधमकोसिकीतारती = ततिआरततितति कदिकेसवसुतसालिकी-वउरवउरवि  
 धिजाति॥९॥ अधकोसिकीलघने॥ कदियैकेसवदासजिदि करुनादाससिंगारुस  
 रलवरनसुतसावजह सोकोसिकीविचारु॥९॥ मिलिवेकोएकमिळिफिरेइतिकानि  
 मिलिमनमनदिविलासविलसतिहै दोलिवेकोएकबालदोलसुनिवेकोऔरुवोलिवोल  
 तीरघनिव्रतनिवसतिहै देषिवेकोएकफिरेदेवतासीदोरी२देवतामनाइदिनद्वानमत्स  
 तिहै काजैकहाकहाकरमकोइहिरूपमेरीमाई एतोमेरेकाज्वकेनावहीहसतिहै॥२  
 २ अधतारतीलघने॥ वरनीयेजामदिवीररसुअरुरसमेंअद्रुतहासुकदिकेसवसुत  
 अर्कजह सोतारतीप्रकासु॥९॥ काननिकनकपत्रत्वमकतचक्रवारु धज्जकुलमुल  
 फलकतिअतिसुपदाई केसवचवीलीचउसीसफुलु सारघीसोकेसरिकीआरुअधिसा  
 धिकास्वीवनाइतीकेहीनीकेईमेंनीकोनाकनीकोमोतीउरजतएकहीविलोकतिगुया  
 लतोगएविकाइ लोवनविसालतालजतिउजराइडीकोमानोचयोमीननिकेरघमेंनम  
 घसाइ॥९॥ अधआरतटीलघने॥ केसवजामदिरुधरस तयवीत्सकजानिआरतती  
 आरतयहपय२जमकवमानि॥९॥ घोरघनैघनघोरतसकालउकालककालकारुधि

रत्नैकलेफिरेइतसेमतीपौइ कसाधनकोपहिनीतिधियेमे वींभंअंधातोहिनाउंउंफेर  
 येवनिता कहिकेसवसावैजानिमनो ब्रजराजविना ब्रजरूपरकालकृद्विमितावे॥६॥  
 अथसाधिका॥ अथतुरुमुवीरसु समरवसवरनिसमानि सुनतहि समुद्रततावता  
 नि सोसात्विकोसुजांन॥७॥ केसोदासलापलीपतांतिनकेअस्तिनापवारिदुग्धावरी  
 नवारिहायोद्वेरीसी राधिकाहस्तीप्रातिसवतेअधिकजानिरतिरतिनामकक प्राभूए  
 जांनोरतिवारीसी तिनमहि तेजनतवातीलंपेयासोजाइ नारधमेतारवीकीनारवीइ  
 तोरीसी एकैगतिएकैमतिएकेप्रांनुएकैमनुदेधिविकोदइइइनेनकाओरीमी॥७॥ इति  
 श्रीचत्रविधिकवित्तवर्णनं नामपंचदशमप्रस्तावः॥१५॥ अथअनरसलबन॥ प्रसनीक  
 निरसुविरसु केसवइसंधानु पात्रइष्टकवित्तकलं करेसुककविवपांनु॥७७॥ आ  
 धप्रसनीकलंबनं॥ जहांसिंगारुवित्तसु तयु वीरहीवरनेकोइरोइकरुना मिलितहीप्र  
 त्यनीकुरसहोइ॥७७॥ हसिवालतहीसुहसेसवुकसवनाजत्गावतलोकनग वातचल १  
 वतघेरुचंलमनआनतहीमनमधजंग रुचुकसुहतीमनमरेरुजानियइनहियोउम  
 गे हरितोनेकफिठिपसारतहीअंयुरीनपसारतजोअलो॥१॥ अथनीरसलबन॥ जइ  
 ईपनसुज्जहामिले सदारहैबहरीति कपट्टरहेलपटाइमन नीरसर सकीप्रीति॥२॥ गा  
 हतसिंक सयाननके जिनकीमतिकीअतिदेहइल्ली मोहिल्लीइइइइइइतितनंसे १  
 जनावतिप्रेमपहली जानीहोजांनिसिलामुज्जहीदियनादियतावतिगवंगहली आजनुं  
 का ननिहंनसुनीसु तोदेपिचलीहमसोति सहेली॥३॥ अथविरसलबनं॥ जहांसो  
 गमहि नोगको वरनकहेकविकोइ केसवडासुज्जलासमो तनु १  
 दासकाचुगाचुपाचुपांनुत्तमोमांनुगवोप्योनु तयोप्रांचुपातिक

३

१

१



सिकायातयह जवव हवालदपतदी सबसु पुत्रमहिउविधिदे असी सावसीठीसीठीवीवीअतिवी  
 वी सुनेमीठीरवातिननुनीकेहामेनीविहै ईविति सौरीटीरवातोकेसो काकाअगीठीउबी जाकेउरमे  
 सुकेसैहसिमाविहै॥५॥ अथइसंधानरसा॥ एकहोइअनुकुलजीव जहहुजोप्रतिकुलकेस  
 वइसंधानरसु सोरउहांसनुमल॥ देदधिदीनौउधारहो केसवदाभुकहाअरुमोलउषेहै दी  
 नेविनातोगईनुगईनेगईघरहीफिरिजेहै मोहिउवैरुकियेहिउहो कववैरुकीयोवरुनीकेके  
 रैहै वैरुकेगोरसुवेत्रङ्गीअहो वेव्योनवेव्यो तोहारिनदेहै॥६॥ अथपात्रकष्टरसलबन॥ जैसी  
 जाकहबुजाये करियोतासोअष्ट विठविचारजेवनीये सोरसपात्रकङ्कष्ट॥७॥ कपटरुपांतीजा  
 नीप्रेमरसलपरांतीगंगाअकेप्रातनिकेपांतीसममांतीये स्वारधनिधांतीपरमारधकीराजधांती।  
 कामकाकहांतीकेसो दासजगजांनिये सुवरनअरुजांतीसुधासौसुधारिआनीसकलसयांत  
 सांतीगांतीसुषदांतीये गोराउगिरालजानीमोहेसुनिगुठगांती असीवांतीमेरीरांतीसुभुकेवषा  
 निये॥८॥ केसवकरुनाहासअरु बीतसुसिगारु वरनतवीरतयानकहि संततवैरुविवारु  
 ॥९॥ तयउपजेवीतसौते अरुसिगारुतेदासु केसवअहुतवीरते करुनाकोपप्रकास ॥  
 इहिविधिकेसवदासरस अतरसकहै विवारु वरनतसुनपरीजहा कधिकललेइसुधारि  
 ॥१०॥ जैसैरसिकप्रियाविना देषियेदिनरदीन त्योहीताप्राकविसवै रसिकप्रियाकरिहीन  
 ११॥ वाहैरतिमतिअतिपहै जानेसवरसरीति स्वारधपरमारधलहै रसिकप्रियाकीरीतिप  
 १२॥ इतिश्रीमन्महाराजकुमारश्रीइंद्रजीतविरचितायां रसिकप्रियावारसअतरसवर्षेना  
 नामषोडशप्रतावः॥१३॥ संवतसयमतगतयन सोरहैसैसहतार सावणिवदितिधिसप्तमीरो  
 हणियतिमुतवार॥१४॥ प्रसिद्धतयरिअमरावतीगवलोकोपरसिद्ध बावककिसनमुनिदसि  
 ष रसिकप्रियाइधिलेधा॥१५॥ इतिसंज्ञा॥ श्रीरसुलेषकपाठकयोचिरजावीसुतनुवाठ



सम्पददृष्टीको सुति सेदविष्णानज्जपो जिनके घट सीतलविज्ञतयो जिमवन्दन केलिकरो-  
सिवमारगमें जगमाहि जिनेसरके लक्षनेदन सतसदा जिनके प्रगयो ज्जुमिद्यो अवदातमि  
घातनिकदन संतदशातिनकी पहचानिकरेकरजेरिवनारसीवदन ॥६॥ उनसम्पद  
दृष्टिको सुति ॥ स्वारधके साविपरमारधमें सावेवितसावेबैनकहें सावेजेनमतीदें काकके  
विरुद्धिनादिपसजद्वुद्धिनादि आतमगवेषीनगदस्वहेनयतीदें सिद्धिरिद्धिद्विदीसैघा  
तेमेप्रगतसदाअंतरको लक्षसौं अजाचीलक्षपतीदें दासतगवंतके उदासरहें सुषीया  
सदावत्रैसेजीवसमकितीदें ॥७॥ उनसम्पदवर्णने ॥ सप ३० ॥ जाकेघटप्रगतविवेकगना  
धरको सोहिरदें महामोह ऊंदरउदें सावोसुषमानेनिऊमदिमाअकोलजातेआपहीमें आपा  
नोसुतावलेधरउदें जैसेजलकईमकनकफलतिन्तकरै तैसेंजीवअजीवविलक्षणकरउ  
दें आतमसुकदिसाधेग्यानको उदेंअराधे सोईसमकितीतवसागरतउदें ॥८॥ अधमिद्या  
दृष्टिवर्णनं धरमनजानतवधानतत्तरमरूपवौरखानतलराईपक्षपातकी सुलौअतिमान  
मनपाऊधरेधरनीमेहिरदेंमेंकिरनीविवारेउतपातकी फिरैहांवाफोलसौकरमकेकिलोला  
मेंकरहीअवस्थासुवधकाकेसेपातकी जाकीवातीतातीकारीऊतिलेऊवातीतारीअसौअ  
स्नघातीदेंमिआतीमहापातकी ॥९॥ दोहरा ॥ बंदोसिवअवगाहना अरुवंदोसिवपंध जसु  
प्रसादताषाकरौनातिकनामगंध ॥ १० ॥ कविवर्णनंसपतेईसा ॥ चेतनरूपअनूपअमूरति  
सिद्धसमानसदापवमेरो मोहमहातमआतमअंगकियोपरसंगमहातमधेरो ग्यानकलाउपजी  
अवमोहिकदोभुननातिकआगमकेरो जासुप्रसादसधैसिवमारगत्वममितेघटवासवसेरो  
॥११॥ अथकविलक्षता ॥ ३० ॥ जैसेकोऊमूरपमहासमुद्रतरिवेकोउजानिसौउदिततयोहैता

वि

जिनावरो जेसंगिह्रिऊपरिविरपफलतोरिवेको वामनशुरुमकी ऊउभोगउनावरो तसऊलऊठ  
 मेंतिरिषिसमिप्रतिबिंबताकेगदिवेको कोकरनी नाकनेवावरो तेसमेंअलपबुद्धितातिकआर  
 रकीनो गुनीमोदिहसैगेकदेगेकोऊवावरो॥१२॥ स०ई० जेसेकाकरतेनसावाधावृत्तता  
 मेंकोऊसुतरेसमकीनोरीपाइमईदे तेमेंबुद्धितीकाकरितातिकसुगमकीता तापरअत्यनु  
 द्विसुद्धिपरनईदे जेमेंकाऊदेसकेशुरुपजेसीतापाकंद तसीतिनकेकेवालकनिसीधिलई  
 है तेमेंजोगरंधकोअरधकह्योशुरुसोहमारीमतिकदहंवकासावधानतईदे॥१३॥ स०ई०॥  
 कवमंसुमतिकेऊंमतिकोविनासकरे कवमंसुविलयोतिअंतरजगतिदे कवमंसुदयालवि  
 तकरतिदयालरूप कवमंसुलाउसोकेलोवनलमतिदे कवमंसुआरतीकप्रचुसनसु  
 पधावंकवमंसुतारतीकेवाहरिविगतिदे धरेदसांजसीतवकररीतितेसीअसीदिरदेद  
 मारैतगवंतकात्मगतिदे॥१४॥ अघनातकवर्णनां॥ स०वेईयाई०॥ मोपवलिवकेसोतकर  
 मकोकरिवौतजाकेरसतोनबुधलौनयोफलतदे गुनकोगरंधनिगुनकोसुगमपथजा  
 कोजसकहतसुरेसअऊलतदे याहीकेयुपझीतेउरुतप्यानगगतेमें याहीकेविपझी  
 जगजालमेंरुलतदे हाटकसोविलवैराटकसोविसतारनाटकसुततद्विपफारिकसो  
 उलतदे॥१५॥ दोहा॥ कदौंसुवृतिह्वेकेवा कदौंसुवृविवादां सुकतिपंधकारनकदौंअ  
 लुत्तौकोअधिकार॥१६॥ अवअनुत्तौवर्ननां॥ वसुविवारतधावैते मनपावैविश्रामरससाद  
 तसुपऊपजे अनुत्तौयाकोनां॥१७॥ दोहरा॥ अनुत्तौवितामनरतन अनुत्तौदेरभऊंपा  
 अनुत्तौकरसकोरसायनकदुत  
 अनुत्तौकरसकोरसायनकदुत

सा सो ऊरुधमाको दोरहे अनुतोकीके लिये हे कामधेन विवावे लि अनुतोको खादु पव अमल  
 को कोरहे अनुतोकर मतोरेपर मसो प्रीति जैसे अनुतो समान न धर मको ऊ और हे ॥११॥ अधा  
 षट्पव वर्ननं ॥ दोहा ॥ अधजीवद्वय यथा ॥ चेतनवत अनत युन पर्जय सकति अनंत अल  
 षअषहित सर्वगत जीवदुर्वविरतेता ॥१२॥ अधशुद्धलद्वय यथा ॥ दोहरा फर सवरनरसगंधम  
 यनरदुपास संवान अनरूपी उदगलदुर्व नत प्रदे सपरमाना ॥१३॥ अधद्वय यथा ॥ जैसे सा  
 लिल समुद्रमें करै मानगतिकर्म जैसे उदगल जीवको चलन सहार्ध धर्म ॥१४॥ अधअधर्म य  
 धा सो पधिक ग्रीषम समै बैवै वायामादि त्यों कर्मकी रू मिमें जरु वेत क्वहरा ॥१५॥ अधाक  
 सद्वय यथा ॥ संतत जाके उदरमें सकल पदारुष ध्वास जोता जन सब जगतको सोई दरवध  
 का सा ॥१६॥ अधकालद्वय यथा ॥ जो नव करि जीरन करै सकल वस्तु धिति गनि परावर्न व  
 र्तन धरे काल दरव सो जा नि ॥१७॥ अधनवतत्व वर्णनं ॥ समातार मता उरधता ग्यायकत  
 सुपतास वेदकता चेतन्यता एसव जीव विलास ॥ अधजीवतत्व यथा तनता मनता वचना  
 ता जहता जहसंमेल लक्षता गुरुता गमनता एअ जीवके धेत ॥१८॥ अधशुण्यतथा ॥ जो वि  
 सुक्ता वनि वधे सहज अधो सुष होइ जो सुषदायक जगतमें पुन्य पदारुष सो य ॥१९॥  
 अधपापतत्व यथा ॥ संकले सतावन वधे सहज अधो सुष होइ इषदायक संसारमें पापा  
 पदारुष सो ॥२०॥ अधाश्रवतत्व यथा ॥ जोई कर मउ दोत धर होइ कि पारस दत्त करपे  
 नूतन कर मको सोई आश्रवतत्व ॥२१॥ अधसंवरतत्व यथा ॥ जो उपयोग सरुप धरि वरतै  
 जोग विरत रो कै आवत कर मको सो है संवरतत्व ॥२२॥ अधनिर्झरातत्व यथा जो शरवा  
 सता कर म कर धिति धरन आउ धिरवे को उदित तयो सो निर्झरा लघाउ ॥२३॥ अधबंधत

त्वयवा॥ जिनवकरमधुरानसो मिलेगां विदित्वाइं संकेतिवतां वें संकीं वंधपदारं वसोइ  
 २२ अधमोद्धतत्वयवा॥ धितिपरं नकरे जाकर मपिरे वंधपदतोनि दंसं सउज्जालकरं  
 मोषतत्वसोजानि॥ ३४॥ अधनाममालासृष्टिकामात्रतियति॥ अधसमुच्चयकेतांम तावा  
 पदारथ समयधन तत्ववितत्व सुदर्वे इ विण अरवइत्यादि वसु वसुनाम एमवो॥ ३५॥ आ  
 धसुद्धजीवइयकेतांम सेवेण्ड॥ परमदरप परमे सपरमयो तिपरं त्रत्सूरनपरमपर  
 धांतदे अनादिअनंतअविगतअविनासीअलनिर्इंद्रसुक तिमुक्तदुःखमलानंद तिर  
 वाधनिगमनिरंजननिरविकारनिरकारसंसारसिरोमणिसुज्ञानंद॥ सरवदनसी सरा  
 वगसिद्धसाईसिवधनीनाधईसजगदीस तगवांतद॥ ३६॥ अधसंसारजीवइयकेतां  
 म॥ सण्डणविदानंद्वेतनअउपजावसंमंसारसुद्धरूप सुद्धसुद्धउपयोगीद्वे विद्धपा  
 स्वयंत्तुचितमूरतिधरमवंतप्राणवंतप्राणीजेंउत्तुतत्वतोर्गद्वे गुनधारीकलाधारीस्त्री  
 द्याधारीअंगधारीसंगधारीजोगीद्वे चित्तमेंअयंइदंस्त्वेअद्वैतमरांमकरमकाकर  
 तार परमवियोगीद्वे॥ ३७॥ अवाकषकोनाम॥ दोहना॥ स्वविद्यायअंवरगगन अंतरि  
 कृष्णगंधाम् व्यामवियतनत्तमेयपत एवाकाशकेतांम॥ ३८॥ अधकीलेकेतांम॥ ज  
 मरुतांतअंतकत्रिदस आवत्रीमृतघान प्राणहरनआदिते तंतंयुं कालनामपर  
 वान ३९॥ उ मकेतांम॥ उ म सुकत उरधवदन अकररोग सुत्तं कं र्त्तु सुपदायंका  
 संसारफल तागवद्वि सुरपधर्म॥ ४०॥ अधपापकेतांम॥ पापअधासुषएनअव कं  
 रोगइपधाम् कलिल कलुष किलविषइरित असुतकर्मकेतांम॥ ४१॥ अधमोद्धके  
 नांम॥ सिद्धकेतांम॥ सिद्धपेत्रविभुवनमुक्तर शिवसुकअविवल

ऊंचसिव पंचमगतिनिस्वान ॥४२॥ अथ बुद्धिके नामा ॥ प्रग्याधिपतीसे सुधी धिमेधामति  
 दि सुरतमनोपावेतना आसयअसविबुद्धि ॥४३॥ अथ विवङ्गनप्ररुषके नामा ॥ निबु  
 विवङ्गनविबुधबुध विद्याधरविद्यान पडप्रवीणपफितवउर सुधासजनमतिमाना ॥४४॥  
 कलावंतकोविद्वउर सुमनदङ्गधीवंत म्यानीसङ्गनब्रह्मवित वेदग्रनीजनसंत ॥४५॥  
 घघुनीस्वरके नामा ॥ सुनिमहांत तापसतपां तिङ्गकचारितधाम जतीतपोधनसंयमी  
 तीसाधरिषितांम ॥४६॥ अथ दरसनके नामा ॥ दरसविलोकनिदेधनो अवलोकनधिग  
 उ लघनिधिष्ठितिरघनिज्वनि चितवतिचाहनिता ॥४७॥ अथ ग्यानके नामा ॥ तथाव  
 अकेनांम ॥ ग्यानवो अवगमसुकृत जगतज्ञानजगज्ज्ञान संयमवारित आवरन चरनट्ट  
 धिरघांत ॥४८॥ अथ सावके नामा ॥ सम्पक सत्यअमोघसत निसदेहतिरधार चाकयध  
 धउचिततघ मिथ्याआदिअकार ॥४९॥ अथ फलके नामा ॥ अजधारधमिथ्यामृषा चंद  
 अससअलीक सुधामोघनिफलवितघा अनुचित असतअपीका ॥५०॥ इति श्री  
 तकसमयसारमध्य नामाला सूचिका ॥ अथ समय सारके वादशा नामधार तस्यवा  
 नं सवेया ॥ ईक ० जीवनिस्जीवकरता करमघनयाप आश्वसंवर निर्जराबंधमोष  
 सरवविशुद्धस्यादवाद साधिसाधक अदस अरधरे समंसारपकोषहे दर  
 तयोगदरवानुयोगरि करे निगमकोता तक परमरसपोषहे असोपरगगम वन  
 रसीवषाने जामे ग्यानकोनिदानि सुध वारितको वीषहे ॥५१॥ अथ ग्रंथारंतको नाम  
 स्कार दोहरा ॥ सोतितनिजअनुचुतिसुत चिदानंदतगवान सारपदार्थघआतमा  
 सकलपदारथज्ञाना ॥५२॥ सवेईया ॥ जोअपनीछतिआपविसाहित है परधानपदा  
 धनामी चेतनअंकसदानिकलेव तदा सुषसागरकोविसरांमी जावअजीवजिते

गमैति न कोऽनन्यायक अतरजामी॥ सात्रिवरुपवसेसिवदानकताद्विलोकिन  
 मेशिवगामी॥ ५३॥ जिनवानी वर्णनं॥ सवैणते॥ जोगधरुद् जोगमैति न अनंत गुणां  
 तमकेवलग्यांती तासुरुदेप्रह सोनिकसी सरितासमके अतसिंधसमानी यातेअनेता  
 नयातमलङ्कन सत्यसरुपसिधेतवयांती बुद्धिलेपनलेपेइरबुद्धिसदाजगमादिजगेजो  
 नवानी॥ ५४॥ अकजीवधारलिष्यते॥ कविव्यवस्थाकधन॥ ७५॥ दोनि हंचेति ककालसु  
 दंचेतनमयमूरति परपरनतिसंयोगतई अकताविमसरति माहकर्म परदेउपाधंचतना  
 पररचै शोधकररसपानकरतनरवज्जविधितचै अवसमयसारवणेनकरतपरमसुदृ  
 ताहोऊमुक्त अनयासवनारसिदासकदि मित्तैसहुजत्नमकीअरुफ॥ ५५॥ आगमा  
 व्यवस्थाक सण्डकणनिहंचेमैरुपाकविवहारमअनेकयादीनैविरोधमैजगततरमा  
 योहै अमकेविवादनासिवैकोजिनआगमदे जामेसादवाद नामलङ्कनसुहायोद् इरस  
 नतोहजाकोगयोहै सहमरुप आगमप्रवानताकेहिरदेमैआयोहै अनेसोअपंफितअ  
 नुतनअनंततेज औसोपदुपरन उरततिनपायोहै॥ ५६॥ अर्धनिश्चविवहारकधन॥ सण  
 तेण॥ औनरकोऊगरेगिरसोतेदि सोईअवुर्गहैदिहवांदी तौबुधकौविवहारतजोता  
 वलौ अवलौसिवप्रापतितांही यद्यपियौपरवानतघापिसधैपरमारधंचेतनपांहीजाव  
 अयापकहैपरसौ विवहारसुतोपरकापरवांही॥ ५७॥ अघसम्पकदर्शनव्यवस्था॥ सण  
 ५८ सुधनयनिहंचेअकेलोआअविदानंद अपुनेदी गुनपन्जाइकोगहउहै वि  
 ग्यानघनसोहैअवहारमादिनवतत्वरूपीपंचदर्वमेर हउहै पंच  
 वनारेलधैसम्पकदरसयहै औरतौनहउहै सम्पकदरसजोई



मेरे घट प्रगतो वनार सी कद उदै ॥ ५७ ॥ अथ जीव प्रव्यवस्था ॥ अग्नि दृष्टांता ॥ सण्डकृश-  
 जैसै त्रित काठ वास आरने इत्यादि और ई धन अनेक विधि पावक मे दहीए आकृति विलो-  
 कतिक द्वावै आगिनांता रूप दी सै एक दाह कसुता उज बगहिए तै सैन वतत्व मै तयो है बज्र  
 तेषी जीव सुहरूप मिश्रित असु हरूप कदिए जाहि बित चेतना सकतिको विचारकी जैता  
 दिवित अलष अते दरूप लहिए ॥ ५८ ॥ अथ जीव व्यवस्था वनवारी दृष्टांता सण्डकृश जैसै  
 वनवारी में कधा उके मिलाप है मनानांता तैयो पैत प्रापिए कनां मद्दे कसिकै कसोटी ल  
 ऊनिर धेसराफना हिवानके प्रवान करिले उदे उदा मद्दे तैसै ही अनादि उदगल संयो ॥  
 गा जीव नवतल रूपमें अरूपी मद्दाधाम है दी सै उतमान सो ऊदोत वान वौर २४ सरो ॥  
 न और एक आत माई सम है ॥ ५९ ॥ अथ अनुत्त वव्यवस्था सूर्य दृष्टांता ॥ सण्डकृश जैसै  
 रविमं फल के उदै मदिमं फल में आतप अतल तमपतल विलात है तैसै परमातमाको अ-  
 नुत्तोर दूत जौ लौं तो लौं कऊं उ विधान कळं पद्म पात है नयको तले स परवानको तपर  
 वेस निडेपके वंसको विधे स होत जात है जे जेव सुसाधक है ते उतहां बाधक है वाकी  
 राग दोषकी दुसाकी को न वात है ॥ ६० ॥ अथ जीव व्यवस्था वनवारी ॥ अडिधन ॥ आदि अंत  
 परन सुता उ संसुक्त है परसु रूप परलोग कल्पना सुक्त है सदा एकर सप्रगत कही जै  
 नमें सुहनया तम वंसु विरजै वै तमें ॥ ६१ ॥ अथ हितोपदेस कवित्र बंद ॥ सडगुरु कहे  
 तव्य जीवत सौं तो रज उरत मोहका जैल समकित रूप मद्दो अपने गुन क रज सुध अत्र  
 तौ कोषे ल उदगल पिंठ तावरागादिक इन सौं नही उम्हारी मेल एज डप्रगत उपत उर  
 चेतन जैसै तिन तोय अरु तेल ॥ ६२ ॥ अथ ग्यान विलास ॥ सण्डकृश को ऊ बुधिवंत नर  
 निरधे सरी रघर ते दग्ग्यान दिष्टि सौं विचारै वसु वासतौ अतीत अनागत वर ई मान मोह

आनकरै दैध परगातसौ करमकलंकपकरहितप्रगटरूप अवलअवाधितविजाके।  
देवसासतौ॥६४॥ अथअनगुनीअतेदकवनव्यवस्था॥ सणतेईसा॥ सुद्धनयातमआ॥  
तमकाअवृत्तिविष्णानवित्तिहेसोई वस्तुविवारतएकपदारघनांमकेतेदकदावत  
होई योसरवंगसदालिषिआपदीआतमआनकरैजवकोई मतिअसुधवित्तावदशा  
तवसुद्धिसरूपकोप्रापतिहोई॥६५॥ अथग्याताचितवन॥ स्वरूपकघनसण्डणअप  
नेहीअनपरजाइसोप्रवाहकरिपरिनयोतितिकंकालअपनेअधारसोअंतरवाह  
रपरकासवांनएकरसपिन्तानगहैतिनरहवैविकारसोचेतनाकेरससरवंगत  
रिह्योजावजैसैलौतकांकरतस्योहैरसचारिसोघरनसरूपअतिउज्जलविष्णाना  
घनमोकौहोअप्रगतनिसपनिरवारसो॥६६॥ अथअपर्यायअतेदकवन॥ कविता  
वंद॥ जहोअवधर्मवयलक्षणसिद्धिसमाधिपदसोई सुद्धपयोगयोगमहिमंजिता  
साधकताहिकहैसबकोई योपरतद्रूपरोअरूपसोसाधिकसाधिअवस्थांदाई।  
उक्तकौएकज्ञानसंबयकरिसेवैशिवैकुंभिरहोई॥६७॥ दुर्बगुणपर्यायतेदका  
घन॥ कवित्तबंद॥ दुरसनग्यानवरनत्रिगुनातमसमेसमलरूपकहिएविवहार।  
तिहवैद्विष्टिएकरसवेतनतेदुरहितअविवलअविकारसम्पकदशाप्रमानउते।  
नयनिर्मलसमूतएकहीवारयोसमकालजीवकोपरनति  
र॥६८॥ अथव्यवहारस्वरूपकघन॥ दोहरा॥ एकरूपआ॥

स०३०॥ जामें लोका लोके सुता उप्रतिनासे सब जगपान सकति विमल जैसी आरसी द  
 रसन उदीत लीयो अंतराय अंतकीयो मयो महामहामो हृतयो परम महारसी सत्यासी स  
 ह जोगी योगसौ उदासी जामें प्रकृति पंचासी ल गिरहा जरि छारि सी सो द्वै घट मंदिर में वेत  
 न प्रगट रूप औ सो जिन राजता दिव दित वनारसी ॥६०॥ अथ निश्चय व्यवहार क घना क विन  
 चंद्र ॥ तन वेतन विवहार एक से निह वै तिन एक न माने कोई ता कारन तनकी अस्तुति से  
 जिन वरका अस्तुति नहि होई ॥६१॥ अथ वसु स्व रूप क घन दृष्टांत करि दृष्टा वै ॥ सप्त ई  
 ज्यो चिरकाल गडी वसुधामहि स्तुरि महा निधि अंतर गुली को ऊउषारि धरै महु ऊपरि।  
 ज्यो द्विगवंत तिकै सब रूपी त्यों यह आतमकी अनुत्तुति पगी जडता वचनादि अरुणी।  
 नै जगता मम साधक ही गुर लडान वेदि विवद न बूकी ॥६२॥ अथ ते दुग्पान स्व रूप क प  
 धोबीके दृष्टांत ॥ स०३०॥ जैसै कोऊ जन गयो धोबीके सदुन तिन प हस्यो परायो वस्त्र  
 मेरो मानि रह्यो है धनी देषिक ह्यो तिया यह तो हमारी वस्त्र चीन्हा पहि चानत हित्या मग  
 तावल ह्यो है तैसै अनादि छुद गलसौ संयोगी जीव संगके ममत्व सौ विता वता में वल्यो है  
 ते दुग्पान तयो जेव आपो पर जानौ तब नारी पर ताव सौ सुता वनि जग ह्यो है ॥६३॥ अथ  
 निश्चै स्व रूप क घना अडिध ॥ कहै विवक्षण प्ररुष सदा हौ एक हौ अपने रस सौ ता  
 स्यो आपनी टेक हौ मोह कर्म मन माहि नाहित मरुप है सुचचेत वेतना सिंधु हमारी।  
 रूप है ॥६४॥ अथ पान व्यवस्था क प स०३०॥ तत्वकी प्रतिति सौ लभ्यो है निज पर।  
 ननु न द्विगपान वरन त्रिविधि पर नयो है वि सदु विवेक आयो आछो विसरो न पायो।

६

आश्रद्धी आपतो सराहो सीधिलयोद्वै कदत वनारसी गहृत प्ररुपा रधकौ मद्दज सु ताउ संसि  
 तावमिदिग्याहै पन्नाके पकाये जे सैकं चन विमउ होत न से सुध्वेतन प्रका सरु प्रतया  
 है ॥८५॥ अथ वसुधै रूपाय नमः कथं तत्र संप्रण ॥ जे सैको ऊपा उर वनाः वसु आन  
 त आवत अपार नि सि आडि पत करिके उक्तं उरदा वति सवा नि पत रकी ज सकल सता  
 के ले गे दि धै दि गे दि धरि के नै सै ग्यां त सागर मि ध्या त ग्र धं तं दि क रि व म प्पा प्र ग र न्ना ति क्तं  
 लोक तरि के अ सौ उ प दे स सु नि वा हि ए ज ग त जी व सु ध ता सं तां रे ज ग ज्ञा न सं ति क रि कं  
 इति श्री नाटिक समय सार कौ जा व नार समाप्ता ॥ दोहरा ॥ जीवत त्व अधिका न यद् कथं  
 प्र ग र स मु ज्ञा इ अ व अ धि कार अ जी व कौ सु न द्वां व उ र म न ला ॥ ८६ ॥ अथ अ जी व न  
 ग्या न की व य व स्या ॥ स प्प्र ॥ पर म प्रा ति उ प न्ना इ ग न ध र की सी अं त र अ ना दि का वि ता व न  
 वि द्वा री है ते द ग्यां न दि शि सौ वि वे क का स क ति सा ध वे त न की द त्ता नि र वारी ह् कर म  
 कौ न्या स करि अ नु तौ अ स्या स करि हि यै मे ह र धि ति ज उ ध ता सं ता री ह् अं त रा य न्या स त यो  
 सु ध पर ग स त अ ग्यां न कौ वि ला स ता कौ व द ता ह् मारी ह् ॥ ८७ ॥ अथ पर मार धा सि द्धा क व न  
 स प्प्र ॥ तै य ज ग वा सी वि उ दा सी के ज ग त सौ एक त म ही ना उ प दे स मे री मा तु रं आ र  
 सं क ल्य वि क ल्य के वि का र न जि वै धि ए कं त म न ए क वार आ न्नु रं ते रा य ट सर ता में उ द्दी ह्  
 क म ल ता कौ उ द्दी म ध क र फौ सु वा सु प ह् वां ति रे प्रा प ति न न्ना ह् क वु अ सौ अ व वार उ द्  
 के है प्रा प ति स्व रू प यो हि जा नि रे ॥ ८८ ॥ अथ वसुधै रूपाय नमः ॥ ८९ ॥ चितन  
 अनंत अन संहित सु आत मरो म यातै अन मिल आर सब प्रदः

अनुत्तवप्रसंसा ॥ कवित्तुद ॥ जववेतनसंतासिति जयोरुषतिरघेनिज प्रिगसौतिजममे  
तवसुषरूपविमलअविन्यासिक जानेजगतसिरोमनिधर्म अनुत्तौकरे सुद्वेत्तनकोर  
मेसुताव वमेसवकर्म इद्विधिसधेसुकतिकोमासगअरुसमीपआवैशिवशर्म ॥ ११ ॥  
अधअनुत्तौप्रसंसा ॥ दोहरा ॥ वरनादिकरागादिकयह रूपदमारोनाहि एकत्रसुनदि  
इसरोद्रासैअनुत्तवमां हि ॥ १२ ॥ अधवसुविवार ॥ सांडोकहिये कनकको कनकम्यान  
संयोगन्यारोतिरपतिम्यानसौ लोहकहैसवयोग ॥ १३ ॥ तिहचैयवहारविवारा ॥ वरा  
नादिकउदुगलदुशा ॥ वरनादिकसुदुगलदुशा धरैजीववज्जरूप वसुविवारतकरमसे  
त्तिनएकविष्णुप ॥ १४ ॥ निधैस्वरुमकधन ॥ ज्यौघटकहियेघाउको घटकोरुपनधीउ  
त्यौवरनादिकतांमसौ जडतालहैनजीउ ॥ १५ ॥ अधसाञ्चातस्वरुपा निराबाधवेतना  
अलष जानैसहजसुकीव अवलअनादिअनंततित्य प्रगतजगतमेंजीवा ॥ १६ ॥ अनु  
त्तवविधानकधन ॥ १७ ॥ रूपरसवंतमूरतीक एक उदुगलरुपवितु औरयोअजीवद  
वधुधाहै चारिहैअमूरतीकजीवतीअमूरतीक याहीतैअमूरतीकवसुधांतमुधाहै  
औरसौतकवज्जप्रगतआपुआपुहीसौधिरवेतनसुताउसुदुसुधाहै चेतनकोआ  
नुत्तौ अराधैतेईजीव जिन्हकोअपंकरस चाधिवेकीइंधाहै ॥ १८ ॥ अधमूर्तिवर्ननस  
तेईसाण ॥ वेतनजीवअजीवअवेतनलकृततेदुत्तैपदन्यारे सम्यकहृष्टिउदोतविवरु  
नत्तिनलषैउधिकैनिरवारै जेजगमांहिअनादिअपंछितमोहमहामदुके मतवारै ते  
जडवेतनएककहैतिन्हकोफिरितकटैरैनहिरै ॥ १९ ॥ अधपाताविलासणासुपते

'याघटेमंलमरूपअनादिविलासमहाअविवेकअपारो नांमहीओरमरूपनदीसता-  
 शुगलनृतिकरैअतितारो फेरततेषदिषावतकोउकसांजलिएवरनादिपसांगता  
 हसौंतिन्तुदोअडसौं विनमूरतिनाटकदेषनदां॥१५॥ अघग्यानविलासकष  
 नसपृष्कणजेसैकरवतएकावविधिषंफकरैजेसंराजहंसनिरवारैअधजलकांत  
 सैंतेदुग्धाननिजतेदकसकतिमेतितिनकरैविदानेदुदुगलको अविधिकंधावे  
 मनपर्येकीअवस्थापावे उमगिकेंआवैपरमावधिकेवलकां याहीतांतिपरनमरु  
 पकोऊडोतधरैकरैप्रतिबिंबतपदारधसकलको॥१६॥ इतिश्रीताटिकसमयसा  
 रकोअजावचारसमाप्त॥दोदुरा॥ यहअजीवअजीवअधिकारकोप्रगटवपांन्याम  
 र्म अवसुनजीवअजीवकेकरताकिरियाकर्म॥१७॥ अघतेदुग्धांतमहात्मवर्ण  
 माह्॥सपृष्॥जादिसमेंजीवदेहदुद्धिकोविकारतजेवेदतस्वरूपनिजतेदततरम  
 कौंमहापस्वंडमतिमंडनअषंकरसअनुतौअसासिपरगासतपरमकौंताहीसमेंनर  
 हैविपरीततावजेसैंतमनासैतानप्रगटपरमकौं असीदशाआवैजवसाधककहावेत  
 वकरताकैकैसैकरैशुगलकरमकौं १८॥ अघग्यानसामर्थ्यवर्णतमाह्॥सपृष्जग  
 मेंअनादिकौअग्यानीकहैमेरोकर्मकरतामेंयाकौकिरियाकौप्रतिपायीहै अंतरशु  
 मतितानसीयोगसौंतयोउडासीमिमतामिटाइपरजाइबुद्धिनांपीहै निरतैसुताउलीनौ।  
 अशुतौकेरसत्तीनौकानोव्यवहारदिष्टनिहचेमेंरापीहै तरमकोहोरीतोरीधरमकौ।  
 तयोधोरीपरमसौंप्रित्तोरीकरमकौसामीहै॥१९॥

सपई जैसै जोरवताके तैसे गुनपर जाइताह्यै सो मिलै नका कआन सौ जीव वस्तु वेतनकर  
 रमज उजांनि तेदअ मिलमिलाप ज्योनि तं कजुरै कानसौं अिसौ सुविवेक जाकै हिरदै प्रगतन  
 योताकौ चमगयो ज्योति मरताप्यो तानसौं सोई जीवकर मको करता सोदोसै पै अकरताकह्ये १  
 है सुइ ताके परवानसौं ॥१०४॥ अथ जीव सुजल लजन तेदक घना ॥ छप्पया ॥ जीव ग्यांन गुन  
 सहित आप गुन पर गुन ग्यायक आपा पर गुन लयेनादि सुजल इहिला यक जीव दरवधि  
 द्रुपस ह्य सुदुगल अवेत जवु डाव अमृरति मुरती क सुदुगल अंतर वड उवल गुन  
 होइ अतुल वप्रगत तल वल गुमि ग्याम तिलसै करता रजीव जवकर्म कौ सु बुद्धि विका  
 सयह त्रमनसै ॥१०५॥ अथ कर्ता कर्म क्रिया स्वरूप कणा दोष ॥ करता परनामी दरव  
 कर मरूप परिनाम किरिया परजै की किरिनि वस्तु एक त्रयनाम ॥१०६॥ कर्ता कर्म क्रि  
 या स्थापना ॥ दोहरा ॥ एक करम करतयता करै न करता दोइ उधाद्वैरे सता सधी ए  
 कतावक्यो दोइ ॥१०७॥ अथ कर्ता कर्म क्रिया यवरना ॥ सपइण ॥ एक परिनाम के न करता  
 दरव दोइ परिनाम एक दुर्वन धर उद्वै एक कर रति दोइ दुर्वक वक्तन करै दोइ कर रति  
 एक दुर्वानु कर उद्वै जीव सुदुगल एक पेत अवगाही दोऊ अपनेरूपको ऊन तर उद्वै  
 उड परिनाम निको करता है सुदुगल विदा नंदु वेतन सुता उआ वर उद्वै ॥१०८॥ अ  
 थ सम्पत्त मि ग्यात यवस्था का सपइण ॥ महादी वडुष कौ वसीठ पर दुर्वरूप अंध रूप  
 का कपै निवारौ नहि गह्यो है अिसौ मि ग्याता वल ग्यो जीव कौ अनादि ही कौ यातै अरं  
 बुद्धि न लि एना ता तांति तयो है का क्त समै का क्त कौ मि ग्यात अंधकार तेदि ममता उधेदु  
 सुद्धि ताव परि तयो है तिनही विवेक धारि वंध कौ विला सडारि आत्म सकति सौं जगा

१

८





धारीजी तम्पा तवेयीथे ते सैघटपिंठमेंवितावता अम्पांनरूपम्पांनरूपजी वसेद ग्पांनसौ परष  
 ये तरमे कौकरतादे विदानंदरव विचार करता रता वनांभीये ॥११५॥ अधकरेव ववरना  
 दोहसां ग्पांनसरूपी आतमा करै ग्पांन नदी और दर्वकर्मवैतनकरै यह विवहारीदिर ॥  
 ॥१५॥ अधत्रिष्यप्रक्षक र्तेवकधन ॥ सपतेण उदगल कर्मकरै नदी जीव कदा उममें ससुफी नही  
 तैसी कौनकरै यह रूपकदौ अवकौ करता करनी कज्जकैसी आप्रही आप्र मिलै विधुरै  
 जडक्यों करि मो मन संस यत्रैसी त्रिष्य संदेह निवारन कार न वात कदैयुरु है क छुजैसी ॥  
 १६ अधयुरु उत्तरकधन ॥ दो उदगल परनामी दरव सदापरिनेमें सोइ यातें उदगल कर  
 मकौ उदगल करता होइ ॥१६॥ अधत्रिष्य उत अडिछ्वा ग्पांन वंत कौ तो भनिर्कारा है उदै अ  
 ग्पांन कौ तो गबंध फल देउ है यह अवरिजकी वात दिये नही बुजै कौ ऊ त्रिष्य युरु समजा वह  
 १७ अधयुरु उत्तरकधन ॥ सपईण ॥ दया दान पुजादिक विषय कथायादिक दोऊ कर्मसो  
 गपें उज्जकौ एकषे उदै ग्पांन मूठ कर म कर म कर तडी सै एक सै पै परिनां मते दे र न्या सो  
 फल देउ है ग्पांन वंत करनी करै पै उदासीन रूप ममता न धरै तातै निर्कारा कौ देउ है वह  
 करतुति मूठ करै पै मगन रूप अंधतयो ममता सौ बंध फल लेउ है २१ अधमूठ कर्तेवका  
 धन ॥ कला लहंघांता ॥ वप्यया ॥ ज्यो माटी मट्क लस होन कौ सकति रदेध्रव दंड वरुवी व  
 र कला लवाहि जन मित जव सौ उदगल परवाने उज वरगनातेषधरि ग्पांन वरनादिक सु  
 रूप विवरंत विविधि परि वाहि जिन मित बहिसा तमा गहि सं सै अग्पांन मत जगमादि अदंरु  
 तसाव सौ कर मरुपकै परि नमत २२ अधसुधानुत्तवमत्तात्मकधन सपतेण ॥ जेन करे नवप  
 विवा दुधरै न विषाद अलीकनतापै जे उदवेगत जे घट अंतरसी तलता वनिरंतर सोपै जे न



जेनयनीयुनतेदुविचारत आकलतामनकीसवतापै वेजगमेंधरिआतमथांतअपडितपाता-  
 सुधारसवापै ॥२३॥ अधनिश्रेयवद्वारनयप्रमाणस्वाप्तकवत ॥ सप० ३॥ विवहारद्विष्टिसां  
 विलोकितबंधोसोदीसेनिहवेनिहारतनबंधोयदुकिनही एकपदसौअवधसदादेऊपदआ  
 पतेअगादिधरेईनही कोउकदेसमलविमलरूपकोऊकदेविदानंदतैसोईवपांत्योऊसोछि  
 नही बंधोमनिश्रुत्यामानैइकनेकतेदुजानेसोईपानवंतजीवतत्वपायोतिनही ॥२४॥ अधा  
 समरसीतावप्रसंसाकपंसं०इप्रधमनियततयइनीविवहारनअइऊकोफलावततेदुफले  
 है ज्योसोतयफलेत्योसोमनेकेकलोलफलेयंवलसुताइलोकालोकलौउचलहे औमीनय  
 क्कदा ताकोपदतजिभांतीजावममरसीतएकतासोनिहितलेहें महागोदनासमुद्रअनु  
 त्तैअंसास्तिजयलपरगासिसुपरासिमांदिरेलेहें ॥२५॥ अधसम्पकस्वरूपलक्षण ॥ सप  
 ० ॥ जेसैकाकवाजीगारचौहटै वजाइतेनतांनारूपधरिकेसगलविध्यागनीहै तेसैमेंअ  
 नादिकोमिध्यातकातरंगमैनि सौतरंगमेंधाइवजकाइनिजमांतीहै अवघांनकागजागी-  
 तरमकादिष्टितागीअपनीपराईसर्वसोअमदचानीहै जाकेउदोतपरवानऐसैनींतिता  
 ईनिहवैमेंहमारीजितिसोईहमजोनीहै ॥२६॥ अधसुवानुतवधितवनग्यांतविलसप० ३  
 जेसैमद्वारतनकीयोतिमेंलदरउठैजलकीतरंगजैसैलिनही ॥ ६ ॥ दिजलमें तैसैमुद्यानमद  
 रपरजाइकरिउपजैविनसैविनसैधिररहेनिजवलमें ऐसोअधिकलपीअनुपपीअतंदरुप  
 अनादिअनंतगद्वितीजेएकपलमें तासोअनुतवकीजेपरमपीयुष्पीजेवधकोविलासडारि  
 दोजेउदगलकींमें ॥२७॥ अधअनुतवप्रसंसा ॥ सप० ३ ॥ दरवकीतयपरजाइतवदोऊनय  
 अतग्यानरुप्रकृतग्यांतोपरोपहै सुदपरमातमकोअनुतोप्रगतता

7

मांनं अनुतो अक्षयदे अनुतो प्रवानत गवान पुरुष सु संत ग्यान धन महा सु वैद परम प वि वा  
 यो अनंत नाम अनुतो के अनुतो विना न कलं और गौर मो पदे न् अथ अनुत व को दृष्टांत स प  
 २७॥ जै सै एक जलनां नारु प्र दर व्यानु जे भत यो व कृतां ति प द्वि वा न्यो न पर उ है फिरि काल पाश  
 दर वा नु यो ग छरि होत अपने सहज नी वि मार ग दर उ है ते स य ह्ये त न प दार व वि ता व ता सौ ग  
 लियो न ते प त व ता व रि त व उ है सम्प क सु ता २ पा २ अनु तो के पं ध वा २ वं ध की सु ग ति ता ति मु क  
 ति कर ति है ॥ २७ ॥ अथ मिथ्या दृष्टि कष न का स प दो ह सा नि स दि न मि ध्या ता व ब्र ह्म ध रै मि ध्या  
 ता जी व ता ते ता वि त कर म कौ कर ता क ह्यो स दी व ॥ ३० ॥ अथ मूढ क र्म को क र्ता म्प्रा ता अ क  
 र्ता म्प्रा ता अ क र्ता य द्क व न ॥ वी प ३ ॥ क रै क र म सो ई क ता रा जो जानै सो ज्ञां न न द्दारा जो कर त  
 न हि जा नै सो ई ज्ञां न सो क र ता न हि हो २ ॥ २१ ॥ अथ ग्वा ता अ क र्ता क व न ॥ सी र वा ॥ ग्वा न मि ध्या त  
 न एक न हि रा गा दि क ग्वां त म हि ग्वां न क र म्प्रा ति रे क यो ग्वा ता क र्ता न ही ॥ २२ ॥ अथ जी व द् व्य क  
 र्म को अ क र्ता क व न ठ प्यै ॥ क र म्पिं ड अ रु रा ग ता व मि लि एक हों हि न हि दो ऊ ति न्न स रू प व  
 स हि दो ऊ न जी व म हि क र म्पिं ड पु ग ल वि ता व रा गा दि मू ढ व न अ ल ष ए क पु ग ल अ नंत कि म  
 ध र हि प्र कृ ति स म न्नि ज नि ज विला स यु त्त ज ग त म हि य वा स ह्म ज प रि न्त म हि ति म क र ता र जी  
 व ज ड क र म कौ मो ह वि क ल ज न क हि दि २ म ॥ २३ ॥ अथ सम्प क र प्र ता व क व न छ प्यै ॥ जी व  
 मि ध्या त न क र ता व न हि ध रै त र म म ल ग्वा न र र स र मे हो इ क र ना दि क सु ग ल अ सं ष्पा त प  
 र दे स स क ति ज ग मों प्र ग अ ति वि द विला स गं ती र धि रे वि म ल म ति ज व ल यु प्र बो ध य टि म ह उ  
 दि त त व ल यु अ न य न पि ष्पि यै जि म ध र म रा ज व तं त उ र ज दं त हं ति प रि ष्पि यै ॥ २४ ॥ इ ति श्री  
 ता टि क स म य सार क र्ता क र्म की क र्मा धार स मा प्र ॥ दि द्दरा ॥ क र ता कि रिया क र म कौ प्र ॥  
 ट व षां न्यो म्पू न अ व व र नौ अ धि कार व द्क पा प पु न्य स म द्द ल्या ॥ २५ ॥ अथ ग्वां न वं ध क ली व र्ता

१

ते

२०

.वनेतकचित्तद्वंद॥ जाकेउदै होतयत्अंतरविनसैमोद्भवदातमरोक सुतश्रुश्रुतकरम  
 कोडविधामितैसहजदोसैअरुथोक जाकीकलाहोतसगरनप्रतितासे सवलोकअलोक  
 सोप्रबोधससिनिरधि धनारसीसीसनवाहदेतपुगधोक॥३६॥ अथसुतासुतएकलीकरनस  
 ई॥ जैसेकाचुचंडालीअगलअजनेतिनएकदीयाबातनऊंएकधरिश्यांइ वांतवकहा  
 योतिनमद्यमांसन्यागकीयोचंडालकहायोतिनमद्यमांसचाप्यांइ तैसेएकवेदनीकरनम  
 केअगलअत्रएकपापएकअंतताउनिन्नताप्यांइ इहमांदिदौरधुप दोऊकर्मबंधरूपतात  
 ग्गानवंततिनकोऊअशिलाप्यांइ॥३७॥ अथशिष्यप्रत॥ वीपईदंडु॥ कोऊशिष्यकहेअरुपं १  
 ही पापअंतदोऊसमनांदि कारनरससुताउफलमारे एकअतिष्टलंगएकप्यां॥३८॥ अ  
 थशिष्यकधना॥ सा॥ संकलेंसपरि नामसौपापबंधदोइ विसुद्धसौअनबंधहेउतेदुमांती  
 येपापकेउदैअसाताताकोद्वैकडुकसांदअनउदैसातामिष्टरसतेदुमांतीया॥ पापसंकल  
 सरुपअंतद्वैविसुद्धरुपइऊंकोसुताउतिन्नसेदुमांतीवमांतिव्ये पापसांऊगतिदोइअंतसां  
 सुगतिदोइ अिसोफलतेदुपरतदुपरवानीया॥३९॥ अथअरुतरववनयथा॥ सणई॥  
 पापबंधअनअंधइऊंमैभुगतिनादि कडुकमकरस्वादअगलकार्पणिये संकलेंसविमुक्त  
 सहजदोऊकर्मवालेंऊगतिसुगतिजगजालमेंविशेषिये कारनादितेदुतादिमुफतमिअ १  
 तमांदि अिसोद्वैततावग्गानदिष्टिमंतउपिये दोऊमहाअंधरुपकोऊकर्मबंधरुपइऊंका  
 विनासुभोपमारमेंद्वैपिये॥४०॥ मोरुपद्वैतिरुपसणाइक॥ सीलतपमंयमविरतिदांना  
 रुजादिकअथवाअसंयमकपायविधेतागदे कोऊसुतरुपकोऊअनुररुपमउवसु  
 केविवारतइविधकर्मरेमांहे अिसीवंचपधनिवपांनीवीतरागदेव आतमधनमसंकरमत्या  
 गयोगदे तौऊनतरेयारागदोपकोहरेया महामिपकोकरेयाएकसुदुउपयोगदे॥४१॥ अ॥

धृतिष्पत्रप्रस्तुत ॥ स० ५६ ॥ सिष्पकद्वैस्वामी उमकरनी असुतकानी द्वैनिपिधमेरे संसेम  
 नमांही द्वै मोपकेसधेयाग्पातादेसविरती सुनी सुईतकी अवस्था तो निरावलंबनां ही द्वै कद्वैश  
 रुकर्मकौन्यासअनुतो असासथै सो अकतं व उ न ही को उ त पां ही द्वै तिरुपाधि आतमसमाधि  
 सोई सिवरूप और द्वै रथुप उ दु ग ल पर वां ही द्वै ॥ १४ ॥ अवंध मोक्ष स्वरूप क व न । सवैवातेई  
 मोष स्वरूप सदा विनई सु र ति वंध मई कर रु ति क ही द्वै जावत काल व सै ज ह्ये त न ता व त सो  
 र सरी ति ग ही द्वै आतमा को अनु तो अव लौ त व लौ त्रि व रूप द शानि व ही द्वै अंध त यो कर नी  
 ज व ग न त वंध विधा त व फे लि र ही द्वै ॥ १५ ॥ अवंध मोक्ष मार्ग निरूप न सो र वा ॥ अंतर दिष्ट ल सा उ  
 अरु सरूप को आव र न ए पर मा त म ना व सि व का र न ए ई स दा ॥ १६ ॥ अवंध मार्ग निरूप न  
 सो र वा ॥ कर म सु ता सु त दो इ उ व ल ग ल पि र वि ता व म ल इ ह सो मु क ति न हो इ नां ही के व ल  
 पा इ ये ध ॥ १७ ॥ अथ त्रिष्पत्र प्रस्तुत र क व न स ० ५७ ॥ को अत्रिष्पकद्वै स्वामी असुत क्रिया असुध सु  
 त क्रिया अशु ध अ त क्रिया सु ध उ म अ सी क्यो न व र नी गुर क द्वै ज व लौ क्रिया के परि नां म र द्वै त  
 व लौ व प ल उ प ल उ म यो ग ध र नी धि र तो न आ वें तो लौ सु ध अं नु तो न हो इ यां त दो क क्रिया मोष  
 पंध की कर नी वंध की करे या दो उ इ रु में न न लो को ऊ वा ध क वि वा र में नि षे धि क नी कर नी  
 ध ॥ १८ ॥ अथ ग्यान मोक्ष मार्ग अ ह क व न ॥ स ० ५८ ॥ मु क ति के सा ध क को वा ध क क र म सं व आ त मा अ  
 ना दि को क र म मां दि लु को द्वै ए ते पर क द्वै जो कि या प त्रु रौ उ न त लौ सो ई म ह्ये मु ह मो ष मा र सो ॥  
 उ क्यो द्वै स म्प क सु ता उ लि ए हि ए में प्र ग ड्यो म्भान क र ध उ र्म गि व लो का ज पे न रु क्यो द्वै आ र  
 ती उ क्त ल व ना न शी क ह त आ उ का र न स रू प द्वै के का रि ज सो हु क्यो द्वै ॥ १९ ॥ स ० ५९ ॥ जो लौ  
 अष्ट क र्म को वि ना स नां ही स र व धा तो लौ अं त रा त मा में धा रा दो इ व न नी ए क र्णान धा रा ए का  
 सु ता सु त क र्म धा रा उ क्त को प्र कृ ति न्गारी न्गारी न्गारी ध र नी इ त नो वि श्रे ष त्तु क र म धा रा बंधा  
 रूप पराधीन सकृति विविधिबंध करनी ग्यान धाना मोक्ष रूप मोक्ष की करनी र हार दोष की र ह

सौम्येभ्यश्चरती॥४७॥ अथ सादवादप्रसंज्ञा॥४८॥ अमुं कृतं कंदे केरुने किं पंसा मोषा  
 असेर्जाविकनमिआतकीगवृत्तं ग्यानपद्मगंदकदे आतमाअवधनदुक्कतनुवेदना  
 तेरुवृदेहेवदलेने यवावोभ्यकरमकरपंमतातधनरद मावधातम्यानधातकात्तदत्त  
 में तेईत्तवमागरके ऊपरि कृतिरेजीवजिन्दकातिवान्म्यादवादकमवजना॥४९॥ अ  
 षष्ठतथाविकनक्रियावर्तते॥५०॥ असमतत्वांगको ककद् अरकर औरतसेमृ  
 दधानीविपरीतिताधरउदे अमुत्तकरमवधकारनदधानेमान्मृकतिकेदेउचुत्ती  
 तिआवर्तुदे अंतरसुदृष्टितेईमृदताविमरगई ग्यान्को उदोत तननिमग्दुउदु  
 करन्तीसौत्तिनरुद् आतमसुरुपादे अउनाअरंतिरसकाउककनउदु॥५१॥ इतिश्री  
 समयसारको सुनपापाकवकननारसमाप्त॥ दोदरा॥ सुनपापकीएकता वन्नीआ  
 गमअनूप अवआश्रयअधिकारकछु कदोअआतमरुप॥५२॥ अवज्ञानवलवर्तने  
 सपशा जेतेजगवासीर्जाववावरजगतरुपतेतेतिजवनिकनिरामवलतेनिके मयुञ्ज  
 रिमानी अैसेआश्रवअगाधजोक्षारोपिरनवतगढे नयोमाउमोरिकं नायेतेद्विधात  
 के अवानकपरमधाममाननाममुत्तमवावोवलफारिक आश्रवपढान्मनयनतेरे  
 वास्योताद्वितिरपियतारमीनमतकरजोरिकं॥५३॥ अवविविधआश्रवउकताग्यानरज्ञा  
 नवर्तने स्वयानेईमा॥ दुर्वितआश्रवजोकाद्विअमपुगुलजीवप्रदेगरोम नावितश्री  
 श्रवमाकद्विजे जहरागविरोधविमोद्विकोसे मंगपद्वितिसाकद्वियजनुद्वितसावित  
 आश्रवनासं ग्यानकलाप्रगते तेइगदुअंतरवादरआननसासे॥५४॥ अवग्यानउदु  
 नकवना॥ दोपई॥ जोदुर्वाश्रवरुपनद्वई जहुनावाश्रवनावनकोई जत्कीदुशाप्रतंमेउ

५

द्विये सोम्याता निराश्रवक द्विये ॥५४॥ अश्रवणात्कौ समर्षपतो ताको वर्णत ॥ सण्डेण ॥ जेते मनन  
 गोवरप्रगत बुद्धि मरवकति न्दपरिनां मननिकी ममता हरउदे मन सो अणो वर अ बुद्धि परवा  
 कता उति न्देके विनासिकों उद्यमधरउदे यादिसांति परिपरितिको पतन करै मोषको जतन  
 करै तौ जलतरउदे असे ग्यान वंत ते निराश्रवक ह्यै सदा जिन्दको सुजस विवकन करउ  
 है ॥५५॥ अश्रिष्य प्रकषन सण्डे सा ॥ ज्यो जगमें विवरे मति मंडु सु छंदु सदा वरतै बुधा  
 तै से चंचलचित्त असंजत वै न सरीरि सने दुज्ज वावतै जैसे सो गसंयोग परिग्रह संग्रह मो हवि  
 लास करै जहूँ जैसे सुवत शिष्य अवारय जीह सम्यक वंत निराश्रवकै सें ॥५६॥ अश्रु रूजरा  
 कषन सण्डक ॥ सरव अश्रव सजिकर मबंधकीने अबते ई उदे आइ नाना तांतिर सदेति है के  
 ई सुतसाता के ई असुत असाता रूप छज्ज सौ नरागन विरोध समवेत है यथा योग क्रिया ॥  
 करै फल कान ई छाधरै जीवन मुकतिको विरदुग हिलेत है या तै ग्यान वंत कौन आश्रवक हत  
 को ऊ सुहृता सौ न्यारे तए सुहृता समेत है ॥५७॥ अश्ररा गच्छे मलताय सुबोध ॥५८॥ अश्रराग  
 द्वेष फल पकषन ॥ दोहरा ॥ राग विरोध विमोह मल एई आश्रव मूल एई कर मवहाइ कै करै  
 धरमकी रूजा ॥५९॥ अश्रवणात् निराश्रवकषन ॥ जहान रागा द्विकदशा सो सम्यक परिना  
 म यातै सम्यक वंत कौ कह्यो निराश्रवनांम ॥६०॥ अश्रवणात् विलासकषन ॥ सण्डे कण  
 जे के ई निकटत बरा सी जगवा सी जीव मिआ मत ते दुग्यान ताव परि नये है जिनकी सुदि  
 धमें न राग दोष मोह कलं विमल विलो कनि में तानौ जीतिल एहें त जि परमाद घट सो धिजे  
 निरोध जोग सुहृ उष जोगकी दशा मै मिलि गएहें ते ई बंधप हति विदारि परसे गडारि आउमै  
 मंन कै कै आश्रु रूपत एहें ॥६१॥ अश्रु उपसमी कयोप समी अवस्था कषन सण्डक तीसा ॥

ह  
 उ  
 को  
 सो  
 ता  
 रा  
 र

जेतेत्रीवपिंरु तपयोपसमीउपसमतिन्कीअवस्था जौलोद्वारकासुडासाइ (पुनः) ॥  
 पिनपांतीमांदि तेसेएकपिनेमेंमिध्यातपिनगपानकलातासीइ जौलैसांतरदेतोळोसिधंल  
 वरन मोहजैसेकीलेनागकीसकतिगतिनासीइ आवतमिध्याततवनानाकूपबंधकने।  
 जौंउकीलेनागकी प्रकृतिपरगासीइ ॥६२॥ अअधसुधनेयप्रसंसा ॥ दोहरा ॥ यदनिवार।  
 याग्रंधकौ यदपरमरसपोप तजैसुधनयबंधदे गंदेसुधनयमाया ॥ ६३ ॥ अधजावविउ २  
 सवर्णनं ॥ करमकेवक्रमेफिरतजगयासीजीवक्षैरह्योवहिरसुपआपतविपमता अंता  
 रसुमतिआई विमलवडाईपाई ॥ ६४ ॥ गालसौंप्रीतिछुटीमायाहीसौंममता सुधनेनिवासा  
 कानौ अतुसौअसासलीनौ  
 सांकधना ॥ संवेया ॥ ६५ ॥ जाकेपरगासमेंनदासेरागदोपमोह आश्रवमितत नदीवधकोत  
 रसंदे तिकंकांलजमें प्रति विवितअनंतरुपआपकं अनतानंतानंततेसरसंदे तावश्र  
 तग्यानपरवानजोविवारवसु अतुसौकनैजदां नवानीकापरसंदे अत्रनअपंडअविवल  
 अविनासीधामविदानंदनाम अंसौसम्पकदरसंदे ॥ ६५ ॥ इतिथ्रीसमयनारकोआश्रव  
 रसमानः ॥ दोहरा ॥ आश्रवकौ अधिकार यह कहेजघावतेजम अयसंवरवमनक  
 रों सुतीरविकर्धरिपेमा ॥ ६६ ॥ अधग्यानवर्णनं सण्डका ॥ आतमोको अदितअध्यातमरुहि  
 तमरहितअंसौ आश्रवमहातमअपदअधवतंदे ताकौविसतारगिलवेकोपरगतनयो-  
 वरुंडवतंदे जामेंसवरुपनोसवमेंमवदीसौपैप्रवनिमांअलपितअकामपंडवतंदे मरे  
 ग्यानतांत सुधसवरकौतेयधरे वाकीरुविरेपकोदमानीददवतंदे ॥ ६७ ॥ अधतेदुग्पांता  
 मदिमाकधन सण्डका ॥ सुधअबेदुअवाधिततेदुविग्यानसुतीअनआराअंतरतेदुसु  
 ताउविताउकरैजडेवतनरुपडफारा सोनिन्दकेउरमेंअपिानेरुचेनिन्दकापरसंगस

वना  
 नरा  
 पत्रने  
 पदुअ  
 अच  
 मरम

ई



सहारा आत्मको अत्रुत्तोरिते हरषे परषे परमात्मधारा अत्र सम्यक् सामर्थता कथना  
संप्रति ॥ जेक वक्तु यद्दु जीवपदारघञ्चौ सरपाइ मिआतमितावे सम्यक्धारप्रवाहवह्यना  
ग्यानउदै सुमकरदृधावे तो अतिअंतरद्वितत्तावित कर्मकले सप्रवेदानपावे आत्मसाधि  
अध्यात्मके पप्ररुनके परब्रह्म कदावे ॥ ६७ ॥ अत्र सम्यक् इष्टिमहिमा कथना ॥ संप्रति ॥ स  
तेदमिआत सुवेदिमद्वारस तेदविग्यान कला जिन्हपाई जो अपनीमहिमा अवधारत त्यागक  
रैउर सों अपराई उदतरितिकरी जिन्हके घटहीतिरंतर जो तिसवाई तेमतिमान सुवा  
णिसमान लगेति न कौन सुता सुतकाई ॥ ६८ ॥ अत्र तेदुग्यानमहिमा कथना ॥ अडिअ ॥ तो  
दुग्यान संवरनिदान निरदोष है संवरसो निर्जरा अत्रुक्रमपोषद है तेदुग्यान सेवमूल जगतम  
हिजांनीये ऊदुपि हेय है तदुपि उपादेयमांनीये ॥ ६९ ॥ अत्र स्वरूप कथना ॥ दोहरा ॥ तेदु  
ग्यान तव लौतलौ जव लौं अकतिन होइ परमयोति परगत्तहां तहां विकल्पनकोइ ॥ ७० ॥  
अत्र तेदुग्यानमहिमा ॥ दोपरी ॥ तेदुग्यान संवरजिनपाये सो चेतन शिवरूपकहायो ते  
दुग्यान जिन्हके घटनाही ते ऊदुजीवबंधं घटमांदी ॥ ७१ ॥ अत्र तेदुग्यानमहात्मकथना  
दोहरा ॥ तेदुग्यान साबुनतयो समरसनिर्मलनीर धोबीअंतरआतमा धोवैनिजगुनवीर  
॥ ७२ ॥ अत्र तेदुग्यानकी कर्तव्यता ॥ संप्रति ॥ जेसै रजसोधारजसोधिकें दरवकाठै पावक  
कनककाठिदाहत उपलकौ पंकके गरतमें थोडारिये ऊतक फलनीर करै उऊलनितारि  
डारै मलकं दुधिकौ मधैया मधिकोठै जेसै मांघनकौ राजहंस जेसै दुधपीये त्यागजलकौ ते  
सेग्यानवंत तेदुग्यानको सकतिसाधे वैदुनिजसंपति उछेदुपरदुलकौ ॥ अत्र तेदुग्यानमे  
ऊमहुअयदकथना ॥ छपया ॥ प्रगततेदुविग्यान आपुनपरगुनजाने धरपरनितपरित्या  
गसुखअत्रुतवधितिगने करै अत्रुतकअसौस सहजसंवरगासे आश्रवधारतिरोधकरम  
घनतिमरविवा नासे बयकरिवितावसमतावतजिनिरविकल्पनिजपरिहै निरमला

विमुक्तसा सुत सुधिर परमं अती प्रिय सुपल द्यौः ण्ड्या इति नांरिकं समं वै सारकौ संवरकर समं  
 द्यौदरा ॥ वरनी संवरकी दशा यथा सुगति परवान् च कतिवितती निर्जरा सुतोत्तविकथरिक् २  
 ना चोपद्रा ॥ जो संवर पद पाइ आनंद है ॥ जो सुख कृत कर्म निकंद है जो अफंदु फे वरु निरुक्तं  
 दे सो निरजरा वनार सीव है ॥ १०५ ॥ अध सम कित महिमा कथना ॥ द्यौदरा ॥ महिमा सम्पत्त ज्ञाना  
 की अस विरागवल जोइ क्रिया करत फल सुजते करमबंधन दिहाइ ॥ १०६ ॥ अध सम क महि  
 मा कथन सण्डकण ॥ जैसे रूपको उक सरूप करे नाच कर्मको उकी कदावैता सो कां उकंदे।  
 रकंद है जैसे वितवारिनी विचार वितवारवाको जारदी सो प्रमतरता सो वितवंकंद ॥ जैसे भा  
 इवालिक सुधाइ करे लाल गाल जोने ताहि औरको आदु पिवाके अंकंद है तैसे ग्यानवंत तांति  
 नाना कर रति वांने किरिको तिन मानेयाते निकलंकंद ॥ १०७ ॥ अतः संघे ॥ जैसे ति सिवा सर  
 कमल रहै पंकज कदावै पंत वागे के टिगपंकंद है जैसे मंत्रवादी विपधर सो गदावगा तमंत्रक १  
 सकतिवाके विना विपदंकंद है जैसे जीतगं देवी क ताइ रहै रूप अंग पांती में कनक जैसे  
 काई सो अतंकंद है तैसे ग्यानवंत नाना ताति कर रति वांने किरिको तिन मानेयाते निकलं  
 कंद है ॥ १०८ ॥ अध ग्यान वैराग्य शक्ति वर्णन ॥ सोरवा ॥ सुब्र उदै सनमंध विपेतो गवे समकि।  
 ती करे ननु तनबंध महिमा ग्यान वैरागकी ॥ १०९ ॥ अध ग्याताकी व्यवस्था ॥ सण्टेण ॥ सम्प।  
 कवंत सदा उर अंतर ग्यान वैराग उदै सुन धारै जा सुप्रतावल पति ननु कृत जाय अजीव दश २  
 निरवारै आतमको अतु तौ करि कै धिर आधनरै अरु और नितार साधि सुदुर्वलंडा सि  
 वं सर्व सु कम उपाधि व्यधाव मिजादे ॥ ११० ॥ अध मिथ्या दृष्टी व्यवस्था कथन ॥ सण्टेईया ॥ जो  
 नर सम्प कवंत कदावत सम्प कृपांत के लानही जागी आतम अंग आवंध विचार न धार  
 त संग कहे ह्म लागी लेषधरे सुति रंते पटं तरे अंतर मोह मदान ल दृपी सुन हिये कर  
 ति करे परि सो सक्ती वन होइ तिरागी ॥ १११ ॥ अध मूट क्रिया वर्णन माह सण्टेईसा ॥ यंध

वैश्वस्वैसुतपद्य उपजगमेविवद्वार सुपत्रा साधिनिरजनदेश सुसीषतल इन्द्रता नगधर  
 गफिरैतजिसंग छके सरवगमुत्तारसमता एकरइतिकरै सवपै ससुकेन अनातम आता  
 मतत्रा ॥ ७५ ॥ पुन मूढवषोने ॥ ७६ ॥ ध्यांतधरै करै इद्रियनियरु विग्रह सौनगने निजनत्रा त्या  
 गविस्तुतिविस्तुतिमडैतनजोगगदै तवतोगविरता मौनरहै लहिमंदुकषायसदै बंधनदे  
 श्नतता ॥ एकरइतिकरै सवपै ससुकेन अनातम आतमसत्ता ॥ ७७ ॥ पुन मूढवषोने ॥  
 वोपई ॥ जोविष्णुपांतक्रियात्रवगादै जोविष्णुक्रियामोषपदुवादै जोविष्णुमोषकदैमेंसुषा  
 या सोअज्ञानमूढनेमेषुषीया ॥ ७८ ॥ अधमहामूढा ॥ व्यवस्था कवनसवैया इकतीसा ॥ ज  
 गवासीजीवनि सौगुरुउपदेसकदै उमैइहां सोवत अनंतकालवीतेहैं जणाके सवैतवि  
 तसमता समतसमितहितकेवल कवनजामे अक्षरसजीतेहैं आवोमेरेनिकटवतावोमे  
 उहारेगुनपरमरेसे सतरेकरमसुंरीतेहैं जैसेवैनकदै गुरुतऊतेनधरे उरमित्रकेसे  
 पुत्रकिधौं चित्रकेसेवीतेहैं ॥ ७९ ॥ दोहरा ॥ एतेपरबजरो सुगुरु बोलै कवनरसाल सैना  
 दशा जागृतदुशा कदै इज्जकावाला ॥ ८० ॥ सैनदशा वर्णन ॥ सण्डण ॥ कायाचित्रसारी  
 मैकरमपरंजंकतारी मायाका सवारी सेजचादुस्कलपना सैनकरैवेतन अवेतनताना  
 दलीयेमोहकी मरोरयहै लोचनका टपना उदेवलजोरयहै स्वासकोसवदुयोरविधो  
 सुकारजकोदोरयहै सपना अिसमूढदुसामे मगनरहै तिज्जकालधावेत्वमजालमेंपा  
 वैरुपत्रपना ॥ ८१ ॥ अक्षरअटतदशा वर्णन ॥ सवैया ॥ इणचित्रसारी न्यारी न्यारी पर  
 यंकन्यारी सेज न्यारी वादरती न्यारी इहां कृवीमेरी धपना अती तअवस्था सैन निजाव  
 हाको उपैत विद्यमानपलकनयामे अवबपना स्वासअौ सुपनदोऊ निजाकी अलग  
 बुद्धे मूढे सबअंगलपि आतमदुरपना तार्थितयोचितन अवेतनता तावत्यागिताले

द्विष्टिभोजिकें संतालेरुपअपनां अथवनः सुग्ररुशिष्पाकधनयेहा ॥ ५ ॥ द्विष्टिभोजिके अणुपु  
 ते शिवरूपसदेव जे सोवहिसंसारमें ते जगवासी जीव ॥ ६ ॥ आत्मदर्व स्तुतिकधन ॥ जो प  
 दसोपद तयद्वे सोपदसे ऊ अतुप जिह्मपद परसत और पद लगे अपादाकप ॥ ७ ॥ अथसं  
 सारवर्तनं ॥ स० ५ ॥ ज वजीवसो वै तवसमुक्ते सुपिनसत्सवादीकृत लगे जव जागे नीदुपोश  
 कें जागे कद्वै यदै मेरी तनयद्वे मेरी सौजताकफुवमान्त मरनधिति जोइके जाने तिजमरना  
 तवसुक्ते कृत वृक्ते जव और अवताररुमदोइके वाक्यवतारकी दुसामे फिरियदये चयाहि  
 सांति फुगे जगदुप्यो दमदोइके ॥ ८ ॥ अथग्याताकी क्रियाकधन ॥ स० ६ ॥ यं हि तं विवेकी-  
 लहिएकंताकी तिकागहि इंद्रक अवस्थाकी अनेकताहर उदै मतिश्रुतिअवधिइत्यादिविक  
 लमेति निरविकल्पानमनमें धर उदै इदियजनतिइमसुपसो विषयके परमकरुपके  
 करमनिर्जर उदै सद्जसमाधिसाधिसागिपरकी उपधि जातम अराधिपरमात्मकर उदै ॥ ९  
 ॥ अथग्यानसमुद्भवने ॥ स० ७ ॥ जाके उर अंतरनिरंतर अनेतदुर्वतावतासिरदोपसुताव  
 नतर उदै निर्मलसो निर्मलसुजीवनप्रगतजाको घटमें अघटसको उककर उदै जोमंमति-  
 अतिओधिसनपर्यकेवलसुपं वधातरंगनिउमंगिउठर उदै सोइग्यानउदधिउदान्मदिगात्र  
 पारंनिराधानाकमें अनेकता धर उदै ॥ १० ॥ अथमाकमार्गप्रामिकधन ॥ स० ८ ॥ केईकरक  
 ए सदै तपसो सरीरद्वै धर्मपानकरे अधोसुपकेके फुउदै केईमहात्र तगदै क्रियांमंगा-  
 नरद्वै वैभुजितारपे पयारके से फुले दै इत्यादिकजीवनको सर्वधा सुकतिनादि फिरे जगमा-  
 हिंओ वयारिके वधुले लैदे जिन्हके द्विये मंग्यान तिन्दोको निरवांन करमके करतार तर  
 ममें तसो दै ॥ ११ ॥ अथमृदव्यवस्थावर्तनं ॥ दोहरा ॥ लीनतयो व्यवहारमें उकतिन उपजेको  
 इ दानतयो प्रवृ पवजं पे सुकतिकदासो होइ ॥ १२ ॥ दोहरा ॥ प्रवृ समिरोसोपदो करे-

वैचरवैसुतपंधलपेजगमेविवहारसुपत्ता साधिनिरंजनदेशसुसीपतलेईअदस्ता नगधरे  
गफिरैतजिसंग छके सरवंगसुत्तारसमत्ता एकरइतिकरै सतपेससुफेनअनातमआता  
मत्तत्रा॥७५॥ पुनः मूढवर्णनं॥ ध्यानधरे करैइद्रियनिग्रह विग्रहसौतगनेनिजनत्रा त्या  
गविरुतिविरुतिमडैतनजोगगद्वै तवतोगविरत्ता मोनरहेलहिमंदुकषायसद्वै क्वनदे  
श्नतत्ता एकरइतिकरै सतपे ससुफेनअनातमआतमसत्ता॥७६॥ पुनः मूढवर्णनं॥  
वोपई॥ जोविभुपांतक्रियाअवगाहै जोविभुक्रियामोषपदवाहै जोविभुमोषकहैमंसुष  
या सोअज्ञानमूढ नमंसुषीया॥७७॥ अथमहामूढा॥ व्यवस्था कवनसवैयाइकतीसा॥ ज  
गवासीजीवनि सौं गुरुउपदेसकहै उमेइहां सावतअनंतकालवीतेहै जगोइसवेतवि  
तसमतासमेतसमेतहितकेवल कवनजामेअक्षरसजीतेहै आवौमेरेनिकटधतावौमे  
उम्हारेगुनपरमरेसेसतरकरमसुरीतेहै असेवेनकहै गुरुतऊतेतधरेउरमित्रकेसे  
पुत्रकिधौंकिवकेसेवीतेहै॥७८॥ दोहरा॥ एतेपरबजरोसुगुरु बोलैकवनरसालसैना  
दशाजाएतदुशा कहैइऊंकावा॥७९॥ सैनदुशावर्णनं॥ सण्ण॥ कायाक्विसारी  
मेकरमपेसजकतारीमायाकासवारीसेजवाइस्कलपना सैनकरैवेतनअवेतनतानां  
दलीयेमोहकीमरोरयहैलोचनकीटपना उदैवलजोरयहै स्वासकोसबदुघोरविषा  
सुकारजकोदौरयहैसपना अिसमूढइसामे मगनरहैतिऊंकालधावैत्वमजालमेनपा  
वैरुपअपना॥८०॥ अथजाएतदुशावर्णनं॥ सवैया॥ इणचित्रसारीनारीनारीपर  
यंकनारी सेजनारीवाइरतीनारीइहांकुंवीमेरीघपनाअती तअवस्थासैन निद्रव  
हाकोउपेनविद्यमानपलकनयामेअववपना स्वासअसुपनदीऊनिद्राकीअलग  
बुकेसुकेसबअंगतधि आतमदुरपना त्यागीतयोचितनअवेतनता तावत्यागिताले

द्विष्टिप्रोजिकें संतालेरुपअपनां अवडनः सुग्ररुशिष्पाकघनयेहा ॥ इहिविधिजेजोपुरुषा  
 तेशिबरूपसदेव जेसोवहिसंसारमें तेजगवासीजीव ॥ १२ ॥ आत्मदुर्वस्तुतिकघन ॥ जोप  
 दसौपदतयहरे सोपदसैऊअनुप जिहियदपरसतऔरपद जगैआपदासुप ॥ १३ ॥ अथसं  
 सारवर्तनं ॥ सण्डण ॥ ज बजीवसोवै तवसमुकें सुधिनसत्पवादफूठ जगैजवजागैनीदुपोश  
 कें जागैकद्वैयदमेरोतनयदमेरीसौजताकफुठमानत मरनेधितिजोइकें जानें तिजमरना  
 तवसुकेफुठवुके जबऔरअवताररूपहोइके वाकअवतारकीदुसामेंफिरियहै पेवयाहि  
 तांतिजुठो जगदेप्योहमटेइकें ॥ १४ ॥ अथप्राताकीक्रियाकघन ॥ सण्डण ॥ यंहितविवेकी  
 लहिएकताकीतेकगहिइंदुऊअवस्थाकीअनेकताहरउदै मतिश्रुतिअवधिइत्यादिविक  
 ल्यमेतिनिर्विकल्पानमनमेंधरउदै इदियजनतिइयसुपसौविषयकेकेपरमकरुपफैरें  
 करमनिर्जरउदै सद्जसमाधिसाधिसागिपरकीउपधिआतमअराधिपरमातमकरउदै ॥ १  
 ५ ॥ अथग्यानसमुद्रवर्तनं ॥ सण्डण ॥ जकेउरअंतरनिरंतरअनेतदुर्वतावतासिरहैपेसुताव  
 नतरउदै निर्मलसौनिर्मलसुजीवनप्रगल्जाकौघटमेंअघटरसकौउककरउदै जामेंमति  
 अतिऔधिमनपर्येकेवलसुपंवधातरंगनिउमंगिउठरउदै सोहैग्यानउदधिउदारमंदिगाअ  
 पारनिराधारकमेंअनेकताधरउदै ॥ १६ ॥ अथमाझमार्गअप्राप्तिकघन ॥ सण्डण ॥ केईकरक  
 टसंदै तपसौं सरीरदुहैधुंमपांनकरैअधोमुपकैकेफुठेहै केईमहात्रतगहै क्रियामेंमग  
 नरहैवहैधुजितारपेपवारकेसेछलेहै इत्यादिकजीवनकें सर्वधामुकतिनांहि फिहैजगमा  
 हिंअौवयारिकेवगुलेलैहै जिन्हकेहियेमेंग्यानतिन्हहीकौनिरवांनकरमकेकरतारतर  
 ममेंसुसोहै ॥ १७ ॥ अथमहदवस्थावर्तनं ॥ दोहरा ॥ लीनतयोववहारमें उकतितउपजैको  
 इ दोनतयोप्रसुपवजपै मुकतिकहांसौहोइ ॥ १८ ॥ दोहरा ॥ प्रसुसमिरौसुजोपठे करी

विविधविवहार मोषसरूपीयात्मा ग्यानगम्यतिरधान ॥११॥ अधपर्यायतिरूपना सवेयातेईरु  
काज्विनानकरेजियउदिमुजाजविनांरनमांदिनरुके डीलविनानसधेपरमारधसीलविनास  
त्यसौनअरुके नेमविनानलहेनिह्वैपदुपेमविनारसरीतिनरुके ध्यानविनानघतैमनकीगति  
ग्यानविनासिवपंधनरुके ॥१२॥ अधग्यानमहिमांधारकस्यववस्था ॥ सण्तेण ॥ ग्यानउदोजिन्हा  
कैघटअंतरज्योतिजगीमतिहोतिनमेंली बाहिरदिष्टिमिटीजिन्हेकेहियआतमध्यानकंलावि  
धिफैली जेजइवेतनतिबलवैसुविवेकलीयैपरषेअनघैली तेजगमेंपरमारधजनिगहिरुधि  
मांनिअध्यातमघैली ॥१३॥ अधमोक्षप्रतिव्यवस्थाकण ॥ दोहरा ॥ बज्रविधिक्रियाकलेससो  
सिवपदुलहेनकोइ ग्यानकलापरगाससौं सहजमेषपदुहोइ ॥१४॥ ग्यानकलाघट २ वसे  
योगखगतिकेपार निजरकलाउदोतकरि सुकहोउसंसार ॥३॥ अधअनुतवप्रसंसा ॥ ऊड  
लीया ॥ अउतवचिंतामनरतन जाकेहियैपरगाससौं पुनीतसिवपदुलहे दूहैचउर्गतिवासा  
दूहैचउर्गतिवासासधरक्रियात्रमडे नूतनबंधनिरोध अचकतकरमविहंडै ताकेनग  
नुविकारनगनुबहो तारनगनुतौ जाकेहिरदुमांदिरतनचिंतामनअनुतौ ॥४॥ अधग्यान  
दिष्टसामर्थसाधन सण्डण ॥ जिन्हेकेहियैमेंसतसुखउदोततयोफैलीमतिकिरनमिध्यात  
मनघट्टे जिन्कासुदिष्टमैनपरवैविषमतासौं समतासौं प्रतिममतासौं लष्टपष्टहै जिन्हेके  
कटाछिमेंसहजमोषपंधसधैमनकौनिरोधजाकेतनकौनकघट्टे तिनकौकरमकालोलेयहै  
हैसमाधिहोलेयहै यहैयोगसनकोलेयहैमघट्टे ॥५॥ अधपरवसुकोत्यागताविशेषताक  
घना ॥ सण्डण ॥ आतमसुत्ताउपरपरताउकानसुधि ताकौजाकौमनमगानपरियरुमैरह्यो है  
असौअविवेककौनिधानपरियरुहारा ताकौत्यागइहांलौं समुच्चैरूपकह्योहै अबजिना  
परत्नमरुकरिवेकौकाजबजरोसुयुरु उपदेसकौउमह्यो है परिगहत्यागपरिगह्योवि  
शेषअंगकहिवेकौउदिमुउडीरलहउह्योहै ॥६॥ अधसामान्यविशेषकघना ॥ दोहरा ॥





जैसे दे जो दुख तोमते सई सुताउ सधैको ऊदवेका कौ सुताउ नगह उदे जेस सप उऊला-  
विविध वर्न माटी सो नदी सै निति उऊल उर उदे ते सग्यान वत नाना तोग परिगत जेग करत किले  
सन अग्यान ता लह उदे ग्यान कला इती होइ इदु दुखा सुनी होइ कनी होइ तोति धिव नार सीक  
हउहे ॥१५॥ अधस्या हा दुप्ररूपन ॥ सण्डा ॥ जो तो ग्यान को उदात तो तोन दिवंध होत वरते मि  
घातत वनाना बंध हो ही हे । जैसे ते दु सुनिकें उग्यो अं विष तो गनि सौ तो गनि सौ उदि मकी रीति  
ते विघो ही हे सुनुते या संत उ कहें में सम कित वंत यह तो एकंत परमे सरकी दोहा हे विष-  
सौ विमुष हो ही हे अउ तो दु सा अरोहि मोष मुष हो ही हे तो ही असी मति सो ही हे ॥६॥ अधप्यान वै  
सग्य सुगपत वर्नन ॥ बोए ही ॥ ग्यान कला जिन्हके घट जगी ते जगमां हि ससु ज वै रणी ज्ञानी मा  
गन विष सुषमां हि यह विपरीति संत वें नां ही ॥७॥ दोहरा ॥ ग्यान सकति वैरण वठ सिव सा  
धै समकाल ज्यो तो वन नारें हें निरुषे दोऊनाला ॥८॥ अधमूट कर्ता कर्म स्पष्टति कघन ॥  
बोपई ॥ मूट करम को कर्ता हो वै फल अति लाष धरै फल जे वै ग्यानी क्रिया करै फल मू  
नी लगेन लेपनि जे रा इनी ॥९॥ बंधै करम सो मूट ज्यो पाटकी टतनपे म सुले करम सो  
समकिती गोरष धंधा जे म ॥१०॥ अधग्याता को अकरै वकघन ॥ सण्डे सा ॥ जे निज प्र  
वकर्म उदा सरहेंगे जे इम में न वि लाष करै निर वैर हि यतन ताप सहेंगे हे जिनके दिष्ट अ  
तम ग्यान क्रिया करिकें फल को नवहेंगे ते सुवि कडु न ग्याय कहें तिन्हको करता म  
तोत कहेंगे ॥११॥ ग्याता वर्नन सण्डे जिन्हकी सुदिष्ट में अनिष्ट इष्ट दोऊ सम जिन्हको  
अवार सु विवार सुत ध्यान हे सारधको साग जे लगे हें परमारधको जिन्हके वचन में  
न नफा हें न ज्ञान हे जिन्हकी सम किमें सरार अे सो मो नित यत धानको सो बालक क्रिया  
नको सो म्यान हे पारषी पदारधके साषी त्वम सारधके तेई सा फति नही को जघार गप्यान  
हे ॥१२॥ अधसम्य कवंतको सादसा ॥ सण्डे ॥ जमको सो ज्ञाता उषदा ता हे असाताका

कर्मताके उदै मरुपन साहसाह उदै सुरगविनासी लंनि वासी ओपतालवासी मवनि को ॥  
 तंन मन कं प उर उदै उर को उजासो न्नागे देपिये सपत ते सो डोलत नि संक नयो आने दु  
 ल उदै सहज सुवीरजा को सा सुतो सरी अ सा ग्पानी जी व आरु ज्ञ वा रु ज्ञ अ वा रु ज्ञ क ह  
 उ है ॥२३॥ अघ सत तय नाम दोहरा ॥ इह तय परलोक तय मर न वेदु ना जात अनरु अ  
 न गपत तय अक म मात तय सात ॥२४॥ अघ सत तय लडन क घना ॥ स ॥ दश धा प रि यु  
 ह वियोग चिंता इह तव चर्य ति ग मन तय परलोक मां नित्यै प्रा नन को हरे न मर न तय क हा व  
 सो ई रोग द्विक क ह्य द वेदु ना व प्रा नित्यै रू क ह मा रे को ऊ ना ही अ नरु अ तय चो रं तै वि  
 वार अ गु त मन आ नित्यै अ वे न विं त्यो अ व ही अ ना न क क हा धी दो इ अे सा ते अ क सा गा ॥  
 त ज ग ते मं जं नित्यै ॥२५॥ अघ इह तव निवार न क घना ॥ छ ॥ न प मि य मि त पर वा न वा न्प  
 न अ व गा ह नि र प्त आ त म अं ग अ तं ग पर ध न इ म अ द्गत छि न न गुर सं मा र वि न व प रि वार  
 ता रु ज्ञ सु ज हं उ त प ति तं हं प्र ल य ज्ञा सु म ये ग वि र ह त सु परि ग ह प्र पं व प र ग व प रि धि इ ह  
 त व त य उ प जै न वि त ग्पाना नि सं क ति क लं क नि ज ग्पान रु प ति न घं न ति त्प ॥२६॥ अघ पर ल  
 क तै नि वार न मं अ छ ॥ ग्पान व क्क म म लो क ज्ञा सु अ व लो क म प सु प इ त र लो क म न मां हि  
 जि स मां हि दो प ड प न्ना मु ग ति प द पा य क दो ऊ यं डि त पां नि मे अ पं डि त सि व ना य क इ  
 ह वि धि वि वार पर लो क त य न दि व्या पि त व र ते सृ षि त ग्पान नि सं क ति क लं क नि ज ग्पान रु  
 प नि र पं ति नि त ॥२७॥ अघ मर न ते नि वार न मं अ छ ॥ फ र स जी त ना सि का ने न अ रु अ  
 व न अे उ इ ति म न व व न व ल ति नि मा स उ स्वा स चा उ षि ति ए द वा प्रा न वि ना स ता दि ज ग म  
 र न क हि ज्ञै ग्पान प्रा न सं कृ त जी व ति क्काल न छि क्कै य ह वि त करे तं ग हि म र न  
 नै प्र वा न्जि न व र क षे त ग्पाना नि सं क ति क लं क नि ज ग्पान रु प ति र प

दत्तातयनिवारनमंत्र छप्ये वेदनवारोजीवजाहिवेदंत सो उ जिय यहवेदना अतंगसुतोमम।  
अंगनाहिविय करमवेदना उ विधिएक सुषमय इतीय इष दीकमोहविकार सुदगलोकोख  
हिरसुष जवयहविवेकमनमहिधरत तवनवेदनातयविदितग्यानीनिसंकनिकलकनिज  
ग्यानरूपनिरषंतनित॥२७॥ अथअनरकातयनिवारनमंत्र॥ छप्ये॥ जोसुवसुसत्तासरुपा  
जगमहित्रिकालगत तासुविनासनदोइ सहजनिह्वैप्रवातमते सोममआतमदरवघातहिं  
सहायधर तिहिकारनरकाकतकोइ तकाकनकोइपरजवइहिप्रकारनिरधारकियतवअ  
नरकातयनसितग्यानीनिसंकनिकलकनिजग्यानरूपनिरषंतनित॥२८॥ अथअनप्रपतत  
यनिवारनमंत्र॥ छप्ये॥ परमरूपपरतकृजासुतकनविनमंडित परप्रवेशनहंताहिमहि।  
अगमअषाहितसोममरूपअरुपअरुतअनमितअडुतधन ताहिवोरकिमगद्वैअैरतहि।  
तहैअैरजनधितवतएमधरिध्यानजवतवअग्रततयउपसमित ज्ञानीनिसंकनिकलक  
निजग्यानरूपनिरषंतनित॥२९॥ अथअकस्माततयनिवारनमंत्र॥ छप्ये॥ सुदुबुदुअवि  
रुदुसहजसुसमृद्धिसिद्धिसम अलषअनादिअनंतअत्रलअविवलसरूपमम विदविल  
सपरगोसवीतविकलपसुषघातक जहइविधानहिकोइहोइतहंकछुनअवानकजक्य  
हविवेकउपजंततव अकसमाततयनहिउदित ग्यानीनिसंकनिकलकनिजग्यानरूप  
निरषंतनित॥३०॥ अथग्यानीकीअवस्थाकघन॥ छप्ये॥ जोपरअनत्यागतसुदुनिजअन  
गहंतकव विमलग्यानअकरजासुघटमाहिप्रकासुदुव जोरुतशर्वकर्मनिर्जराधारव  
हावत जोनवबंधनिरोधि मोषसारगसुषधावत निःसकेतादिजिअष्टयुत अष्टकर्मअदि  
संहरत सोअरुषविवछनतासुपदवनारकीवेदनकरता॥३१॥ अथअष्टअंगकेनाम॥ सो।  
रवो। प्रप्रमृति ससेजानि इलियअबंठितपरिनमन रतीयअंगअगिलाति निरमलदृष्टा-

चैत्रवर्षगुन ॥३४॥ पंचअकषपरदोष धिरीकरनेवठमसंज्ञे सनेमवैवल्लेषोप अष्टमेशी  
 प्रतावना ॥३५॥ अघाष्टमअंगलङ्गनमाद् ॥ सा ५० ॥ धर्मनेनसंसै सुसंकर्मफलकीनेका  
 अश्रुतकौदेपिनगिलांनिआनेवितमे साचीट्टिरापैकाकृप्रातीकोनदोषजापे नवलतांता-  
 निधितिवानेवोधवितमे प्यारनिजरुयसोअछाहकीतरंगउठै एष्टआवैअंगजवतामेसा-  
 मकितमे ताहीसमकितकौंधरेसोसमकितवंतवहेमोषपावैआनआवैफिनिहृतमे २५  
 अवैतन्यनाटिककषनस ५० ॥ अघबंधनासंमुतासगातकलाप्रांसनववधरुधिता  
 लतोरतउछरिके निःसंकितआदिअष्टअंगसंगसपाजोरिसमताअलापवारीकरैसुरत-  
 रिकैनिस्जसनादगाजै ध्यानमिरदंगबाजै छक्योमहानंदमेंसमाधिरीठिकरिके सत्तारंग-  
 लमिमेंमुकततयोतिङ्कालनवैसुद्धिदृष्टिनटग्यानसांगधरिके ॥३५॥ इतिममयसा  
 र्कौनिर्जराकारसमान ॥ दोहरा ॥ कहीनिज्जंराकीकवासिवपधमाधनदार अवकटुवं  
 धप्रबंधकौ कहांअलपविस्तार ॥३६॥ अघबंधविदारिनसम्कवर्ननं ॥ सवैया ॥३॥ मोहा  
 मदपाइजिनसंसारीविकलकीनेयादातेअजानवानविरदवद् उहै अेसोबंधवीरविक  
 रालमहाजालसमग्यानमंदकरै वंदराज्ज्योगद् उहै ताकौवलतंजिवेकौघटमेंप्रगत्त  
 योउफ्तउदारंजाकौउडिममहउहै सोहैसमकितसुख्यानंदअंकुरताहिनिरपिव  
 नारसीनमोश्कहउहै ॥३७॥ अघकर्मवितनाग्यानवर्ननं ॥ स ३१ ॥ हहांपरमातमक  
 लाकौपरगासतदधरमधरामेंसससुखकीधुपद् जहाअुतअुतकौगटासतदांमोह  
 केविलासंमैमहाअंधेरकप्यदै फेलाफिरैठटासीघटासीघटनवीववेतनकीवैतनाइ  
 ज्जकौघाप्रपञ्चपदै बुद्धिसौनगहीजाइवानीसौनकदीजाइवानीकीतरंगजेसेपानामें  
 उमृप्यदै ॥३८॥ अघबंधनिदांनकंधनस ३१ ॥ कर्मजालवर्धनासोजगमेंनवं ५२

ब्रह्मरूपकदाचिमतवचकायसौ चेतनअचेतनहीसासौनबंधरूपजीवबंधरूपअउपर्य-  
वविषयविपरोगसौ कर्मसौअबंधसिद्धियोगसौअबंधजिनहिसांसौअबंधसाधुग्यातावि-  
षेतोगसौ इत्यादिकवस्तुकेमिलापसौनबंधरूपजीवबंधरूपएकरागादिकअसुखउपयोगसौ  
॥४॥अथबंधनिदानदिष्टिकरनवस्था॥सप३॥कर्मजालवर्गनाकोवासलोकाकासमा-  
दिमतवचकायकोनिवासगतिआउमें चेतनअचेतनकीहिसासवैषगलमेंविषेतोगव-  
रुतेउदैकेउरफाउमें रागादिकसुखताअसुखताहैअलषकीयहैउपादेनहैउबंधकेवहाउ  
मेंयाहातेविचनअबंधकह्योतिलकालरागदोषमोहनाहीसम्पकसुनाउमें॥४॥अथ  
उदिमप्रससासवैया॥२॥कर्मजालजोगहिसासौगसौनबंधरूपैतघापिग्यातादिमीवषामे  
जिनकेनमेग्यानदिष्टिदेतविषेतोगनिसौहैतदोऊक्रियाएकषेतयोंतौवनैनाहीजैजमे  
उदैबलउदिमगहैपैफलकौनवहैनिरदैदसानहोइहिरदैकेननमें आलसनिरुदिम  
कीसुमिकामिघातमाहि जहानसंतारैजीवमोहनीदुसैनमें॥४॥अथउदैवस्थावनी  
नादीहसा॥नबजाकौनैसीउदै तबसोहैतिहिंधान सकतिमरीरैजीवकी उदैमहाबलव  
ता॥४॥अथउदैवलवर्णन॥सप३॥जैसैंगजराजपस्योकइमकेऊंडवीवउदिमअरुतैपै  
नधुतैषषदंडसौ जैसैलोहकंटककीकोरसौउरफ्यामीन अचेतअसातालहैसाताल  
हैसंदसौ जैसैमहातापसिरवाहिसौगरास्योनरतकेनिजकाऊउवि सकैनसुखदसौ तैसै  
ग्यानवंतसबजानैनवसाइकबुबंधोफिरैरवकरमफंदसौ॥४॥अथयथावस्थावर्णन॥  
त्रोपई॥जेजियमोहनीदुमेंसोवै तेआलसीनिरुदिमहोवै दिष्टिषोलेजेअगेषवीनां तिन  
आलसतजिउदिमकीह्ना॥४॥अथयथावस्थाक्रियाकथना॥सप३॥कौनबंधैसिरसै  
सुमनिबंधैपाइनिसौ जानैनगवारकेआमनिकेसौकावहै योंहामुहकठमेंमगतफुल

ही कौ दौरे कृष्ण वासना नै पै न जानें कदा सां वै है मनि कौ परि यज्ञ नै जौं दरी उगत मंदि सां व  
 का समुष्णिपान लोचन की ताव है ज हां कौ सुवासी सी तो तहां की मन्मज्ञो नै जा कौ जै सो सु २  
 गता कौ ते ही रूप ना वै है ॥ ४७ ॥ अथ यथा क्रिया त बा फल ॥ दोहरा ॥ बंधव टा वै अंधै ते  
 आलसी अज्ञान श्रु कति है उकर नी करे ते न सु द्वि मु वान ॥ ४८ ॥ अथ ग्यान वगुण्य सह का  
 रत्व वर्तन ॥ स ३३ ॥ ज वल अजीव सुदृ वस्तु कौ विद्या भो व त व ल ग ना ग सो उदासी मन्वं  
 गंदे तो ग में मगन त वगुण्य न की जगनि तां हि तो ग अति लाप की द सा मिष्या त उगं दे ता न विषे  
 तो ग में मगन सो मिष्या सी जीव तो ग सो उदा सी सो म म कि ती अतं गं दे अे सी जा नि तां गं सो उदा  
 सी कै श्रु कति साधौं य है मन वां ग तो क गे री ही सु गं गं दे ॥ ४९ ॥ अथ पदार्थ वच क वन दो  
 हरा ॥ धर म अरथ अरु कां म सि व श्रु क पार थ व च र ग कधी क ल प ना ग हि रं दे सुधी गं दे  
 सर वं ग ॥ ५० ॥ अथ पदार्थ व्यवस्था क वन स ३३ ॥ कल कौ अचार ता हि मुर प धर म कं दे  
 पंडित धर म कं दे व सु के स्व ता व कौ ये ह कौ प जां नो ता हि अ ग्नी अर थ कं दे ग्नी कं ह  
 अर थ दर व द र सा उ कौ दं प ता कौ तो ग ता हि छ र बु धि कां म कं दे सुधी कां म कं है अति ल २  
 प वित चा उ कौ इ इ लो क वां न कौ अ ज्ञान लो क कं दे मो घ म ति मां न मो प कं दे वं ध के श ता  
 व कौ ॥ ५१ ॥ अथ श्रु पा र्थ वच कौ अध्यात्म रूप क वन ॥ ५२ ॥ धर म कौ सा ध न जू व सु कौ  
 सु ता उ सा धै अर थ कौ सा ध न विले छ द र्व प तं ये है कां म सा ध ना न्न सं ग्र वै नि र स प द स ह  
 ज स रू प मो प सु द ता प्र ग त में अं त र का दि धि सौं नि रं त र विले कै बु ध धर म अर थ कां म मो प  
 ति ज घ त में सा ध न अ रा ध न का सौं न र है ज कि सं ग ता मे ॥ ५३ ॥ अथ  
 अथ सु द न य व सु स्वरूप क वन ॥ स वै या ३ ॥ ति ज्ज

शर्वकर्मउद्दे आइरसदेउद्दे कोउदीरघाउधरेकोऊअलपायमरेकोऊइपीकोऊसुपीके  
ऊसमवेउद्दे याहिमेजिवावौवाहीमारीयाहीसुपीकरौयाहीइपीअसीसुदआउमांति  
लेउद्दे याहीअहं बुद्धिसौनविनसंतरमत्तुलियहै मिघाधरमकरमबंधहेउद्दे॥५१॥अ  
घमदताकघनसवेया३॥ जहांलैजगतिकेनिवासीजीवजगतमेंसवैअसहाईकोऊक  
ऊकोनधनीहै जैसीरसरबकरमसंज्ञावांघिजिनतैसीतैसीउद्देमेंअवस्थाआइवनीहै।  
एतेपरुजोकोऊकहैकिमेंजिवावौमारोइत्यादिकअनेकविकल्पवातधनीहै सोतोअहं-  
बुद्धिसौविकल्पयोतिहं कालडोलैनिजआतमसकतितिनहनीहै॥५४॥अधवारिप्रा  
कारजीवव्यवस्थाकघन॥सवेया॥३॥उत्तमपुरुषकादुगाज्यौकिसमिसदाषवाहिजा  
असंतरवैरागीमृदुअंगहै मध्यमपुरुषनारिअरकीसीतांतिलियेवाहिजकविनदिय  
कोमलतरंगहै अधमपुरुषवदरीफलसमानजाकेवाहिजसौदीसैनरमाईदिलसंग  
है अधमसौअधमपुरुष पुगीफलममअंतरंगवाहिरकवोरसरवंगहै॥५५॥अधउत्त  
मपुरुषजघा॥स०२॥कीवसोकनकजानेनीवसौनरेसपदमानसीमिताईगिरवाईजा  
कैगारिसीजहरसीजोगजातिकहरसीकरामातहरहैरसीहोसपुदगलछविछारसी॥  
जालेसोजगविलासुत्तालसोतवनवासकालसोऊतं वकाज लोकलाजठारसी सीवसो  
सुनसजाने वीवसोवषतमाने असीजाकीरीतितहिबंदितवनारसी॥५६॥अधमध्या  
मपुरुषसवेया३॥जैसेकोऊसुततसुताईगगसुतीपाइवेरातयोधिगनिकेघरामेरउ  
है वगोरुत्तरिगईतवताहिसुधितईपस्योपरवसनानासंकटसहउद्दे तैसेहीअना  
दिकोमिघातीजीवजगतमेंडोलैआवैजामविसरांमनमहउद्दे ग्यानकलातासीतयो-  
अंतरउदासीतघापिउद्देवाधिसौसमाधिनलहउद्दे॥५७॥अधमधमपुरुषयघासा





नहृत्तुद्वै॥ ६२॥ सर्वेया२१॥ जैसैमगमत्रकी र्थादित्तकी तपतिमांदि उषावंतमृषाजल  
कारनअतुद्वै तैसैतववासीमायादिसौदितमांनि वातिश्चमलमना तकनउद्वै आ  
गेंकौधक तधाइयाद्वैवञ्चराववाइ जैसैदिगनेहोनरजेवरीवतुद्वै॥ तैसैमृडवेतन  
सुरुतिकररुतिकरैरो वतहसतफरुतषोक्तषतुद्वै॥ ६३॥ अथमृडविषैवर्ननंसण  
२५॥ लिवेदिदपेवफिरै लोतनकवृतरसौं उलद्योअनादिकौनकेहंसुलतुद्वै जाकोफ  
लडषताही सातासौंकहतसुषसदतलपेटीअसिधरासीवतुद्वै औसौमृडजननेजसा  
पतिनलपैक्यौंहीवौहीमेरीमेरीनिसिवासररतुद्वै वाहीममतासौं परमारषविनसि  
जाइकांजीकौपरसमाइइधंजौफरुतुद्वै॥ ६५॥ पुनःमृडव्यवस्थासण॥ २१॥ रूपकीना  
जांकदियै करमकौंजांक्यीयै ग्यांनदखिरह्योमिरगांकजैसैघनमें लोचनकीटांकसौंन  
मानैसदगुरुकांकडोलैमृटसंकसौनिसांकतिहंप्रतमें टांककैकंमासकीडारीसीतामें  
तीनफांकतातिकेसौआंकलिषिराषोकाऊतनमें तासौंकहैनांकताकेराषिवेकौंकहै  
कांकलांकसोषडग बांधिवांककरैमनमें॥ ६६॥ अथमृडविषयीवर्णन॥ २२॥ जैसैकोक  
ककर छुधितसुकैहाडयावैहाडनकाकोरवर्कऔरदुसैसुषमें गालतालुरसनामसुड  
तिकौमांसफाटैचाटैनिजरुधिरममनस्वादसुषमें तैसैमृडविषईसुरुषरतिरीतिवांनो  
तामेंचितसांनेहितमांनेषेदुषमें देषेपरकतबल ह्यनिमलमुतघांनिगहै नगितातिपगिर  
हैरागरुषमें॥ ६७॥ अथसंसारीतघामुनिव्यवस्थाकघन॥ अडिध्न॥ सदाकरमसौंतिन्स  
हजवेतनकह्यौ मोहविकलतामांनि मिध्यातीकौरह्यौ करै विकृतपअनंतअहंमतिधा  
रिहैसीमुनिजोधिरहोइममलनिवारिकें॥ ६८॥ अथमिध्यातताव्यवस्था२३॥ असंख्या  
तलोफपरवानजेमिध्याततावतेईविवहारतावकेवलीउकतहै जिन्हकेमिध्यातयोगा

सम्पदरसतेयो तेनियतलीनविवहारसौमुक्ततद्दे निरविकल्पनिरुपाधिआतमसंसाधिजे  
सुग्रनहेद्रमोषघंकोडुकउद्दे तेईजीवपरमदसामेधिररूपकैकेधरमवमेधकेनकरमा।  
सौरुकउद्दे॥६७॥ अथत्रिष्यप्रश्नकघन॥कवित्रछंद॥ जेजेमोहकरमकीपरनतिबंधनिद २  
नकहीउमसंघ संतनतिन्नसुध्वेतनसौ तिन्हकौमूलदे उकदौअव कैयहसहज्जिष  
कौकौत्रककैनिमिन्निदेउगालदवसिसनवाइसिष्यश्मसुछत कहेसुग्ररुउत्तर सुग्रतघा  
॥१०॥ अथगुरुववन॥ स०३१॥ जैसेंनानावरनधुरीवनाइदुजेदेवउल्ललविमलमनिसुर  
जिकरांतिदे उल्ललतातासैजववस्सकौविवारकाजैधराकाऊनकसौंवरनतांतिरहे।  
तैसेंजीवदुरवकौउगालनिमितरूपताकीममतासौंमोहमदिराकीमांतिदे तेदग्गांनदि।  
धंसौंसतावसाधिलीजैनहांसाचासुध्वेतनाअववीसुषशांतिदे॥२७॥ अथसंयोगिकस  
ताववर्ननं॥ स०॥ ३१॥ जैसेंमहिमंडलमेंनदीकोप्रवाहएकताहांमेंअनेकनांतिनीरका  
टरनिहे पाघरकोजोरतहांधारकामरोरहेतिकांकरकीयांनितहांआगकीऊरनिहं  
मौनकाऊकीरतहांचंचलतरंगउठै तूमिकानिवाततहिंसौरकीपरनिहे तैसेंएकआ  
तमाअनंतरसुदुगलछककौसंयोगामैवितावकीतरनिहे॥१०॥ अथआतमासरीर  
लङ्गनतिन्नीकघनादिहरा॥चेतनलङ्गनआतमा ऊडलङ्गनतनजाल तनकीममता  
त्यागिकेंजजैवेतनचाल॥१३॥ अथआतमायथा॥२१॥ जोगेंकीकरनीसवगनतजो ९  
जाजानतजोवतजोई देहप्रमानपेंदेहसौंऊसरो देहअचेतनचेतनसोई देहधरैप्रच्छा  
देहसौंतिन्नरहेपरछन्नलपेनहिकोई जंघनवेदुविवछनंछुफत अङ्गनसौंपरतङ्ग  
नहोई॥१४॥ अथदेहयथा॥ स०२१॥ देहअचेतनप्रेतदरीस्जरेततरीमूलपेतकीक्य १

नदत्तउद्दे ॥ ६१ ॥ सर्वेया २१ ॥ जैसे मृगमत्तकी उषादित्तकी तपतिमांदि उषावतमृषाजल  
कारनअत्तउद्दे तैसे रववासीमायाहिसौहितमांनि वातिरअमत्तमनाटकनउद्दे आ  
गेकोधकतधाइपाद्येवबराववाइ जैसे धिगनेही नरजेवरीवत्तउद्दे ॥ तैसे मूढवेतना  
सुरुतिकरुतिकरै रोवतहसतफलवषोवतषत्तउद्दे ॥ ६४ ॥ अथमूढविषेवर्णनं सण  
२१ ॥ लियेदिदयेवफिरै लोतनकवृतरसौउलओअनादिकोनकेहसुलत्तउद्दे जाकोफ  
लडषताही सातासौकहतसुषसदतलपटीअसिधरासीवत्तउद्दे अैसेमूढजनतेजसो  
पतिनलयेक्योंहीयोहीमेरीमेरीनिसिवासररत्तउद्दे वाहीममतासौपरमारषविनसि  
जाइकांजीकोपरसमाइडधज्योफत्तउद्दे ॥ ६५ ॥ इनमूढव्यवस्थासण ॥ २१ ॥ रुयकीना  
कांकहिये करमकौडांकपीये ग्यानदखिरह्योमिरगांकजैसेघनमें लोवनकोडाकसौना  
मानेसदगुरुहांकडोलेमूतरांकसौनिसांकतिह्युतमें टांककेकंमासकीडारीसीतामें  
तीनफांकतीनिकोसौआंकलिषिराषोकाजतनमें तासौकहेनांकताकेरषिवेकौकरै  
कांकजांकसोषडगबांधिवांककरैमनमें ॥ ६६ ॥ अथमूढविषयीवर्णनं ॥ स२१ ॥ जैसेकोक  
ककरछुधितसुकेदाडयावैहाडनकोकोरचकंओरचुतेसुषमें गालतालुरसनामसूढ  
निकोमांसफाटैवाटैजिजरुधिरमगनस्वादसुषमें तैसेमूढविषईसुरुषरतिरीतिगनो  
तामेंचितसानेहितमानेपेदछषमें देषेपरकतबलेहानिमत्तमुत्तमांनिगहै नगितानिपगिर  
हैरागरुषमें ॥ ६७ ॥ अथसंसारीतथा मुनिव्यवस्थाकषन ॥ अडिध्न ॥ सदाकरमसौत्तिन्वस  
हजवेतनकह्यो मोहविकलतामांनि मिध्यालीधैरह्यो करै धिक्कतपअनंतअहंमतिधा  
रिकैसोमुनिजोधिरहोइममत्तनिवारिकें ॥ ६८ ॥ अथमिध्याततावव्यवस्थास२१ ॥ असंख्या  
तलेकपरवानजेमिध्याततावतेईविवहारतावकेवलीउकतहै जिन्हकेमिध्यातयोगा

समकदरसेतेयतेनियतलीनविवहारसौमुक्ततद्दे निरविकल्पनिरुपाधिआतमसंसाधिजे  
 सुग्रनहेहमीषयबंधकौडुकउद्दे तेईजीवपरमदुसामेधिररूपकैकेधरमवमैधकेनकरम।  
 सौरुकउद्दे॥६७॥अथत्रिप्यप्रमकधन॥कवित्रछंद॥जेजेमोहकरमकीपरनतिवधनिद २  
 नकहीउमसय संतनतिन्नसुधचेतनसौ तिन्दकौमूलदे उकदौअव केयदसहजजय  
 कौकौउककैनिमिजिद्देउगालदधसिसनवाइसिप्यइमसुछत कदेसुग्ररुउतर सुत्रुतघा  
 ॥७७॥अथग्रुववन॥स७३॥जेसैनातावरनघरीवनाइदुजेहेवउकालविमलमनिसुर  
 जिकरांतिद्दे उकालतासैजववस्तुकोविवारकाजैधराकीफलकसौंवरनतांतिरद्दे।  
 तेसैंजीवदुरवकौउगालनिमितरूपताकीममतासैंमोहमदिराकीमांतिद्दे तेदग्गानदि।  
 संसौंसतावसाधिलजैतदांसाचासुधचेतनाअववीसुयगांतिद्दे॥७९॥अथसंयोगिकस  
 ताववर्ननां॥स७॥३॥जेसैंमहिमंडलमेंनदीकौप्रवाहएकताहामेंअनेकगांतिनीरका-  
 टरनिद्दे पाघरकौजेरतहांधारकामरारद्देति कांकरकीपांनितहांआगकीऊरनिहै-  
 यौनकाऊकीरतहांबंव लतरंगउठै सुमिकानिचानतहिंसौरकीपरनिद्दे तेसैंएकआ  
 तमाअनंतरसुधुगालछकुकौसंयोगामेवितावकीतरनिद्दे॥७९॥अथआतमासरीर  
 लङ्गनसिन्नीकधन॥दिहरा॥चेतनलङ्गनआतमा ऊडलङ्गनतनेजाल तनकीममता  
 त्यागिकैंलजैचेतनचाल॥७३॥अथआतमायथा॥२१॥जोगैंकीकरनीसयगनतजो १८  
 जगजानतजोवतजोई देहप्रमानपेंदेहसौंइसरो देहअवेतनचेतनसोई देहधरप्रसु-  
 देरसौंसिन्नरद्देपरछन्नलपेनहिकोई लछनवेदुविवल्लनछुफत अङ्गनसौंमरतङ्ग  
 नहोई॥७५॥अथदेहयथा॥स७२॥देहअवेतनप्रेतदरीस्जरेततरीमूलपेतकीक्य

री व्याधिकोपोट अराधिकीओर उपाधिकीओर समाधि सौं न्यारी रेजियदे हकरै सुषहानिह  
 तै परतोहिलागतप्यारी देहतेतोहितजैगनिदानपै रहितजैकितदेहकीयारी ॥७५॥ दोहरा ॥ सु  
 प्रांनी सदगुरुकहै देहपेहकीघांनि धरैसहजप्रदोषकों करैमोषकीहानि ॥७६॥ अधदेह  
 वनंन ॥ सप ३ ॥ रेतकीसीगढीकिधौं मढीहै मसांनकीसी अंदरअधेरीजैसीकंदुराहैमैलक  
 ऊपरकीचमकदमकपटरूपनकीधौंमैलागैतलीजैसीकलीहैकनेलकी औगनकीऔ  
 डीमहासौंडीमोहकीकनौंडीमायाकामसरतिहैमुरतिहैमैलकी औसीदेहयाहीकेमने  
 हयाकीसंगतिसौं कौरहीहमारीगतिकोलुकैसेबैलकी ॥७७॥ उनसवैया ॥ वौररकता  
 केऊंडकेसुनिकेऊंडहाडनसौं तराजैसीधराहैबुरेलकी नैसुकधकाकेलगेऔमैफा  
 टिजाप्रमानौंकागदकीछरीकिधौंवादुरहैबैलकी सुचैरुमवानिदानैमूठनिसौंपहि  
 चानिकरैसुषहानि अरुषानिवदफैलकी औसीदेहयाहीकेमनेहयाकीसंगतिसौं  
 कौरहीहमारीगतिकाकुकैसेबैलकी ॥७८॥ अधकोकुकैकाबैलकी अरुसंसारोजा  
 वसमानरूपकधन ॥ सप ४ ॥ पाटीबंधीलोवनसौं सकचैदुवोवनिसौं कोवनिकेसौं ना  
 वेदेषेदतनकौं धारवोहीधंधाअरुकंधामांहिलगोमोतवारवारआरसहैकायरहैमा  
 नकेरुषसहैपाससहै छर्जनकोत्राससहैधिरतानगहैनउसासलहैछनकोधराधी  
 नधकंमैजैसैकोकुकैकोकमेरोबैलतैसोई स्वतावयागगवासीजनकौं ॥७९॥ अधजग  
 तबासीयघा ॥ सवैया ३ ॥ जगतमेंडोलैजगवासीनररूप धरेप्रेतकैसेदापकिधौंतेरैके  
 सेफहैहैदासेपटरुषनअडंबरसौंनीकेफिरिफाकेछिनमांफिसांफअंबरज्यौंसुहैहै  
 मोहकेअनलदंगैमायाकीमनीसौंपगैडारकीअनीसौंलगेऔसकैसेफुहैहै धरमकी  
 बुकितांहिउरफैतरममांहिनोविस्तरजांहिमरीकैसेब्रह्महै ॥८०॥ अधजगतववस्था



आहार विहार नहि अरु मत्त है सोई ॥ ६६ ॥ अथाष्टमयुग स्थान वर्तना ॥ वीपई ॥ अब बरनौ  
अष्टमयुग घाना नाम अष्टरव करन बघांनो कडुकमोह उपसम करि राषे अथ वकि  
विति ब्रह्म करि नांषै ॥ ६७ ॥ जे परिनांम एतही कवही तिन्ह कौ उदोते देपीये जवही तब  
अष्टमयुग घानक दोई चारित करवै ह सरो सोई ॥ ६८ ॥ अधन वमयुग स्थान क वर्तने  
वीपई ॥ अब अनवर्त्तिके रन सुनि ताई जहां ता वधिरता अधिकाई घर ब ता कवला वळ  
जेते सहज अडो लता ए सव एते ॥ ६९ ॥ जहां ता वउ लटि अथ आवै सो न वी युग घान कर  
वै चारित मोह सुहां वळ बांजा ॥ सो है वरन करन पडु जीता ॥ ७० ॥ अथ दुसमयुग घान व  
र्त्तना ॥ वीपई ॥ कहां दुसमयुग घान ज साया जांहां सुब्रम सिव की अतिलाषा सुब्रम गोत  
दसा जहां लहि वै ॥ सुब्रम संमराव सो कहि वै ॥ ७१ ॥ अथ एकादसमयुग स्थान वर्त्तना ॥ वीप  
अवउ वसंत मोह युग वानो कहां ता सुप्रलुता परवांनो जहां मोह उपसमै ततोसै अथाष  
तवारि तपदग सै ॥ ७२ ॥ दो-जादि फुरसिकै जाव गिरि मदै करै युग रदु सो एकादसमो दशा  
उपसमको सरह द्वा ॥ ७३ ॥ अथ द्वादसमयुग स्थान क वर्तना ॥ वीपई ॥ केवलु यान्तिक लउ  
ह आवै तहां जीव सव मोह धिया वै भगतै यथाष्मा त परधाना सो द्वादशमञ्जीन गाना ७४  
समयुग स्थान स्थितिक वना ॥ दो-मट सत्तम अष्टम नवम दुस एकादस वार अंत सु  
ऊरत एक वा एक समै धिति धार ॥ ७५ ॥ दो-छीन मोह घरन तयो करि चुरन वितवाला  
अव संयोग युग घानकी वरनौ दुसार साला ॥ ७६ ॥ अथ त्रयोदशमयुग स्थान वर्त्तना ॥ स  
१॥ जाका इमदाता चौ करी विनस्ति गर्ई वो करी अघाता जरी जे वरा समांत है भगत तयो  
अनंत दंसन अनेंत ग्यान वीरज अनंत सुप्रसत्ता समाधान है जा मै आऊना म गोत वेदुनी  
अस्तति अस्सी श्रवणी सी वो रासी वापवासी परवान है सो है जिनके वला जगत वासी रगवा  
नताकी जो अवस्था सो सजोगी युग घान है ॥ ७७ ॥ स १ ॥ जो अडो ल परजंत सुप्रधारी सरव





कौतमस्कारावकाज ॥ ८५ ॥ अथनमस्कारकथन ॥ स ॥ १ ॥ जगतकेशोनी जितकरेहोसुमान  
 अथैसौअष्टप्रवअसुरउपदोनामहात्मीमहै ताकौपरतामषे छिवेकौपरगटतयोधमेकोधरेवा  
 कर्मरोगकोहकीमहै जाकेपरतावअगें तागेपरताव सवनपारनबलअधमगागरकोसामहै  
 संवरकौरुमधरेसाधिशिवराहै अथैओग्यांनपातस्याहैताकौमेरीतअलीमहै ॥ ८६ ॥ इतिश्रीसु  
 मस्तग्रंधसंपूर्ण ॥ चोपई ॥ तयोग्रंधसंहरनताया वरनीग्रनघानककीसाया वरननओरकरौ  
 लौंकहियै जथासकतिकहिसुपकरहियै ॥ ८७ ॥ लहियैओरनग्रंधउदधिकी ज्यौज्यौकहियै  
 त्योंत्योंअधिकी तातैनाटकअगमअपारा अल्पकवीखरकीमतिधार ॥ ८८ ॥ दोहरा ॥ समैस  
 रनरतिकअधकधन ॥ कविकीमतिलकहोइ तातैकहतवनारसी हरनकधैनकोइ ॥ ८९ ॥  
 अथग्रंधमहिमाकधन ॥ स ॥ १ ॥ जैसेकोऊएकाकीसुसतपराकामकरैजातेकेहीतांतिवा  
 काकटकसौलरनौ जैसेकोऊपरवीनतारुलुज तारुनरतरै कैसैखयंतुरमनासिका  
 तरनौ जैसेकोऊउद्यमीउद्याहमनमांदिधरैकरैकैसैकारिउविधाताकौसौकरनौ तैसे  
 उछमतिमोरीतामैविकलाघोरीनाटकअपारमैकहालौंआहिवरनौ ॥ ९० ॥ अथजीवम  
 हिमाकधन ॥ स ॥ १ ॥ जैसेवटवृक्षएकतामैफलदे अनेकफलफलबहुबीजबीजवटदेव  
 टमांदिफलफलमांदिबीजतामैवटकीजेजोविवारतौअनंतकलाकलांमैघटदे तैसेएकसत  
 मेंअनंतग्रनप्रजाप्रजामैअनंतनृत्यनृत्यमैअनंतवटदे वटमैअनंतकलाकलामैअनंतरूपरूप  
 मैअनंतसत्ताअथैसौजीवनटदे ॥ ९१ ॥ दोहरा ॥ ब्रह्मग्यानआकासमैउडैसमतिभगहोइ जथा  
 सकतिउदिमकरै पारनपावैकोइ ॥ ९२ ॥ चोपई ॥ ब्रह्मग्यांतनतअंतनपावै सुमतिपरोबकह  
 लौधावै त्रिदिविधिसमैसारजितकीनौ तिन्हकेनामकहौअवतीनौ ॥ ९३ ॥ अथकवित्रतिय  
 कधन ॥ स ॥ १ ॥ ऊं दुऊं डा वारज प्रथमगाथाबध करिसमैसार नाटक विचारिनामदुयोहैत  
 हाकीपरंपराअमृतवंदतर तिन्हसंसकृतकलस सवारिसुपजयोहै प्रगद्योवनारनीएर

स्वसिरामालअवकियेहै कवित्तदिएबोधबीजवयोहै सबदअनादितामें अरुअनादिज १  
 वनाटिकअनादिअनादिहीको सयोहै ॥६५५॥ अथकवियवस्थाकधनवोपई ॥ अथकअ-  
 कहैंअधाराधवांनी सुकविककविकीकयाकहांती प्रदगहिसु कविकहावेनेई परमारव  
 रसवरनैजोई ॥ कल्पितवातदियै तद्विआनै गुरुपरपरातिवमानं सत्तारवसेलीनरी  
 छंदै मयावादसौंप्रातिनमंडै ६५६॥ दोहरा ॥ छंदसवदअरुअरुअरु कहेसिदंतवपान्ते १  
 इद्विधिरवनारवै सोहैसुकविसुजांना ॥६५७॥ अथक कविकधनवोपई ॥ अथकअ-  
 विकहैंजैसा अपराधीअंधअनेसा मयात्तावरसदरनैदितसो नईऊकतिउपराअवित-  
 सौं ॥६५८॥ प्यांतिनात्तप्रजामनआनै + परमारधमें तेदुनजांनै वानीजीवएककरिदुंऊ जांक १  
 कित्तजउग्रंधनसुहै ॥६५९॥ वानीलीनतबीजगडोले वांतीममतात्यागिनयोले दैअनादिवां-  
 नीवानीजगमांदि ऊकवितातयहै समुहैनांही ॥६६०॥ अथवांतीअवस्थाकधनस ॥६६१॥ जै-  
 सैंकाकूदेसमै सलिलधाराकारिजकातदीसौनिकसिफिरिनदुमेंसमानादे नगरमेंवांरो १  
 रकैलिरहीधक्तुंऔरजाकेदिगवहैं सोईकहैमेरोपांतीहै त्योंहीघटसदुनमेंअनादिअसा  
 वदुनवदुनमेंअनादिहीकीवांतीहै करमकलोलसौंउसासकीवयारवाजतासौंभेरीकति  
 औसौमूढप्रांतीहै ॥६६२॥ दोहरा ॥ औसैंमूढऊकविकथंगहै मयापधदोर रहैमगनअतिमां  
 नमेंकहैऔरकोऔरा ॥६६३॥ वस्तुस्वरूपनैधेनही वाहिनदिष्टप्रधानं मयानिगासविलो  
 किंकेकरैमयाअनगाना ॥६६४॥ मयाअनगानयथा ॥६६५॥ मांसकागरंधिऊनकंचनकल  
 सफहैकहैधुपवंदुजोसलेधसाकौसलेधसाकौधरहै हाडकेदुसनआदिहीरामातीकहै  
 तद्विमांसकेअधरदोवकहैविंबफलहै हाडदुंदुजोअहैकौलगा... भादादव ॥  
 केधताउरुकहैरंतातरुहै योंहाकूलीसुगतिवनावे ॥

काबरहे ॥११॥ वापडा मिश्रावतककविजेशानी मिश्रातिन्हीतापितवांनी मिश्रावतसुकवि  
 जोहोइ ववनप्रवानसवकोडा ॥११॥ दोहरा ॥ ववनप्रवानकवि उरुमरुदपरवान दोऊअगप्र  
 वानजो सोदहसहजसुजांत ॥११॥ अघनाटिकसमय सरव्यवस्थाकधनवोपई ॥ अवयहवा  
 तकहो होजैसै नाटिकनायातयोसुअसै ऊंदऊंदसुनिमूलउधरता अमृतवंदुटीकाकेकरता  
 ॥११॥ समैसारनाटिकसुपडानी टीका सहितसंसकृतवानी पंडितपढे दिठमतिबुके अत्यमती  
 कौअर्धनसुअै ॥११॥ पाडे राजमध्वजि नैमी समैसारनाटिककेममी तिनगरंधकीटीकाकोन्ही बा  
 लाबोधसुगमकरिदानी ॥११॥ इहिविधिबोधववनिकाफैली समोपाइअध्यातमसैली प्रगटीज  
 गतमांदिजिनवांनो धरनाटिककषावघांनो ॥११॥ नगरआगरेमांदि विष्याता कारनपायत  
 एबऊग्याता पंचप्ररुषअनिअनप्रवाने निसदिनग्यांनकघारसतोने ॥११॥ दोहरा ॥ रूपवं  
 दपंडितप्रधम इतायवउरुजनांम नृतायतगोतीदासनर कौरपालअनधामां ॥१२॥ धरम  
 दासएपंचजन ॥ वमिलिवैठै इकवैर परमारधवरवाकरै इन्हकेकघानऔर ॥१२॥ कबडू  
 नाटिकरससुनहि कबळंऔरसिद्धंत कबळंविंगवनाइके कहे बोधविरतंत ॥१३॥ विंगजा  
 घा ॥ दोहरा ॥ वितकौराकरुधरमधरु सुमति तगोतीपास ववरतावधिरतातए रूपवंदुपर  
 गासा ॥१३॥ इहिविधिग्यांनप्रगततयो नगरआगरेमांदि देसदेसमहिविस्तस्यो मषाडे  
 समहिनांदि ॥१३॥ वौपई ॥ जहांतहांजिनवांनोफैली धैषेन सोनंजाकीमतिमैली जाकेस  
 हजबोधउतपाता सोततकाललषैयहवाता ॥१३॥ दोहरा ॥ घटअंतरजिनवसे घटअ  
 तरजैन मतमदिसकेपांतसै मतवालाससुअैना ॥१४॥ वौपई ॥ बळतबडाउकहो लौ  
 काजै कारजरूपवातकहिलीजे नगरआगरेमांदि विष्याता वनारसीनांमलऊग्याता ॥  
 ॥१४॥ तामैकवितकरावउराई रूपाकरहिएपंवांताई पंचप्रपंवरहितहियपोलेतो

३॥

धध



॥६॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ गजसुषसनसुषहोतही विघनविमुषकैजात ज्यौषगप  
 रतपयागमग पापपहारविलाता ॥१॥ वांतीजूकेवरंतसुग सुवरतकनपरिमांत सु  
 कविमुषकुरुषेतपरि होतसुमेरसमान ॥२॥ सत्वसत्वगणकोकिसत्यहीक  
 सत्यासुतसिद्धिकीप्रसिद्धीसुबुद्धिबुद्धिमांतीये ग्यांनहीकीगरिमाकिमहिमाविवे-  
 ककी दरसनहीकौदरसनउरआंतीये अत्यकौप्रकासुवेदविद्याकौविलासुकिधौ  
 जसुकौतिवासु केसोदासजगजांतीये मदनकदनसुतवदनरदनकिधौविघनविना  
 सकौविधिपह्वांतीये ॥३॥ प्रगटपंचमीकौतये कविप्रियाअवतार सोरहसेअघवत  
 कार्तिकसुदिबुधवारु ॥४॥ नृपकुलवरतौप्रथमही उनिकविकेसवबंसु प्रगटकर  
 जिनकविप्रिया कविताकौअवतंसु ॥५॥ अधनृपवंसवर्षना ॥ ब्रह्मादिककेविनयतै-  
 हरनसकलत्तुवतासुसुरजबंसकस्योप्रगट श्रीरामवंदअवतारु ॥६॥ तिनकेकुल  
 कलिकालरिषु कहिकेशवमतिधीरु गहिरवारुइहिष्यातसुत प्रगटनयेनृपवीरु  
 ॥७॥ कर्तनृपतितिनकेतये धरतीधर्मप्रकासु जीतिसबैजगतीकस्यो वारानसीनि-  
 वासु ॥८॥ प्रगटकर्ततीरघतये जगमेजिनकेनांम तिनकेअर्जुनपालनृप नयेमोह  
 नीयाम ॥९॥ गढकुंडारतिनकेतये राजासीहनुपानु महजइतितिनकेतये कहिकेश-  
 वनृपकासु ॥१०॥ राजानोनिगद्योतयेतिनकेधरनसासु नोनिगद्योकेशुततये धृष्ट्यौ  
 धृष्टीरसु ॥११॥ रामसिंहराजातये तिनकेसुरसमान रामवंदतितिनकेतये राजावंदसमा  
 ना ॥१२॥ राजमेदिनेसलतये तिनकेअर्जुनरूप आनारायणकोसषा कहैसकलत्तुव  
 रूप ॥१३॥ महादानषोडसदये जीतिजगदिसव्यार व्यारौवेदअदारहौ सुनेपुरांता-

तिनकेकेसवदास अरिमदमदेनेमेदनी कीनेधर्मप्रकारु ॥१४॥ राज



॥६॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ गजसुषसनसुषदोतही विघनविमुषकैजात ज्यौपगप  
 रतपयागमग पापपहारविताता ॥१॥ वांतीजूकेवरनसुग सुवरनकनपरिमांन सु  
 कविमुषकुषेतपरि होतसुमेरसमान ॥२॥ सत्वसत्वउणकौकिसत्यहीक  
 सत्यासुतसिद्धिकीप्रसिद्धकीसुबुद्धिबुद्धिमांतीये ग्यानहीकीगरिमाकिमहिमाविवे-  
 ककी दरसनहीकौदरसनउरआंतीये अन्यकौप्रकासुवेदविद्याकौवितासुकिधौ  
 जसुकौतिवासु केसोदासजगजांतीये मदनकदनसुतवदनरदनकिधौविघनविना  
 सकौविधिपहचांतीये ॥३॥ प्रगटपंचमीकौतये कविप्रियाअवतार सोरहसेअघवन  
 कार्तिकसुदिबुधवारु ॥४॥ नृपकुलवरनौप्रथमही उतिकविकेसवबेसु प्रगटकर  
 जिनकविप्रिया कविताकोअवतंसु ॥५॥ अघनृपवेसवर्षना ॥ ब्रह्मादिककेविनयते-  
 हरनसकलसुवतासुसूरजबंसकस्योप्रगट श्रीरामवंदअवतारु ॥६॥ तिनकेकुल  
 कलिकालरिषु कहिकेशवमतिधीरु गहिरवारुइहिष्यातसुत प्रगटनयेनृपवीरु  
 ॥७॥ कर्ननृपतितिनकेतये धरतीधर्मप्रकासु जीतिसबैजगतीकस्यो वारानसीनि-  
 वासु ॥८॥ प्रगटकर्नतीरघतये जगमेजिनकेनाम तिनकेअर्जुनपालनृप नयेमोह  
 नीयाम ॥९॥ गहकुंडारतिनकेतये राजासीहनृपानु महजइतितिनकेतये कहिकेश-  
 वनप्रकासु ॥१०॥ राजानोनिगद्योतयेतिनकेहरनसाजु नोनिगद्योकेसुततये शशुज्यौ  
 घ्नीराजु ॥११॥ रामसिंहराजातये तिनकेसूरसमान रामवंदतिनकेतये राजावंदसमा-  
 ना ॥१२॥ राजामेदिनेमलतये तिनकेअर्जुनरुप श्रीनारायणकोसषा कहैसकलसुव  
 रूप ॥१३॥ महादानषोडसदये जीतिजगदिसवार आरौवेदअदारहौ सुनेपुरांता-

तिनकेकेसवडास अरिमुदमदेनमेदनी कीनेधर्मप्रकासु ॥१३॥ सजा





मन्त्रज्ञानं साहिसराहृत सर्वदा अकबरसौ सुरतां २२ करजोरे गढे जहां अ  
 वेंदिसिकेईस ताहित होवै ठिकुदई अकबरसे अवनी सा ॥२३॥ जाके दरसन कौ ग  
 ये उधरे देव किवार उपजी दीपति दीपकी देषत एकही वेरे ॥२४॥ तास जाको राजु  
 अब राज उजगती मांदि राजारां नेराउ सब सोवत जाकी छांदा ॥२५॥ तिनके सुत ग्या  
 रहतए जेवे साहिसं ग्रासु दृष्टिन दृष्टिन राजसौ जिनडी लो सं ग्रासु ॥२६॥ नरथषेड  
 सुषततए तिनके तारथ साहि नरथ तगी रथ पारथे उनमांन उ सब ताहि ॥२७॥ सुतसौ  
 दरन परांमके अदुपि बज्रत परिवारु तदुपि सरब ई इंजीत सिर ताज राज कौ ता  
 रु ॥२८॥ कल्प दृष्ट सौं द्वां नदिन सागर सौ गंती रु के सब सरो सरसौ अर्जुन सौरन  
 धी रु ॥२९॥ ताहिक छेव क मलसौ गडुदी नो न परांम विधि सौ साधत वेठिके सुवपा  
 तिवांम अवांम ॥३०॥ कस्यो अपारो राजके सासन सब संगीत जाके देषत इं इंजो इं  
 इंजी उर लजी उ ॥३१॥ बाल बहि कम बाउ सब रूप सील उन दृष्ट अदुपि तस्यो अ  
 रोधषट् जाउ परम पर सिद्धा ॥३२॥ राइ प्रवीन प्रवीन अति नवरंग राइ सुवेस अ  
 ति विवित्र नयनां निष्ठुन लोवन लज्जित सुदेसा ॥३३॥ सोहते सागर रांमकी तानत  
 रंगतरंग रंगराइ रंगवलित गति रंग मूरति अंग अंग ॥३४॥ अंती लंवर सारिका  
 सप्त स्वरिन सौलीन देव सतां श्री देषी ये राय प्रवीन प्रवीना ॥३५॥ सत्या राइ प्रवीना  
 सुत सुरतरु सुरतरगे इं इंजी तिता सौ बंधो के सबदा सज्जं दे इं ॥३६॥ नरी किं  
 नरी आसुरी सुरी रहति सिं हनाइ नवरसन वधात गति सौ जो जति नवरंग राइ थ  
 सैर वसुत गोरी सद्युत सुरतरंग गति लेषि चंद्र कला सी सो तिजे नयन विवित्रा देषी

अंते

ज



कतराग्रामसव उस्मविप्रविचार॥२॥ जगपावनवैकुण्ठपति रामवन्द्यदत्ताममक  
 रामफलमेदए तिनैसातसैग्रामा॥३॥ सोमवसयडकुलकलम त्रिभुवनपालनरेत्रा फेरि  
 दयेकलिकालत्रुरि तेईतिनैसुदेशा॥४॥ ऊलऊलवारुउदेमऊल प्रगटेतिनकेवसु-  
 तितहीकेदेनंदश्रुत उपजेऊलअवतंसु॥५॥ तिनकेसुतडयदेवडग घापेधृषीरा  
 ज तिनकेदिनकरुसकलश्रुत प्रगटेपहितराज॥६॥ दिक्षिपतिअध्यावदि किनीकिर  
 पाअपार तीरघगयासवेतजन अकरकरेवकुवारा॥७॥ गयागजाधरसुततये ति-  
 नकेआनंदकंदजयानंदुतिनकेतये विद्यासुतडगवदा॥८॥ तयेतिविक्रमुमिश्रतवति  
 नकेपहितराय गोपावलगतडग्रपति इत्येतिनकेपाया॥९॥ तावसर्मुतिनकेतये तिनकी  
 बुद्धिअपार नयेशुरोत्तममिश्रतव षटदुरसनअवतार॥१०॥ रामसिंधसौरोसकरि जि  
 नडीतीदिशिआर ग्रामबीसतिनकौदए रातापायपधारि॥११॥ तिनकेउत्रप्रसिद्धजग  
 किनोहरिहरनाथु नोवरषनतजिओरपै लुलिनजैदैदाषा॥१२॥ तिनकौवजिपुरानका  
 दानीराजारूद्र तिनकेकासीनाथश्रुत सौलितबुद्धसमुद्र॥१३॥ इत्रतयेहरिनाथकेरु  
 क्षदत्रश्रुतवेष सतासाहसंग्रामकी डीतेगढअसेषा॥१४॥ जिनकौमककरसाहित्य व  
 जतकस्यौसनमानं तिनकेश्रुतवलरुईतये प्रगटेबुद्धिनिधाना॥१५॥ बालकतेमकसाह  
 न्य वज्रतकस्यौसनमानं जिनपरिश्रान्यापुरांनु तिनकेसोदरद्वैतये केसवदासकल्याणु  
 १६॥ ताषाबोलनजातई जिनकेऊलकौदास नाथाकवितोमंदमति तिद्धिऊलकेसवदा  
 सा॥१७॥ इंडीतितासौकद्वे मांगळमधप्रयाग मांग्योसबदिनएकरस कोडोअपासता



नजै कनककुलाउलआध त्योंही अंदोलंगको सुनितमके अतिसाध ॥११॥ अथअले  
 कारहीन नगवर्षतं ॥ तोरति नाटक टोरीकपोलनिजोरिरहै करस्यंतरहोगी ॥ पांनषवाये  
 सुधाधरपांनकों पातगहेतें सद्यो नगहोगी केसबुकि सबैसदिहो मुखबुमिवलेयदपैतसा  
 होंगी कैफिरिनुमनदेमुखमोहको आप्रनिधायसं जायकहोगी ॥ १२ ॥ धीरजमोवनलो  
 वनलोडबिलोकेकैलोककीलीकनबुटी कृतिगयेशुतिग्यानकेकेसवआधिअनेकविवेक  
 कीकृटी छोडिदर्दसरितासबकांसमनोरथकेरथकीगतिपुटी त्योंकरैकरतावेवारक  
 ज्योचितपैउदवारबधटी ॥ १३ ॥ अथअरथहीनमृसुकवर्षतं ॥ कीलकमालकलाक  
 रालनिशालविशालनिवालवलीहै दालविदालनिताउतमालप्रवालकवालकवालक  
 लीहै लोलबिलोलकलोलअमोलकलोलकमोलगलोलकलीहै बोलनिबोलकपोलनि  
 बोलनिगोलकलोलगलोलकैलीहै ॥ १४ ॥ अगनुनकीजेनैरसु असकेसवकृतितेगु अ  
 रथअपारघहीनक्रम इतकौतडौप्रसंग ॥ १५ ॥ वर्णप्रयोगीकर्नेकटु सुनहोसकलकविराज  
 शब्दअर्घप्रनिरुक्तके आडकृमिगरेसाड ॥ १६ ॥ देशविरोधनवनीये कालकलानिनिह  
 रि लोकन्यायआगमतिके तडौविरोधबिवाहि ॥ १७ ॥ अगणमांतवर्षतं ॥ केसवगनुसुतस  
 वंदा अगनुअसुतउस्अति आरितांतिगुनअगुनहै आरितांतिजियजांनि ॥ १८ ॥ मगनु  
 नगनुतनितगनु असुयगनसदासुतजानि जगनुरगनसोसगनुको तगुनहीअअतव  
 षानि ॥ १९ ॥ मगनत्रिगुरुद्युतत्रिलोक केसवनगनुप्रवान तगनुआदियरुआदिलोकय  
 गनुबषानुसुजान ॥ २० ॥ जगनुमध्यरुजानीये रगनुमध्यलोकहोइ सगनुअंतल  
 कअंतगुरु तगनुकहैसबकोया ॥ २१ ॥ अथगणगणदेवतावर्षतं ॥ महीदेवतामगा

तंकी नागतगतको देषि जत्रु जियजानो जगतको चंदरगतको देषि ॥२१॥ सुस्सुजोव  
 जजगतको रगनुसिषिमयमांनु कात्रुसमुफियसगतको तगनुअकासुवषांना ॥२२  
 अषगनागतफलं चप्यया ॥ त्स्मित्स्मित्स्वषदेइ तिरुनितआनंदकारी आगेअंगदि तददे सु  
 रसुषसोषैकौरी केसवअफलअकासु कालुकिलदेसउदासै मंगलवंदअनेकनागवध्या  
 बुधिप्रकासै इहविधिकविद्युसबलं कानिज्जं करुनाअरुजाकौकरै तजिप्रबंधअरु  
 दोषगनिसदासुतासुतफलफरे ॥२३॥ अषदिगतविचारु ॥ जोकेहंआदिकवित्तकी अगनु  
 दोइवडलाग तातैदिगनुविचारुवित किंतोवासुकिनाग ॥२४॥ अषदिगनुवर्णना ॥ मगनु-  
 नगनुकौमिचुगनु यगनतगनितनिदास उदासीनजनकोनीये रसेरिप्रकेसवदासा-  
 २५॥ अषदिगनुफलाफलां ॥ मित्रतंजोदोयमित्रवाटेवज्ज बुधिरिदिमित्रतंजोदासवासुयुद्धतं  
 तजोनीये मित्रतं उदासगतदोदंगीतइ प्रउदेमित्रतंजोशत्रुदोइ मित्रबंधदानीये दासतंजोमि-  
 त्रगतकाडसिद्धिकेसादामतंजोदाससवडीववसेमांतीये दासतं उदासदोनधतनामआस  
 पास दासतंजोशत्रुमिबुशत्रुसोवपांतीये ॥२६॥ जानीये उदासतंजोमित्रगनु उचक्रुतप्रगत उद-  
 सतंजोदासप्रनुताइये दोयजो उदासते उदासतोनफलफलुजो उदासदीतंसत्रुतो तसुपयाइये  
 शत्रुतंजोमित्रगनुताहितोअफलगनुसत्रुतंजोमित्रगनु दासआश्रवनितांनमाइये शत्रुतं उदा  
 सकलतासदोतेकेशादास शत्रुतंजोशत्रुतासतायककौगाइये ॥२७॥ अषगतभानको उदाहरनु  
 राधाराधरमतके मनुपवयोइसाध आधवद्याउमकौतमे कदादोगकीगाया ॥२८॥ अषअगत-  
 को उदाहरनु ॥ कोदाकदौउमयाऊने प्रातनाधकेमिजफिरिपीअपचितोऊगे  
 २९॥ इहाइहं उदाहरत प्रथमआवटोपाय केसवगुणअसअगुणके ३५५  
 अषगुरुलंकवर्णनां ॥ संजोमीकीआदियुत विंडनुदीरघदाय माय५

दसवकोव॥२॥ दीरघकलककरिपठ सुपदीसुषजिदिगोर सोईलककरिलेखको केसवकवि  
विसिरमोर॥२॥ पहिलेसुपदसवदिकोंसपिहरिहीदुवुकेजुदरीमतिमिठी इजैलेडीवनमू  
रिअकरतयोअमरलगाइअगीठी अवधौकिदिकारणकेसवएउविधाइहेऊधकफूठीबसीठी॥  
माकरलोगनिकेसंगकीयद्वैठकतोदिअजौनउबीठी॥२॥ संयोगीकीआदिकों कबजका  
वरनविवार केसवदासप्रकाससों लककरितादितिहारि॥२॥ तेरदअअरप्रथमपद सु  
निदग्यारददेऊ तेरदअरुदग्यारद दोहालबनएदा॥३॥ अमलजुन्हांइवदसुष वाहीता  
इअन्हां सोतिनकेसुषकमलज्यौ देधिरद्वैकमिलाइ॥३॥ अषदीनरसवर्षनो॥ वरनतको  
सवदासरसु जहाविरसुकडाइ ताकवित्तसौदीनरसु कदउसवैकविराय॥४॥ एकदोवा  
अनुकलकदां इडोद्वैप्रतिकुल वरसतकेसवदीनरसु सोनउतहांसमूल॥४॥ अषरमि  
कप्रियाया॥ दैदधिदीनोउधारद्वैकेसवदासुकदाअरुमोललेपैदो दोनेबिनांतोगईहोंगईत  
गईघरहीकिरिजेदो गोहिउवैरुकीयो कबजुहिउवैरुकीये वरनीकीदरेदो वैरुकेगोरसा  
वेवजगीअदोवेमो नवेमो तोदोरेनदेऊ॥५॥ अषजतितंगुवर्षनो॥ औरवरणकेवरणजह  
औस्वरणसौतीना सोजतितंगुकवित्तुकवि केसवकहतप्रवीना॥६॥ अदरिदिरिकेसवमदु  
न मोहनघनस्यामसुजान योवजवासीवारिका नाघरतदिनमाना॥६॥ अषवर्षलक्षण ए  
ककवित्तप्रबंधमें अर्षविरोधजुदोइ सुखपरअनमिलसवैवर्षकहेंसबुकोया॥६॥ मरदा  
वा॥ सवराउसंगारो जीजनिहारामज्जिजोधाउमरांउं बजवसुमतिलीजामोमतिकीजोदीजोआ  
पनोदाउ कोउनरिपुतरोसवजुगदोरो उमकहियउअतिसाक। कबुदेऊमगावऊ सुषतगाव  
ऊद्वैइनधनीअगाधका॥६॥ अषार्थलक्षण॥ अर्षनकाकोससुकीये तादियपारघुजानि  
मतवारेउमत्तसिसु कैसैववनवषानि॥६॥ पियेलेतनरसिंधको देअतिसुचरद्वैह ऐरा





इसवतीनौ लोकमें विविधिकवितेकेराइ मतिप्रतितीनेप्रकारकी वरनतसबसुषयाइ॥१॥  
 हेअतिउत्तमतेप्रणारघ जेपरथकेपप्रसोद केसवदासअनुत्तमतेनरसंततस्वारघसद्युत  
 मोद स्वारथरूपरमारथतोगनिमध्यमनोकनिकेमनमोद स्वारथपारघमित्तमुतेपरमारघ  
 चारघहीनतकोद॥२॥ कविरीतिवर्णन॥ सांचीवातसु वर्षाही फूलीवरनेवांनि एकनिवर  
 नियमको कविमतिविविधिवर्णन॥३॥ अथसत्यवातकोवर्णन॥ मधुरिउफूलीमालतीवे  
 नकेफलफलउ कल्पपद्मकीजोन्हजो शुक्लपद्मसमउत्प॥४॥ अथमिथ्यावातकोवर्णन॥ ज  
 रवर्षतासिधसब तद्वस्तननिलेषि सद्यमसरवरककदे केसवहंसविशेष॥५॥ लेन  
 देसरिमूठितम सुजनिशियनिघनाइ अंजुलितरिपीवनकदे वद्वौदिकापाय॥६॥ सा  
 प्रकेकहतउदाहरनु वाहप्रप्रअपार कहुंशतातेकदे कविकुलवउरविचारु॥७॥ अथ  
 नमकोउदाहरनु॥ कटकतअटकतफट उवरणवाधि वाततेतडानु उडिअंगनउधारी  
 ये नेककतनीडतमसलधारवरसत कीवनरुवउरंभवितमेंविचारीये केसादाससाव  
 कासपरमप्रकासनउसारीयेपसारिये नपिययेविसारिये वलियेनुआडियटुतमहीकोग  
 त तमुपातुरोपिचौरासेतपाटकोउतारीये॥८॥ अथवंदिकाकोउदाहरण॥ तमनसकल  
 घनसारहीके केसादासऊसमकलितवेसरहीअविद्याइसी मोतिनकोसारी सिरकंठमाल  
 हारऔररूपजोतिहोतिहरिहरतिहराइसी॥ वंदनुवढायेवारुसुंदरसिंगारुसवरापी  
 सुतसोना सुनिवसनवसाइसी॥ सारदासीदेषियत देषोडाइकेसोराइगंढीवज्जुऊवरि  
 जुन्दाईमेंअन्दाईसी॥९॥ अथकविनियमवर्णन॥ वरनतवंदनमलयही हिमगिरिकुंठु  
 जघात वरणतदेवतिवराणते सिरतेमानुषगात॥१०॥ वरनतनारीनरिनते लाडवोगनी

...

विन सूपद्रुगुनुसादसद्युन कामुआवगुनमिता॥११॥ अंतिसलजवुतकुलवधगतिकागा  
 नीतिलङ्गा कलरिनसौकोविदकदत् अंगअलङ्कमलङ्का॥१२॥ कोकिलकोकलकडिघो वा  
 रततद्वेमकमास वरयाकंदरपतकद्वे केकीकेसोदासा॥१३॥ दनुजतिसांदिनमुततमा आ  
 सुरेकदतवपानि ईससीसससिद्विही वरततवालिकवाति॥१४॥ सद्दुसिगारनिसुदरी  
 कदपिसिंगारअपार तदपिवपानतसकलकवि सारद्वहीसिगारु॥१५॥ अषसारद्वमिगारु  
 वर्षता॥ प्रघमसकलसुविमंकातुअमलवासुजावकसुदसकेसयामकासुधानिवो अगाराग  
 सूपनविविधमुपवासुरागुककुलकलितलोलेवतनिहारिवो वोलनिदमति वितवावनी  
 चलनिवारुपलपलपतिव्रतुतीतिपरियारिवो केसोदासमदिलासकरुं आवारिवो इदिवि  
 धिसौरद्वसिंगारनिसिंगारिवो॥१६॥ मदापुरपकौप्रगट्टी वरणतद्यतसमानदीपधंनुर्  
 गरिगजुकलसु सागरसिधुप्रमांता॥१७॥ गुनमतिवैरागरुंधीरजुकेसागरु उजागरुधवला  
 धीरधर्मकजधाएजु पलतरुतोरिवेकौ राजेगडराजसमअरिगनराजतिकासिंधसमगाएजु  
 वामनिकोवामदेवकामनिकोकामदेवरतजयथंनुरामंदवमनताएजु कासीमकुलकलसुजं  
 हदीपदीउकेसोदासकोकलतरुइड्डीउआएजु॥१८॥ मेघज्योमतीरवातीसुततसयासपी-  
 तिसुपअरिउरतिजवासेज्जोअरउद्वे जाकेवुडदंउवुवलीककौअनयधुडुदेपिंरइर्जननु-  
 कगज्जोअरउद्वे तोरिवेकौभटतरुहोतुद्वेमिजामरुपराधिवेकौघारतिकिवारिज्जोअरउद्वे-  
 त्तलकौइइइड्डीउडीउद्वुग२ जाकेराऊकेसोदामराऊसौकस्तुद्वे॥१९॥ इतिथीमन-  
 विविधित्पित्तुपितायांकविप्रियायांकविव्यवस्थावर्णननामवउर्ध्वप्रताया॥ अषकविता  
 लकारवर्णता॥ जद्यपिजातिसुलचनी सुवरनसरससुवृत्ति सूपनवितनेविराऊद्वी कवित

तितामिता ॥१॥ कविनिर्कट्टे कवितानिके अलंकारवैरुप एककट्टे साधारने एकविसिष्टस्वरुप  
 ॥२॥ अथ सामान्यालंकारवर्णने सामान्यालंकारके आरिप्रकारप्रकास वर्णवर्णनुर अथी स्त  
 घनकेसवदासा ॥३॥ अथ वर्णालंकारवर्णने स्वतपीतकारे अरुन धूलतीजेवर्ण मिश्रितिके  
 सवदासकट्टि सातितातिश्रुतकर्ण ॥४॥ अथ स्वत वर्णवर्णने ॥ कीरतिहरिदय सरदघन जोद  
 जरा मंदारु हरिदरुगिरि अरु सरससि सुधासौधघनसारु ॥५॥ बलवकीदीराकेवरो को  
 डीकरकाकासु ऊंडकावरीकमले दिम सिकानसकयासु ॥६॥ पांडडाडनिर्जरववर वंदु  
 नुदंसुमुरारि ब्रुसलजुगहुबुबु संपसिंधउडमारु ॥७॥ सेसुसुदतिसुधिसत्यगुन सतनि  
 मनहासु सीपबुनतोडराफिटिक घटिकाफेनुप्रकासु ॥८॥ सुकसुदरसनसुरसरि वारनिवा  
 डिसेमेत नारदपारदजलजरद सारदादिसबसेता ॥९॥ कीनेत्रत्रयतिपतिके सोदासगतपति  
 दसनुवसनु वसमतीकस्योधारुद्वै विधिकीनोआसनु सरासनु असमसर आसुनकेकीनो  
 पाकसासनु उपारुद्वै ॥ हरिकरीसेजहरिप्रियाकस्योनकमोती हरिकस्यौतिलक हराजकी  
 योहारुद्वै राजादसरघसुतसुनोराजारामवंडराउरोसुजससवजगकौसिगारुद्वै ॥१०॥  
 देहडतिहलधरकीनेनिसिकरिंकर जगकरवांतीवरविमल विवारुद्वै मुनिगनमनेमानिड  
 जनिजनेउजानिसंपसंपयानिसुषडअपारुद्वै केसोदाससविलासविलसैविलासनीनि  
 सुषसुष मृडहासउदयउदारुद्वै राजारामसाहिसुतसाहिवसंग्रामसाहिराउरोसुजसा  
 सवजगकौसिगारुद्वै ॥११॥ नाराइनकीनीमनिउरअवदातिगतिकमलाकीबनातानिसो  
 तासुतसारुद्वै केसवसुरनिकेससारदसुदेसवेसनारदकेउपदेसविसुदविवारुद्वै सो  
 नकरिष विशेषसीरप्रसिसियातिलेधिगंगाकेतरंगदेधिविमलविदारुद्वै राजारामसा-



तिजुकी लोपतिके मुपमुनि लघनोरलाहोन लहरिजसोगंगकी ॥१७॥ चंद्रमनि वंशुडि चारुता  
 विचारिविजयामरवांदती वंशवारिभडारेहै केनासऊमुदुकुंडकंबुकंठीरवकायकामतीकटाधि  
 कमतीयताइतारेहै पारदतारदमुतिसारदसरदधतधनसारुडीतिमलजमानमारेहै असोज।  
 सुजतरो जगतइइडीतिजुकोविसदप्रताववादजामौहंसहारेहै ॥१८॥ सरवरशकलितजिंवे  
 डरीकमानसरवरजहंसनिवषानिहै सरसरिसामईसससितालमालसेषऊजिरे औरह  
 रिअंगपटनागहै सरदकधतधनसारद्वारमोतिनकेमहादानि इइडीतिविमलनिमानेहै तेई  
 तेईकासीकेतिलकतिहंलोकमांफितरोजसुडीतिहीकोजलघलमानेहै ॥१९॥ अघपीतवर्षन  
 हरिवाहनविधिहरिजटा हरीहरदहरिताल चंपकदीपकवीररसु सुरगुरुमधसुरपाल ॥२०॥  
 सुरगिरतगोरोवता गंधऊगोधनुमुनु चक्रवाकमनसिलसदा घापरवानरेषुआ ॥२१॥ कमलको  
 सकसववसन केसरिकमकसलाग सारोमुषवपलादिसव पीतरिपीतपगगा ॥२२॥ मंगलहा  
 ज्जकरीरजनीविधियाहीतेंमंगलताउधस्योहै दसरेदामनिदेहसवारिउइइइधनुसारुवस्य  
 है रावनकोरविकेउकीचंपककलिनेमंअंगवासुतस्योहै गोरियुराईकोमेलुमिलकरदाइका  
 केकरदाटकस्योहै ॥२३॥ अघऊमवर्षनांविधिरुआकासुअसि अर्जुनमंडनुसांपनीलक  
 ठकोकंउसुनि व्यासविसासियाआ ॥२४॥ राषसअगरलिगुरमुष आंहराऊमृडरोर रासवई  
 घनशोपती सिंधअसुरतमवोरा ॥२५॥ जमजमुनातेलतिल पलमनसिलसिजबीर सीतकर  
 वतनरकमसि मृगमदकडुलतीरा ॥२६॥ मधपनिसाशृंगाररस कालीकतआकोल अपजा  
 सुरीचकलंककलि लोचनतारेलोल ॥२७॥ मारगु आगिकिसानतर लोतुगोतुइअमीज विर  
 ऊंऊसोदांगोपिका कोकिलमहिपीलो ॥२८॥ काञ्चकीचकवकामुमल केकीकाकऊरुप

कलऊबुइबलआदि कारेकधनस्यरुप



पूरि उदीजल ऊं वरुवाई मांती प्रताय कृता सन धूमसुं के सवदा स अका सन नाई मेरि कै पं  
 वप्रतुत किधौ विधिरं न मई न वरति ववाई डमनि वेदं तव तारका न्त्तिकिधौ सुरलोक सिधाई  
 ४१॥ अषनील वर्ण वामेतां॥ उववे सु ऊ वलय नलित व्याम अ निल धिन वाल करकत मनि ह्यस  
 रि के नील वरनि सेवाला ॥४२॥ कं व ड कल सु औ र ड ऊं उरये उरमे वल के वल दाई के सव सु  
 रिज अं सु नि मंडे न तो य मुता जल धार ध साई संकर से ल सिला तल म अ किधौ सुक की फि रि अ  
 वली आई तारद बुद्धि विसार दा ही य किधौ उल सी द ल मा ल सु दाई ॥४३॥ अष मि थि ति चै त क  
 स्र च ह्य क वतां॥ सिं क क ल ह रि रा ह्य ग नि वें डु वि सु बु ध दे यि अ त क धा उ अ का सु क नि क ल स  
 म सित ले धि ॥४४॥ ध व क त र य तु म घ अ रु ना ग रा ज म ज शेष प यो रा सि क दि सिं क सौं अ रु  
 त्रि त्ती वी र हिले ॥४५॥ रा ज सिं क सी धा ज्जुं ज नि ह रि व ल त ड अ नं उ अ र्जु न क दि ये से त सौं अ रु  
 मार ष व ल वे त ॥४६॥ ह रि ग रु सु र ग रु स ख जी ये ह रि ह रि ग रु ग रु डां नि को किल सौं क लि का  
 वु क दि अ रु क ल हं सु व प्रां नि ॥४७॥ क ल न दी व र श डु सौं गंगा सि क व घा नि नी र ड वि क सौं  
 दो व सौं अ रु नु नी र का दां नि ॥४८॥ अ ष स्वे त पी त श ह्य क व तां सि व वि रं वि सौं सं त र नि र ज त र अ  
 रु द्म स्व नं स रै सां क ह उ ह अ षा प दु क रि ने मा ॥४९॥ सो म व रु नु दि या शि सौं क ल धो त र ज उ अ  
 रु द्म तार क ड रु यो रु वि र नी त रि क दि क रि ये मा ॥५०॥ अ ष षे त र क र श ह्य क व तां चै त व तु सु  
 वि अ मि सु वि सु र सो म ह रि हो इ उ क र ती र घ सौं क ह पं क ज सौं स व लो ॥५१॥ दं स र वि क र  
 नी ये अ र्क क टि क र वि मा नु अ व ज सं घ स र सि ज डु वो क म ल क म ल उ ल जा नु ॥५२॥ इ ति श्री मा  
 न वि वि धि नु मि त त्प्र मि ता यो क वि प्रि या यो श द्वा लं का र स्वे ता दि व र्ष व र्षे नं ना म भे व मं प्र ता य अ ष





रगनविशेषाः॥ बालवदिकाबालससि हरिनयसुकरदंत ऊटिलादिकगवनीय कया  
 टीऊलअन्ता॥१॥ सोरङ्गीघषतानुसुता अलसीविलसीनिसिकंजविहारी केसवयोघा  
 तिअंचलुओरनिपीकसुलीकगईमिटिकारी बंकलगेऊववीवनघषति देषितईहगहती॥  
 लजारी मानौवियोपुवराऊदयो जुगसैलकीसिंधसेङ्गवैडारी॥१२॥ अघत्रिकणवर्णन॥ स  
 कटसिंधारेवजदल हरकेनेननिहारि केसोदासत्रिकोनमदि पावकऊंनविचारि॥१३॥  
 लोचनत्रिलोचनकेकेसवकिलेकिविधिपावककेऊंडसात्रिकोनकानीधरनी सोधीदेसुधारप्र  
 सुपरमपुनीत नृपकरिश्चरणदसऊंदिसिकरणी॥ ज्वालसौजगबुडगममउ सुमेरतामैज  
 कीजोतिहोतिजोकलोकमनहरनी धिरधिरडीव ऊविहोमियउ जुगश्होताहोउकालुसु  
 गतिजाइवरनी॥१४॥ अघसुवृत्तवर्णन॥ वृत्तबेलननिगुञ्जअरु कऊदकंधरघअंग ऊनीऊं  
 लऊवअंडमति कंडककलससुरंग॥१५॥ परमप्रवीनअतिकोमलरुपालतेरे उरतैउदितवि  
 तेनितिहितिकारीहै केसोरायकीसौअतिसुंदरउदारसुतसजलसुसीलविधिसुरतिसुधार  
 है। कालसौनबोलिजातेहसिनविलोकिजातेऊंवकीसहितसाधुसुधीअंसवारीहै तेरेहो  
 ऊवनि सऊचानेनसकतिअधिपरदिय हरनप्रकृतिकौनेपारीहै॥१६॥ अघतीऊनपुरवर्ण  
 नां॥ नषकटाअरारइवधन मलसेलसुतीऊनजाते ऊवनितंबपुनलाजमति रतिअतियु  
 रुकरिमांनि॥१७॥ सिंदधीदुधारअनअनौरेअनेककामसरऊंतेपरेषलबवनविशेष  
 यें वोटनववतवोटकीनेलकपाटकोटतोनसोदरेलतारेतयअवरेषीयै केसोदासमा  
 वगदयैउ उतप्रतिपद्मरऊलऊलऊवजरऊकतेलेषियै तेदियतनमेवर्मऊपरकअई  
 रहेपारिघनीयायुलनिघायपेनदेषीये॥१८॥ अघगुरुजाजवर्णन॥ रसिकप्रियावायघा

KESHAV DAS.  
KAVI PRSYA

ॐ

नेपोचिगुलाछेतिनांछिऊ  
परआप्तमेअंजुदे वजस्य  
ज्ञामलवर्णनं॥पञ्चवक्रसुम  
।विवारि।२१॥रसिकप्रिया  
॥।ऊवकगेरसुजमनमनि  
त॥२२॥सरतिकेमनेसुमा  
वटी॥२३॥केसोदासदीन  
ते देदुजातजातरूपदादित  
वीजुरीद्वेनेतकोधुरधुर



बागाकाधराधुरनथाइनप्रयागाका उदरकावडवाअतेलेअंजुमानतुदो ज्ञानउदोहीराहि  
योकास्तुअसीतागीको॥२४॥अधनिअलवर्णनं॥सीतसरमतटसंतमन धर्मअधर्मनमि  
न जहांतहोयेवनीये केसवनिअलविता॥२५॥कायमनोववकाभनलततमादनमोदमदा  
तवज्ञेता केसववालवदिकमवृहचिपिंतिनिजुंसोधाअजवेता द्कलिमेंकरुनावजनाअयकावृ  
गतेअउहापरयेता येईतोसरडामंडलतेदनसरसतीअसुउरधरेता॥२६॥अषवैवलवर्णनं॥तरा  
लउरंगकरंगमत वांतरवलदलपांन लाततिकेमतिस्मारजन वालककालविधोता॥२७॥अला  
राअटिलकटाअमत सपतोओवनमीन पंजनअस्ति।अथवत श्रीदांसिनियवत  
रमोसवतलील ललतालतानिपरियंजानुसिमीनमनो प्रलडादांजातुं सप  
तेलअपनोई सुअनेवेत अंनआककेसंस्तुदं।द्वियेधोकोनपुत

कचुनरूपमोहकोमदुदुद्वै चयलासीवमकति सोद्वैचारुविज्ञदिशिकान्दकेसनेकवलदल  
केसोदुदुद्वै॥२१॥अप्रसुषदवर्षेते॥पंफितउत्रपतिवता विद्यावपुनविरोग सुषदीफरुअस्ति  
लाषिके संपतिमित्रसंयोग॥२२॥ दांतमानधतजोगजयरागवागध्यह रूप मुक्ति सोमसर्वज्ञता  
एसुषदानिअनूप॥२३॥पंफितउत्रसपुतसुधीपतिनीपतिप्रेमपरायणतारी मानोसवैजनजाते  
सवैयुनदानविधानदयाउरधारी केसवरोगहीसौजुविवोपुसुलोगति सौरतिमंसुषकारी सा  
बकद्वैजगमां हिलद्वैजसुमुक्तियद्वै चिकंवेदपुकारी॥२४॥अप्रसुषदवर्षेते॥आधिवाधिअप  
अपमानरित परधरतोऊनवासु कन्मासंततिवधिता वरषाकाउप्रवासु॥२५॥पापपराजयक  
वद्वै सवतासुरप्रमितु वातनुनीरीरूपविनु असहनसीलचरित्र॥२६॥ऊऊनऊस्वामीऊ  
गतियद्व ऊउरनिवासिकुतारि परवसदारिद्र्यादिदे एडमदानिविचारि २५ वाहन ऊ  
वालेचोरु चाकरुचपलचित्तमित्तिदीनसुमस्वामीउरआनीये परधरतोऊनऊवासु वासु  
ऊउरनिके सोदासवरषाप्रवासुडपदानीये पापनिकोअंगसंगअंगताअनेगवसअपजससु  
तसुत हितचित्तदानीये मूढताबुद्धाईवाधिरिद्रुबाई आधियद्वहनरकंनरलोकनवयो  
नीये॥२७॥अधमंदमतिवर्षेते॥ऊलत्रियहासुविलासुबुध कामकोधमदमानि सतिगुरुसा  
रसदंसमज त्रियगतिमंदवर्षाणि॥२८॥कोमलविमलमनिविमलासीसपीसाधि कमलाजौलीने  
द्वधकमलसनालके नृपुत्रकीधनिसुनितौरैकलिदंसनिकेवोकिचोकिपरैचारुवेदुवामर  
लके ऊवनिकेतारकुवतारनिसकुवलचकि २३आतिकटितटिवालके हरैबोलतिविलोका  
तिहरैहरैहरै चलतिमनलालके॥२९॥अप्रसीतलवर्षेते॥मलयजदायकलादिसुषे औरमिअ  
मित्त पियसंगमधनसौरससि ऊऊरुहद्वैमेतसीत॥३०॥रसिकप्रियायांयथा॥सीतलसमीकटा

सुवंध्वंदि को निवास रुके सोदास असें ही तो हर पदिरा उदं ॥ अथ त सुवर्णानं रि सुप्रताप  
उरववत तपतत विरज संतापु सुरजिआगि वंको गि ड्यत्रिन्नापाप विला ॥ ४१ ॥ के सोदासा  
नीदत्त प्रयास उपदासत्रास ड्यको निवासु विप्र सुप्रुद्गदापत् वाशकावदनुवनदायाका  
ददनुवडीवडवा अनिल चाल जालमें रक्षोपरं जीरत जनत जात योर चुरस जा रपरिप्रण प्रग  
टपरितापु कौंकदौं परं सहिहेतपनतापपरके प्रतापर सुवीरका विरजुवीरमापनसदाप  
रं ॥ ४२ ॥ अथ स्वरूप वर्णनो ॥ ननुतल कवर सुरेतिपुत्रुदरिसु उ मदनवाहारि दमयति सि  
तादित्रिय सुंदररूप विद्वारि ॥ ४३ ॥ कोद्वेदमयति इ इमति नंतराति दिनुद्वेदुव्योलीछि  
न चीनको सवारिथे के सबलजात जलजात वेदवापे जातरुपवापु र विरुपसेनिदारीय मा  
दन निरुप निरुपमता निरुपतयो वंद अवरुपका विवारिथे सीताभुकेरुपपरंदवुता ऊरु  
प्रसेदं रूपलंकेरुपकतै वारि २ डारीये ॥ ४४ ॥ अथ कर स्वरवर्णन जी उरु सोप अलंके अज  
महिषीको लवपांति कालकाकवक वृक्षतपर स्वानं कर स्वरजांनि ॥ ४५ ॥ जीलीते रसीतीजी  
ली रटिदकी रतलीती स्यालतें सवाई लत तां उंतीतं आगरी के सोदासत सांनिकी तामतीतं ता  
सेतासपरीतें घरी सीधनि ऊंठतें उडागरी तडिनकी मोडामडि अंदिनां रानारिनकी वाकद  
तदेवाकी वानी काभाऊंकी कागरी सुकरी सऊचिसंकिऊकरी यां सऊकित ईधकफी धरनि  
कोद्वे मोद्वे नरतागरी ॥ ४६ ॥ अथ सस्वर वर्ण वर्णनो ॥ कलरवकेकी काकिली सुकसांरकल  
दंस तंत्री कंठनि आदिदे सुरसु तडं इति वंस ॥ ४७ ॥ के कनिकी के कासुनिका के नमघतमा  
मन मनमधमनोरष्यघरषसोदिये को किलाकी काकली निकलित ललित वागदमपतदी अ  
नुराग उर अ वरोदिये को कतिकी कारिका कदत सुकसांरिका सां अंरीदासना रिकाकां मा

मारिका उमादिए हंसमाल बोलति मांमकी माला उतारि बोलें तंद लाल सोत असी बाल को हि  
 ए॥४८॥ अथ मे कर स्व र वर्णनं॥ मकर प्रिया धर सोम कर मांघनु दाप स मान बाल क बाते तो  
 तरी क विक्र ल उक्ति प्रमानं॥४९॥ म क व मि श्री उ ध घ त अति सिंगार र सु मि ष उ य म यूप प॥  
 यूप म ति के स व सां वे इ ष्ट॥५०॥ र सि क प्रिया यो॥ पारिक घात न दा डि म दा प न मांघन ऊं स दा  
 मे टि इ गार् के स उ प म यूप द्दो की निर् आ ई हौं तो प द गो फि सु गार् तो र द न च द को र सु रं व क वा  
 धि ग ए करि क्यो ऊं टि गार् ता दि न ते उ ति रा पि उ गार् स मे त सु धा व सु धा कि मि वा ई॥५१॥ अथ अ  
 अब ल वर्णनं॥ पं ग रं गुरो गि व नि क सी त रू प डु त डानि अंध अनाघ अजा दि सि सु अब ल अ  
 ब ल वर्ण नि॥५२॥ पा तु न अ घा उ स क ज ग उ ष वा बु त दै प्रो प ती के सा ग पा त घा त ही अ घा ने हौं के  
 सो दा स न प ति सु ता के स ति ता इ त ए चो र तै व उ रं नु ज व ऊ डु ग ज नि हौं मां ग ने उ धा र पा ल दु स ड  
 त रू त सु नो का व म द कौ न पा व वे दु नि व या ने हौं औ र न अ ना ध नि कौ ना ध को ऊ र फ ना ध उ म  
 तो अ ना धि न कौ दा धि दिं वि का ने हौं॥५३॥ अथ ब उ वर्णनं॥ य व नु प व नु को ष व अ रु पर मे सु  
 र सु र पा ल का मु ती मुं वा ली ह ली ब लि रा डा ष्टु काल॥५४॥ सिं ध व रा ऊ ग यं ड गुरु से षु स त  
 स व ना रि म रु ड वै द्य मा ता पि ता ब लि अ दृ ष्टु वि वा रु॥५५॥ वा लि बंधो व लि रा उ बंधो क र सु ती के  
 सु ल क पा ल व ली ह के कां मु ज स्यो ज ग का ल्प स्यो व दि से षु ध स्यो वि षु द्दान ह ली ह सिं ध म थो कि  
 ल व्वा ल न वी क दि के स व इं ड ऊ वा लि च ली ह रा मु द्द की दू री रा व न वा मु दै वि ऊ डु ग ए ऊ अ ध ष  
 व ली ह॥५६॥ अथ सां क र व वर्णनं॥ के स व चारि ऊं वे द को म न क मु व न वि वा रु सां वो ए ऊ अ  
 दृ ष्टु ह रि ऊ वो स व सं सा रु॥५७॥ हा घी न सा घी न घो रे न वे रे न गा उ न वा उ को व उ विले ह ता उ  
 न मा उ न षु उ नु मि त्त नु कि उ अ नं ग वि स ग न रे ह के स व का म को रा मु वि स्तार उ औ र अ का म नु का

महिएदं चेतरेवेत्र अनेवित अंत नु अंत कवों क अके लोई जेदै ॥५॥ अतदी विकंको विक्रमां  
अन क्रमोर तोर तादि पेटगा वेठि लिजादि को उग उदे वाके तो दर ते रू उगत डग उदरि डर के ड  
र नियं डोडी जौ डग उदे ऐसै व मता संतं उदा स होय के सो दा स के सो न र ग उ क दिका दे को पा  
उदे ऊ गे दे रं ऊ गे ज ग रा मु को ड द्वा ई का रु सावे को कियो द्वा ता तें सां वे सो ल ग उ दे ॥५॥ अवा  
आ गति सदा गति वर्णंतां ॥ अ गति सिं क त रु ता ल गिरि वा पी ऊ प त ड ग म द्वा न दी न द पं व ड ग प व तु  
सदा गति डा ग ॥ ६ ॥ र सि क ध्रिया यो य वा ॥ पं ष ता ष फि त प ल म नो र ष ॥ अ व दान व र्ण न ॥ गौ री गि  
रा मु गे श वि धि गि रा य ह नि को ई स विंता म नि सु र ह ड ग ग ज ग मा ता ज ग दी स ॥ ६ ॥ रा म वं ड द रि  
चं द न ल पर स रं म ड प र्ण के स व द्वा स द धि व ष थ व लि सि व ती प न्च क मुं ॥ ६ ॥ तो ज वि क मा जी  
उ न्म अ ग दे ऊ र न धी रू दान नि कं के दान दि न ई ज्जी त त ब ल वी र ॥ ६ ॥ अ व गारि का गिरि स को  
दानु ॥ ६ ॥ पा व क फ नि वि प त स्म म्प द रु प व र्ण म य मां ति दे त नु दे अ प व र्ण को पा र व ती प ति दान  
नु ॥ ६ ॥ कां पि उ यो आ उ प ति त प न डी ता प च डी सी रा यं सी री सी र ग ति त ई र क्ता स की अ जा  
ऊ न उ यो वा दै अ न लु म लि न मु प ला गिर ही ला ज म न मां तो म न वी स की द्या ती म च वी ली ल च च  
वि सों च पा य ह रि छु टि ग ई दानु छ वि को रि क्त तें ती स की के सो दा स तें दी फा ल का र ई क्त या यो का  
उ सु न त अ व त ल ग सी स ए क ई स की ॥ ६ ॥ अ व सं र्ण को दानु ॥ वा ध क वि वि धि आ धि त्रि वि धि अ धि क्त  
आ धि वे द उ प वे द व ध वं ध नु वि धा नु दे अ ग प र वा र पा र क र त अ पा र न र स ज क प र म प द मा व उ  
प्र मा नु दे उ रू प पुरां न क दै उ रू प पुरां न स व क्ष र ण उ रं ण सु नि ति ग मु नि दानु दे तो ग वा न त ग  
वा न त ग ति न त ग वां नु की वे के सो दा स ता वें त ग वा नु दे ॥ ६ ॥ ई ड ड ॥ त को दानु ॥ का र २ त म के से  
प्री त्म सु धा रं वि धि वा रि र डारि गिरि के सो दा स ता पं ह थो र २ म व न क मो ल फ ले फु ले २ डो ले जे

२

लषलषलषानुसुततापदं घंटाघनतातघनघतेघप्ररातितौराननतातिचवपातअतिलाषेह  
 जेनदालिद्रुदीददलितविदरिवकौइइजीतहाथयोदेशारकरिषद॥६७॥ अघगणेशकौदानु॥  
 लकमृतालनिज्योतारिडारसबकालकावितकरालवेअकालदीदइषको विपतिहरतदविपोमनी  
 पातसमपंकस्योपतालमेलिपववेकलुपको उरिक्कैकलंकअंकनवसिसससिसमराषतद्वैकेतो  
 सदासकेवप्रपको सांकरकीसांकरनिसनमुषदोतहीतोदसमुषजगजोवेगजमुषको॥६८॥ अघ  
 विधिकोदांनु॥ आसीविपराषसिनदेयतनिदेपतालसुरनिनरनिदियोदवित्तनिकेउहे धिरविरड  
 वनिकोदीनीवृत्तिकेसोदासदीविकदुआरकोऊकाहाकदुउहे सीतवाततेजतोईआवतसमयपा  
 कारूसौननेकीजाइअशीसकसेउहे अवतवजवकवजदांतदोजातिजऊविधिहीकोदीनोसबुस  
 वदोकोदेउहे॥६९॥ अघसरस्यतीकोदांनु॥ बानीजगरोतीकीउदारतावपातीजाइअसीमतिक  
 लउदारकौनकीतई देवताप्रसिद्धसिद्धरिपराजतपवृधकदिकहिहरिसयकदिकालनलई त  
 वीत्तवर्जमानजगउवपानउद्वैकेसोदासकैलंतवपातीकाकपंगई॥७०॥ वर्षेपतिवारिसुषउउव  
 र्षयोवमुषनौतिवर्णपटमुषतदपिनईनई॥७१॥ श्रीपरसरांगकौदांनु॥ जोधरनीदिरनांछदरी  
 वरजग्पवराहछिडाइलईनु मानवदानवदेवनिकेनुष्योवलक्यौकनदाषतईनु जालगिकेसव  
 नारशुतोंतवपारषजीवनिहांशुमईनु सातसमुद्रनिमुद्रितसामसु विप्रनिवारअनेकदईनु॥७२॥  
 श्रीरामवर्षुजीकोदांनु॥ परणप्रराणअरुषुरुषुरानपरिषरणवतावेबेनरावऔरउक्तिको वा  
 रसनदेतजिन दरसनुसमुफेननेननेनकोद्वैवैउआडितेइयुक्तिको जानियदकेसोवामअन  
 दिनसंमसंमरहउनदरउनसेपउनरुक्तिको रुषुदेइअणिमोदिगुनदेइ गिरमांदि तकिदेइ मई  
 मादिनामुदेइ युक्तिको॥७३॥ अपरवा॥ जोसतजगकरैकरिइइकोसौघनुताकपिप्रतकोकीनी॥

कति

कति

न

ईसदर्शनदशदससीसदिलंकधितिपत्रैसैंदोलीती श्रीरघनाथकीदानकमाकदिकोषरनेंस  
 अत्रुततीनी जोगतिउरधरतनिकी सुंआधिकीसुकरे ऊकरेदीती ॥१४॥ अथवीरवलकोदानु ॥  
 पापकेछंजपपावजकेसवसोककेसंपसुनीसुप्रमाण ऊवकेफालरिकाफिअठोककेआउअनुष  
 नेजांनिजमांमें सेद केलेरवडेडरकेडफकोउकतीनतिकेऊरमांमें ऊफतहीवरवीनविजेवज्ज  
 तारिदकेदरवारदमांमें ॥१५॥ शतिश्रीकविप्रियायांसामात्यालेकारवर्णनंतामदानवर्णनतागपमः  
 प्रतावः ६ ॥ अथसुमित्तुषणवर्षनें ॥ देवानगरवनवागभिर आश्रमसरिताताले रनिसांससागरर  
 मिकेत्तपनरित्रसबकाल ॥१६॥ अथदेशार्णनें ॥ रत्नमांनिपसुप्रचवसु वसनसुगंधसुदस नदीन  
 गरगढवरातीयें तायात्तमितवेसा ॥१७॥ आत्रेश्रमनवसन वसुयासुग सुदानसनसनमानजानी  
 वाहनवयांतीयें लोगतोगजोगतापीयागरगरुप्रसुत त्पननिरमितसुतायामुपजानीय सांताउ  
 रीतीरधसरितसवगंगादिककेसोदासधरणधरणं गुनगानांये गोवावलअसेभटराजामनसिं  
 चुकेदेसनकीमनिमदिमअदेसुमांनीये ॥१८॥ अथनगरवर्षनें ॥ याईकोटअटीऊजा नापीऊपत  
 जग वेसातारिअसतीसती वरतीनगरसताग ॥१९॥ चक्रंतागवागवनमान ऊसवनवेनसोताक  
 सीमालाहंसमालासीसरिप्रवरा उंवरअटानिपताफाअतिऊंवीरकोगिककीकीतीभंगपेला  
 पतरलतर आपनेसुपनिआगोनिदितनरिंदि आरघरघरदेधियतदेवतासिनारीनर केसोदा  
 सत्रासुजहाकेवलअदृष्टहीकोवासीयें नगरओरओडयेनगरपर ॥२०॥ अथपनवर्षनें ॥ सुर्  
 ईनवनजावबज्ज स्तनप्रेततयतीर तिअत्रवतवजीवितप दववनयां ॥२१॥  
 आसमासओउआकेतीसकोस उंगारमतामवनेवेरीकाअजीउंहे विधिकेसोवफवरवाननव  
 लितवाधयातरवराऊवज्जतिअत्रकोअतीउंहे अमकीममातिसिफिजामउतकेसोदउमसिपसुप

को





ईसदई नदयेदससीसहिलंकवितिपनअसैंहीतीनी श्रीरफनाथकीदानकमाकहिकोघरनेरस  
अडुततीनी जोगतिउरधरेतनिकी संआर्थिकीसुकरेऊकरदीती॥१४॥ अषवीरवलकोदाउ॥  
यापकेउंजयपावजकेसवसोककेसंपसुनीसुधमांम ऊयकेकालरिफांफिअलोककेआउतनुध  
नजांजिमामें तेदकेलेखडेडरकेडफकोउकतीनतिकेऊरमांम ऊरुतहीवरवीनविजवज्ज  
दारिदकेदरवारदमामें॥१५॥ शतिश्रीकविप्रियायांसाभात्यालंकारवागंतंतामदानवर्णननागपम  
प्रतावः६॥ अषसुमित्तप्रणवर्षनें॥ देवानगरवनवागभिर आश्रमसरिताताउ रनिसामिसागरत  
मिकेत्तपनरिउसबकाल॥१॥ अषदेवाकर्षनें॥ रत्नमंनिपसुमभवसु वसनसुगंधसुदस नदीत  
गरगढवरानीयें तायात्तुषितवेसा॥२॥ आश्रेश्चरभवनसन वसुयासुणासुदानसनसनमानजाना  
वाहनवयांतीयें जोगतोगजोगतभीवागरागरुमसुतत्तपनतिरुषितसुतायामुषजानीय मांतापु  
रीतारषसरितसवगंगादिककेसोदासपरणउरंणग्रनगांतीयें गोपावलअस्पाटराजामनशिं  
सुकेदेसनकीमनिमहिमअदेसुमांतीयें॥३॥ अवनगरवर्षनें॥ घाईकोटअटीक्षजा यापीऊपत  
जग वेस्नारिअसतीसती वरतीनगरसताग॥४॥ यज्जतागवागवनमीन ऊसवनवेनसोताक  
सीमालाहंसमालासीसरिप्रवरा उंवेअटानिपतफाअतिकऊंवीरकोशिकफीकीतीमंगघेता  
पतरलतर आपनेसुयनिआगोंनिंदितनरिंदि आरधरघरदेधियतदेवतासनारीतर केसोदा  
सनासुअहांकेवलअदृष्टहंकोंवासीयेंनगरऔरऔडछेनगरपर॥५॥ अषवनवर्षनें॥ सुरति  
ईनवगजीवबज्ज स्तनप्रेततयतीर लिध्रतवतवज्जीवितम देववतयां॥दुभीर॥६॥ केसोदास  
आसपासऔडछाकेतीसकोस उंगारन्यतोभववेरीकाअजीउंहे विधिकेसीवकवरवा नव  
लितवाधयातरवराऊवज्जतिध्रकोअतीउंहे अमकीजमातिसीफ जासुतकेसोदुमुहियसुध

उसुबुरिचेनाकोमीउदे अवलअनलवतसिंधसोसरितसुतसंतूकेसोजडाज्जटिपरममुता  
उदे॥१॥अधवर्वतवर्षना॥शृंगउंगदीरघदरी सिधिसुंदरीधाउ सुतररसुतगिरिवरुवरनि  
आधधनिर्हरपाउ॥१॥इंइडीउकोनेतेरेअरिऊलअऊलाइमेरकेसमानआनअवलघरीनि  
में सारोशुकहंसपिककोकिनाकपोतमृगकेसोदासकक्यहकलतकरानिमें फारेकलुहार  
दुटेराऊपरिपुटहृटेऊटेदेसुगंधधतधवततरीनिमें देमिजातसिपरसिधरप्रतिदेवतासेसु  
दरऊवरअरुंदुरामिमें॥१॥अधआधमवर्षना॥होमधुमसुतवरनीये ब्रह्मघोषमुतिवास  
सिंहादिकआदिमोरमृग ईतसुतवैरिविनासा॥१॥केसोदासमृगजबछेरुचोषेबाघनीनि  
वाततसुतरतिबाघवालकबदनुदे सिंधनिकीरातअवेकलतकरनिकरिसिंधनिकोआसु  
गयंदकौरदनुदे फनिकेफनिनपरिनावउसुदितमोरकोधनुविरोकजहांमदनुमदनुदे  
वानरफिरउमारेअधतपसिनिरपिकोनिवासुकिधौसिवकौसदनुदे॥१॥अधसरितावर्ष  
ने ऊलवरदयगऊलऊतलमृगऊंडमुनियान स्नानदानपावननदी वर्षऊकेसवदास१२  
आउछेतारतरंगिनिवैतवेताहितरेरिउकेसवकोदे अर्चुनवाहप्रवाऊप्रबोधितरेवज्योरा  
जनकोरजमोदे जोतिजगेजमुनासीलमेऊललालितलोवनमापविपोदे सुरसुतासुतसंगा  
मत्वंगतरंगतरंगितगंगसीसोदे॥१॥अधवागवर्षने॥ललितउतातरवरऊसम कोफिला  
कलरवमोर वरनिबागअनुरागसौ तवरतवतचिऊंओरा॥१॥सहितसुंदरसनकरुना  
कलितकमलासुनविलासुमदनुमितिमांतीये सोदियेअपर्षरूपमंजरीमेंनीउकठसपदा  
रऊकेसोदासप्रगतअसोकुउरआनीये रतासोसदतबोलेमंजुघोषाउरवसीहसकलेसु  
मनसुसबइषदानीये देवकोदिवातुसो प्रवातुराहनुकोवागइंइकेसमानजहांइंइजीउओ

नौवै॥१५॥अथतालवर्णनां॥ललितलहरिपगुहपुत्रुन सुरतिसमीरतमाल करतकेलि  
 मञ्जाप्रगट जलचरवरणकुंताला॥१६॥आशुधरेमलआरनिकेसवतिर्मलकायकंविङ्गञ्जोने  
 पथितकेपरिताशुहरोदठिनेतनत्रलतनुरुदतोरं देपङ्कणकुसुतात्रवञ्जिवटतागतडागनि  
 केवितथोरं ज्योउतजीवनिहारितकौतिज वंधनिकेजगवधनञ्चोरा॥१७॥अथसमुद्रवर्णनां॥  
 त्रंगतरंगगंतारता रतनागरतलजंउ गंगासंगमदेवत्रिय दग्मतसरसञ्चने॥१८॥गिरवडको  
 नलहृदवज्र वंशोदयतैज्ञानि पंगदेवअदेवयद् असासिधवपानि॥१९॥संशुधरेधरं  
 महकेसवजीवरयेविस्वेविधिजेतेचोदहृताफसमेततिहंहरिकेप्रतिरामनिमचितवने  
 सावतनेउसुनेईनदीमंत्रनादिअनंतजगाधिहिएते देपङ्कअश्रुतसागरकीगतिसागरदा  
 मंसागरकेता॥२०॥सृतिवित्तैतिपाद्यपद्विषदीईससरीरकेयापविषाद् द्वैकिधोंकेसव  
 केसपकोधरुदेवअदेवतिकामतमोद् संतदियाकिवसेहरिसंततसातअनंतकहक  
 विकोद्दे चंदनतीरतरंगतरंगितसागरुकोउकिनागरुसोद्॥२१॥अथसूर्योदयवर्णनां॥  
 ररउदयतैअरुणता पयपावनताहोद् संषवेदधनिमुनिकरै पंषथेलेसतलोद्  
 ॥२२॥कोककोकदेनेसोकहूर डपककनयऊलटानि ताराओपधिदीपससि घुकचो  
 रतमहानि॥२३॥कोकनदमोदकरु मदनुवदनुकिधोंदसमुपमुपऊवलयडपदाईहं  
 रोधऊअसाधजनसोधऊतमोअतकिउदितप्रबोधबुद्धिकेसोदास-पाईहं पावनकरन  
 पयहरिपदपंकजुकिजगमोतांतांजगमगदरसाईहं तारापतितेऊपतिताराकातरका  
 किधोंप्रगटप्रतातकरदीकाप्रलुताईहं॥२४॥अथवंशोदयवर्णने॥

अतम माननिकुलटनिडं पु चेंशोदयतैऊलवयतिजलधिव

दास है उदास कमला करसौं कर सोपक प्रदोषतापतमोघनतानियै अमृत असेषुके वि  
शेषिताई वरमतको कनदमोदरुषमंरुनविचारीयै परमशुभपदवी सुषपरुषरुषसा  
मुषसुषदविष्णुनिउरधारीयै हरिहैरीहियमांकिहरिनहरिनते नवंइमानवंइसुषीना  
रदनिहारियै ॥२६॥ अथ वसंतरिउवर्षनं ॥ वरनिवसंतसुषुदपअलि विरहविदारतवर  
रकोकिलकलरवकलितवन कोमलसुरतसमीरु ॥२७॥ सीतलसमीरसुतगंगाकेतद  
गद्युतअंबरविहिनवसुवासकीलसउद है सेवउमधपगणगजमुषपरत्नैतबोलसुनि  
षीहोउसंउवेअसंउद है अमलअदलरूपमंजरीसुपदस्जरंजित असोकडभदेयता  
नसंउद है जाकैराजदिसिभक्तलेइसुमनसवसिवकोसमाजुकिधौकेसववसंउद है ॥२८॥  
अथ ग्रीषमरिउवर्षनं तातैतरलसमीरसुष सुषेसरिताताल जीवअबलजलवलसा  
कल ग्रीषमसकलरसाल ॥२९॥ चंद्रकरकलितवलितवर सदागतिकंदमूलकलफा  
लदलनिकौनासुद है कीचबीचबवेमीनमालविलकोतुकउरददरीनिदिनकतकौवि  
लासुद है धिरचिस्जीवनिहिरनवनवनप्रतिकेसोदासमगसिरश्रवतनिवासुद है धामन  
वलधनुषसोससनिपांनसरसवरसमुदकिधौग्रीषमप्रकासुद है ॥३०॥ अथ वरिषास्त्रिवा  
र्षनं वरषावरनऊदंसवक दाइस्वाउकमोर केउककंजकदंबजल सोदासनिघनघो  
रा ॥३१॥ तौहैसुरचापवारुप्रमुदितपयोधररुषनजसयजोतितडिततरलाईहै उरि  
करासुषमुषमाससिकानेनअमलकमलदलदलितनिकाईहै केसोदासप्रवलकरेणु  
कागतहरमुकतसुदसुवकअतिमुषदाईहै अंबरवलितमतिमोहैनीलकंजकेवरा  
षाकिकालिकाहरिषहियैआईहै ॥३२॥ अथ सदरिउवर्षनं अमलअकासुप्रकासुस

सि मुदितकमलकुंलकास पंघीपितरश्यानरूप सरदसुकेसवदास ३३ विष्णाना  
 गीतायथा सोताकोसदनुससिसदनुमदनुकरुवंदेनरदेवऊवलयवलदाईहे पावन  
 पदउदारलसतिहंससुऊमारदापतिजलजहारदिशि२धाईहे तिलकविलकवारु  
 लोचनकमलरुवि वउरुवउरसुप जगजियताईहे अमलअंवरनीललीतपीतपयो  
 धरकेसोदाससारदाकिसरदसुदाईहे ॥२४॥ अषहेमंतरिउवर्णनं ॥ तेलउलतामार  
 त्रिय तापतपनरतिवंत दीहरयनलकधंसुसुनि सीतसहितहेमेत ॥३५॥ अमला  
 कमलदल लोचनललितगतिजारतसमीरसीतरेदंतदेह ५षकी चंडूऊनयायोजा  
 २ चंडनवितयोजायचंदनुनलायोजायप्रकृतिवउषकी घटकाघटनिजातिघटिना  
 घरीदघरीचिनश्चीनबविरविमुपसुषकी सीकरउसारस्वेदसोदतहेमंउरिउकि  
 धौकेसोदासत्रियप्रीतमविमुषकी ॥२६॥ अषसिसिररिउवर्णनं ॥ शिशिरसरससम  
 वरनीये केसवराजारंक नावतगावतरेंनदिन मेलतिहंसतनिसंक ॥२७॥ सरसश्र  
 समसरसरसिजलोचनविलोकिलोकलीकलाजलोपिवेकोआगरी ललितलतामबा  
 ऊजा निजूनज्वा नवालविटउरतिजागेउमगिउजागरीपंअवअधरमधुपनिपीवतऊं  
 स्वतिरुविरपिकमरुतसुपसागरी इहिविधिसदागतिवासविगलितवासुशि  
 सोताकिधौवारिनागरी ॥२८॥ इतिश्रीमनविविधस्तुपितस्तुपितायांकविश्रियायांसा  
 मान्यालंकारवर्णनं नामसप्तमः प्रतावा ॥ अषराजश्रीस्तुपनवर्णनं ॥ राजा  
 मोहितदलपितइत मंत्रिमंत्रप्रयातगयस्यसंशामअस्त ॥२९॥ आयेट  
 विरहस्वयंवरजांति लुपितसुरतादिकनिकरि राजश्रीहीवयाति ॥

प्रजाप्रतिज्ञा उन्मपते परमप्रतापप्रसिद्ध सासननासनशनशत्रुके बलविवेककीष्ट।  
 द्वि॥३॥ दंडअनुग्रहधीरता सत्यसूरतादांत कोभेदेसद्युतवरनीयै उद्यमब्रह्मानिधान  
 धा॥ नमरनगरपरघनईसोगजेघोरइतकीनतीतितीतिअधनअघोरकी॥ अरिनगरी  
 निप्रतिकरतिअगमाम्पोनतावेविविचारीजहांवोरीपरपीरकी सासनकोनासनकरत  
 एकगंधासतुकेसोदासउर्मतिहंउर्गतिसररकी दिशिश्कीतियेअजीतिइजदाननि  
 सौंअैप्रानातिराअनीतिराजेरफवीरकी॥५॥ अघराजपनीवर्षतं॥ सुंदरसुषुपतिव्र  
 ता सुविरुधिसालसमांत इद्विधिधिरांनीवनीयै सलजसुबुद्धिनिधांत॥ ६॥ माताजि  
 मपोषितपिताज्यौप्रतिपालुकरै प्रतुजिममासनकरतदेरिदियसौं तैयाज्यौसहाय  
 करेदेतिहैसषाज्यौसुषुग्रुज्यौसिषावैसिषदेतुजिधेरिजियसौं दासीज्यौटहलकरे  
 देवीज्यौप्रसनकैसुधारेपरलोकलोकनांहीनांतोवियसौं आकेदेअयांनमद छिति  
 केअनकबुइअैरसौंसनेहकरेओफिअैसातियसौं॥७॥ कामकेहैआपनेहीकामरतिक  
 मसाप्ररतिनरताकौंजराकैसैंउरआंतीयै अधिकअसाकइइइइानीअनेगइइतो॥  
 गवतिकेसोदावेदनिब्रह्मानीयै विधिहंअवधिकीनीसावित्राहंश्रीपदीनीअसैंसबसुष  
 तिपुरसुउनमांतीये राजारामवंइजूसेराजननअनुकलसीतासीनपतिव्रतानारी॥  
 उरआंतीये॥८॥ अप्रराजकुमारवर्षतंविद्याविविधिविनोदसुत सीलसहितआव  
 र सुंदरसूरउदारवित्तु वनिंएराजकुमार॥९॥ श्रीरामवंइवंदिकायां॥ यथा दाननि  
 केसिलपरिदानकेप्रहारीदिनदानैवास्त्रिज्यौनिदानदेयायैसुतायकें दीपदीपककीआ

इत्युत्तरं

पंचप्रथमसूक्तके सोदासहि जगार्थकै आनंदके कंद सुरपाल कसे वीलकते मरदार।  
 प्रियसाकमतवकार्दके देहधर्मधारीपे विदेहराज सुसोराजराजतकुमार असेदसरया  
 रार्दको ॥ ११ ॥ अधप्रोदितवर्णनं ॥ प्रोदितनीदितवेदविधि सत्यसील सुविश्रंय उमकारभ्रमा  
 त्यस्त्रिजोत्तो जगउ अनंय ॥ १२ ॥ कीनेपुरोदितमितो कलोकलोगायोगीतपायेजुपायेजूअ  
 त्तप्रुतअरिउरवासुदै जीतेजूअजीतत्तपदेसंदसवज्ञरूपओरकोनके सोदासवउके  
 बिलासुदै तोसोदरकोधनुषनयगनुगोविमुषदेघोषुवधूको सुषसुपमांको वासुदै।  
 कैगएप्रसन्नरंभवद्यो धनधर्मधांसुकेवलवसिष्ठके प्रसादको प्रकासुदै अधदलपतिवा  
 एतं ॥ स्वामीतगउअमजिउ सुधीसेतापतिअहृत आनालसीप्रयजनजिसी सुपसंशाम  
 अजीउ ॥ १३ ॥ ओहिदायोअतिआरसुपारसुकेसवस्वारषसाधसमूरो साहससिंका  
 प्रसिद्धसदाजलविक्रमपुरो सोद्वियेएऊअनेकनिमांकि अनेकनएकविनास्जरुरो।  
 राजउदैतिहिराजुकोरासुजाकोवमूमेंचमूयतिपुरो ॥ १४ ॥ अधइतवर्णनं ॥ तेजवद  
 निजराजके अस्तिउरउपजेहिद्योत अंगितजांतहिसमयउन वर्नजंइतअलोत ॥ १५ ॥  
 सारधरहितहितसहितविदितिमतिकांमक्रोधमोहद्योरलोत्तमदुहानेह मातह  
 अमीउपहिचांनिबेकौ देसकालसुद्विबलजांनिबेकौ परमप्रवीनेदे अयानीऊकति  
 अतिऊपरीदे औरतकीइरिइरामतिलेलेबसकानेदे के सोदासअरिदलदेसंदस  
 रंमदेऊराजतके देधिवेकौइनेहगदानेदे ॥ १६ ॥ अधमंत्रीवर्णनं ॥ राजताति रा  
 जरत सुधिसर्वज्ञऊडीनु छमीसुरजुसुसीलसुत मंत्रीमंत्रप्रवीउ ॥ के



सैकं वारिधि बांधिका द्वा सयोरी छे निजो छिति आई सुरज को सुत बालिको बालक कौ न लु।  
 नीलुक देय द्वाई कोहन वं उ कितो ऊव ली ज सकं पद जोर लई नदि जाई स्वप्न स्वप्न  
 न छपन लंक सुरां म वितापण को मति आई ॥१७॥ सुख सुरो डर जोधन सौं कहि कौं न करी  
 जम लों व क सी त्यों कर्तुं क पा ड ड शे न सौं वै रु कै काल ब वे व रु का जे प्रता त्यों सीम का द्वा।  
 व सुरो अरु अर्जुन नारिन ग्मा वत द्वा ब ल री त्यों केवल के स व के स व के म त रू त ल तार  
 घ पार ध ज्ञा त्यों ॥१८॥ अघ मंत्रा मति वर्षे न ॥ पंच अंगु न संग पट विद्या सुत द सव्यारि अ  
 गम संगम निगम मति अै से मंत्रि वारि ॥२०॥ के स व मा द क को ध वि रो ध त डी स व खार घा  
 सिद्धि अने सी ते द अ ते द अ नु ग द वि ग द सं धि क ह्य वि धि जै सी वे रि न को वि प द्वा प्र लु कौ  
 प्र लु ती क र मंत्रि न की ग ति अै सी रा घ ति रा ड नि दे व नि ज्यौ दि न दि व्य वि वा रि वि मा न व ने  
 सी ॥२१॥ अघ प्रयाण वर्षे न ॥ वों र प ता का च त्र ध ज ड ड ति ध नि ब ड्ढ मां न ज ल घ ल म  
 य रू कं प र ज रं जित वर् न प्र या न ॥२२॥ रा घ व की व उ रं ग व सु व य को ग ति के स व रा ज सा  
 मा ज नि स्र र उ रं ग ति के उ र ऊ म ग त्वं ग प ता क ति के प ट सा ज नि दृ टि प रे ति न ते सु ग ता ध  
 र ना उ प मा व र नी क वि रा ड नि। बुं द म नों सु ष के न ति के कि धौं रा ज सि री अ वे मं ग ल ज म  
 नि ॥२३॥ ना द हरि ध नि सु रि र व न चुरि गि रि सो षि २ ज लं त र रि २ थ ल गाय की के सो।  
 दा स आ स पा स ठो र २ रा षि ड न ति न की संप ति स व आ प ने द्वा द्वा थ की उ न्न त न वाई न  
 त उ न्न त न वाई स्व प स त्रु ति की छि वि का सु मि त्र ति के द्वा थ की सु द्धित स मु द्ध सा त प्र षा नि  
 ज सु द्धित के आई दि शि २ डी ति से ना र ध ना थ की ॥२४॥ अघ द्द य वर्षे ॥ तर ल त त

तार्द्ध तेजगतिमुपलक्ष्य दिनदेषि देससुदेससुलब्धने वरनोंवाङ्गि विज्ञाप ॥२५॥ वासन  
 हीडपदसुनांकोनसुतादिकाहानांकैपदचारिथिरहोतईहिउद्दे हेकाचितगीरनिधि  
 बांडिधायब्रजंडलीकरउलोत वित्तमोललेउद्दे मनकेसेमीतवीरवाहनसमीरके  
 सेनेननिज्यौनोतेनेहकेनिकेउद्दे सुनगतवलितललितगतिकेसोदासजेसेंवाडीरा  
 मवंडुदिननिकोंदेउद्दे ॥२६॥ अर्धडरजवर्षने ॥ मत्तमहावतहाधमे मंदुचलनिवत  
 कर्षमुक्तामयईतउत्तसुत सुंदरसुरसुवणी जलकेपगारतिजलदकेसिगानपर  
 दलकेविगारकरपरपुरपारेरोरि वाद्देगटकेसेघततस्यौ तिरतरनदेपिदेतिआसिप  
 गिनेसजकेतोरैमौरि विधिकैसेबंधवकलिंदनेदमेअमंदुबंदनकोत्तइतरवंदनकाव  
 रुमोरि सरकेउदोतउद्देगिरिसेउदितअतिअैसेगजराजराजै राजा समवंदोपोरि ॥२७॥  
 अधसंग्रामवर्षने ॥ सेनास्वांतसनाहससाहससस्रप्रहार अंगसेतंगसंधटतट अंध  
 कबंधअपारा ॥२८॥ केसववरनोंसुधमे जोगिनऊतसुतसु त्तुमतयानकरुधिरमयस  
 रवरसरितसमुद्र ॥२९॥ श्रोनितासलिलतरवानरसलिलवरगिरिंदनवंउविप्रवितिषा  
 उजस्योद्दे चवरपताकावडीवडवाअनलसमरोगरिपुजांमवंउकेसवविवास्योद्दे वाजि  
 सुरवाजिसुरगऊसेअनेकगऊतरसुसुबंधइंडुअमउनिहास्योद्दे सोहतसहितसे  
 सुरांमवंउऊसलवजातिके समरसिंधसांवेकसुधस्योद्दे ॥३०॥ अधआपेटकवाणी  
 ना ॥ सुरराबहरीबाऊवऊ चातेस्वानसिचान सहरिवहिलियातिध्रसुत नीलनिवोर  
 पिधान ॥३१॥ वानरवाप्रवराऊमगमीतादिकवनजंउ बंधवधन वेधनिवरनि मगआ

पेटअनं॥३३॥ तीतरकपोतपिककेकीकोकपारापतऊरैरऊलिंगकलदंसगदिल्लायेद्वै  
 केसवसरतसीद्गोसरोसरोसदितदीहऊकरनियासससूकरगहायोद्वै मकरनिमुरा  
 वेधिबांधिगजराजमृगसुंदरीदरीनितिःत्रतांमनीनित्ताएद्वै रोजि२ गुंजातिकेहारपहिसा  
 यदेषेकांमुत्रैसरांमुकेऊमारदोऊआएद्वै॥३४॥ पैलनिकेपेलतेलमनमघमनत्रैला  
 सेलजाकेसेलगेलेलप्रतिरोकद्वै सेनानीकेसटपटचंदचितयटपटअटपटअति।  
 अतिअंतककेबोकद्वै इंध्रकेअकबकसंलुभुकेसकबकधाताभूकेधकबकके।  
 सीदासकोकद्वै जबरमृगजाकोरामकेऊमारवलेतबरकोलाहुलहेउलोकाठोकु  
 द्दो॥३५॥ अधऊलकेलिवर्षनं॥ सरससरोंसुसुसोनतनि हियसौपियमनोंकेलि महिवोगतत्पते  
 कौं जलचरसौजलकेलि।३६॥ एकदमयेंतीअसीद्वरेद्वसिद्वंसवसएकद्वसिनीसीविल्ला  
 रद्वियेरोद्विये॥ स्वधनगिरतएकलेतबुडिवीवि२मानगतिनीनहीनउपमानदोद्विये एकद्व।  
 रिकंवालागिरबुडिजातिजलदेवतासीद्वगदेवताविमोद्विये केसोदासआसपासलमरत्नमता  
 जलकेलिमेंजलजमुषीजलज्जैसीसोद्विये॥३७॥ अधविरद्ववर्षनं॥ स्वासनिसाधिताबटे रुद  
 नपरेवषोवातकारेपारेद्वोउऊरा तातेसीरेगाता॥३८॥ लुभप्याससुधिबुधिघटं सुषनिशुडि  
 अंगडुषहोतसुषसबकेसवधिरद्वप्रसंगा॥३९॥ रासिकप्रियायांयथा॥ बारबरजामेंस  
 रससरसमुषीआरसालेद्विसुषआरसमेंवोरीद्वै सोताकेनिद्वोरेतेंनिहारतिनेकहे  
 उहीरीद्वीनिद्वोरिसबकाहाकलंधोरिद्वै सुषकेनिद्वोरेअनमान्योसोतालीकरीकेसोस  
 श्कासौतोद्विजोअमनमोरिद्वै नाहकेनिद्वोरेकिनमानदिनिद्वोरतिद्वीनेहकेनिद्वोरे।  
 फिरिमादिअनिद्वोरिद्वी॥४०॥ अनरसिकप्रियायांयथा॥ हरितरहारद्वेरातिद्वियोद्वै

श्री  
न

हरतहारी हौं हरिननेनी हरिन कहैं लहों वनमाली जजपरिवरसतवनमाली २५ रिदेपिके स  
 वकें सैं सही आघनघनशंभुघनईसे होतघनघननिके धों सघनशंभुविनुकों रहं रुदय  
 कमलनेन देपिके कमलनेन हो कंगीकमलनेन और हों काहा कहैं ॥४१॥ सुलिया सवसो सुदु  
 रो समिते तवके त्रमरें निवितातों को अपने परके पहियां निते जां नतिनां हिने सीतलतातों ना  
 के हिमें तपतां तु लली को तई सुनिजा कि कही परें बातें एकही वार नजां नीयें के सवका हेंते  
 सुपगई सुपसा तों ॥४२॥ मेघके हो सैंपें आसु उसा सनि साधनि सासु विसासे निवादी हंसा  
 गयो उडिहं सनि ज्यो चपला समनो दुगई गतिगादी चातकी ज्यो पिऊ पिऊ रते वटितापतरगा  
 ति ज्यो तनगादी के सवका की दशा सुनिहो अब आगि विना अंगनि वादी ॥४३॥ अध स्वयं वरवा  
 लतां ॥ सवी स्वयं वरबाये मंडलमं वयनाऊ रूपपराक्रमवं सुउत वनि एरा जाराऊ ॥४४॥ मंड  
 लमं वनिकी नृपमंडलमं हित देपिये देवसतासी दुंते निकी उति देहकी दीपति त्रपनयोतिस  
 मेत असासी फलनिकी छवि अं वरकी छवि अं वनकी छवि तजनतासी सो द्यति दे अति स्त्री यस्  
 यं वर आनन वंदु प्रवे सप्रतासी ॥४५॥ अध सुरतवर्णा नौ सुरत साउकी तां ऊ रनि मनि तरिनि  
 तमं जीर हावता वनही अंतरित अलज सुअनु सरीरं ॥४६॥ के सो दामप्रधमही उपजति  
 तयती रुरामरु विखेद देहकंपदिग हति है प्रान प्रिये वाडि कति वरणपदातिकम विविधि  
 सबदुई जिवां निलहति है कलित रूपान कर सकनि सुमानतनत्रांति सजिकर जप्रद्वरति  
 सद्धति है त्रपन सुदे सहार ह्यन सकल होति सपीन सुरतरीति समरु कद्धति है इती श्री  
 मन विविध रूपित त्रपितायां कवि प्रियायां सामान्य लंकार वर्णन राजश्री त्रुघन संनंताम  
 अष्टमः प्रतावः ॥८॥ अध विशिष्टालंकार वर्णन ॥ जाति सुता वदिता वन  
 उखेबा आबे प्रकमु आसि प्रिय सु सुलेपि ॥१॥ अति न्तः ॥

नियमंत स्रष्टमलेसनिदरसननि वरनक्तंकविबुधिवंत॥३॥ अन्यअर्षकेतवतद्वै न्यासरा  
सुक्तसमांत औरअसुक्तेसुक्तकदि युक्तासुक्तप्रमाता॥३॥ अन्यअर्षकेन्यासविति रेकअपनते  
उक्ति व्याजस्रुतिनिंद्रअमित पर्यायोक्तिसुक्ति॥४॥ सहितसमाहितसमुष्ठीये वरनिसुसिद्धि  
सुमित्त केसवदासप्रकासवस कदिप्रसिद्धविपरीति॥५॥ रूपकदीपप्रहेलिका परिवृत्तिउपमा  
चित्त ताप्राजमकविभूषननि स्रष्टतकीजिनिता॥६॥ अधजातिलयतां जाकौजेसौरूपगुन का  
दिजेतेहीसाज तासौजातिसुताउसब कदिवरणतकविराज॥७॥ पीरीभ्यातकीपिठोरीके  
सौदासपीराभ्यागअरुपीराण्यन्येया वडेरमोतिनकीमालाबडेनेंतान्दीरसृकटीकटीवघा  
नदिया बोलनिहसनिमृडवलनिवितेसुवास्तिदेयतनवनेपेनकहतवनदिया सरयकेतीर  
तारफेलेरामरकवीरहाषडैहैतीररातेरातायौधनदिया॥८॥ अधसुताउवर्षेनांमोरेगातपात  
रातलोवनसमातपुष्पओरओरजातिनकीवातअंबरोहिअं हसतिकदतिवातकुलसेफरत  
मांतओवअवदातरातीरिषामनुमोदिये श्यामलकशरधरिउठोनीउठेउंदिधूरियेसीलंगीउप  
मानतेदिये कामहीकोडलहीसोकाकेकुलउलहीसुलहिलही ललितलतासालालसोदी  
ये॥९॥ वित्ताउवर्षेनं कारजकोबिनकारनही उदैहोउडिदिगोर तासौकहतवितावताके  
सवकविसिरमोरा॥१०॥ शरणकशरणपांनषाएकेसोमुषवासु अधरअरुनरु विसधरसुधारे  
द्वै चित्रितकंपोललोलजेवनतिकरुनेकअमलफलकनिमोहिमारद्वै सृकटीकटिलडेस  
तैसानकायेदो होतिअजीअैसीआपेकेसोराइहेरिद्वारेद्वै कादेकोसिंगारेकेविगारतिद्वै  
मेराआलीतेरेअंगसदजसिंगारेद्वै॥११॥ कारजकोनक्तंआनतें कारजदोहिजसिद्ध जानो॥  
यहैवितावनी कारनछोडिप्रसिद्धा॥१२॥ नेकक्तंकाकृतवाइंनबानीबनाईंनवकतइंहे अच  
आविष्टुंकायेविनांविष्णुकीसीरगेविनरीममईंहे केसवकोनकीदीनीकहोइहिवंदमुषीगा



परदिव्यहरनप्रकृतिकोनेपाराहै वारकविलोकिवरवीरसेबलनिकहेकरतिवरदिवसत्रै।  
सीवीरिवाराहै एरामेरीसर्षीतेरीकैसेकैप्रतातिकोजेहरिअनुरागीदृगकरुनानसारीहै।  
अधविशेषमलक्षण॥ धंसाधनकारनकिकैलेवद होयसाधककैसिद्धि केसवदासवधानीये।  
सुविशेषपरिसिद्ध॥३॥ सांपकीकंकनुमालकपालजटामिकेचुटेरहेजटीयातै घालपुरा  
नीपुरांनपुरांनउवेलिसुऔरकाऔरकहैविषमातै पारवतीपतिसंपतिदेष्टिकहियहकेसा  
वसंलमतातै आधनमागततीषतिपारनि देतदईसुषमांगीकाहातै॥३४॥ मैमोयुनवोपितैवो  
पितविरूपनेनलोकनिबिलोयकरिकोपकेनिकेतहै सुषविष्णुनरे विषधरुधरेसुंडमूल  
सुषितवित्तुतिस्तुतप्रेतनिसमेतहै पावकपिताकेसुतपावकहीकोतिलकगवेगीतकासु  
हाकेकर्मनिकेहेतहै जोगनिकीसुहसबजगकीसकलसिद्धिकेसोदासनिकोंदासनिज्यो  
देतहै॥३५॥ वाजिनहागजराजबहीरघपतिनही बलगाउवहीनो केसवदासकवेरनितिच  
नुस्तुलिफांदाघदधारनलोनों जेयुनजांनतिमंउनजासुनडंउनपावनद्योनप्रबानों रचकरो  
कनिकोसुगवारिनएकबिलोकनिहीवसकोंतों॥३६॥ रसिकप्रियायांयघा॥ ब्रजकीकमा  
रिकावेलीनेसुकसारिकावैपटावेकोककारिकानिकेसवसेवनिवाहि गोरास्तोरीभूषोरीश्वे  
सफिरेदेवतासीदोरीआईचोरीचोरीवाहि विनयुनतेरीस्तुकटीकमान तोति संधतिकटाधि  
वानियहअवरिसुआहि एतेमानटीवई तैरेकोअटीवमनुयाविदैदेमारतीपेवुकतीननेक  
ताहि॥३७॥ वविनआवेलिष्पाकष्ट सुहैशोहनघाम अर्धसुनारीवैदई करिजांतउपरिसु  
३७॥ अर्धउपेडालंकारवर्षतां॥ केसवऔरहीवसुमें ओरेकीजहतक उतप्रेषतासोंकरु  
जिनकेबुधिसपर्क॥३८॥ हरिकौधनुपतास्योबकातेरीरावनकौबंसुसवतोस्यो जेसेरध  
वंसवातहै सउनिकेसेलस्तुउफल सहेरामुसुनिकेसोराईकोसोहिएएहरातहै काम

तीर धरुं पते तीरे तरुनां निद्रा के लागी लागि उवटि परत असे गात दे मेरे ज्ञान ज्ञान ति दे ज  
 नुकी उजां न कछु देपत ही तेरे नैन में नु से कै जात है ॥ ३० ॥ अंकन शशं कु त पयो धि कृ को प  
 कन सु अं ननु त रं जन उ रं ज नी नि ज नारी को नाहि ने जू फल क फल क तित म पो न का न छति  
 बां ह बजु ना ही सुष कारी को के सै क पा नि धां न दे पि ये विरा ज मां न मां नी ये प्र मां न री म वे नु य  
 न वारी को लाग ति हे कं व जा इ ना ग द्य पा ल नि के सो ई क त र्क कि सो रा इ की र ति ति हारी का २१  
 इ ति श्री मन वि वि ध त्तु पण त्तु पि ता यां क वि प्रिय षां वि छि षा लं कार वर्ण नं नाम न व म प्र ता य ॥ १ ॥  
 अथ अष्टो पालं कार वर्ण नं ॥ का र ज के आ रं त ही जि ह्वी ज त प्रति पे ध अ छि पा ता सां क ह त व ज्ज म  
 वि धि व र न सु मे धा ॥ १ ॥ ता न कं का ल व यां नी ये त यो च्छ सा वा हो उ क वि क ल कौ ति क क ह त स व  
 प्रति पे ध उ दो उ ॥ २ ॥ व र ज्यो हों ह रि त्रि पुर ह वार क क रि तु तं ग सु न ज म द न मो ह न म द नु क  
 हा ग यो अ न रं ग ॥ ३ ॥ ता तै नारि न का ड र्क को न ज्ज त्व म च्छ तं ग को जां ने कै ह न इ क ह प्रा न न  
 ध के अं ग ॥ ४ ॥ को वि द क फ र न का र स र ज्जा त न त ड तो अ उ प्रति प उ नु त न ने ह को परि ह न्ना  
 इ स नो ज्ज ॥ ५ ॥ अथ अष्टो पना म क व तं ॥ प्रे म अधी र ज धी र ज हि सं स य म र न प्र का स आ धि प ध  
 र म उ पा य क हि शि ष्या के स व दा सा ॥ अथ प्रे मा के प ल च्छ तं ॥ प्रे म व यां न त ही ज हं उ प ज उ का रा  
 उ सा क क ह त प्रे मु आ छे उ य ह ता सौं के स व सा धी ॥ १ ॥ आ ज्जा व ज्ज व स्ते में प्रां न ध मे रे प्रा न अ  
 गै ल गा इ जे च्छ आ गे ड प मा इ वो त्यौं त्यौं अ ति ह सि २ प स् उ पर की वो करे आ धि न के ऊ पर पि ला इ  
 वो एकें प ल इ त उ त सा ध ते न ज्ञां न दा ने जा ने कि रें द्रा य नि क हा लों गु न गा इ वो उ म तो क ह त ति  
 दें अ डि के व ल न अ ब बां उ त एकें से उ में आ गे उ वि धा य वो ॥ १ ॥ अथ अथे जा छे प ल च्छ तं ॥ प्रे मा  
 तं ग त य सु न त ड ह उ प ज त सा त्वे क ता व क ह त अ धे र ज को सु क वि य ह आ छे उ सु ता उ ॥ २  
 के स व प्रा त ब डे ही बि दा क हि आ ए प्रि या प ह ने ह न दे री आ उं म हा व न के जो क दे ह सि वो ल



वे ऐसे वस्त्राश्क देरी सुको प्रतिउत्तर देइ सपी सुनिलोल बिलो वित्त यौ उम देरी सो देह क दे हरि हारि  
 रिर दे दिन बीस क लो अ सु वान र देरी ॥ ११ ॥ अघ धैर जा छे पल छनो ॥ कारि ज करि कहि ही बवन  
 काज निवारन अघ धैर ज को आ छे सुयह वरन त बुद्धि समर्प ॥ ११ ॥ चलत २ दिन बज्र त वितोता  
 नये संकचित कित विउवल उ व लाई ही जात हे तो क दे क हा नाहिने मिल ति आ निजा नियह  
 छांडो मो ज बटत बटाई ही वले ही बवन उ जो तो व लिये व उर पिय सो वत ही जइ यो छे डि जा गे  
 हो आई ही ॥ १२ ॥ अघ संसय छे पल छनो ॥ उपजा ए संदेह क छे उपज उ काज विरोधु यह संसा  
 य आ छे सु कवि वरन त जिन ही प्रबोधु ॥ १३ ॥ अनि बल तिक विल सु रनिक लित गाइ उ लित ल  
 लित गीत अवन र वाइ हे चित्र ति हो चित्र निमं पर म वि चित्र उ म वि चित्रा ज्यो देषि २ नैन निन वाइ  
 हो काम के विरोधी मत सोधि २ साध सधि बोधि २ ओ धित के वासर ग वाई हो के सो राय की सो मो  
 हिय हे कवि न वा को र समै र सिक लाल यांन क्योष वाई हो ॥ १४ ॥ अघ सरणा छे पल छनो ॥ मरना  
 निवारन कहत ज ही का ज निवारन हो उ जांन ज मरना छे सु कवि जो जिय बुद्धि उ दो उ ॥ १५ ॥ न  
 कै कै कि वार देय दार २ दर वार के सो दा स आ स पा स सर जनु शवेगे छिन में उ वाइ ले हे ऊ  
 परि अ टा नि आ जु आं गुनु पटाइ ले हो जै सो मो हि ता वे गो न्यारे नी र दांते मु दोगी फ रोषा जो धि  
 आवन न मा वे पो नु पा नियो म मा वे गो मा धे ज्जु ति हारे पी छे मो ह को मरन मु हु आ वन कहत सो ऊं तो  
 को न पे फे आवे गो ॥ १६ ॥ अघ आशिष्य छे पक वसने ॥ आशिष्य पिय के पथ के दी जे छे उ राइ आशिष्य  
 को आ छे सुयह कहत सकल क विराइ ॥ १७ ॥ मंत्रि मित्र उ जन के सब कल उ जन सो दर सु जन जा  
 न रत सुष साज सौ ए तो सब हो ते जो पे हे ऊ स ल गात अब ही चलो कि प्रात सु गुन समाज सौ को नो नु  
 प्रधा न वा सु छ मियो सु अ परा धर हियो न पल आ क ब धिये न लो ज सौ हौ न क हौ नि ग म क हत सब अब  
 त बरा ज नि पर म दि उ अप ते ही का ज सौ ॥ १८ ॥ अघ धर्मा छे उल छनो ॥ राषत अप ते धर्म को जह का रनु  
 रहि जाइ धर्म छे सुयहे सदा वर सात सब सुष याइ ॥ १९ ॥ जो हों क हों रहिये तो प्र लु ता प्र गत हो ति

हेतदांनिताहिसद्वनो तावद्विसुकरंताउदासतावधांतताय सावलेवलंऊकमनोकल  
 नजवद्वनो केसोराइकीसां उमसुतऊठबीलेलालवनेदीवनेउराजजोपनांदिरदन तेसांमि  
 पाविसिपउमदिसुजांतपियउमदीवलतमादिजेसीकडुकदंत॥२१॥ अथउपाउउपुनउते॥ स  
 नंतएकउपाउकरि राकियेपियप्रस्थातुतासांकदतउपाउका यदयांउपमुजाता॥२॥ मांका  
 वेहडकीउवती हेरिगारीसमांतसुदागिलाजांते अमीकागापीगुपानउमवसिंवा उरआन मृ  
 सिमेरीअडावकोइत वलोकिरदोअुकबुमतमोते प्रमतिअमनिआदिकंकमवउमनकाउ  
 कडुपदिवांते॥२२॥ अथसिप्याउपुनउते॥ सुपदिसुपजिदिगघांयं सिपदिसुपसिपदाति सि  
 प्याउपुकदोवरति अपदुवारद्वानि॥ वउअप्य॥ फलीलतिकाललित तरुणतनकलतरय  
 र फलीसलितसुतगसरसकलेसवसरवर अकलीकामनिकामरुमकारिकंतनिप्रजदि सुक  
 सारांकलेलि फलिकोकिलकलऊजदि कदिकंसवअमफुलमदि सुलनिफलनिताईया  
 पियआउवलनकीकावले सुवउनेवेतवेताईये॥२३॥ वेसापअप्य॥ कंसवदासअकासअवनि  
 वासतिसुवासकरि वदउपवनुगतमंड गातमकरंदुदुधरि दिशिदिदिशिनअविनागनागत  
 रितपरागवर हेतगंधदोअंधवधिरयोराखिंदसनर सुनिसुपदसुपदासिपसापपतिरतिमु  
 इसुपसापमं वरविरदनिवधउविशेषकरिसुकोमविशेषवसापते॥२४॥ जठअप्य॥ एकअ  
 मसुहोतिलततजिपवेत्यतिलम अन्विअुअुआकासअवनिजन्नितातिआगिसमा मथयकि  
 मदयकितं सुपितसरसिंधरजोवन काकादर करिकोअुदरतरिकेदरिसावत पियप्रव  
 जीवइदिविधिअवलसकलबिकालजलपलरदत नजिकंसवदासउदासमतिमुजवमांस  
 वकदता॥२५॥ आसादअप्य॥ पवनवकपरवडवेतवजंत्पार वपलगति नवतनामनि  
 अमितमनोतिनकीमति सुन्यासीइदिसाहोतइकआसनमीसी उरमनकीकाकिनयद  
 वेपंअियांनिवासी इदिसमंसेजसावतलिआश्रीयइसाथश्रीयनामन् क

२३

साठवलि सुमेन सुन्योः कृतिगोपज्ञ ॥ २१ ॥ अथ अवन चय्ये ॥ केसवसरिता सकलमिलितिसागरमनसो हे कलि  
 तलतालपटाह तरुनतुवनतनसो हे वितवपलामिलिमेषवपलचमकतिभिर्ज्ञैरिति मनुसावनक  
 हेनेति च्छमिऊजतमसिमारति इदिसतिरवनरवनीयसवमन औरु ल गिर मावन पिघगवनुकरमु  
 कोकहेगवन सुनियेन हिसावना ॥ २१ ॥ अथलादो चय्ये ॥ धोरतघन विज्ञैरघोपनिघोपनिर्महदि धासध  
 रधरधरनिमुसलधारजलबंफदि जालीगतफंकारपवनकुकिरफकफोरति वाघमिघउंजरतउंज  
 ऊंनतरुतोरत निशदिन विशेषतिशेषुमिरितजातसुवोलावोषीये देसपियुपविदेशविषुसुतादैनाना  
 नशेषीये ॥ अथकारु चय्ये ॥ प्रथमपिंडहितप्रगतपितरपावनयस्त्रावे नवद्वयानरपुत्रिस्त्रैप्रवर्षा  
 तिपावे च्चनिदेलेत्रपतिलेतनुवसंगयडित केसवदासअकासअमलजलजलडे इतिर्महित रवनी  
 यरवनि रजनी सुरविरमानमनङ्गरसरति कलिकैलिकलपतरुकारमदिसुकंतनकरिङ्गविदेश  
 मति ॥ २१ ॥ अथकार्त्तिक चय्ये ॥ वनउपवनजालघल अकासदीसंतदायगन सुषहीसुपसुपरातिसुवाये  
 लतिदंपतिजनदेववरिचविचित्रविचित्रवितअंगनधर जगतजगतङ्गदासुजोतिजगमगतिनारिनर दि  
 नदांनक्तानुनगांतहरिजनघसफलकरिलीजाये कदि केसवदासउदासमतिसुकंतनकातिकका  
 जीये ॥ २१ ॥ अगदनु चय्ये ॥ मासनिमेंदरिअसुकदतयासोसवकाऊ स्वारघपरमारघहीदेतनारघमे  
 ददोऊ केसवसलितासरनिऊतफुलेसुगंधवर ऊञ्जितकलकलहंसकलितकलहंसनिकेसुर दि  
 नपरमनरमसाउनगरमकरिमकरुमवपायरिउ सुनिप्रांतनाधपरदेसकहि सुमारगसिरमारगनि  
 द्विविउ ॥ २१ ॥ षोष चय्ये ॥ सीतलजलधालवमनअसनसीतलअनुरोचक केसवअवनिअकासुवाउ  
 सातलअसुमोविक तेलत्रलतामोरतपनतापननरनारी तजरंकसबछोडिद्वेतहनहीअधिकारी  
 लफद्योसदाहरजनि सविरद्वेउउसदहडपरुसमें यदमनक्रमववनविचारिपियपेयनिषुबीये  
 पोसमें ॥ २१ ॥ माघ चय्ये ॥ वनउपवनकेकाकस्योत कोकिलकलवोलति केसवतलेतवंर नरेवज्ञाई  
 नफोलति षगमदमलयकसरधुरिफसरतदसौदिशि तालमृदंगउपासुनतसंगातगीतनिस फेकउ



एषावेद ताततापपरतापपद चरकेत्तानिसदेधि॥१॥ वेद्यद्वनविधिवारिनिधि द्विवाहनचुजा  
आर सेनाअंगउपायसुग आशमवरणविचारि॥१॥ सुरतायकवारनवदन केसवदिशाव्याति  
चउरसुहरवनावमु वरणपदारथजाति॥१॥ पसुपुत्रइंद्रियकवल रुद्रवदनगतिवांत उरु  
एषवपुरानके पंवअंगअरुत्रांत॥१॥ पंवरगअरुयवतरु पंवसंधिपरमान पंवत्राक्षयवा  
गजनि कन्यापंवसमान॥१॥ पंवतृत्पातकप्रगत पंवजगपजीयजाति पंवगव्यमातापिता पं  
चासृतनिवषांति॥१॥ कलिसकोनपटुतर्कपटुदरीतरिउअंग वक्रवर्तिशिवपुत्रमुष मुनि  
पटुरागप्रसंगा॥१॥ पटुमातापटुवदनकीषट्प्रणवर्नकृमित्र आतताइनरपटुप्रतकृ पटुपद  
मधुपक वित्रा॥१॥ सातरसातललोकसुनि धीपसुरहृद्वार सागरसुरगिरतालतरु अंगइतिक  
रतार॥१॥ सातउंदेसातौषरी सातौवासुपसाउ विरजावसुनिसाततर सप्तमाविकातात॥१॥ जो  
गअंगदिगयालवसु सिद्धकलीकलचाले अमकलीअदिव्याकरनु दिग्गङ्गाअष्टविचारु॥१॥ अंगा  
धारसूषंदरम बाधिनिकृषिनिधिजांति सुधाकुरुयदनाडिका नवधाअंगतिवषांति॥१॥ रावना  
सिरश्रांमके दशअवतारवयांति विश्वेदेवादीमदश दिशादिदिशादिशाजांति॥१॥ एकथलधिता  
ये वसतिप्रतिजिनडीयधिकरणेदेवादेवाकोधरनुद्वे त्रिगुनकलितवज्रवलितललितगुनगुननिकेयु  
गवतरुफलितकरुनद्वे चारकंपदारथकोलोलुचितनितदेवाकोपदारथसमूहकोपरनुद्वे केसी  
दासइंद्रजाउभृतलेअसृतपंवरुतिकोप्रवृत्तिसवरुतिकोसरनुद्वे॥१॥ दशअनुसुरसेनुरससिक  
नावेनितपटुदरसनदीकोसिरनाइयउद्वे॥ केसोदासपुरीउरुंजातिकोपालकपे सातहोषरीसोडा  
रोप्रेमपाइयउद्वे नायकाअनेमतकोनायकनिगरनवअष्टनायकानहोसोमनताइयउद्वे नवधाइद  
रकोतजनइंद्रजातभूकेदशअवतारहोकोसुनगाइयउद्वे॥१॥ अश्वआशिर्वादवलन॥ मातपितासु  
रुदेवसुनि कदतनुकवसुपयाइ ताहोसोसवकदउद्वे आशिमकविकविराइ॥१॥ दोइधोंकोऊ  
वरावरमधुस उसजातिअनुजमहोको किंनरुकेनेरनारिविवारिकेवासुकरेथलेकोऊलदीको अ  
गाअनगुकिमूटअमूटउदासअमित्रकिसीउकिसीउराहोको सोवथकेकवज्रजिनकेसवजाकेउ



यमांताये असो लोकनाथके त्रिलोकनाथ समताथको नाथके अनाथनाथ जानीये ॥३४॥ अथ सु प  
 तेद वर्णनां तिनमें एक अति न्यपद और तिनपद जानि स्येप सु सुद्धि उयेके के सबदासवषादि ॥  
 ३५॥ अथ तिनपद ॥ सो ह तसुके सीमं तु घोष उरवसीराजारां सु मो द्विवेको सुरतिसदाई दे का  
 लरवकलित सुरतिरागरग सु तवदन कमलपटपद उ विव्राई दे त्कृती कहित धनु लोचन कमल  
 सर रोदियत सुनततन सुपदाई दे प्रसुदित ययोधर दामनी सी सायनाथ काम असी सेना काम से  
 नाथनि आई दे ॥३६॥ पदही मेपदका रिजे तादि तिनपद जानि तिन सु निपद निके उपमा श्लेष वा  
 यांति ॥३७॥ अथ उपमा श्लेष ॥ रंजोरज के सी दास इटति अरुणाला प्रति रोट अंकनिते अंकयस्स  
 उद्वै सेना सुंदरितके बिलोक सुधन प्रननि किलकि रजाही ताही को धर उद्वै गाते गहम्मा लहो धि  
 लोनांति ज्यौ तो रिफारे नगज वरुज सवारु वंद को अर उद्वै वार सिद्ध सुवपात अगति विसालरिते रो  
 कर वारु लोला सी कर उद्वै ॥३८॥ तिनमें एक अति न्य सु अ विरुद्ध सु उ जानि सु नि विरुद्ध कर्म अ  
 वरु नियम विरोधी आनु ॥३९॥ अथ अति न्य सु ॥ प्रथम प्रयोगी यत्र राज इज राज प्रति सुवर ना  
 सहिते निधि द्वि उ प्रमानु दै सजल सहित अंग विक्रम प्रसेगरंगको सैत प्रका समान धीरु निधी  
 नुद्वै दानको दयाल प्रति नटनिको सात्रु करे कारतिको प्रति पा लु जाने उ जहो नुद्वै जात द्वै विलो  
 नुद्वै उनाके दान दे मिराम वं इरुको दान के धौ के सेव रूपानुद्वै ॥४०॥ अथ विरुद्ध सु ॥ कत्रु कान सु  
 ने कल बोलतिको किरु कामकी कीरति गावति सी कहिके सब दास प्रकास बिलास सेव वन सो  
 धिसि मावति है ॥४१॥ अथ विरुद्ध कर्म ॥ दोऊ जगवंत तेजवत वल वत अति इजुन की विदन वा  
 घानी वात असी है दोऊ जने सुन्य पाप इजुनिके रिषवास इजुनकी देषीयत सुरत सुदेती है सु  
 नाथल देव देव देव काम देव प्रियके सी राइ को सौ उमक है जे सी तै सी है वारुनाको राग दो उ सुर  
 उकर उ अ सु उदो उ जराजको सु हो उ यह के सी है ॥४२॥ अथ नियम श्लेष ॥ वेरीगाइ वाननको क  
 ले सब काल जह क विक्र लहाके सुवरनुका हा उद्वै गुरुसे नगामी एक बालक बिलो कियत मा

मानगतीदीकेमतवोरकैसेसाबुदे अरितगगतप्रतिदेतिदेअगम्यागोनडगेतदीकेसादीसडा  
गतिमीआबुदेसजादकारथश्रुतराजारासवडुमदिरुविरुरानकरेताकोअभाराजुदे॥४४॥

रायतलावाधुसाबुकतावनकागातद्वानी धारकप्रकीधरावलायानेसुधिसरासदउदिवडा  
नी॥४५॥ अथदेवतालंकारवर्णना॥ कोनद्वारैकरतेसउअरुअसउसमानकहिजेप्रगटमुनि  
वरसेत्रेकेसवदाससुजांनि॥४६॥ तेईकरेविरुराजराजनमेराजेरजतनदीकेलोकलोकनिअ  
टतद्वैजीयतजनमतिनदीकेधन्यकेसादासअोरतिकेप्रतिस्मृतिदिननिघटतिद्वैतेईप्रनुपर  
मप्रसिद्धसुदमीकेपतितिनदीकोनितप्रनुताईकोरवउद्वैसरुजसमानसाममित्रकुंआमित्रक  
दसुपडयजापनेधुउदेदीप्रगउद्वै॥४७॥ अथअद्वैकारवर्णना॥ कावडुराजमिस्याद्विनाया  
नकुलहपनकाविगाकालोऊसकरनुमस्योमप्रवादिप्रुतोरिकाहानडरीजमगोलाआरफताप  
केगातलिमुंदरिजानतिद्वैऊसरतितनतोलासाबुसवद्वैयपाउतिकेकरनुवनकरु  
ले॥४८॥ अथरसवतालंकारवर्णना॥ रसमयदीयसुजांतीयै रसयतप॥४९॥



को आये उच्यते समुद्रो करत प्रकाशा ॥ ५४ ॥ शृंगारसवर्षेना ॥ आनतिद्वारीति आतक दोतवमेका  
बुआनन आनद्वीकेसो के सेवकानसुजातस्वरूपनजाइकहौ मवुजातवतसो लेवतपोतदीपा  
वतजातसनातराद्वकअघातनलेसो लेवतसोतदी जोतरहातबिहाउउमेवलिजातमुवाता  
कहोनेकवेसो ॥ ५५ ॥ अथरो इरसलबता ॥ जिहि सरमधुमरंदिमहामरुनदंनकीनो मास्यो  
ऊकंटेसंभु संभुद्वतिसंभुलीनो । तिः कटकसुरकटककस्योकेटनवधुषंघो परइपरदि  
सिराकबधतसुषुडविदह्यो ऊनकरनसिंधारुजिहिपलनुप्रसंगतंटास्यो तिहिवांतघांत  
दशकंकेसुकंठदसो ऊवितकसो ॥ ५६ ॥ अथवीररसवर्षेना ॥ करआदित्यअदृष्टजंतु  
नकराअष्टवसु रुदितियोस्समुद्रकरेगोधर्वसर्वपसु चलितअवेरुकेवेरु बलिहिगहिद्वेका  
इअव विद्याधरतिअविधुकरोविनिमिषिसंधिसवलेकरो आदित्यकोदासदित अनिला  
अवल मिलिजादिजाल सुनिसूस्जसूस्जउगतही करोआसंग साहसारबला ॥ ५७ ॥ अथका  
रुतारसा ॥ इरितेंडंइतिदीहसुनीतसुनीगजउंजकीउंजनगाही तोरनतारतहुरबजेवर  
जावतजातनगावतहाडी केसवतातकेगातउतारत आरतिजातहि आरतिवाढी विप्रनम  
गालमउपठैअरुदेधिनबालबकटिगगही ॥ ५८ ॥ अथतवानकरसा ॥ रामकीबामनुआंती  
बुरायकेलंकमेपीयदीबेलिवोईजु क्योरनजातिऊगेतितसो जिनकीधनु रेयननाकीम  
इनु बासबिसेवलवतजते इऊतीहगकेसवरूपरइनु तोरिसरासनसंकरकोपियसी  
यस्वयवरक्योननईनु ॥ ५९ ॥ बालिवलीनक्योपरिघोरहिक्योवविदेउमकौनिजघोरदि  
केसवबीरसमुद्रमघो जिहि कोसोनबांधी वैदेवारधिघोरदि आरकनाथगतेअसमधम देधि  
बिनारघदधियघोरदि तोरोससंसतसकरकोजिहि सोयकहाउवलंकनतोरहि ॥ ६० ॥  
अथविनिष्ठरसा ॥ सिगरेनरनायक असुरविनायक रघुसयतिहियद्वारिगण काकूतउवा  
अरुणवहायो टस्योनस्योतीतनए नरराजिकुमारतिअतिसुकमारनि लेआएदोपनकर

अतन्मद्भारजएदिउमाररिपितपतेजतंजांतिपरं॥६७॥ अद्भुतरसांसंधुविपद्यात्तोविप  
 पावकसीतातोकबुद्धतोप्रदत्तादसांपिताकोभ्रमप्रयोद्वा इपतीकादेहमेधयीदोपलइसा  
 सतमस्योईपिसातोपविवसतनघडाद्वा पेटमंपरिबतकीपारधुक्वाईमीउजवसवदा  
 कोविधिबलवान्तप्रयोद्वा जोपंतअभावतकोनाधहोतोरफताव द्वाषीसाद्वाधकेद्व्य  
 रकरिब्रयोद्वा॥६८॥ केसादासवेदविधिसाधदावताईभाधिसवरीकोकोने सुविस्सिदेतासिपाई  
 दि वंपधाराहरिवपंदेप्यो अमेपुजगतारकाळकोतांसिपतारकपटाईही वारानशावान्तको  
 योहोकववमवासुगविकाकवदिमतिकर्तिकाअज्ञाईही पतितनपावनेकरतोजातंदनंदनमा  
 तनाकवदापतिदेवताकदाईही॥६९॥ अथदाभ्यरसा॥ वेगतिदे तिनमंदविकेकनकीउमसांता  
 तिंप्रमपाईहे जानतहोनतराऊदमेंताकीइतकधारसरंगेगोदं धेजेगीसाधसवे सुपकीवव।  
 तागकाकेसुकजातिजगीदे नेदकीवातसुतेतंकबुवदमासकतेसुसक्यातलगाद्वा॥६९॥ अथ  
 ज्ञांतरसा॥ देगोरीजीवहेतेवह प्रचुद्देसिगत्जगकोदिनदेये आवतस्याविनउद्यमतइयत्सोसु  
 पप्रवतेकतपये रभुवेत्कसुराचुकरंसवकाहेकोकेसवकाहुरेये मारतदासुवार्नदा  
 रसुतोसवकेसिरऊपरिदेये॥६७॥ अथअधोतरन्यासलक्षण॥ अविज्ञानियेअवेइद अवे  
 वसुवपानि अधीतरकोन्यासुयद् आरप्रकारसुजाति॥ तोरंइतोदयवयवितेहरवायजेका  
 मनकोरोकरेरो ताकोताकेसवकोरदियेइप्रहोतमद्वासुकाद्वाइतहेरो कसादतेरादियो  
 हरिमेरेदिछारिनदी तनवृत्तिंउमेरो बुडऊऊधऊमास्याजोवाधिकेजानतदमाईजायानतेरो  
 ॥६६॥ सुक्तअसुक्तविरोवारिये आरअयुकेसुक केमवदासवपानिजेचोषासुकासुका॥६७॥  
 अथयुक्तलक्षण॥ जेसोतदानमृष्टीये तेसोतदानुआंति रूपसीलपुनद्युक्तवल असेयुक्तव  
 पाति॥६७॥ गवंप्रुकोदोपेइमितकलेककरिद्युपिततिसावरीति अकतिनरउ  
 कलेनेनेतोप्रवंकफरकेसादासप्रतिमासगामनिसरउदे केमलेनयतक  
 अभाधनिकोप्रतिबंधविष्काविशोमवेकदियेदहरउद केमलेनयतकीसा

वैश्वदेव्यां च तन्वा यद्वा जन्तुः ॥ ६७ ॥ अथ यथा श्रोत्रं तन्वा स लक्षणं ॥ जसो जहान यत्रोच्यते  
सोतदा सुहाइ केमवतादि अयुक्तके वरणातद सबकोऽ ॥ ७० ॥ के सो दा स हो त मार मारी सु  
मार सिरी आर सी ल द पि द हि अ सी य ह रा उ री अ म ल व ता स अ स ल लित क पो ल त र अ ध र त मार  
धनो ह म नि ल यो उ री ए हि श वि ब कि जा ति मि ल व र वा रं अ नि वा री द उ वा व री ॥ ७१ ॥ अ सु तं सु त क ज  
त ज द क्यो ल कं स व दाम य द अ यु क्ता यु क्त क वि व र न त बु धि वि ल म ॥ ७२ ॥ पा त का द्वा ति पां त ति  
सां दारि सु ग दं क स ल नि तं ड री य ज्ञ बा ध वा ता ल ति को व धु रोर का ना थ के सा ध वि त म री य ज्ञ य  
त्र फ ल तं क र त र त क स व क स कं ता र ध ज म री य ज्ञ ना की म दा ल गे ग रि सु म ति की डां ड ना ल म् ॥  
ग या त रि य ज्ञ ॥ ७३ ॥ आ गं ल ली वा य द्दे सु चि तं इ त वां कि उ तं द ग्त्र वि ल इ द्द मां नि वे को व द इ  
प्र ति उ त र मां ती य वा त ज्म न म इ द्दे रा य का र य व द्दे र स का स य का हे को कं स व गं हि द्द इ द्दे मां ती  
ये ह्य उ म नां दि सु ति इ न ता रि त इ कि को री ति त इ द्दे ॥ ७४ ॥ अ थ यु क्ता यु क्त ल च्छ नं ॥ इ शे वा त अ नि ह्म  
द के सै ल क जा इ तो सो वु क्ता यु क्त क दि व र ण त क वि सु य पा इ ॥ ७५ ॥ र सि क छि या यां ॥ सु त र से क  
ल सु वा स क्ता वा स सी ता क सी स ता नो त स त मं के स व वा ग म द्वा व न सो सु र सी व छि जो क्त स वै अ  
ग दा ग ने ज्म अ पा उ र ना ह्म र सां ति सि ना ज्म ध री क क ज्म अ चुर म् ॥ ग री से गी त वा री वि स सी सि ग र इ सि  
ग र अं ग र स ल गे ॥ ७६ ॥ पा य की नि हि स दा रि न इ हि सु को र ति आ सृ ती आ पु क दे की इ म को दा  
न ज्म सु त क ना द्द न सै दा व सी की सं त त सं ति त फी की वे टी के रो ज न सु फ न रं ड के के स व प्री ति सा  
दा प र ती की फ्र मं ला ज द या अ रि को अ रु वां ज न डा ति सां डी ती न ती की ॥ ७७ ॥ अ ध य ति रे का ॥  
लं का र ल च्छ नं ॥ ता म दि आं ति ये तं द क बु हो इ सु व सु स मां त सो य ति ऐ क सु नां ति इ द्वा कि स द  
ज म रि मां त ॥ ७८ ॥ सुं द र सु प द् अ ति अ म ल स क्त न वि धि स द ल स फ ल व ह स र स सं गी त सै वि वि  
ध सु वा स यु त के सो दा स आ म पा से र ज्म ज्म र ज त न प र म प्र ती त सां क ल इ र द त दो इ वे द्दी की  
प्र ति दि न दे ति कां म नां ति स म मां त ज्म अ मां त सां लो व न व व न ग ति वि ने ई इ त नो ई ने इ इ इ त र व

रंशुलोलेइइतीतंमो॥गिणांगइवरावरधामसेवधतत्रातिधेसवरइवलिजार्ध,कमवकसादिदा  
 नमितातिवराधरदियदरीउनेपाइवेसवरावरदीपेतिदेइवरावनइविधिबधिवटाई,एअलिद्य  
 ज्गीआमुदिकसेवडीउमआंपतिहीकोकाई॥७॥अथअपकुतिलधना॥मठकीवमुउराश  
 जेइ,आरेकदिजेवातकहतअपकुतिसवकवियासौचइअवदा॥७॥सुंदरललिनगातबल  
 तिसुवासुवासुअतिसरसमुवतिमतिमेरमतमांतीदे,अमलकाइमितसुत्पुननिद्रुधितसुवरत  
 हरतमनसुरमुषदांतीदे,अभअंगमुटतावकोप्रतावजातेकासुभावदीकतावसुविमविपुद  
 वालीदे,केसोदासदबीकोऊदेधियुमतांदिराजप्रगतप्रवीनरायतुकीयइव्यंतीदे॥७॥कारो  
 सदकारकेसनांनकछेदानीबेससांनतेसउंतीइतिदपियतंतकी,आअबलेनवितानिअ  
 तिआअआअीमुयकविताविलासमांइमुलिभनकी,केसोदासकेआंतागपाइजेजावागनदिसं  
 सतिउसांसांसाधसुजेरतरतनकी,बेटीकाहुंगोपीकीबिलोकीपारतंदकउताहीलोलेउचन।

बंदन...  
 वं...  
 वं...  
 वं...  
 वं...

तिसुबधानीये कइआरकीवात अंशोकातियइजांतीया बरनवतकविनअथाता॥पादले  
 यानदिजइजाडीवडोअरुयांमधुनोजलकोहरइ,कहिकेसपवाउवइव  
 रभीरजकोधरेदे फलदेफलनांदिकितोलेउहीकेदितोपदिअयसा  
 इमुपसांतनदि रदिकारकरीलकोदाकरिदे॥दा॥अंगअलीधरीये  
 एनअरनदीजे जानतिहीपियतांतासमितकीलाउतासवसुधन।

धेलनतेउलमीजिनसौंजिनकेजियजातेनेहकेनेहकेसामलेहआउनीबांहेकीपरतीतिनकीजा॥१॥अ  
 धविधिकरणकिलबने॥औरहीमेंकात्रेप्रगतऔरहीकोयुतदोषुउक्तियहैविधिकरणकीसुतउ  
 होउसेतोषा॥१॥जानुकतितानिहलकवपीवसुजामुलउरजकसंजरेमायजंतांतिकीदुहितकयो  
 उरदललितअधररुविरसनासतरसुरसमेंरिसातिहैलोति२लोतिलपटतिवावि२ह्वाह्वाजंजंने  
 तिनेतिबांतीहोति२जातिहैअंगअंगआलिमनपिडियतयेमतिकेसोतिनकेअंगअंगपीरतिपरति  
 है॥१॥राजतारसाजतारलाजतारजयताररूमितारतवतारताकेहीअटतहैप्रेमतारपनतार  
 केसवकिरुतितारपतितारसुतअतिसुधनिजततिहैदांततारमानतारसकलसयानतारभागा  
 तारघटनघटतहैएतेफलनिभौतारराजतिहैरामंसिरजिहिहिसमअनुनिकेसीरथकटउदे॥१०  
 मतनकोदसरथकेसवदेवतिकेधरिवाजीवधाईफलिकेफुजनिजौवरमातरुफुलिफलेसा  
 बहासुप्रदाईबारवदिसालितासवसीतलधरसमीरसुगंधसुदाईसर्वसुलोमउत्पतिदि  
 पिकेंदारिददेहदरारनिछाई॥११॥होइहसीऔरनिसुनयदअवतिजकीबांतकांनवडावत  
 वंदनहिमेरनेनसिराता॥१२॥दियोसुनारिनदाननेउरकौसानोहस्योउमपायोपतिरासुप्रा  
 हितकेसवमिथपरि॥१३॥आधविशेषोक्तिलबनेविद्यामानकारनसकलकारहोदिनसिध  
 सोईउक्तिविशेषमयकेसदासत्रसिद्ध॥१४॥कर्तुसेहअनिरुष्टजतेतटपासनपुष्टतुआसुवता  
 रं सोदरसेनिहसासनसेसवसाधसमर्धनुजाउसकारंहावीहजारनिकेवलकेसवअेविध  
 केमटकोफरुफारंशोपतीकोहस्त्रजोधनपेंतिउअंगुतउउधस्योनअ्यास्यौ॥१५॥कर्तुअ्याह  
 शोणतहीजिनकेमनकाकपेजातनटास्योतीममदाहिधरंधनुअनुनदुहजुरंजिनसौंजसुहास्यो  
 केसवदासपितामहस्तीमममांवकरीबलसेदिसिदास्यौदेषुतहीतिनकेहस्त्रजोधनशोपती  
 सामुहैदाधपसास्यो॥१६॥बोईदेवाननिधानविधानअनेमवसुजिनजातजईनुबोईदेवा  
 जवदैधनुधीरनुदीहदराजिनसुहजईनुबोईदैअनुनआसुनहीजगमेंजसकीजिनके  
 लिबईनुदेषतिहीतिनकेतवकामनिनीकेहितारिछिडाहलईनु॥१७॥रसिकप्रियायो

सिधेद्वारा समी डरवाइद्वारी कादंविनी दामनी दिमाइद्वारी द्विअधरानकी ॥१८॥ अततो।  
 उकस बांनवनि काइधववितअपार एपिमरतपतिरामुको मोनोहरत सुनार ॥१९॥ अथ  
 सदेकिलचनं ॥ दानिद्विसुनअसुनकबु फदिनेउत्प्रकास सोईसहाकिसाधिदी वरण  
 केसवदा सि सुता समेतनईमंदगति लोचननिमोवलितललितगतिपाईदे सोईदुनिका  
 होफाहोफाक्षेगइकटिलअतिमेरारांनी तेरीवांनी सरतमुहाईदे केसोदासमुपहासा  
 होसपेईदी कटितवछानचीन सुचिमछवीली अविथाईदे वारुमुदिवारनकेसाधदीव  
 लादेवीरकुवतिकेसाधदी सकुचिउरआईदे ॥२१॥ अथ व्याजसुतिनिंदा लंकारवर्णन ॥  
 सुतिनिंदा मद्दोइ सुतिनिंदा मद्दजानि व्याजसुतिनिंदा अदे केसवदा सवमांनि ॥२२॥  
 जहांसाधनवाधकहोइ तासोसवविपरीतिकहि वरणतभुधिजनलोइ ॥२३॥ सुतिनिं  
 दारसिकप्रियायावधा ॥ सीतलऊतलतिहारेनवसतिवदुमनऊततिलुतातीतनत  
 उगेऊ आपनोज्यौहीरासोमूराएहाथअजनाघदेकोतेवकाधसाधमेंनुअसागतलेऊ  
 निपरकेसोराइ उमेंनप्रवाहवदेजकलागीतागी वमसुपमसुमेगेऊ माडोमुपछानाछिनुछान  
 निबबाले लाल अमेंदभवारनि सो उमहीनिवाऊनेऊ ॥२४॥ अथ व्याजसुतिनिंदा वर्णनो  
 केसरीकप्रकंजकेउकी गुलाबगाल सुंधतनवैपकवैमलीवउरीरी सं जानकीतपासका  
 त इफिएतीपासआसगदीकेसोदसकीनी जयअमतयतेरीदे तेनेकोनेकतकीधामलु  
 सुवासहितैबसिगईदरिवितक्योक्त्यारीचोराइ सुनिहीअवेतआइइदिततोइ उर  
 तोसीगोरीगोऊलउवद्वारीधोरादे ॥२५॥ जानीयतजकोमयामोदतिमिलेहिमोफिएका  
 हाथउत्पएकमापक्योतिहारीये मरदारप्रियमत्तमतेगसुतानिगामिनी सिवस्केसोमुप  
 देभेदेहकारिवि आजलोअजादिराधेवरदविनोदतावे एतमेंअधासुअतिकेसवनिंदा  
 अ रजनिंकेराजाघांडिकीजे सुतिलकताहितीपम सो कदाकही उरपेन... ॥२६॥  
 अथ अमितलक्षणं ॥ जाहांसाधवेतांगेवे साधककोसवसिदि

२

५

की अंतप्रसिद्ध ॥२६॥ आननसी करसिकहिये कहितो हितो तें अति आउर आई फीकी तयो  
सुषही पराय क्यो तेरे पिया बज्जनांति बकाई प्रीतमको पटक्यो मलद्यो अलिकेवल तेरी प्र  
तीतको लाई केसनीको दीनायक सौरमिनायका बात नही बहराई ॥२७॥ को गने कर्म जगमा  
निसे नृप साध सबेद लरा जनुहीको जानेको घांत कितै सुरतांनसो आयो साहा बदी साधि  
दिलीको ओडबे आनि पस्यो कहिके सबसाहि मभ करसों सकजीको दोरि कें डलहरांम  
सुजातिकस्यो अपने सिरटीको ॥२८॥ अथ पर्यायोक्ति लक्षण ॥ कोन जं एक प्रकारतें अनह  
करे सुहोई सिद्धि आपने इष्टकी पर्यायोक्ति सोई ॥२९॥ घेलतिही सतरंज आतीनि सौं तहां  
नहरि आए किधौं कां कके बुलाएरी लागे मिले घेलन मिले के मन हरि हरि देन लागे दोऊ  
पुआपुमनताएरी उविशई निमिसही मिसजिततित के सोराई की सो दोऊ रद्वे बविबाण  
री विजं दिसितेही अिन राधासुके डालजे से लोवन जलदसेके आएरी ॥३०॥ अथ सुक्ता  
लंकार लक्षण ॥ बुधिविवेक अनेकवल कहियेते सोरूप तासोक विक्रल सुक्त कहि वा  
रत बज्जत स्वरूप ॥३१॥ मदन बदन लुलेउ लाजको सदनु देषि जदपि जगत जीवमो हिवेके  
बमी कोटिको दिवंधमा समान वारि शरौं जाको वनराज आनुही लौं संवमी ऐसे तेरे सबिला  
सुषुषकी सुवासु सषा सुनियउ आर सही सार सनि सौरमी मित्र देव किजल लइ ग्रं दंड दे  
वको सब लजाको ताको कल्यो कौन बातकी कमी ॥३२॥ इति श्रीमन विविध रूपण प्रथिता  
यां कविप्रियायां उक्तालंकार वर्णनं नाम द्वादश प्रतावः ॥३२॥ अथ समाहितालंकार लख  
नां ॥ होइ न क्यो कं हो अह देव जोगते काज ताहि समाहित नामु कहि वरन उद्वैक वि  
राजु ॥३३॥ रसिक प्रियायां ॥ बविसौ बबीली ब्रष जानुकी कमारी आचुरही जती रूपमदमांत  
मदबकि कें ॥३४॥ सात जं दीपतिके अवन्य एति द्वारि रद्वे जीयमें डबजाने बीसबीसे वतन  
गतएसक द्यो अबके सबको धनुताने सो ककि आगिलगी पुनरपराण आइ गरायन त्रयां सुबिदा  
ने जोनुकी के डकनकादिकके सबकलि उतेते रु सुन्य पुराने ॥३५॥ अथ सुसिधा लंकार वर्णो  
नां ॥ साधिसाधि ओरे मरे और तो गविसिद्ध तासोक द्रत सुसिद्ध कवि कितके बुधिसमृद्धि ॥५





रदतसपी रङ्गेराजदंससमीपसुषदा नीये के सोदासश्रासयास सोरतके लोतघने घानतिके दे  
 व सोरत्तमतवषानीये होतिकोतिदिनइनीतिसमोसदसगुनीसूरङ्कसुषदवारुवेदमतमांती  
 ये रतिकोसदनु बुइसकेनमदनुत्रैसोकमलवदनङ्गजांतकीकोजातिये॥१६॥ इहकदि  
 येअनमिलकह सुनिलसकलविधिअर्थ सोविरुधककद्वे केसवहुविसमधी॥१७॥ सोनेकोए  
 कलताउलसीवनकोवरने सुनिबुधिसकेहे केसवदासमतोजमद्वारमताहिकलेफलश्रीफले  
 सेके फलिसगेइरहोतितऊपरि रूपनिरूपतविबुधले से तापरएकसुवासुवतापरपेलत  
 बालकपंडतकेहे॥१८॥ रूपसावडद्वेवरीये कोनद्विबुधिविक रूपकरूपककद्वे उहे केस  
 वदासअनेका॥१९॥ रसिकप्रियाया॥ काछेसितासितकाठनिकेसवपाउरज्योउतरीतविचारो॥  
 २०॥ वाविक्रियागुनइवकद्वे वरन५जंकरेइकगेर दीपऊदीपउहोउहे केसवकविसिरमोरा  
 ॥२१॥ दीपकरूपअनेकद्वे मेंवरनेरूप मनिमालातासोकद्वे केसवकविसिरनुया॥ २२॥ वरणा  
 सरदवसंतससि सुततासोतसुगंध प्रेमपवनसुपनजवन दीपकदीपकवंधु॥२३॥ इनमद्वारा  
 कचुवरनीये कोनद्विबुधिविलासु तासोमनिदीपकसदा कदियउकेसवदासा॥२४॥ प्रथमद्वे  
 स्तितनेतद्वेरिद्विद्वरकीसोद्वरधिरतमतेड द्विद्वरउहे केसोदासश्रासयासपरमप्रकाससो  
 विलासनिबिलासकहकदानपरउहे तांतितानितामनीतितवनुकद्वेउपउहे सुखासुनायसु  
 तोयोरताकोधरउहे मानद्विसमेतमानुमाननीतिवसकरिमरीश्रीलीमेरामनुदीपउकरउहे  
 २५॥ द्बिनुपवतुदछेऊछेनिवरणलागिलोलनुकरउलोगलेवलीलताकोपरु॥ केसोदासके  
 सरऊसमकोसतनकनतनूतनतितकोनसाहनिपरउतरु क्योकक्याकद्वोउद्वसाह  
 सबिलासवसवंपकवमेलीमिलिमालतीसुवासुद्वरु सीतलसुगंधमंदगनितदंतंदकीसोपाव  
 उकांदांतेंतेइतोरेवेकोमानतरा॥२६॥ अथमालादीपकलवन॥ सबेमिलेजद्वेवरनीये देस  
 फालबुधिवंतमालादीपककद्वेउहे ताकेतेदअनेता॥२७॥ दीपकदेहदसासोमिलेसुदसा  
 मिलतेइहिकोतिङ्गीद्वे वै जागिकेयोतिसवेसमुफेतसुसोधिसुवैतोसुततादरसावै सोसु

ततारवेरूपकेरूपकौ रूपसो कामकलाउपजावे कामसुकेसवप्रभवदावत प्रमलेशानप्रिया  
 द्विमिलावे॥२॥रसिकप्रियायां॥ घननकीधारसुतिमोरतकोसोरसुतिमुनिकेसवअलापअली  
 जनको०॥२॥अप्रदेलिकालचनं॥ वरनियेवसुहरायजद कोनऊएकप्रकार तासोकद  
 तप्रदेलिकाकविऊलबुद्धिउदार॥३॥सोततिसताईससिर उनसविलोवनलेपि हृष्यतपद  
 जानंऊतदो बीसबाहुवरदेपि॥३॥सूर्यमंगलजांनियो॥ वरनअवारदवाहुदस योवनसता  
 ईसमारतदेप्रतिपालकरि सोदहतगारदसीसा॥३॥हरिरात्मकसरीरजातियो॥ नवपसुतोऊद  
 वता हेयबीडिदिगेद केसवसोहरापिदे ईइजातिकोदेद॥३॥ देयंमुननयाइकह पाइतनुवतिन  
 निचलतनेकतेदोई वासुरगंतनराति॥३॥बाटजातियो॥ केसवताकेनाउका आपरकदिये  
 दोइ सुधेअपतमित्रके उलटेअपतदोइ॥३॥राजाजातियो॥जातिलताअआपरद नानकदे  
 सबकोइ सुधेसुधसुधतधिये उलटेअवरदोइ॥३॥दापजातियो॥सवसुधवाहतागया जांपिय  
 एकदोवार चंदगदेदोइरादको जैजेउदिदरवार॥३॥राजावीरवलकोदरवारजातियो॥असी  
 परिदियाउसपि कियजांतउसवकोया॥३॥पीवलागततासुरका जातीसीरीदोइ॥३॥अवजा  
 तियो॥अप्रपरिहतालेकारवर्षने॥ कोडेइदओरेंकहु उपडिपरदिंकहुओर तासोपरिहतकह  
 उहे केसवकविसिरमोर॥३॥रसिकप्रियायां॥दसियोलतदिजदससखकेसवलाजसगाव  
 तलोयुतो बाउकलावतधेस्वलेमनआनतहीमतमयजगे उजकदेसुअतोसनमरेदिजांनिय  
 देनदियेउमो हरियोनेकडीवपसारतदि अंगुरानियसारनिलोमलगा॥३॥दावगदो उजना  
 प्रसुताइदि छटिगईधरिधीरजताई पांततपसुपतेनरुविरुविआरसीदयिकहोयदवाई दंप  
 रिस्तनमोहनकोमनु मोदिलीयोसऊरनीसुषदाई लाउयपालकपोलनपष्ठतलेरदोकेसुमल  
 अधिमाई॥३॥जीयोदियोडिडिजातिदेईजगजाकीबडाईबडोसउजांन तादिसावेरुमनाववा  
 कायके केसवकोऊकरे ऊउआने  
 कबयदकाउदेजाकोतलोकरियेसुखुरोकरिमांते॥३॥इतिश्रीमनविविभत्सपण्ठपिताया  
 ३॥उमंमात्रका

... तासो

॥१॥ अथ उपमानाम् ॥ संसयदे उ अस्तु त अति अहुत विक्रयांति इषन इषन मोक्षमय नियमगुणा  
 धिक्कजातु ॥२॥ अतिसय उत्प्रेषित कद्वै श्लेषधर्मविपरीति निर्नयलाभनिकोपमा असंज्ञावतामी  
 ता ॥३॥ बुद्धिविरोधमाताकद्वौ औरपरस्पर ईस उपमासेद अनंतद्वै मेंबरने इकई सा ॥४॥ अ  
 य संसयोपमावर्णना ॥ कदांतदिनिरधारक इ रवसंदेहस्वरूप स्मे संसय उपमासदा वरणतद्वै  
 कविरूप ॥५॥ रसिक प्रियायां ॥ मंडनद्वै मतरं जनके सव रंजननेन किधौ मतिजीकी प प्रांनपियारे  
 काभूरतिपीकीणा ॥६॥ अथद्वै तोपमालभना ॥ दोतकोतद्वीद्वैततै अतिउत्तमसेद्वीन ताहि सौं हि  
 द्वितोपमा के सवकरं दहत प्रवीता ॥७॥ अमलकमलकलकलकलितगतिवैलिसो बलितमफमा  
 धवीकोपांतीये मृगमदुमरदिकप्ररधरि रुरिपेठकेसरकोके सवबिला सुपद्वंति ये केति को  
 वनेलिकरि वंपकसौं केलिसे इ सेवती समे समेतद्वै तकेतकी सौं जानीये द्विलिमिलि मालती सौं  
 आवउ समीरजवतवतेरे सुष सुषवास सौं वषांनिये ॥८॥ अथ अहुतोपमालभना ॥ उपमाजाइ  
 कज्जनदी जाकोरूपनिहारि सो अस्तु उपमाकद्वौ के सवदास विवारि ॥९॥ रसिक प्रियायां ॥  
 हरिद्वै क्यौं रूपनवसन इतियोवनकी वोतिद्वै ति यो सत्रै सारातिद्वै ॥१०॥ रसिक प्रियायां ॥ तालुमुद्दी  
 मुनला लल्लै इत्यादि ॥ अथ अहुतोपमावर्णना ॥ जैसी दोतिन कै गई आने कद्वै तको इ के सव अै सी  
 वरनीये अहुत उपमा दोइ ॥११॥ श्रीतमकौं उपमाननिमाननिगांत सयांतनराफिरीफावै वंकवि  
 लोकनिबोल अमोलनि बोलतो के सवमा द्विबहावै द्वावज्जतावसुताविलावके तामतितावनि  
 चित्तवुसावै अैसे बिला समो दोइ सरोजमें तो उपमा सुषतेरको पावै ॥१२॥ अथ विक्रिय उपमा  
 वर्णना ॥ क्यौं लं वरनीये कोतद्वी एक प्रकार विक्रिय उपमाद्वौ उद्वै के सव बुधि अनुसारा ॥१३॥  
 के सोदान ऊं दनके को सते प्रका समानं वितामनि बोपता सौं ऊपिके सरस सोता सारते नि सा  
 रसी सौंधकी सी सोधिदेह सुधा सौं सुधारीया उधारी देवलोकते कि सिधुते उधारी सी आजिय  
 सौं द्व सिपेल बोलिवा लिले द्वा ल कालि अैसी खालि ल्या उकांमकी ऊमारी सौं ॥१४॥ अथ इषन उ  
 पमावर्णना ॥ जह इषनगत वरनीये रूपनताय इराय रूपन उपमाकद्वै उद्वै के सव सुषदं सु  
 तां व बुधिज्जता द्विबनाइ ॥१५॥ रसिक प्रियायां ॥ जो कद्वौ के सव सोमसरो ज सुधा सुरद्वै गति  
 देद्वै दद्वै दै ॥१६॥ अथ रूपन उपमावर्णना ॥ इषन हरि इराइ इद्वै वरणत रूपन ताउ रूपन



॥१॥ अथ उपमानात् ॥ संसयदे उ अतुत अति अहुत विक्रयांति इषन रूषन मोहमय नियमगुणा  
धिकजान् ॥२॥ अतिसय उल्लेखित कद्वै स्तम्भमविपरीति निर्नयलाभनिकोपमा असंज्ञावतामी  
ता ॥३॥ बुधिविरोधमाता कद्वै औरपरस्पर ईस उपमातेद अनंतद्वै में वरने इकई सा ॥४॥ अ  
थ संसयोपमा वर्णना ॥ जहानदिनि रक्षारक बहु रवसंदेह स्वरूप से संसय उपमा सदा वरणतद्वै  
कविरुपा ॥५॥ रसिक प्रियाया ॥ मजबद्वै मत रंजन के सव रंजनने न किधौ मतिजीकी प प्रांन पियारे  
को मूरति पीकी ॥६॥ अथ द्वै तोपमा लघना ॥ दोतको तदी द्वै ततें अति उन्नमसे हीन ताहि सौं हि  
द्वितोपमा के सव करं हत प्रवीना ॥७॥ अमलकमल कलकल कलित गतिवेलि सौ बलित मधमा  
धवीको पांतीये मृगमद मरदिक मरधुरि वृषिपेठके सरको के सव बिला सुपद्वानियें फेलि को  
वमेलि करिवंपक सौं केलि से इ सेवती सम समत द्वै तके तकी सौं जानीये द्विलिमिलि मालती सौं  
॥ आवउ समीरु जवत वते रे सुष सुषवास सौं वषानिये ॥८॥ अथ अहुतोपमा लघना ॥ उपमा जाइ  
कजंनदी जाको रूपनि द्वारि सौ अतुत उपमा कद्वै के सव दास विवारी ॥९॥ रसिक प्रियाया ॥  
हरिद्वै क्यौ रूषन वसन इतियो वनकी वोति दोति द्यो सत्रे सीराति द्वै ॥१०॥ रसिक प्रियाया ॥ तातु गृही  
गुन लाल लहै इत्यादि ॥ अथ अहुतोपमा वर्णना ॥ जैसी दोति नकै गई आने कद्वै तको इ के सव जैसी  
वरनीये अहुत उभयमा द्वै ॥११॥ श्रीतमको अममान निमान निगांत सयांत नरी फिरी जावें बंक वि  
लोकनि बोल अमोलनि बोल तो के सव मो द्वि बहावें हाव कंता वसुला विलाक्के तावति तावति  
वित्त बुसावें जैसे बिला सज्यो दो इ सरोजमें तो उपमा सुषते रे की पावै ॥१२॥ अथ विक्रिय उपमा  
वर्णना ॥ क्यौं कौं वरनीये को नदी एक प्रकार विक्रिय उपमा हो उद्वै के सव बुधि अनुसा ॥१३॥  
के सो दान ऊं दनके को सतें प्रका समान विता मति बोपता सौं ऊपिकें सर ससो ता सारतें नि सा  
रसी सौंधकी सी सौंधि देह सुधा सौं सुधारी पा उधारी देव लोकतें कि सिधुते उधारी सी आजिय  
सौं द्व सिधे लबो लिवा लि लेह लाल कालि जैसी खालि ल्या उको मकी ऊमारी सौं ॥१४॥ अथ इमन उ  
पमा वर्णना ॥ जह इमन गन वरनीये रूषन ताय इराय रूषन उपमा कद्वै उद्वै के सव सुषद सु  
तावें बुधि ऊं ता द्वि वना ॥१५॥ रसिक प्रियाया ॥ जो कद्वै के सव सो मसरो ज सुधा सुर द्यगति  
देह देह देह ॥१६॥ अथ रूषन उपमा वर्णना ॥ इषन हरि इरा इजह वरणत रूषन ता उ रूषन

यथातो ब्रह्मे केसवसपटसताता ॥ १॥ सवरणयत्सवरनति वलितपतिनेनेमोमिः ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

दीसामहाम्मा कद्वरनतेकावराया ॥ २॥ ॥ १ ॥ ॥ २ ॥ ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

३

मारु दिनलितपंजरटहीमेंपाइये॥२७॥ अथश्रेयोपमासमर्थ॥ जहांस्वरूपप्रयोगिद्धे सद्यःकदीअर्ध  
 केसवतासौकदतद्वै श्रेयोपमासमर्थ॥ २७॥ सुगुनसरससबअंभारागरंजीतद्वै सुगुदसुतागबडेताग  
 पागयाइये सुंदरसुवासु तनकोमलअमलमनयोडरुबरमडुनदर सुवटाइये बलितललितवासुके  
 सोदाससविलास सुंदरि सिंगारलाई गहरुनलाईये चाउरीकीसालामाफत्राउरकैतंदलाउधंपेकैसीमा  
 लालालीउरउरमाइये॥२८॥ अथधर्मोपमालखनो॥ एकधर्मकोएकअंगु जहांजानियउदोइ ताहीसौ  
 धर्मोपमा कदतसयानेलोइ॥ २८॥ ऊपरउदारउरवासुकिविराजमांतद्वारकोसमांतआनउपमांतदो  
 हिये सोदियेऊतानिबीधंगासुकैजालबंदऊंदकलाकासेकेसोराइमनुमाहिये तपकेसीरेषवंधवंध  
 तसीवारुखअंजनुसिंगारहीगरुलसविराहिये सबसुषसिद्धसिवासौहेसिद्धकेसाधयावऊसोपा  
 वऊलिलारलागोसोहिये॥२९॥ अथविपरीतोपमालखनो॥ २९॥ अथविपरीतुतनिको तेईकहिजेहीन ताहिसौ  
 विपरीतोपमा केसोकदतप्रवीना॥ २९॥ सुषितदेहिदिगैवर ताहिनेअंवरअंगनवीने हरिकेसुंदरीसु  
 दरमंदिरहरिदरीनिमेंमंदिरकाने देषियेमंडितदंडितसोसुजदंडिइवोअसिदंडविदिने राजनअंध  
 इजातिकेवेरऊमंजलछाडिकमंडललीनो॥३०॥ अथतिर्नयोपमालखनो॥ उपमाअरुउपमेयको जद  
 गुनदोसुषिवारु निर्नयउपमाहोतिद्वै सबउपमानिकोसारु॥३०॥ एककहैअमलकमलकमलसु  
 मसीतासुको एककहैवंदमयआनंदकोकंदरी होइजोकमलतोरेनिमाफिसऊवेरी वंदजोपेवासर  
 ऊंहोतोइतिमंदरी वासरीकमलरजनीसुषवंदसषिवासरऊंरजनीविराजेऊगंबंदरी देषेसुष  
 ताऊ उतदेषेईकमलवंधतातेसुषसुषेसषिकमलेनवंधरी॥३१॥ अथलाघतिकोपमालखनो॥ लखन  
 लखिसुवरनीये बुद्धिबलबचनविगस तासौलाघतिकोपमा कदिडेकेसवदासा॥३१॥ वासौमृगा  
 अंऊकहै तोसौमृगनेतीसबवासौसुधाधरउदिसुधाधरुमानिये वहइजराऊतेरीकुडराजीरजे  
 वहकलानिधिउहीकलाकलितवषांनीये रतनाकरकेदोऊकेसवप्रकासकरअंवरविलासुऊ  
 वलयद्वितहांनिये वाकेअतिसीतकरउहीसीतासीतकरवइमासीचंडसुषीसबयुगाजातिये॥३२  
 अथसंतावितोपमालखनो॥ जैसेताउनसंतवे तैसेकरउप्रकास होतिअसंताविततहां उपमा  
 केसवदासा॥ जैसेअतिसीतलसुवासुमलयडमदअमलअदल बुधिपदवांनिये जैसेकोनेकाल





जियजांति वृद्धसुषनमनतावती ताहितैव करानि ॥३॥ सुरताषायातैअधिक द्वैवृद्धताषासौ द्वे  
 उ वृद्धसुषनयाकौसदा सुषसुषनकरिते ॥४॥ तूषितजिनकेसुषननि त्रिभुवनपतिकेअंगति  
 तकेकेसोदासकवि वरनतदेप्रत्यगा ॥५॥ जगकीदेवीदेवके श्रीहरदेऊवषांनि तिनहरिकीश्री  
 राधिका इष्टदेवताजांनि ॥६॥ अववरणोपमावर्षना ॥ उपमाऔरसमानसब इतनोतेइवषांनि  
 जावकसुतपदवरनीये महदिसंयुतयोनि ॥७॥ अतिकोमलपदवरनीये यत्रवकमलसमान  
 जलजकमलजोवरनकदि करकदियलज प्रमांन ॥८॥ रात्रुरजोयुतकोषगडु प्रावीदिशिकोता  
 तीगु रंगसुमिजावऊवरनीये कोपरसुअनुरागु ॥९॥ अवजावऊवर्षना ॥ कोमलअमलताकी  
 रंगसुमिकिधौयह सोतियउअनुकेसोलाकेसदतौको अरुनदलतिपरकीनोकितरुनिको  
 मजीत्योकिधोरजोसुणराजीवकेराजीवकेगनको पतपलपनसुकरतकिधौ केसोराइलागिरहो  
 सुस्वानुरागुपियमनको एरीइयतांनुकीऊमारि तेरेयावसोद्वै जावऊकरंगकेसुहासुसौतिगत  
 को ॥१०॥ अववरणवर्षना ॥ गंगाऊकेजात्मभकंठकेप्रमांनयेविजपिस्सूरमंत्रआनंडबहावही  
 केसोदासघांमजलसीतसद्वैरकरसठाहेएकपायकोटिकलपतासावही कोमलअमलतरासु  
 दरसुवसुतएकमलानिवासमनु तदपिलमावही पायोपरिलमपडपदमनिपदमनितेरेपदप  
 दवीकोपडपैनेपावही ॥११॥ अववरणअंगुरीवर्षना ॥ अंगुरीवंपककीकली जीवनसूनिप्रमांन  
 तारारविससिसुमन मनिगतनषतिसमांन ॥१२॥ विच्छियावाकेअनोटकी नादिनउपमाआन सीत  
 प्रातपतंगप्रत हंसअसतनत्रांन ॥१३॥ वंपकलीदलजंतीतली पदअंगुरीवालकीरूपरसेद्वै सु  
 सुदेसलसैनषयोडनु प्रीतमकेहगदेवसेद्वै वोकेअनोटवनेविच्छियानिविस्मितजोतिजर  
 मसेद्वै केसवसोमसरोडनिकुपरिकोपिमनौततत्रांतकसेद्वै ॥१४॥ अवनुअरवर्षना ॥ सुअर  
 रक्षायत्रमन लोवनयुनगतद्वार जावजसपावकमक जासिकबंदनमार ॥१५॥ गतिनिकेद्वारकि  
 विहारिकपद्वाररुद्व किधौप्रतिहारप्रतिरतिकेनिलयके हंसगतिनायक किमुदयुनगाऊक  
 किश्रवाणहरणकोऊमायकद्वैमयके केसवकमलरुलअलिकलऊतितनसौकिधौप्रतिधा



किधौं इंदराके मंदिरके इदीवर इंडुमुषी सोरतसरसद्वै आनंदके कदकिधौं अंगदे अंगही केरा  
 जितचुके सोदासवरसवरसद्वै एरीमेरीका न्हाचुकी प्यारी तेरे ऊव किधौं रूपअनरूपजातरु  
 पके कालसद्वै ॥ २६ ॥ अधस्तुजवर्षना ॥ करपंकजपत्रवनिचुज विसवल्लीरिसुपास रन्तास्कि  
 ऊसमसर नपरुविके सोदासा ॥ २७ ॥ के सोदास गोरगोरगोलकामसूलहरतामनिकी छडा मुउ  
 ताइसे उतारेदें सोता सुषवरघतमांघनुसे परसत दरसन कवनसे कविन सुधारद्वै वलयव  
 लितबाजू दे धिरी फिरद्वै नाऊमानौ मनपासिबेकौ पांषिए विवारद्वै मलिनमृता लमुषपंकमेडा  
 राएडुमदे षो जाइ छातिनमें ब्रेक करि डारिद्वै ॥ २८ ॥ अधकररूपणवर्षना ॥ गजराविराजे गडमोति  
 तके अतिनिके जिनकी अजीतयोतिके सोदास गाईद्वै वलयवलितबाजू कवनकलितमते ला  
 लकी ललितपौंची पोविननबाईद्वै सेतपितहरितफलकफकतिलालस्यामलसुमितमेरे स्यामति  
 कौताईद्वै मांनौ सरसोमकी कलासके लित्रापनयौ आपनयौ आपने सधाकौ सुषदाइपदराइ  
 ॥ २९ ॥ अधनघअंगुरीवर्षना ॥ गोरीगोरी आंगुरी निरातेसे रुधिर नषवोर अतिपेनें मेने विरधिकी  
 नेद्वै रतिजयातिषवकी लेपनी सुरेय किधौं मीनरथसारथीके नौदननबीनेद्वै किधौंके सोदास  
 पयवानजूके पावोवानसकलसुवनजिनवसिकरिदीनेद्वै कवनकलितमनि सुंदरी ललितकिधौं  
 पियपरिजनमनदाषकरितीनेद्वै ॥ ३० ॥ अधमहदी संसुतमातिवर्षना ॥ राधिकारूपनिधानके पां  
 नतिआनिमनौचितिकी छविछाई दीद्वै अदीहनसूचमधुलादीहगोरीकी दोरिडराई महदी  
 मयविंडघनेतिनके मनमोहनको मनमोहनीलाई इंदुवध अरिबिदुके मंदिर इंदिराको अमुदे  
 षनआई ॥ ३१ ॥ अधकंववर्षना ॥ कंवसुकंठकपोतइति केसवदासप्रधान पिविकनकी पट्टिका वरत  
 तसकलसुजांन ॥ सुरनरप्राकृतकवितरितिआरभटी साउकी सुतारती यौतारथमें तोरीकी किधौं  
 के सोदास कलगानकी सुजांनतांनिसंकतासौं ववतविचित्रता किसोरीकी बीतावेनु पिकसुरसोता  
 की विरेषरेषमनकमववतकिपियहितवोरीकी अंबुसाइसौंमोदी अंबिकाऊदे षिदे षि अंबुजनयन  
 कंबुग्रीवागोरीगोरीकी ॥ ३२ ॥ अधकंववर्षणवर्षना ॥ लेतमोलालकंवकंवमालजातिनांदिनेंनदेषी  
 जातिगर्वतागिके स्यामसेतपीतलालकंबुकं वकंवमालजातिनांदिनें ककरही सुजोतिजागिके केसो

सी



तवाउरीवमेलीवारुकलिरहीकेलिवासुकेसवप्रकासकरसुषको किधौपरिमलप्रेमकरनावतंस  
 निको किधौवरवांतीवनमालाकेवसुषको किधौयायोप्रांतपतिद्वयकमलकफ्योगंधुबधुकि सुग  
 धुसुषसुषको ॥४३॥ अघसुषरागुवर्षतं ॥ अरुणोदयराडीवम अंगरागअचुराग रूपतपरतिराज  
 सौ राजतिसुषसुषराग ॥४४॥ केसोदासरगतिकोकिअंगरागकिधौदिडसेवतदे संभाजलीतेर  
 की अरुणारदनबजबदनद्वयकिधौवदईफलकफलकतयऊँओरकीकिधौताप्रात्यनकिम  
 ननिकोवाकषवकिचोरेलेउविउवलितेरोधितवोरकी लागिरह्योअचुरागनादिनेननिकोकिधौरुधि  
 रावीतेरीतरुनीतमोरकी ॥४५॥ अघरसनावर्षतं ॥ रसनाकोमलबर्नीये कोविदअमलअमोल  
 केसवदेवीरसनकी सरसरसिकमडबोला ॥४६॥ देमतहीआधोपलबाधिजातिराधासव राधाजू  
 कारसनासरूपकेसीरांतीदे आधीरवातनकीजननीसाजगमगेरसतिकीदेवाकिधौपविमहवांती  
 दे केसोदाससकलसुवासकेसीसेजकिधौसकलसुजांतताकीसभीसुषदांतीदे किधौसुषकंजमे  
 सकतिकोनेसंबेऊजसविताकीबवीताकीकवितानिधांतीदे ॥४७॥ अघवाणीवर्षतं ॥ वांतीबीना  
 वेकुअलि सुकापिककितरुगांत सोतनसतबज्जअर्धमय केसवदासवमांति ॥४८॥ कामकीइहा  
 ई सुहाईसधिमधरीकिवाउरीकीमात्रैसीवातनिश्रजतिदे रामराजधांतीअचुरागनकीवऊ  
 रानीमोदेदधिदांतीकहिकोकिललडतिदे एरीमेरीरजरांतीतेरीवरवांतीकिधौवांतीरुकीबीना  
 सुषसुषमेंबडतिदे ॥४९॥ अघकपोलवर्षतं ॥ सुकरमधकैकपोलसम केसवदासप्रमांत तिलप्र  
 सनउलीसम सुकनासिकासमांता ॥५०॥ किधौहरिमनोरथरथकीसुषधितमि मानरघसारथीकीम  
 तिनसकितके किधौरूपतपतिकीआसनरुविरुविमिलि मगलोवनमरीविकामरीविकै किधौश्रुति  
 ऊंडल मकरसरकेसोदासवितएतंवितेवकवाधिकैयउउकै गोरगोरगोलअतिअमलअमोलतेरे  
 ललितकपोलकिधौमेंनकेसुकरके ॥५१॥ अघनासिकावर्षतं ॥ केसवसुगंधसस्वसिद्धतिकीअहा  
 किधौपरमप्रसिद्धसुतसोतनसुवासिका किधौमनसिजमनमीनकीऊबैनीकिधौऊदनकीसीमा  
 जालोउलोवनविसालिका सुकताललितउरीललितसुकंदरुकी किधौसुरसेईतातिकासीकीप्रका  
 सिका त्रितवनरूपताकेत्वंगतोवनिधिताकेतोईकौतरंगकितरुमितेरीनासिका ॥५२॥ अघसुका

रक  
 न  
 का  
 ॥

अथमुक्ताफलवर्णनं॥ केसआनंदकंदफल सुधावंदमकरंद मनमंतंगकोदर्यगति नकनो  
 तीजगवंद॥ केसोदास सकल सुवासुकोनिवासुसधिकिधौ अरि विदमदिष्टदमकन्दको कि  
 धौवंदमंगलमंसोदत असुरयुक्त किधोगोदवंददीकीधेले सुतवंदको वादे सुतरुपुका म जिदिदि  
 नञ्जोकिधौ अथुवद्वेफलयङ्ग आनंदकेकंदको नाकनाइका नऊतनीको नकमातीनाकमा  
 नोमनउर फिरद्वोद नंदनेदको॥ अथनयन वर्णनं॥ ५४॥ लोचनवासुवकारसन वाउकभुक्त  
 ऊरंग अंजनयुत अलिकमसिषंजनकजसुरंग॥ ५५॥ पियमनिहृतकिधौ प्रेमरघसूतकिधा त  
 रमअस्तवप्रवासुकेसुरंगद्वे चितवतविहृआर विउवोरसुपयउकचकार किधौ केनवउ  
 रंगद्वे वानमदत्तंजनिकिधेलेकोधेलेकोयंङ्गनकिरंजनकअरकामदेवकेउरंगद्वे सातास  
 रलीनमीनऊवलयरसतीनितलिननवीत किधौनेतावऊरंगद्वे॥ ५६॥ अथअंजनवर्णनं॥ वि  
 पसिंगाररसहलतम मदनपातकराज मनरंजन अंजनसवे वरनिकद्वे त्रुविराज॥ ५७॥ कि  
 धोरसरजरसरसित अतितकिधौ ललितविशिष्यविषवलितसेतालिके किधौयुगुडीतयकारज

कासोसासुप्रदंजियं तिनकेतनकीज्योतिर्वंतअतिकेसवअनंतगति कैसैउरुआनिये मानोवामदे  
 कजकेवेरकामकामदेवसाधेसरसाधितांतेजशीउरुआनिये इच्छंदिसइच्छुजत्कटीकमानतांनि  
 नयनकरात्रिवांनवेधतनजांनिये॥६५॥ अधकर्मरूपणवर्षना॥वनदलसीसीतेउरंजनपताकम  
 नमीन सरसकरसआकासके सोतनदीपतवीना॥६६॥ छटिलाषवितमतिमोहनवनकवनेका  
 नककलसरुविरुविरवनद्वै तनक२तनतीउरीतरलगतिमनज्ञप्रताकपीतपीडतिपवनद्वै का  
 लिंदीकेकाउरुजातिजालकेलिकदकालज्ञंसरादेमेरेकालिकेवदनद्वै केसोदाससुंदरिअवनत्र  
 जसुंदरीकेमानोमनताउतेके ताउतेरवनद्वै॥६७॥ अघक्रिनादुवर्षना॥ कनकपट्टिकासमकद्वत  
 केसवललितलितारु सोतनसोताकीसता अर्धवंधमावाका॥६८॥ केसवअसोककिधौसुंदराला  
 ककनकेदारुकिधौअमंदकेवदनको सोताकोसुताउकिधौप्रताकौप्रताउदेपिमोदेहरिराउसधि  
 नंदनसुनंदकौ वमकितवारुसुयिगंगाकोअलिनकिधौवकवोधेवितमतिमंदज्ञअमंदकौ सेज  
 देसुदागकिकिंतागकीसतासुदागतामनीकौतालकिधौतागवारुवंदकौ॥६९॥ अयअलकवर्ष  
 ना॥ अलकचिलकसौवरनीये स्थाभूतअमलसुपास अतिवंचलअतिचारुअति सुहृमकेसवा  
 दासा॥७०॥ केसवकसाकिधौअनंगकीसुरंगसुषीलोचनऊरंगनीकीचालिद्वटकतिद्वै मिथमा  
 नपासिवेकौ यासिसियसारीकिधौउपमाकौमेरीमतितवत्तटकतिद्वै तरनितनूझामितैताराना  
 घसाधकिधौद्वायपरिमतकी तरुनिमटकतिद्वै सुनिलोललोचननवलनिधितेद्वैतकीआलिका  
 कीअलकअलिकलटकतिद्वै॥७१॥ अधसुषमंडलवर्षना॥ अमलसुकरसौवरनीये चारुव  
 दपरिमांन॥७२॥ अहनिमेंकीतोमज्ञ सुरनिदेदेषोदेज्ञ सिवसोकस्यो सनेज्ञ जाग्योसुगवास्यो  
 तपनिमेंतप्योतपुजुधिमंजप्योजपुकेसोदासवप्रमासमासतविगास्योद्वै उडगनईसुवेतुइसु  
 उषधीसुतयोजदपिजगतईसुसुधासौसुधास्योद्वै सुनिनंदनंदप्यारीतेरेसुषवंदसमवंपन  
 सयोकोरि छंदकरिदास्योद्वै॥७३॥ अधकेसपासवर्षना॥ तौरवौरसेवालतम जसुनाकोअमंज्ञ  
 मोरपिअसमवरनीये केसवकेससनेज्ञ॥७४॥ कोमलअमलचलवीकनेचिलकवारुवितये  
 तैविउवकवोधियउकेसोदाससुनिदिबबीजीराधे छटेतैबुअैबवानिकारेसत्कारेद्वैसुतावही  
 सदासुवासु सुनिकेप्रकासउपहासनिशिवासरकेकोनोद्वै सुकेसीवसुवासजाइकेअकासअ

कोम  
समीन  
कि  
ये

अद्विभनेकवंद साधलीये मोर धिष्ठ जी तो एक वंद सुपक पतेरे के सपासा ॥ ५४ ॥ अम वेनी वर्णन ॥ अ  
 सीवेंती वरनीये के सवदा सवनाय अति निसुय सुनो धार अदि अलि अक्ली सुमपासा ॥ ५५ ॥ वंद व  
 वटा एवारु ऊंकम लगाए पो ठे कि धो नि सिना व नि सिने द से उरा इहे कि धो वंद वदन चिर के छीर स  
 पनिसमी प सुधानि धिसो धिसो धुलेन आई दे कि धोर सरा जर सु के सी दा सदा सर समिलि अ नुरा ग  
 र सधारा आई दे मिलि मालती को माल लाल धोरी गरी गृही वेंती पिक वेंती की त्रिवेनी सी वना ई दे ॥ ५६ ॥ अ  
 अघ सिर वंदा वर्णन ॥ वंदा वरनत सफल कवि के सब ललित लिगारु ताग सुहाग नरे स सम रति  
 ससि उदित उदाका ॥ ५७ ॥ माग फल सिर फल सब वेंती कन वना क रस म प्रजग को ति जनु स रज प्र  
 गट प्रतावा ॥ ५८ ॥ मोलिन की सरि सी सपरि सो दति दे इ दि तांति चारु वंद मा की वसु धन मराल की  
 पांति ॥ ५९ ॥ वेंती पिक वेंती की सुने नी नि वता इ गृही क वत ऊ सम स वि नो वन नि पा दि ये के सी दा स फ  
 लिर ही फलि सी सफल इ ति ऊ यो त नु म नु मे रो न्या य द रि मो दि ये वंदा ऊ ग म्मा उ न रा य न र को ता क  
 जो ति जी तो दे अ जि उ उ प मां न आं न टो दि ये मां नो इ नि पा उ डे ने पा उ धा रि आ ए दी ऊ सो द उ सु हा म्म सि  
 र ता म्म ता उ सो दि ये ॥ ६० ॥ अघ अंग वा सु वर्णन ॥ सहज सु वा स सरी र की आ कर य न वि धि जानु अ ति  
 अदि ष्ठा ति उ ति का इष्ट दे व ता मां तु ॥ ६१ ॥ कमल वदन करन वन व वन ऊ व क म्म ऊ र ग म्म उ क टा र  
 बिला सुंद र कटी कटिल वे क मे व क सु गंध मय ऊ द न क लिकी दंत वंद न क हा सु द ऊंक म सरी र  
 ऊ म ऊ मा नि को खे द नी क अ व र को के सी दा स अ व र का ला सु द मन क र य न वि धि कि धो इष्ट दे व ता अ दि  
 ष्ठा ति उ ति का कि स ह ज सु वा सु दे ॥ ६२ ॥ अघ व स न वर्णन ॥ व स न स दे लि सि ह स म का थ्या म थ्या मा  
 उ सी ता सु त ग सु हा उ अ ति ला ज ला ज को आ उ ॥ ६३ ॥ कि धो य द के स व सें गार की दे सि धि कि धो त  
 ग की स दे ली कि सु हा ग को सु हा उ दे जी व न की जा या कि धो मा य म न मो दि वे की का या कि धो ला ज की  
 कि ता ऊ ही को आ उ दे ला म्म ला प तां ति न के पिय ही के अ लि ला प ला म प दि प हि रे व ता इ कि धो कि धो  
 सी ता उ दे सारी जर क सी ज ग म्मा ति सरी र कि धो त म न न रा उ ही की जो ति को न रा उ दे ॥ ६४ ॥ अघ से  
 की ए न्म प ण वर्णन ॥ रसिक प्रिया यां व या ॥ यंद के सी ता ग ता उ र कटी क मां न अे सी ॥ अम सं म ण त  
 प ण वर्णन ॥ वि वि वा अ नो ट वा के सु परी जर अ्म जरी जे हरी श वी ली वृ ष्ट टिका की जालिका सु द री उ  
 वार पां वी कं क न वे या वरी कं व क व माल हार म हरे गु माले का ये नी फल सी सफल माग फल का

तो



लीलकलुतिलालकनकमोतीवनोवालिका केसोदासनीलवासुजोतिङ्गिमगिरदीदेधरदेधि-  
 यतमानोंदीपमालिका॥ अश्रुभादीपतिवर्षनं॥ ऊंकमकवतकेउकीचपलाचपकवारु कमलकोस  
 गोरोवना वियतनइतिअवातारु॥ ७७॥ राधाकेअंगुराईसीअंगुराइविरविवनाइतवीनी केम  
 उबुधिविवेकसोएकअतेकविवारिनमेंइगदीनी वानिकतेसीवनीनवनाउतकेसबकेसंदैकेगईदी  
 नी लेतवकेसरिकुंदनुकेतकीचंपककेदुलदांमनिनीकी॥ ७८॥ अश्रुगतिवर्षनं॥ राजदंसकलदंसस  
 म अतिगतिमंदविलासु महामतगजराजसी वरनङ्ककेसवदास॥ ७९॥ किधौंगजराजनकीराजउ  
 दैअंकससीरवनिविलासनिकोआरसुसइतिदे किधौंराजदंसनीकीसकासककेसोदासकिधौ  
 कलदंसनीकीलाजसीलगतिदेवलितअंतगतरुललितसिगारुबेलिफलिफलिद्ववतावफरुनि  
 फलतिदे किधौंनंदलाललोलोवनकीशेषलकेतेरीलोलोवनीअलोलअतिगतिदे॥ ८०॥ अथस  
 मसमुनिवर्षनं॥ चंद्रकलाउदामनि कनकसलाकीदेधि दीपसिषाउषधिलता मालाबालादेधि॥  
 ८१॥ तारासीकाकतराइनसंगअवंचकलानिसवंचकलासी दामनिसीघनर्यामसमीपलगेतना  
 र्यामतमललतासी सोनेकीसीकसीइरनयेतेमिलेउरमेंउरद्वारप्रतासी आधिकीउषधसीकदिकेस  
 वकामकेधाममेंदीपसिषासी॥ ८२॥ महिमोदनीमोदतिकुपदिमार्कधिरुरी सदनमंत्रकीसिद्धिपेनकी  
 पधितसरी डावनमित्रविविचकिधौंङ्गजीवमित्रकी किधौवितकीइतिनिकअतिगतिवितकी कदिके  
 सवपरमानंदकीआनंदसकतिकिधौंधरनि आधाररूपतवधरणकोराधानुविधाधरनि॥ ८३॥ इदि  
 विधिवरणङ्कसकलकवि अविरलउचविङ्गअंग कदिवधामतिङ्गीयंड केसवपायधसंगा॥ ८४॥ इति  
 नखसिषारवर्षनं॥ अथजमकालेकारवर्षनं॥ अव्यपेतव्यापेतअरु जमकवरनङ्कदेतु अव्यपेतविनुअ  
 तरद अंतरसोसवपेउ॥ ८५॥ आदिपदवङ्कमका सजनीसजनीरदनिरधि दरघिनचितईमोर पिउ  
 पिउवाउकरदउ चितवतिहरिकीऔर॥ ८६॥ इसरेपदकीजमका मानकरतिसधिकौंनसौ हरिउ  
 देरउआदि मानुनेदकोमनदे तादिदेधिवितवादि॥ ८७॥ तीसरेपदकोजमका सोततिसोराअंग  
 निय यद्वहिसतद्वयसार वारनवारनगुजरत विनुदनिंसारा॥ ८८॥ चौथेपदकोअंतजमका  
 राधाकेसवकुवरको बाधादरङ्कप्रवीन नेकसुनावङ्करिष्ठा सोरनवीनतवीना॥ ८९॥ अद्यंतजा  
 मका॥ हरिकेहरिकेवलिनतदि सुनिघषानुक्रमारि गावङ्ककोमलगांतहे सुषकरिवारकवारा॥

॥ त्रिपदकमका ॥ सारसंज्ञेनेनीसुति चंद्रवृक्षमुपदेयि सुतिरमतीरमतीयतरि तिनैतंहरिसुयलेयि १  
 द्विपदकमका ॥ अलिनीअलिनीरजवसे पतितरवनीपतंग हेमतमनमनहरिवसा माधाराधासंग  
 ॥ २ ॥ द्विपदादित्रिपदांतकमका ॥ आश्रमनावतप्राणयिय मांतिमांतिनिद्वारं परमसुजांतसुजात्रा  
 हरि अयनेविउविवाक ॥ ३ ॥ द्विपदवउपदादिजमका ॥ जिनहरिसवकोमनद्वत्सो वामवामदृगवा  
 दि मनसावावाकर्मना हरिवनतीवनितादि ॥ ४ ॥ उत्तरार्द्धकमका ॥ आशुब्रवीलसुखिवनी छेदि  
 बलनकेसंग मिलोतरुनितरुनीनकर केसवकेसवश्रंगा ॥ ५ ॥ प्रथमद्वितियउपदादिजमका ॥ दे  
 विप्रवालप्रवालदि मनमनरसरथतीति धेलनिवक्रसुंदरिगई गिरिसुंदरीदरीति ॥ ६ ॥ प्रथमवृत्त  
 यवउपदादिजमका ॥ परमानंदपरमानंददि देयिववनउपकठ यदत्रवलाजवलागिदि मनु  
 हरिहरिकेकंठा ॥ ७ ॥ द्विपदत्रिपदवउपगा ॥ ऊर्ध्वगोशंशाम सररुसररुदेयि दिवुरमुतीरमुत  
 यतकि मूरतिरतिसमुलेया ॥ ८ ॥ चउपदकमका ॥ नदिउरवसीउरवसी मदनमदनवसतक्त सुर  
 तरवरतरवरतऊ नंदनंदआसक्ता ॥ ९ ॥ द्विपदादिजमका ॥ माधवभ्राविका पाएकांक्तुमांर मजि  
 ऊमाधवनेमसौ गिरजाकोतरुतारु ॥ १० ॥ आदिअंतकमका ॥ सीयस्वयंवरमादिजिन उवतित  
 दिधैराम तादिनेतिनसवसयिन तजेस्वयंवरधाम्ना ॥ ११ ॥ आदिनिरंतरकमका ॥ पापतसतसो  
 कदतदि रामवृक्षवनीष निउप्रकलितदेयित्यो विरहीविरदसमीप्रा ॥ १२ ॥ आदिअंतरसां  
 तरकमका ॥ कौसेब्रवेनवंशमा कमलाकलसनिलास औसेहीसवसाधपर कमलाकरुतिउदा  
 सा ॥ १३ ॥ परमतकृष्णो सीतिजे परमेस्वरअरधंग कलपलताजे सैलसतिक लपहचकेसगा ॥ १४  
 द्विपदादिजमका ॥ अंगदेसंमेलबिजे लछीलचस्वरूप अंगनमेजे सैलता अंगनातिकेरुपा ॥ १५ ॥  
 त्रिपदादिजमका ॥ दांतदेतज्यो सीतिजे दांतरतनेकदाघ दांतसदितज्योयज्ज मत्तगजतिक  
 माभा ॥ १६ ॥ चउपदादिजमका ॥ नरलोकनिरायतसदा नरपतिश्रीरफनाष नरकनिवारतना  
 मय्या नरवाहनकोनाफा ॥ १७ ॥ सुपकरइपकरतेदेद सुपकरिवरनेजांति जमकसुनीकवि  
 राजसव उपकरिकहेदयोति ॥ १८ ॥ मांतसरोवरआपने मांतसमानद्विवादि मांतसदरको  
 मांतज्यो मांतसवराणततादि ॥ १९ ॥ करणीवरणीजायक्यो सुतिधरतीकेशंस रामदेवनरदेवम  
 ति रामदेवजगदीसा ॥ २० ॥ राजरसंगदेवहिज राजराजसुतमांति विषविषधरुच्यरु सरसि

३

सौकल्यलिलालिलकनकमोतीबन्याबालिका केसोदासनीलवासुजोतिङ्गिमगिरदीदेधरदेधि  
 यतमानोदीपमालिका॥ अथअंगदीपतिवर्षन॥ ऊंकमकंवतकेउकीचपलाचंपकवारु कमलकोस  
 गोरोचना त्रियतनउतिश्वातासु॥ ८७॥ सधाकेअंगगुराईसीओरगुराईबिरंविबनाइतदीनी केम  
 नुबुद्धिविवेकसौएकअनेकविचारिनमेंगदीनी बानिकतेसीवनीनवनाउतकेसवकेसंदैकैगईदी  
 नी लेतवकैसरिऊंदनुकेतकीचंपककेदलदांमनिनीकी॥ ८८॥ अथगतिवर्षन॥ राजहंसकलहंसस  
 म अतिगतिमंदविलासु मद्दामतगजराजसी वरनङ्ककेसवदास॥ ८९॥ किधौगजराजनकीराजउ  
 दैअंकससीरवनिविलासनिकौआरसुसजतिद्वै किधौराजहंसनीकीसंकासककेसोदासकिधौ  
 कलहंसनीकीलाजसीलगतिद्वैबलितअंतगतकललितसिंगारुबेलिफलिफुलिद्वैवतावफुलनि  
 फलतिद्वै किधौनंदलाललोलोवनकीशेषलकेतेरीलोलोवनीअलोलअतिगतिद्वै॥ ९०॥ अथस  
 मसुसुलिवर्षन॥ चंद्रकलाउडदामनि कनकसलाकीदेधि दीपसिषाउंषधिलता मालावारुदेधि॥  
 ९१॥ तारासीकोकतराइनसगअवचकलानिसवचकलासी दामनिसीघनर्यामसमीपलगेतना  
 श्यामतमलततासी सोनेकीसीकसीडरनयेते मिलेउरमेउरद्वारप्रतासी आधिकीउंषधसीकदिकेस  
 वकांमकेधाममेंदीपसिषासी॥ ९२॥ महिमोदनीमोदतिरूपदिमारुविसरी सदनमेंवकीसिद्धियेमकी  
 पक्षितमरी आवनमित्रविविचकिधौङ्गडीवमित्रकी किधोवितकीइतिलिकअतिगायवितकी कदिके  
 सवपरमानंदकीआनंदसकतिकिधौधरनि आधाररूपतवधरणकोराधातुविधाधादरनि॥ ९३॥ इति  
 विधिवरणङ्कसकलकवि अविरोधविअंगअंग कदिवधामतिडीयंड केसवपायप्रसंगा॥ ९४॥ इति  
 नरवसिषावर्षन॥ अथजमकालंकारवर्षन॥ अव्यपेतव्यापेतअरु जमकवरनङ्कदेतु अव्यपेतविनुअं  
 तरह अंतरसोसव्यपेउ॥ ९५॥ आदिपदउजमका॥ सजनीसजनीरदनिरधि दरधिनवितइमोर पिउ  
 पिउवाउकरदउ वितवतिहरिकीओर॥ ९६॥ इत्येपदकीजमका॥ मानकरतिसधिकौतसौ हरिउ  
 द्वैरउअदि मानुलेदकोमूतद्वे ताद्विदेधिवितवादि॥ ९७॥ तीसरेपदकोजमका॥ सोनतिसोनाअग  
 निय यदहिसतहयसार वारनवारनगुजरत विनुदीनिसंसार॥ ९८॥ चौथेपदकोअंतजमका॥  
 राधाकेसवकुवरको वाधादरङ्कप्रवीन नेकसुतावङ्ककरिकया सोननेवीनतवीना॥ ९९॥ आद्यंतजा  
 मका॥ हरिकेहरिकेवलिननदि सुनिहषलानुऊमारि गावङ्ककोमलगीतह सुधकरिवारकवारा॥



लक्ष्मणललातिलकनकमोतीबन्याबालिका केसोदासनीलवासुजोतिङ्गिमगिरदीदेहधरेंदेधि-  
 वतमानौदीपमालिका॥ अश्रुपदीपतिवर्षनं॥ ऊंऊमकंवनकेउकी वपलावंपकवारु कमलकोस  
 गोरोचना त्रियुतनप्रतिश्रवातारु॥ ७७॥ राधाकेअंगुराईसीओरगुराइविरंविबनाइतवीनी केम  
 नुबुद्धिविवेकसौएकअनेकविवारिनमंहंगदीनी बानिकतेसीवनीनवनाउतकेसबकेसंदेकेगईदी  
 नी लेतवकेसरिकुंदनुकेतकीवंपककेदुलदामनिनीकी॥ ७८॥ अश्रुगतिवर्षनं॥ राजदंसकलदंसस  
 म अतिगतिमंदविलासु महामृगजराजसी वरनङ्केसवदासा॥ ७९॥ किधौगजराजनकीराजउ  
 दैअंकससी रवनिबिलासनिकोआरसुसजतिद्वै किधौराजदंसनीकीसकासककेसोदासकियो  
 कलदंसनीकीलाजसीलगतिद्वैबलितअंतगतकललितसिंमारुबेलिफलिफलिद्वैवतावफरुनि  
 फलतिद्वै किधौनंदलाललोललोवनकीशेषउकेतेरीलोललोवनीअलोलअतिगतिद्वै॥ ८०॥ अथस  
 मसमुत्तिवर्षनं॥ वंधकलाउडदामनि कनकसलाकीदेधि दीपसिषाउंधधिलता मालाबालादेधि॥  
 ८१॥ तारासीकांफतराइनसंगअवधकलातिसवंधकलासी दामनिसीघनरपांसमीपलगेतना  
 अ्यांमतमलततासी सोतेकीसीकसीइरतयेतेमिलेउरमेउरद्वारप्रतासी आधिकीउंधसीकदिकेस  
 वकामकेधाममेदीपसिषासी॥ ८२॥ महिमोदनीमोदतिरूपदिमारुविकरी सदनमंत्रकीसिद्धिपेनकी  
 पक्षितमरी डीवनमित्रविविचकिधौडगजीवमित्रकी किधौचितकीइतिनिकअतिलाषचितकी कदिके  
 सवप्रमानंदकीआनंदसकतिकिधौधरनि आधाररूपतवधरणकोराधुविवाधाहरनि॥ ८३॥ इदि  
 विधिवरणऊंसकलकवि अविरलब्रविअंगअंग कदियवामतिडीयंड केसवपायधसंगा॥ ८४॥ इति  
 नखसिषारवर्षनं॥ अथजमकालंकारवर्षनं॥ अव्यपेतव्यापेतअरु जमकवरनङ्केद्वै अव्यपेतविनुअं  
 तरद्व अंतरसोसवपेउ॥ ८५॥ आदिपदद्वजमक॥ सजनीसजनीरदनिरधि दरधिनवितईमोर पिउ  
 पिउवाउकरद्वउ चितवतिहरिकीओर॥ ८६॥ इसरेपदकोजमक॥ मानकरतिसधिकोनसो हरिउ  
 द्वैरउआदि मानुनेदकौमतद्वै तादिदेधिवितवादि॥ ८७॥ तीसरेपदकोजमक॥ सोनतिसोराअग  
 निय यद्वहिसतद्वयसार वारनवारनगुंजरत विनुदनिसेसार॥ ८८॥ चौधेपदकोअंतजमक॥  
 राधाकेसवऊवरको बाधाहरऊंप्रवीन नेकसुनावऊंकरिऊया सोनतवीनतवीना॥ ८९॥ आद्यंतजा  
 मक॥ हरिकेहरिकेवलिमनद्वि सुनिद्वषतानुऊमारि गावऊंकोमलगीतद्वै सुधकरिदारकवार॥

॥२॥ द्विपदादशपदातजमका॥ आउमनावतत्रानापय माननिमानानद्वारु परमसुजातसुजातु  
दरि अमतेविउदिवारु॥३॥ द्विपदवत्रुपददिकमका॥ जिनदरिसवकामनद्व्या वामवामद्वगवा  
दि मनसावावाकमनाद्वरिवनतीवनितादि॥४॥ उतरार्दजमका॥ आकुचबीजद्विवनी छेदि ३

॥१॥ १५॥ १६॥ १७॥ १८॥ १९॥ २०॥ २१॥ २२॥ २३॥ २४॥ २५॥ २६॥ २७॥ २८॥ २९॥ ३०॥ ३१॥ ३२॥ ३३॥ ३४॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥ ५१॥ ५२॥ ५३॥ ५४॥ ५५॥ ५६॥ ५७॥ ५८॥ ५९॥ ६०॥ ६१॥ ६२॥ ६३॥ ६४॥ ६५॥ ६६॥ ६७॥ ६८॥ ६९॥ ७०॥ ७१॥ ७२॥ ७३॥ ७४॥ ७५॥ ७६॥ ७७॥ ७८॥ ७९॥ ८०॥ ८१॥ ८२॥ ८३॥ ८४॥ ८५॥ ८६॥ ८७॥ ८८॥ ८९॥ ९०॥ ९१॥ ९२॥ ९३॥ ९४॥ ९५॥ ९६॥ ९७॥ ९८॥ ९९॥ १००॥

॥१॥ १५॥ १६॥ १७॥ १८॥ १९॥ २०॥ २१॥ २२॥ २३॥ २४॥ २५॥ २६॥ २७॥ २८॥ २९॥ ३०॥ ३१॥ ३२॥ ३३॥ ३४॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥ ५१॥ ५२॥ ५३॥ ५४॥ ५५॥ ५६॥ ५७॥ ५८॥ ५९॥ ६०॥ ६१॥ ६२॥ ६३॥ ६४॥ ६५॥ ६६॥ ६७॥ ६८॥ ६९॥ ७०॥ ७१॥ ७२॥ ७३॥ ७४॥ ७५॥ ७६॥ ७७॥ ७८॥ ७९॥ ८०॥ ८१॥ ८२॥ ८३॥ ८४॥ ८५॥ ८६॥ ८७॥ ८८॥ ८९॥ ९०॥ ९१॥ ९२॥ ९३॥ ९४॥ ९५॥ ९६॥ ९७॥ ९८॥ ९९॥ १००॥

॥१॥ १५॥ १६॥ १७॥ १८॥ १९॥ २०॥ २१॥ २२॥ २३॥ २४॥ २५॥ २६॥ २७॥ २८॥ २९॥ ३०॥ ३१॥ ३२॥ ३३॥ ३४॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥ ५१॥ ५२॥ ५३॥ ५४॥ ५५॥ ५६॥ ५७॥ ५८॥ ५९॥ ६०॥ ६१॥ ६२॥ ६३॥ ६४॥ ६५॥ ६६॥ ६७॥ ६८॥ ६९॥ ७०॥ ७१॥ ७२॥ ७३॥ ७४॥ ७५॥ ७६॥ ७७॥ ७८॥ ७९॥ ८०॥ ८१॥ ८२॥ ८३॥ ८४॥ ८५॥ ८६॥ ८७॥ ८८॥ ८९॥ ९०॥ ९१॥ ९२॥ ९३॥ ९४॥ ९५॥ ९६॥ ९७॥ ९८॥ ९९॥ १००॥

॥१॥ १५॥ १६॥ १७॥ १८॥ १९॥ २०॥ २१॥ २२॥ २३॥ २४॥ २५॥ २६॥ २७॥ २८॥ २९॥ ३०॥ ३१॥ ३२॥ ३३॥ ३४॥ ३५॥ ३६॥ ३७॥ ३८॥ ३९॥ ४०॥ ४१॥ ४२॥ ४३॥ ४४॥ ४५॥ ४६॥ ४७॥ ४८॥ ४९॥ ५०॥ ५१॥ ५२॥ ५३॥ ५४॥ ५५॥ ५६॥ ५७॥ ५८॥ ५९॥ ६०॥ ६१॥ ६२॥ ६३॥ ६४॥ ६५॥ ६६॥ ६७॥ ६८॥ ६९॥ ७०॥ ७१॥ ७२॥ ७३॥ ७४॥ ७५॥ ७६॥ ७७॥ ७८॥ ७९॥ ८०॥ ८१॥ ८२॥ ८३॥ ८४॥ ८५॥ ८६॥ ८७॥ ८८॥ ८९॥ ९०॥ ९१॥ ९२॥ ९३॥ ९४॥ ९५॥ ९६॥ ९७॥ ९८॥ ९९॥ १००॥

योमेंसुन्यो मनुदीनोहरिद्वेष वदिनतेवनवनफिरे कोजानेकिदिसाप्र॥२५॥ शोदराकरवर्षना॥ का  
लवैरनिकेकद्वे विसरीगोऊलराज सुषदेशीलेमुकरकर करीकेलेकलाजा॥२६॥ एकादराकरवर्षना  
केसवसौद्वैकालकी सुस्सुगयोसनेऊ तोरेतेडुटेनदी काहाकरेअवलेऊ॥२७॥ दराकरवर्षना॥ लेवा  
कैमनमानकदि किताकापेजात ऊबकोऊडियजांनिद्वे तवकैसीकैवाता॥२८॥ नवाकरवर्षना॥ चिं  
चुनिचुनेअंगारगन जाकौंकरियेजोर सोऊजबडरेडिये कैसैडियेवकारा॥२९॥ अष्टाकरवर्षना॥ ने  
नतिनेवकनेककं कमलनयननवनाप्र बालनकैमनमोहिले वेवतमनमघहाप्र॥३०॥ सहाकरवर्षना॥  
रासुकांसुशिववसकरे विबुद्धिकामवससाधि कामुरासुवर वसकरे केसवश्रीआसधि॥३१॥ षडाकर  
वर्षना॥ कामुनादिनेकामुके सवमोहनकेकाम वसकोतोमनसुबतिकौ कावभाकावामा॥३२॥ पंचाकरव  
र्षना॥ कमलनयनकेनयनसै नेननकोनोकाम कोनकोनसौनेमुकेमितेनस्यांसुसवकांसु॥३३॥ चउराकर  
वर्षना॥ वनमालीवनमेंमिले वनीनलिनवनमाल नेनमिलीमनमनमिली वैननिलीनवाल॥३४॥ त्रिकारव  
र्षना॥ लगालगीनेयोगली लगेलागलेलाउ गेलगेलेगोपीलगे पालगौंगोपाल॥३५॥ द्विकारवर्षना॥ हरिद्वीर  
राहीदस्यो हेरिद्विहीद्वारि हरहरदाहादरो हरंहररीहरिसरि॥३६॥ प्रतियादेकाकरवर्षना॥ गो  
गोगोगोगंगं ऊडिजेजीजाडिऊरेऊरेऊरररि दादाकंकंदेदि॥३७॥ अर्धकाकरवर्षना॥ केकी  
केकाकीकका कोककाकोकक लोललालिलेलेली लालालीलालेलि॥३८॥ सकाकरवर्षना॥ नोती  
नोतीनोती नेतोनेनोनेन नानानननंनानुने ननुननंननेना॥३९॥ अथवद्विर्लोपिकाअंतर्जापिकावर्षना॥  
उत्तरवर्षानुवाहिरो वद्विर्जापिकादोइ अंतर्अतर्जापिकायद्वैकद्वै सवकोया॥४०॥ अत्रिसकौने  
विक्रमकौं सुवतिवसैकिद्विअंग बलिराजाकौनेबस्यो सुवपतिकेपरसंगा॥४१॥ वामना॥ अंतर्जापिका  
वर्षना॥ कौंनजातिसीतासती दर्शकोनकौंतात कोनप्रवगीरहरि समासनअवदाता॥४२॥ अथयुधोत्  
वर्षना॥ ऊत्तरजाकोअतिउस्यो दीजेकेसवदास तासोशुबेत्तरकद्वै वरनेसुद्विविलासा॥४३॥ नषतेसि  
षलोसुषदैकैसिगारिसिंगारसनकेसवएऊवयो पहराहमनोहरद्वारदिएद्वरिगाउसुगंधसमूहसमो  
दरसाइसिरीकरआरसीलेकपिऊंऊरज्योवद्वानावनयो सषियानपवावतद्विकिटिकारनकोअपियाप  
रिनारिरेयो॥४४॥ दासविलासनिवासनिज्योकेसवकेलिविधानउनिमें देवरकेवपितासुतसोदरद्वैसु  
षद्वीमद्ववातसुनीमें राजनतोजनरूपनतौनररेऊसपावनवेदधनमें क्योसबजामनिरोवतिकामति









अधप्रसन्नोत्तरवर्णनां॥ आपरजेर्द्रप्रसके तेर्द्रउत्तरजानु इद्विविधिप्रसन्नोत्तरसदा करेसुबुद्धिनिधांनु॥  
 ६४॥ कोदंश्यादीसुतटको कोसुऊमाररतिवंतु काकद्वियेसदा कोमलमनकोसंउ॥ ६५॥ कालि  
 कद्विषडैअली कोकिलकंवदनीक कोकद्वियेकांमीसदा कालीहीकेलीका॥ ६६॥ अध्यातागतल  
 उता॥ उलटोसुधोवांवीये एकद्विअधप्रमांत कद्विमातागतताद्विकवि केसवदासंमुडानु॥ ६७॥ मा  
 समसोदसजेवतवीननवीनवजेसुदसोमसमा मारलताविननावतिसाररिसावतिवतावनिता  
 लरिमा मानवहीरहीमोरदमोदरमोदिरहीवनमा मालवनीवलिकेसवदास सदावसिकेलिव  
 नीवलमा॥ ६८॥ उलटोसुधोवांवीये औरविऔरद्विअधु एकसवेयदमेंसुकवि प्रगतकैदोईअ  
 धु॥ ६९॥ सेननमाधक्योरसकेसवरेयसुदेषसुवेयसम नेनवकोतविजातरुनिरुक्विवीरसवेति  
 मकालफले तेंतसुनीजसतारसैधरीधरधीरधरीतिसुकौनवदें मेनमनीयुरुवातवूलेसुतसोवनमो  
 सरसीवलसौ॥ ७०॥ अधमंश्रगति॥ अश्रगति॥ त्रिपदीकपाटवंक॥ जैसोसुधोपावत्यौ मविअश्रगति  
 आनि तासौकद्वियत्रमंश्रगति गोसुत्रिकासुजानि॥ ७१॥ कामधेनुदैआदिअरु कसबुद्धपरजंता  
 वरणत केसवसकलकवि विक्रकवितअनंता॥ ७२॥ इद्विविधिकेसवजानियजं शिवकवितअपार  
 वरसुतपुषवताश्मं दीनोबुद्धिअनुसार॥ ७३॥ सुवरणकटतिपदारथति रूषनरूषितमति कवि  
 प्रियाज्यौकविप्रिया कविसंजावनिजानि॥ ७४॥ पतरप्रतिअवलोकिवो सुनिवोयुतिवोवित्र कविप्रिया  
 याज्यौरत्रीयो कविप्रियाकौमिउ॥ ७५॥ अनिलअनलजलमलितेते विकलमलिततेनित कविप्रि  
 याज्यौरत्रीयो कविप्रियाकौमिउ॥ ७६॥ केसवसोरहतावसुत सुवरनमयसुकुमार कविप्रिया  
 केजानियजं सोरद्विसिंगारा॥ ७७॥ इतिश्रीमनविविधरूपणरूषितायांकविप्रियाकांवित्रकवि  
 तवर्षनंनमयोडसधतावा संवतशषषवर्षेआके २६धणप्रवर्तमानेवैत्रसुदिसप्तमीशानौश्रीमक्षि  
 मषंडेह्लाकारदेशेश्रीमोर्वपुरमधेउपाध्यायश्रीदश्रीकिसनदासजीतत्रिष्यमुनिदेववंशेणलि  
 पिकृतमसि॥ सुतंतवउ॥ कल्याणमसु॥ लेषकस्यचिरडीवी॥ श्री॥

से





॥६॥ अथ वेरागा ॥ दाजी ये कर्म उलकै दानमदिमं लोको दाजी ये वरंगके करंगछाला कदिको बीजायेग  
 जराजके बिराजबेको ब्रह्मवतदाजी ये अवासेके निवासंगगतको कंचनसिंघासनके बाधंवरअ  
 सनके चंदनकाघोरिके विस्तृतिमांघटको गुरुजी यज्ञांतिके बिजारीये बिहारी लालदामे एककाजीये  
 पस्योनबीवततको ॥१॥ के दुईकोमनि कामुकिामके लोउके वैदे बंधंवरअंवरआला के करदेइ विस्त  
 तिको वैडाकि के अचंचपनको वियवाला के देई श्री उवती सुधर्मपतिके रेइ पावक पंचकज्वाला जो  
 उमोहनका हावत देमृगनेनीके देमृगछाला ॥२॥ त्रिगुणधुरांनवेद सोधि के निषेधारे वेदमुं सारीतिसै सा  
 बैद्युगबाधा है निपट निरंजनके सहजहृत्तनेहृत्तये सोध्यानसाध्याविरोध्यानसाध्याहे जगसवपंचक  
 ये पंचपरपंचकाये मोटलीएपि फितउपाधिलायेपाधादे ॥३॥ कबको करत नितसोच बोकरत वित निस  
 दिन हित वित जागीर है जकरी अमृतकी धानितहा विषको वधानबापको विउर बिउराको नगहै बफ  
 री निपट निरंजनके चर्मके छंहे ते तो गणकुटि अबदियदिष्टपकरी टिकिरदे आवांजामना हित  
 का हृत्तको मरामजाको नाम है आधुरीको लकरी ॥४॥ वैकहै हमारे राम वैकहै हमारे राम वैकहै  
 हमारे नाम सुपत सुपिके वैकहै हमारे नाम वैकहै हमारे नाम वैकहै हमारे नाम वैकहै हमारे नाम वैकहै  
 निपट निरंजनवे सबहैके साहित्यकफुलकफितहार सुनत सुनीके है विनपहै चाने तैया वैकहै  
 मारे हरि सुहरिन हमारे हमही हरि हीके ॥१॥ पांडे नयो तो लरकनको पदायो करि पांडिनमें पांडक  
 को नको पदावेगो पंडित नयो तो लरकनको पदायो करि पांडिनमें पांडक को नको पदावेगो  
 रंजन अज्ञाननिमें अगत्यांनज्ञाननिमें गोनकभाकती यक सुनावेगो तयो है स्वरूपतो छुड़  
 को दिया वेरूप आपक स्वरूप तो अरूपक हियावेगो ॥५॥ पांडके पदनछो मारां मजाका तजनमांघोको  
 दिआयो घावा बैकरे लागे बकवादको कौहाते रारां मजा कौडुते नतांमसी तो सय्यांम सुविचारि दे  
 दिको निपट निरंजनवहमदिरवहरां नो षंतवीर निकसी दे नलागे जगनाहको रगत सेजे डाटदस  
 नधनपटफारे काटे रनाकसको वाटे प्रल्लादको ॥६॥ निपट मल्लुमंदि रनए कालोतमगकर वि  
 नांवारको षेले है अति भुटिका धुरि ॥६॥ मंदिरतिहारो सारिअमही लामंदिरमें अंदिर निहारो नजिजे  
 लोके ततो नसी को न सुनलागत हो को न सुनलागत हो को न सुनलागत हो करत कछुहौं नसी निपट  
 निरंजनवना यनरसाबित मनायबेको देहका जिधरिरलो कछु कौं न सी उमहा अमृव सुठवम  
 लेसां कछु उवे उवे जात हो सा सुवत हो कौं न सी ॥७॥ बयो कितते सुमयारनिगो हिअयो विषजांति  
 सुधोरसवारे पयो प्रहमे जतिव्यो लषिवी मरलो निपटालगिकांमके कोरे सव्यो हरिनांमनहउलव्यो  
 अंघुपंचली एपरपंचको दारं स्वो सुधको सुपव्यो अघमादि कचौक बुऔर नयो कछुं प्रारे ॥८॥ जे है जां  
 लंजाय अरे शानीयो हौरिनए है अएकि तए है जोपंजावतन पायो है दे स्वासी बिबारि अनदेयो उपवारक  
 लुअंघिनदेघायो कि धांवातन बतायो है निपट निरंजनरत्नाघट मरिसकलवेदयो उरांन मिलियं

केंगायो है बैऊं वको बसैया प्यारे हि बैऊं वअरु और बैऊं वका हा छ सरो वनायो है ॥२॥ बजो  
 पजी जे बजो पा पई ये पी जे फूल फूल तोरि सुख उरै गो सो करै गो दुड बो हमारै आयो तारि बो ति हरे  
 यो ब्रु बो ज करु वस्यो तारे गो सो तारे गो निपट निरंजन रस्सी सकल घट घट देषो टेक आ प्यो  
 वरै गो सो तारे गो सो हमतो है पतित उम पतित पावन हो पतित पावन ते हरे गो सो हरे  
 ॥१०॥ निकट निकट सब को कहै निपट कहै नहि कोइ अंतर पट ज बनार है निपट निकट  
 त बहोइ ॥११॥ निपट निरंजन के निरंजन गाय प्रगत स्व रूप घट घट सब लोके के दीन के हा  
 लोके छु दीन बंध दीनाना घअधम उधार न हो व्रत ब्रज लोके के कर मति हरे सब कर महे  
 हरे क मर महे ति हरे प वि हरे अ नि जा के अपने हो कर्म करि छु छु उतरा गो पार हो  
 किरतारु किरतारु उम का के ॥१२॥ निपट जगत में आय के का हा धरि र छो एं वि सो हा क  
 बै पार को उ वि जा ति है पै वि ॥१३॥ हमत उरै उम उत उरै इत उरि उत उरि और के ती क  
 रि उरै गो हमतो हरे हरे यो ति हरे हनि हरे हरे ते हरे ही के संग हरे हरे गो पे हरे गो  
 पट निरंजन बनाव है बि वार ही के एक ही बि वार का हा छ सरो बि वारो गो मो सो न पतित  
 रो तो सो नू जग उरारो मो छि जि न तारो बैऊं वऊं बि गारो गो ॥१४॥ वै ह नैन वै ह बै न वै ह बा  
 र वनी के चैन वै ही लपट पटी सो ता का मनी अ क कंत में वै ई र वि वै ई स सिमी न प्र गता मे सी ई  
 वै ई घन मो ता उरत न अंत में निपट निरंजन सकल क वि व्या उरार यो हि प धि हरे सकल  
 न के प धि में ह ग दाने देषि वै को प्र गट दि षा देत देषो न प्र गट का हा देषो गि गर् धु मे ॥१५॥ तो  
 ते उर ता के मार वै को के ती वार य ह छु नि चत्र पतिरि सम न धरे न ही अंग र सा जि वे दे वांग ना मी  
 य सो ग के प्रकार जाय सो ग में परे नही निपट निरंजन प्रकार ना नाम वा मते सबे सुषा  
 प्राणि म न उतरै नही पायो है पर मे सर पाय पर वै को वार चा उरी सरा हिये जो आ उरी करे न  
 ॥१६॥ पर लता पर ल धरे धे म तार ल हि मो हि प्रेम छु त दे दे प्र धम सु र का य ले सी सी सी सरा  
 बो सबे से मे लि मृ दि मृ दि प ट ले प सी ध संग ति हिला इये निपट निरंजन है माया तो प्र च  
 रु ज्यो ज्यो निकरै अ ग नित्यो यो सुर का य ले एरे संत जो लो डु टे पारो हो त है अ वार जाय  
 तोर सायनी का हा य ले ॥१७॥ ए सी जि त्या पां पनी न जां ने सु छि आ पनी राम नाम ले वे  
 तौ डी अ ल सात है बु ग ली को बो क स च ला क ब डी ल रि वै को या वै को ष ट र स स वा दि हि सो षा  
 क हि वै को क पट निपट नै ऊ छ दे आं नि बो लि वै को अंग न अ न क लाल लाल विल ल वा उ  
 ? बात हो तो व्याय के बनाय कहै फू वी र सो ह न के आ मे व लि जा उ है १८॥ आउ तो  
 जि आ सो च पो च करे जाने क छु को जी ये सु का हा का हा की जी ए पार न उरान को उर

नको तो अंत नाहि बांनी तो विविधितां तिकां हां वितदी जीये कविकी कला अंतंत बंदको प्रबंध  
छत्र राग तो रसी लोकां हां धोर सपी जीये सोबात का एक वात निपट बता एजांत सबतें सयां नोजी  
पंयं मनां मली जीए ॥११॥ जी दे म द मा तो तोरा उ उ र र क क हा दीनी लो जो दे हु तो नि र्तीय अरु त य का  
हा अंत य के जां ने ते प दो अ न प दो का हा हित चि न्त ल गी तो तार अ क लो क हा नि प ट नि रं ज न के  
विधि नां ति मे थ क हू सं ब र स ब र हू त व उ व नी च दै का हा मि त्र से मि ल न त व स्व ग्रे अ रु न क के से  
देश बो द र स त व गे रो त्पा व रो का हा ॥२०॥ महा म द ब के तें अ ब क तै ति च क हो त नि च क फे च  
के तें घु म फ म त घु मा री को दिन ति स नि स दि न य दे सु छि आ व त दै सा व उ प वार ए हि का ति  
ब हू मा री को नि प ट नि रं ज न म र न को अ म र नां म एक वार मा रि दा व आ व न उ वारी को हौ तो  
म ति वा रौ उ च्चे म द को न लै न हारो म र क रि पि त्ता लो खो रि र हौ न घु मा री को ॥२१॥ जे ई हो ति आ  
दि म ति ते ई हो ति अंत ग ति आ दि त्रं त म ध्य मे ल मे ल वें को आ यो दे एक ले उ दा सी ता तें बो लि बो व  
ना यो ज ग ज्जा मं ज ग त रु ती उ त र मा यो दे नि प ट नि रं ज न वा एक मं स क ल क ला उ स रो वि वा  
र क हौ को न वे द ग यो दे सा हि ब तो से व क बि ना त को ऊ सा हि बो दे सा हि ब स रू प आ प से वा  
क का हा यो दे ॥२२॥ आ प अ ज्ञा य के वी हि रं न वा व त ग ऊ र सो व द न्नां म बि वा रो फ ल व टा व  
त बा स ना ले ग यो बो ब सु दे व स दा अ धि कारो य ट व ज्ञा य यो दि घा य के जि मि ग यो नि प टा र स  
सा रो से व करे ऊ नि तै व न ज्ञान त दे व ते दी र घ मू न ह री ॥२३॥ नि प ट कां ट की कां टें त इ अ  
ट्ट क यो र ब द त व ह त स ब व द ग ई न हा नि प ट कां वे र ॥२४॥ दे म त अ न त इ य ल ह त न ने क सु  
ष रू ष को व म न त्रै सौ त्व म न म को रा को सी त घां म नां गे ष य पो ट न म रे उ वा य सं क ट मि टा थ क  
यो ग ऊ र सु वी रा को अ नु क्त न ल ह्यो अ ले ष नि प टा नि ह रि दे षि द्यो नो उ रु तै षो क ज्ञान त न  
वो रा को मान स तें दे व त यो तो हि स व ज ग न यो अ न क्त न ल ह्यो तो ल ह्यो सि र लो रा को ॥२५॥ ग क  
र से वु कर से या कर से इ कर से म र ष वि वि त्र लु से गाय वे ल तै स दै वां द र से इ द र से ष स व  
उ ध र से रू कर से सु कर से बि ला उ ब क री से दै इ इ ल से र्व द ऊ से वि रियो ग य द ल से व स त  
स क ल मे क ल न डारि वे से दै जे सौ का ऊ हो य ता सें ते सी रु ष रा षे नि प ट जे सं क्त मे जे सें प्र वृ त्ते  
से ही मे ते से दै ॥२६॥ फा टो सो ल गो टा किये हु तो सो पि या लो ह थि कां थे परि गो द री सी लो ध र से  
ल दै दे ज हं ल गे र्ते ष त हां अ न को नि वा स न हू ज्जां हां लो ग्पा स तां हां ना लो त्रौ न न दी दे गे व के  
ष ज्ञां तें अ रु गे व के उ ज क रा ष ष र्व तो हू जार कि सा म न स प त्रु स दी दे नि प ट नि रं ज न षा दे  
म न मे म ग न र हौ कर नी फ का री तो दि ल्गी री कि न व दी दै ॥२७॥ पा ध र के न ग वा दे जो मी ह र